



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 27]

नई दिल्ली, शनिवार, जुलाई 7—जुलाई 13, 2012 (आषाढ़ 16, 1934)

No. 27]

NEW DELHI, SATURDAY, JULY 7—JULY 13, 2012 (ASADHA 16, 1934)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

पृष्ठ सं.

भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं.....	519
भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्ततियों, हृदृष्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	639
भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	3
भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्ततियों, हृदृष्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.....	957
भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम.....	*
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ.....	*
भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट.....	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं).....	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को	

पृष्ठ सं.

छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं.....

*

भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं).....

*

भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश.....

*

भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.....

1111

भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेंटों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस.....

*

भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.....

*

भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं.....

4935

भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस.....

575

भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक.....

*

*अंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

Page No.	Page No.
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)
519	*
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court.....	PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)
639	*
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence.....	PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence
3	*
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India
957	1111
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations *	
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi language, of Acts, Ordinances and Regulations	PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs
*	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners
*	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies
*	4935
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the -Ministries of the Government of India (other than the	PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies
	575
	*
	PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi
	*

*Folios not received.

भाग I — खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 14 जून 2012

सं. 10/1/2/ओबीसी/2012—संसदीय कार्यमंत्री तथा जल संसाधन मंत्री द्वारा 21 दिसम्बर, 2011 को लोक सभा में प्रस्तुत एक प्रस्ताव को स्वीकृत किए जाने के पश्चात् अन्य पिछड़े वर्गों के कल्याण संबंधी समिति का गठन किया गया। समिति के सदस्य समिति की प्रथम बैठक की तिथि से एक वर्ष की अवधि के लिए पद पर रहेंगे, जिसका तत्पश्चात् एक वर्ष बाद पुनर्गठन किया जाएगा।

राज्य सभा और लोक सभा के निम्नांकित सदस्यों को समिति के सदस्य के रूप में कार्य करने के लिए निर्वाचित किया गया है:—

लोक सभा

1. श्री हंसराज गं. अहीर
2. श्री समीर भुजबल
3. श्री दारा सिंह चौहान
4. डॉ. चार्ल्स डिएस
5. श्री टी.के.एस. इलेंगोवन
6. श्री मुकेशकुमार भैरवदानजी गढ़वाली
7. श्री अनंत गंगाराम गीते
8. श्री वी.के. हान्डिक
9. डॉ. क्रुपारानी किल्ली
10. श्री पी. कुमार
11. श्री पी.सी. मोहन
12. श्री पोनम प्रभाकर
13. श्री अमरनाथ प्रधान
14. श्री रामकिशन
15. एडवोकेट ए. सम्पत
16. श्री गणेश सिंह
17. श्री मानिक टैगोर
18. श्री अरुण यादव
19. श्री हुक्मदेव नारायण यादव

20. प्रो. (डॉ.) रंजन प्रसाद यादव

राज्य सभा

21. श्रीमती झरना दास वैद्य
22. श्री बीरेन्द्र प्रसाद वैश्य
23. श्री देवेन्द्र गौड़ टी.
24. श्री रामचन्द्र खूटिया
25. डॉ. राम प्रकाश
26. श्री वी. हनुमंत राव
27. श्री अरविन्द कुमार सिंह
28. श्री रामचन्द्र प्रसाद सिंह
29. श्री नतुजी हालाजी ठाकोर
30. रिक्त

माननीय अध्यक्ष महोदया ने श्री बी.के. हान्डिक को इस समिति का सभापति नियुक्त किया है।

शोभा सिंह
अपर निदेशक

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 20 जून 2012

सं. यू. 13019/1/2010—सीपीडी—संघ राज्य क्षेत्र दमण एवं दीव के लिए गृह मंत्रालय की सलाहकार समिति के गठन के बारे में इस मंत्रालय की दिनांक 04.06.2010 की अधिसूचना सं. यू. 13019/1/2010—सीपीडी में निम्नलिखित संशोधन/परिवर्धन/विलोपन किए जाते हैं:—

- (i) पैरा 2 के मौजूदा उप-पैरा (ग) और (घ) को निम्न प्रकार प्रतिस्थापित किया जाता है:—
 - (ग) जिला पंचायत, दमण के अध्यक्ष-सह-मुख्य पार्षद।
 - (घ) अध्यक्ष, नगरपालिका परिषद्, दमण।
- (ii) पैरा 2 के मौजूदा उप-पैरा (ड.) को निम्न प्रकार प्रतिस्थापित किया जाता है:—
 - (ड) अध्यक्ष, नगरपालिका परिषद्, दीव।

(iii) पैरा 2 के उप-पैरा (च) और (छ) के रूप में निम्नलिखित को अन्तःस्थापित किया जाता है:—
 (च) श्रीमती लीना मचाड़ो, पूर्व पार्षद, फुटबाल ग्राउन्ड के सामने, मोती दमण।
 (छ) श्री शामजी प्रेमजी सोलंकी, उपाध्यक्ष, दीव नगरपालिका परिषद्, दीव।

(iv) पैरा 3 का लोप किया जाता है।

(v) पैरा 4, 5 को क्रमशः पैरा 3, 4 के रूप में पढ़ा जाए।

(vi) मौजूदा पैरा 6 को निम्न प्रकार प्रतिस्थापित किया जाता है:—
 “5. पैरा 2 के उप-पैरा (च) और (छ) में उल्लिखित सदस्यों का कार्यकाल दो वर्ष होगा।”

एम.एल. वर्मा
उप सचिव

कारपोरेट कार्य मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 12 जून 2012

सं. ए-36011/1/2012-प्रशा.-II--केन्द्रीय सरकार, कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 209क की उपधारा (1) के खंड (ii) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा श्री वी.जी. सत्यमूर्ति, सहायक निदेशक, प्रादेशिक निदेशक कार्यालय (द.पू.क्षे.) कारपोरेट कार्य मंत्रालय, हैदराबाद को उक्त धारा के उद्देश्य हेतु प्राधिकृत करती है।

आर.के. पांडेय
अवर सचिव

वस्त्र मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 25 जून 2012

सं. 9/4/2010-टीयूएफएस--भारत सरकार ने सूती यार्न परामर्शदात्री बोर्ड गठित करने का निर्णय लिया है जिसमें निम्नलिखित सदस्य हैं:—

1. वस्त्र आयुक्त अध्यक्ष
2. संयुक्त सचिव (कपास) अथवा उनके प्रतिनिधि सदस्य
3. निदेशक (कपास) सदस्य
4. विकास आयुक्त (हथकरघा), नई दिल्ली अथवा उनके प्रतिनिधि सदस्य
5. विदेश व्यापार महानिदेशक (डीजीएफटी) अथवा उसके नामिति सदस्य
6. अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, भारतीय कपास निगम (सीसीआई) सदस्य
7. अध्यक्ष, सूती वस्त्र निर्यात संवर्धन परिषद् (टेक्सप्रोसिल) सदस्य
8. अध्यक्ष, अपैरल निर्यात संवर्धन परिषद् (ईपीसी) सदस्य
9. अध्यक्ष, भारतीय वस्त्र उद्योग परिसंघ (सीआईटीआई) सदस्य
10. अध्यक्ष, दक्षिण भारत मिल संघ (एसआईएमए) कोयम्बटूर सदस्य

11. अध्यक्ष, तिरुपुर निर्यात संघ (टीईए), तिरुपुर सदस्य
12. अध्यक्ष, उत्तर भारत वस्त्र विनिर्माता संघ (निटमा) सदस्य
13. अध्यक्ष, भारतीय वस्त्र विनिर्माता संघ (सीआईएआई) सदस्य
14. अध्यक्ष, विद्युतकरघा विकास एवं निर्यात संवर्धन परिषद् (पैडेक्सिल), मुंबई सदस्य
15. अध्यक्ष, अखिल भारतीय विद्युतकरघा संघ सदस्य
16. प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय हथकरघा विकास निगम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश सदस्य
17. निदेशक, दक्षिण भारत वस्त्र उद्योग अनुसंधान संघ (सिटा) सदस्य
18. निदेशक, अहमदाबाद वस्त्र उद्योग अनुसंधान संघ (अटीका) सदस्य
19. अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, एनटीसी लि. सदस्य
20. श्री बी.के. पटेदिया, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, जीटीएन टैक्सटाइल्स लि. सदस्य
21. श्री वी.एस. वेलायूथम, प्रबंध निदेशक श्री गोमाथी मिल्स प्रा. लि. सदस्य
22. श्री आर.के. अग्रवाल, संयुक्त प्रबंध निदेशक, सूर्यवंशी स्पिनिंग मिल्स लि. सिकन्दराबाद सदस्य
23. महासचिव, एसआईएमए सदस्य
24. श्री जयकुमार कृष्णस्वामी, मुख्य कार्यकारी, श्री सरवन स्पिनिंग मिल्स प्रा.लि., डिंडीगुल सदस्य
25. श्री टी. राजकुमार, प्रबंध निदेशक, श्री महाशक्ति, मिल्स लि., कोयम्बटूर सदस्य
26. अध्यक्ष, गारमेंट एक्सपोर्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान, जयपुर सदस्य
27. अध्यक्ष, अपैरल निर्यातिक एवं विनिर्माता संघ, नई दिल्ली सदस्य
28. श्री विजय कुमार अग्रवाल, क्रिएटिव गारमेंट्स, मुंबई सदस्य
29. श्री प्रशांत अग्रवाल, बॉम्बे रेयान, मुंबई सदस्य
30. श्री हरीश अहूजा, शाही एक्सपोर्ट्स, नई दिल्ली सदस्य
31. श्री राजन हिन्दूजा, गोकुलदास एक्सपोर्ट्स, बैंगलूर सदस्य
32. श्री एसपी ओसवाल, अध्यक्ष वर्धमान स्पिनिंग एंड जनरल मिल्स लि., लुधियाना सदस्य
33. श्री मुकुन्द चौधरी, प्रबंध निदेशक, स्पैनटैक्स इंडस्ट्रीज लि., नई दिल्ली सदस्य
34. श्री के.के. अग्रवाल, अध्यक्ष, एलप्स इंडस्ट्रीज लि., गाजियाबाद सदस्य

35.	अध्यक्ष, पावरलूम वीवर्स को. ओ. एसोसिएशन लि., इचलकरांजी	सदस्य
36.	अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, पल्लाडैम हार्ड-टैक वीविंगपार्क, पल्लाडैम	सदस्य
37.	श्री पी. नटराज, प्रबंध निदेशक, केपीआर मिल्स लि. कोयम्बटूर	सदस्य
38.	अध्यक्ष, भारतीय होजरी विनिर्माता संघों का परिसंघ (एफओएचएमए)	सदस्य
39.	अध्यक्ष, टीएएसएमए, डिंडीगुल	सदस्य
40.	श्री गोविन्द श्रीखंडे, प्रबंध निदेशक, शॉपस स्टाप, मुंबई	सदस्य
41.	श्री कैलाश भाटिया, निदेशक, प्यूचर ग्रुप, पैंथलून्स, सदस्य मुंबई	सदस्य
42.	श्री एन चन्द्रन, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, ईस्टमैन एक्सपोर्ट्स, तिरुपुर	सदस्य
43.	श्री ए.एल. रामचन्द्रा, प्रबंध निदेशक, विजयेश्वरी, टैक्सटाइल्स लि., कोयम्बटूर	सदस्य
44.	श्री नवीन सेक्सरिया, जे जी होजियरी प्रा. लि., तिरुपुर	सदस्य
45.	संयुक्त वस्त्र आयुक्त (आधिक)	सदस्य- सचिव

2. बोर्ड सूती यार्न की विभिन्न किस्मों के उत्पादन, खपत और उपलब्धता से संबंधित मामलों पर सरकार को परामर्श देगा और स्टेक होल्डरों अर्थात् स्पिनर्स, बुनकर, वस्त्र अनुसंधान संघ, सरकार आदि के बीच संपर्क बनाने के लिए मंच भी उपलब्ध कराएगा।

3. बोर्ड सूती यार्न के घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों को मॉनिटर करेगा और घरेलू खपत के लिए उचित मूल्य पर सूती यार्न की उपलब्धता में वृद्धि के लिए उपाय सुझाएगा।

4. बोर्ड सूती यार्न के आयत और निर्यात को मॉनिटर करेगा और सूती यार्न तुलन-पत्र तैयार करेगा।

5. बोर्ड की बैठक सार्वान्यतः तिमाही में एक बार अथवा जब कभी आवश्यक हो, होगी।

6. बोर्ड के सदस्य 31 मार्च 2014 तक अथवा अगले आदेशों तक इनमें से जो भी पहले हो तक बोर्ड में रहेंगे।

7. सरकारी अधिकारियों और वस्त्र अनुसंधान संघों के अधिकारियों के टीए/डीए, यदि कोई हैं को संबंधित विभागों अथवा संघों द्वारा वहन किया जाएगा। अन्य सदस्यों के टीए/डीए को संघों, जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं, द्वारा वहन किया जाएगा।

8. सचिवालीय सहायता वस्त्र आयुक्त का कार्यालय मुंबई द्वारा उपलब्ध करायी जाएगी।

यह आदेश दिया जाता है कि इस अधिसूचना की प्रति सभी संबंधित को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

वी. श्रीनिवास
संयुक्त सचिव

खान मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 3 जुलाई 2012

संकल्प

सं. 35/1/2011-एम.III---भारतीय खान ब्यूरो की कार्य प्रणाली की प्रभाविता का वस्तुपरक मूल्यांकन करने में सरकार की मदद करने और ऐसे अर्थोंपाय करने जिससे इसकी उपयोगिता और प्रभाविता निरंतर बढ़ाई जा सके के लिए भारतीय खान ब्यूरो और उन विभिन्न संगठनों जिनकी भारतीय खान ब्यूरो के कार्य में रुचि है अथवा उससे जुड़े हुए हैं, के बीच समर्क को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से भारतीय खान ब्यूरो समीक्षा समिति ने दिसम्बर, 1979 में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में भारतीय खान ब्यूरो के लिए एक सलाहकार मंडल बनाने की सिफारिश की है। तदनुसार केन्द्र सरकार ने अपने संकल्प सं. 23012/99/80-एम.VI दिनांक 12 जनवरी, 1981 के तहत भारतीय खान ब्यूरो के लिए सलाहकार मंडल का गठन किया है।

और जबकि संकल्प सं. एफ. 12014/10/85-एम.VI दिनांक 28 जनवरी, 1986, सं. 12014/2/88-एम.VI दिनांक 08 अप्रैल, 1988, सं. एफ. 12014/6/90-एम.VI दिनांक 23 मई, 1990, सं. 35/1/95-एम.III दिनांक 20 जुलाई, 1995, कार्यालय ज्ञापन सं. 35/1/96-एम.III दिनांक 23 मई 1997, संकल्प सं. 35/2/99-एम.III दिनांक 03 नवम्बर, 1999, सं. 35/1/2002-एम.III दिनांक 31 मई, 2002 तथा सं. 35/2/2007-एम.III दिनांक 14 नवम्बर, 2008 के तहत उक्त सलाहकार मंडल का समय-समय पर पुनर्गठन किया गया है।

इसलिए अब पूर्व के सभी संकल्पों के अधिक्रमण करते हुए भारतीय खान ब्यूरो के सलाहकार मंडल का निम्नलिखित संरचना के अनुसार पुनर्गठन किया जाता है :

संरचना

अध्यक्ष

सचिव, खान मंत्रालय

सदस्य

1. विशेष सचिव/अपर सचिव, खान मंत्रालय

2. अपर सचिव/संयुक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार, खान मंत्रालय

3. संयुक्त सचिव (प्रभारी आईबीएम), खान मंत्रालय

4. निदेशक/उप सचिव (प्रभारी आईबीएम), खान मंत्रालय

5. महानियंत्रक, भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

6. महानिदेशक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, कोलकाता

7. महानिदेशक, खान सुरक्षा महानिदेशालय, धनबाद

8. सलाहकार (आई एण्ड एम), योजना आयोग, नई दिल्ली

9. इस्पात मंत्रालय के प्रतिनिधि, नई दिल्ली

10. विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के प्रतिनिधि, नई दिल्ली

11. वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के प्रतिनिधि, नई दिल्ली

12. प्रेसीडेंट/सचिव, फेडरेशन ऑफ इंडियन मिनरल इंडस्ट्री, नई दिल्ली

13. उडीसा सरकार के प्रतिनिधि
14. छत्तीसगढ़ सरकार के प्रतिनिधि
15. गुजरात सरकार के प्रतिनिधि
16. आंध्र प्रदेश सरकार के प्रतिनिधि
17. राजस्थान सरकार के प्रतिनिधि
18. कर्नाटक सरकार के प्रतिनिधि
19. गोवा सरकार के प्रतिनिधि
20. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड, कोलकाता
21. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, नेशनल एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड, भुवनेश्वर
22. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एमओआईएल लि., नागपुर
23. निदेशक, नेशनल मेटालोर्जिकल लेबोरट्री, जमशेदपुर
24. निदेशक, इंडियन स्कूल ऑफ माइंस, धनबाद
25. प्रोफेसर, खनन विभाग, बीएनआईटी, नागपुर
26. विशेष आमंत्रित के रूप में कोई अन्य सदस्य

सदस्य सचिव

तकनीकी सचिव, आईबीएम, नागपुर

इसके बोर्ड के कार्य परामर्शी प्रकृति के होंगे। यह भारतीय खान बूरो और सरकार दोनों को सलाह देगा। बोर्ड सरकार से सीधे पत्राचार करने के लिए स्वतंत्र होगा। भारतीय खान बूरो बोर्ड के सचिवालय की व्यवस्था करेगा। बोर्ड अपने स्वयं के कार्य नियम और प्रक्रियाएं तैयार करेगा किन्तु सरकार की यह अपेक्षा होगी कि यह वर्ष में कम से कम दो बार बैठक करे। बोर्ड के कार्य निम्नलिखित अनुसार होंगे :—

कार्य

1. वार्षिक और पंचवर्षीय योजना तथा भारतीय खान बूरो के प्रस्तावों की समीक्षा तथा सलाह देना।
2. आगामी वर्ष के दौरान कार्यों के कार्यक्रम की समीक्षा और सलाह देना।
3. आईबीएम के पुनर्गठन कार्यक्रम के कार्यान्वयन की समीक्षा और सलाह देना।
4. भारतीय खान बूरो द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए कार्यों का समय-समय पर मूल्यांकन।
5. एसडीएफ और उसके कार्यान्वयन के मामलों पर सलाह देना।
6. खनन टेनामेंट प्रणाली (एमटीएस) के कार्यान्वयन पर सलाह देना।

7. खनिज संरक्षण और विकास नियम, 1988 के नियम 45 के कार्यान्वयन पर सलाह देना।

8. सूचना प्रबंध प्रणाली और प्रबंधन लेखाकरण संबंधी सलाह देना।

9. भारतीय खान बूरो के कार्यकरण को और प्रभावी बनाने के लिए तरीके और साधनों की सलाह देना।

कार्यकाल

सलाहकार बोर्ड गठन की तारीख से सामान्यतया दो वर्ष तक कार्य करेगा जब तक सरकार द्वारा इसका कार्यकाल नहीं बढ़ाया जाता है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सभी राज्य सरकारों और भारत सरकार के सभी केन्द्रीय मंत्रालयों, प्रधान मंत्री कार्यालय, कैबिनेट सचिवालय, संसदीय कार्य मंत्रालय, योजना आयोग, भारत के महालेखापरीक्षक, भारतीय खान बूरो, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण और परमाणु ऊर्जा विभाग को परिचालित किया जाए।

रोखुम ललेमरूआता
निदेशक

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(उच्चतर शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 6 जून 2012

संकल्प

विषय : राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शिक्षा मानीटरिंग समिति के कार्यकाल की समाप्ति पर इसका पुनर्गठन

सं. 6-4/2010-एम.सी. (पी.टी)–उपर्युक्त विषय पर मंत्रालय के दिनांक 23 दिसम्बर, 2011 के समसंख्यक संकल्प के अनुक्रम में भारत सरकार ने श्री मौलाना अरशद मदानी जिन्होंने समिति में शामिल होने से मना कर दिया है, के स्थान पर श्री नियाज अहमद फारूकी सचिव, जमीयत उलेमा-ए-हिन्द, संख्या 1, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 को अल्पसंख्यक मुद्दों से जुड़े प्रमुख शिक्षाविदों, कार्यकर्ताओं तथा प्रशासकों के शीर्ष के तहत सूचीबद्ध राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शिक्षा मानीटरिंग समिति के सदस्य के रूप में नामित करने का निर्णय लिया है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति समिति के अध्यक्ष तथा अन्य सदस्यों को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को सामान्य सूचना हेतु भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

अमित खरे
संयुक्त सचिव

आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 21 जून 2012

सं. ओ-17034/122/2009-एच--केन्द्रीय सरकार एतद्वारा मंत्रिमंडल की दिनांक 23 मार्च, 2012 को हुई बैठक के कार्यवृत के अंतर्गत दिए गए उसके अनुमोदन के फलस्वरूप निम्न आय वर्ग के आवास ऋण की गारंटी देने के प्रयोजनार्थ निम्नलिखित योजना बनाती है, अर्थात् :--

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ :--

- (1) इस योजना का नाम निम्न आय आवास के लिए ऋण जोखिम गारंटी निधि योजना, 2012 होगा।
- (2) यह राजपत्र में उसके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होगी।
- (3) इस योजना के अंतर्गत राजपत्र में इसके प्रकाशन की तारीख से पात्र ऋण प्राप्त कर्ताओं को ऋण दाता संस्थानों द्वारा दिए जाने वाले पात्र आवास ऋण आएंगे।

2. परिभाषाएं :

इस योजना के प्रयोजनार्थ -

- (1) “चूक की राशि” का अभिप्राय खाते के निक्षिय सम्पत्ति (एनपीए) बन जाने की तारीख या दावे के आवेदन पत्र को प्रस्तुत किए जाने की तारीख या ऋण जोखिम गारंटी निधि योजना (सीआरजीएफएस) द्वारा यथा विनिश्चित तारीख को आवास ऋण के संबंध में ऋणी के खाते में मूलधन राशि और ब्याज की बकाया राशि से है बशर्ते कि वह गारंटी शुदा राशि से अधिक नहीं हो।
- (2) “आधार दर” का अभिप्राय उस दर से है जिस पर ऋणदाता संस्थान द्वारा संबद्ध समय सीमा अवधि/अवधि के लिए आवास ऋण दिया गया है।
- (3) “बैंक दर” का अभिप्राय उस दर से है जिस पर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अन्य बैंकों या वित्तीय संस्थानों को ऋण दिया जाता है।
- (4) “कार्पेट क्षेत्र” का अभिप्राय अचल सम्पत्ति के उपयोग किए जाने वाले निवल फ्लोर क्षेत्र से है जिसमें दीवारों द्वारा कवर किया गया क्षेत्र शामिल नहीं है।
- (5) “समर्थक प्रतिभूति” का अभिप्राय ऋणदाता संस्थान द्वारा ऋणी को दिए जाने वाले आवास ऋण के संबंध में प्रमुख प्रतिभूति के अतिरिक्त दी जाने वाली प्रतिभूति से है।
- (6) “पात्र ऋणी” का अभिप्राय जनसंख्या के आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग/निम्न आय समूह में नए या मौजूदा ऐसे ऋणी व्यक्तियों से है जो 5 लाख रुपए से अधिक राशि या न्यास द्वारा समय-समय पर विनिश्चित की जाने वाली राशि का आवास ऋण और 430 वर्ग फुट (40 वर्गमीटर) कार्पेट क्षेत्र तक के आकार के आवास यूनिट को प्राप्त करना चाहता है

और जिसके लिए ऋणदाता संस्थान द्वारा किसी सामूहिक प्रतिभूति और/या तृतीय पक्षकार गारंटियों के बिना ऋण दिया गया है। उपरोक्त अनुसार परिभाषित पात्र ऋणीयों में कम से कम 20 सदस्यों के समूह या आवास समिति भी इस योजना के तहत ऋण प्राप्त करने की पात्र होंगी।

- (7) “आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस)” का अभिप्राय ऐसे परिवारों से है जिनकी मासिक पारिवारिक आय 5,000/- रुपए प्रति मास है या आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समय-समय पर संशोधित अनुसार है।
- (8) “पात्र क्रियाकलाप” का अभिप्राय आवास में सुधार लाने, निर्माण, अधिग्रहण और नए या पुराने आवासीय यूनिटों को खरीदने से है जिसमें प्रति व्यक्ति 5 लाख रुपए से अधिक राशि का आवास ऋण निहित है।
- (9) “गारंटी कवर” का अभिप्राय प्रति पात्र ऋणी को ऋणदाता संस्थान द्वारा दिए गए आवास ऋण के संबंध में चूक राशि के लिए उपलब्ध अधिकतम कवर राशि से है।
- (10) “आवास ऋण” का अभिप्राय ऐसी किसी भी वित्तीय सहायता से है जो कि ऋणदाता संस्थान द्वारा पात्र ऋणी को आवास में सुधार लाने, निर्माण करने या किफायती आवास यूनिट का विस्तार करने के लिए प्रदत्त किए गए आवास ऋण के रूप में दी गई है। गारंटी शुल्क का परिकलन करने के प्रयोजनार्थ “प्रदत्त आवास ऋण” का अभिप्राय ऋणदाता संस्थान द्वारा वचनबद्ध वित्तीय सहायता की राशि से है जो कि संवितरित की गई है या नहीं की गई है।
- (11) “ऋणदाता संस्थान (नों)” का अभिप्राय ऐसे वाणिज्यिक बैंक से है जिन्हें फिलहाल भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की दूसरी अनुसूची में शामिल किया गया है जैसे कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, यूनियन कोओपरेटिव बैंक, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां - माइक्रो वित्त संस्थान (एनबीएफसी - एमएफआई) और शीर्ष कोओपरेटिव आवास वित्त समितियां जो कि राज्य सहकारी समितियां अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत हैं, समय-समय पर न्यास द्वारा विनिश्चित अनुसार भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा निर्देशों के अंतर्गत पात्र है तथा समय-समय पर भारत सरकार द्वारा यथा निर्देशित राष्ट्रीय आवास बैंक के पास पंजीकृत आवास वित्त संस्थान। न्यास कार्य-निषादन की पुनरीक्षा करने पर पात्र संस्थानों की सूची में से किसी भी ऋण दाता संस्थान को निकाल सकता है।
- (12) “लॉक इन अवधि” का अभिप्राय ऐसी अवधि से है जो बाजार की दशाओं पर कोई विचार किए बिना ऋण पर वित्त की सहमत शर्तों पर स्थिर रूप से बने रहने के लिए ऋणी सहमत होता है। ऐसे मामले में ऋणदाता ऋणी को किए गए विगत संवितरण के बाद 24 महीनों की अवधि के भीतर या विशेष आवास ऋण के संबंध में लागू गारंटी कवर की तारीख से 24 महीनों की अवधि के भीतर या आवास के पूरा हो जाने के

2 महीनों के बाद, इसमें से जो भी बाद में पड़े, भुगतान करने के लिए न्यास पर किसी प्रकार का दावा नहीं कर सकता है।

(13) “निम्न आय समूह (एलआईजी)” का अभिप्राय ऐसे परिवारों से है जिनकी मासिक पारिवारिक आय, 5001/- रुपये से ले कर 10,000/- रुपये प्रति मास के बीच है या आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समय-समय पर संशोधित अनुसार है।

(14) “निम्न आय आवास” का अभिप्राय आर्थिक रूप से कमजोर और निम्न आय प्राप्त कर्ता के लिए 430 वर्ग फुट (40 वर्ग मीटर) कार्पेट क्षेत्र आकार के आवास यूनिट से है।

(15) “वास्तविक तारीख” का अभिप्राय ऐसी तारीख से है जिस तारीख को ऋण दाता संस्थान द्वारा पात्र ऋणी के संबंध में शामिल की गई राशि पर गारंटी शुल्क न्यास को देय होता है।

(16) “गैर-निष्पादक सम्पत्तियाँ” का अभिप्राय ऐसे ऋण से है जिसे भारतीय रिजर्व बैंक/राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों और मार्ग निर्देशों के आधार पर गैर-निष्पादक के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

(17) “प्राथमिक प्रतिभूति” का अभिप्राय आवासीय ऋण के संबंध में ऐसी सम्पत्तियों से है जिसके लिए प्रदत्त आवासीय ऋण और/अथवा ऋणी की विद्यमान अभारित सम्पत्तियों से बनी सम्पत्तियों से है जो कि उस सम्पत्ति से सीधे संबंधित है जिसके लिए आवासीय ऋण प्रदान किया गया है।

(18) “योजना” का अभिप्राय निम्न आय वर्ग के लिए आवास ऋण जोखिम गारंटी निधि योजना (सीजीआरएफएस) से है।

(19) “निर्णायिक” का अभिप्राय निर्णय के संबंध में ऐसे व्यक्ति या उस संगठन से है जिस व्यक्ति या संगठन ने निर्णय लिया है। इस मामले में आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय, भारत सरकार न्यास का निर्णायिक है।

(20) “गारंटी कवर की अवधि” का अभिप्राय गारंटी आरंभ होने की तारीख से गारंटी कवर की अवधि से है जो कि आवासीय ऋण की सहमत अवधि के दौरान लागू होगी और अधिकतम 25 वर्षों की अवधि अथवा ऋण समाप्ति की तिथि, जो भी पहले हो अथवा ऐसी अवधि जो ऋणी और न्यास के बीच करार में विनिश्चित की गई है।

(21) “न्यास” का अभिप्राय योजना का संचालन करने के लिए उप-खंड 18 के अंतर्गत सृजित ऋण जोखिम गारंटी निधि न्यास से है।

अध्याय-I

योजना का कार्यक्षेत्र और सीमा

न्यास द्वारा गारंटी

(1) योजना के अन्य उपबंधों के अध्यधीन न्यास, ऐसे पात्र ऋणदाता संस्थान द्वारा न्यास के साथ इस प्रयोजनार्थ किए गए आवश्यक

करार के अंतर्गत समय-समय पर पात्र ऋणी को दिए गए आवास ऋण के संबंध में उक्त आवास ऋण पर गारंटी प्रदान करता है।

(2) न्यास को ऋणदाता संस्थान द्वारा भेजे गए किसी भी प्रस्ताव को स्वीकार करने या अस्वीकार करने का विवेकाधिकार प्राप्त होगा जो कि अन्यथा योजना के मानकों से संतुष्ट हो।

3. योजना के अंतर्गत पात्र आवास ऋण

(1) न्यास द्वारा समय-समय पर यथा निर्णित किसी भी समर्पाशिवक प्रतिभूति और/या तीसरे पक्षकार की गारंटी या ऐसी राशि के बिना न्यास के साथ कोई भी अनुबंध किए जाने के पश्चात् या आवास ऋण के रूप में 5 लाख रुपये से अधिक नहीं आवास ऋण के लिए कम आय आवासीय क्षेत्र के किसी भी पात्र ऋणी को पात्र ऋणदाता संस्थान(ों) द्वारा दिए गए आवासीय ऋणों को न्यास में शामिल किया जाएगा।

बशर्ते कि ऋणदाता संस्थान निम्नलिखित तिमाही अर्थात् जुलाई--सितम्बर, अक्टूबर--दिसम्बर, जनवरी--मार्च और अप्रैल--जून की समाप्ति से पूर्व अप्रैल--जून, जुलाई--सितम्बर, अक्टूबर--दिसम्बर और जनवरी--मार्च तिमाही में स्वीकृत ऋण प्रस्तावों के संबंध में गारंटी कवर के लिए आवेदन करेंगे।

साथ ही यह भी व्यवस्थित है कि, वास्तविक तिथि पर :--

(क) ऋणदाता संस्थान की देयताएं खराब या वसूली संदेहपूर्ण न रही हों; और/या

(ख) ऋणी की वह संपत्ति/परिसम्पत्ति जिसके लिए आवास ऋण स्वीकृत किया गया था, वह संपत्ति समाप्त नहीं की गई है; और/या

(ग) न्यास से इस संबंध में पूर्व सहमति लिए बिना बेकार समझे गए किन्हीं भी डेब्ट या संदेहपूर्ण वसूली के समायोजन के लिए आवास ऋण का उपयोग पूर्ण या अंशत रूप में नहीं किया गया है।

(घ) ऋणी ने उक्त संपत्ति की आवश्यक शुल्क और प्रभारों को चुका दिया है।

(2) न्यास द्वारा यथा निर्दिष्ट विशिष्ट ऋणदाता संस्थानों की उच्चतम सीमा राशि या ऐसी राशि की शर्त पर 5 लाख रुपये के अधिकतम ऋण और प्रति प्राथमिक प्रतिभूति तक पात्र ऋणदाता को किसी भी ऋणदाता संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से और/या अलग-अलग करके आवास ऋण दिया जा सकता है।

(3) पात्र ऋणी से इस आशय का ऋणदाता संस्थान को एक वचन पत्र प्रस्तुत करने की अपेक्षा की जाएगी, कि उसने इस योजना के अंतर्गत शामिल कोई अन्य आवास ऋण का लाभ नहीं उठाया है और न ही उसने सरकार या कोई अन्य सामान्य बीमाकर्ता या कोई संस्थान या कोई अन्य व्यक्ति या बीमा कारोबार से जुड़े किन्हीं भी व्यक्तियों का संगठन, गारंटी या इन्डेमनिटी द्वारा कोई आवास ऋण का लाभ उठाया हुआ है।

4. इस योजना के अंतर्गत पात्र नहीं आवासीय ऋण

इस योजना के अंतर्गत गारंटी के लिए निम्नलिखित आवासीय ऋण प्राप्त नहीं हैं :-

- (1) ऐसे आवासीय ऋण जिनके जोखिम के संबंध में वह सीमा जहां तक उनको इस रूप में शामिल किया गया है, सरकार या कोई अन्य सामान्य बीमाकर्ता या कोई संस्थान या कोई अन्य व्यक्ति या बीमा कारोबार से जुड़े किहीं भी व्यक्तियों का संगठन, गारंटी या इंडेम्यनिटी से अतिरिक्त रूप से शामिल हैं।
- (2) किसी भी ऋणी को स्वीकृत कोई भी आवासीय ऋण जिसको उसने इस योजना के अंतर्गत शामिल कोई आवासीय ऋण या उपरोक्त खंड (1) में उल्लिखित योजनाओं के अंतर्गत और जहां उधारदाता संस्थान ने न्यास द्वारा व्यविस्थित गारंटी की याचना की है या खंड (1) में उल्लिखित योजना के अंतर्गत स्वयं लाभ उठाया है, लेकिन उस ऋण के संबंध में ऋणी की ओर से खंड (1) में उल्लिखित योजना के अंतर्गत या जैसा भी मामला हो, चूक का कोई भी कारण हो, न्यास की देय राशि के किसी भी भाग का भुगतान न किया हो।
- (3) कोई भी आवासीय ऋण जिसको ऋणदाता संस्थान द्वारा समर्पित प्रतिभूति और या तो सरे पक्षकार की गारंटी के प्रति स्वीकृत किया गया है।
- (4) कोई भी आवासीय ऋण जिसको ऋणदाता संस्थान द्वारा “जहां आधार दर लागू है के मामलों में ऋणदाता संस्थानों की आधार दर से 2% अधिकब्ज् या पात्र एजेन्सी श्रेणी के लिए लागू विद्यमान ब्याज दर से अधिक के बजाए ब्याज दर सहित, जो भी सरल है, स्वीकृत किया गया है। तथापि, न्यास उस समय लागू ब्याज दर परिदृश्य, ऋणदाता संस्थानों की आधार दरों और आरबीआई की क्रेडिट नीतियों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर ऐसी उच्चतम सीमा में संशोधन किया जा सकता है।

5. संशोधन और रियायतें

- (1) आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय ने ऐसी योजना में संशोधन, रद्द या परिवर्तन के अपने अधिकार को सुरक्षित रखा हुआ है, तथापि इसमें आने वाली बाध्यताओं या इस योजना के अंतर्गत जारी गारंटी के अंतर्गत उपचित ऐसे संशोधन, रद्दीकरण या परिवर्तन पर जो प्रभाव डालते हों, वह दिनांक जिस पर योजना को अमल में लाया जाता है, प्रभावित नहीं समझा जाएगा।
- (2) इसमें बिना किसी बात के समाविष्ट होते हुए भी, कोई भी मामले जिनमें ऐसे परिवर्तन की तिथि पर गारंटी की याचना नहीं की गई है, के संबंध में योजना की निबंधन और शर्तों में परिवर्तन करने का अधिकार न्यास के पास रहेगा।
- (3) योजना को रद्द किए जाने के मामले में, ऋणदाता संस्थान द्वारा योजना के सेवान 13 के खंड (1) और (2) में निर्दिष्ट प्रावधानों का जब तक पालन नहीं कर लिया जाता, तब तक योजना में शामिल सुविधाओं के संबंध में न्यास के खिलाफ कोई दावा नहीं किया जा सकता।

अध्याय-II

ऋणदाता संस्थान

6. ऋणदाता संस्थान द्वारा निष्पादित किया जाने वाला अनुबंध

योजना में किए गए प्रावधान के लिए ऋणदाता संस्थान द्वारा योजना के अंतर्गत स्वीकृत पात्र सभी आवासीय ऋणों की गारंटी के रूप में शामिल करने हेतु न्यास द्वारा यथा अपेक्षित ऐसे रूप में न्यास के साथ जब तक इसके द्वारा अनुबंध न किया हुआ हो तब तक किसी भी स्वीकृत पात्र आवासीय ऋण के संबंध में ऋणदाता संस्थान गारंटी देने का पात्र नहीं है।

7. ऋणदाता संस्थान पर बाध्य होने वाली योजना के अंतर्गत लगाई गई शर्तें

- (1) न्यास द्वारा दी गई कोई भी गारंटी योजना के प्रावधानों के तहत होगी चूंकि यदि इसको ऐसी गारंटी के साक्ष्य स्वरूप दस्तावेजों में दर्ज कर लिया गया हो।
- (2) ऋणदाता संस्थान जहां तक संभव हो सके, यह सुनिश्चित करेगा कि योजना के अंतर्गत गारंटीशुदा खाते से संबंधित कोई संविदा की शर्तें योजना के प्रावधानों पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालती हैं लेकिन संविदा या किसी भी अन्य दस्तावेज में कोई भी व्यवस्था/प्रावधान न होते हुए, ऋणदाता संस्थान योजना के अंतर्गत लागू शर्तों के संबंध में न्यास के मामले में बाध्य रहेगा।

8. योजना के अंतर्गत ऋणदाता संस्थानों के उत्तरदायित्व

- (1) ऋणदाता संस्थान विवेकपूर्ण बैंकिंग न्याय को उपयोग में लाते हुए आवास ऋण प्रस्तावों का चयन करने में उनके कारोबार विवेक/सामर्थ्य का उपयोग किया जाएगा तथा सामान्य विवेकपूर्ण बैंकिंग सहित ऋणियों के खाते का संवहन किया जाएगा।
- (2) ऋणदाता संस्थान ऋणी के खाते की कड़ी निगरानी रखेगा।
- (3) ऋणदाता संस्थान उत्तम और प्रवर्तन योग्य शर्त में आवासीय ऋण के संबंध में ऋणी से ली गई प्राथमिक प्रतिभूतियों को सुरक्षित रखेगा।
- (4) ऋणदाता संस्थान यह सुनिश्चित करेगा कि आवासीय ऋण और ऋणी के संबंध में गारंटी दावा इस मामले में न्यास यथा निर्दिष्ट ऐसे रूप में और ऐसे तरीके से और ऐसे समय में न्यास के साथ जुड़ा हुआ है और कि ऋणियों के खाते में चूक को सत्यापित करने के लिए इसकी ओर से कोई देरी नहीं हुई है जिसका असर/प्रभाव उच्चतम गारंटी दावों का सामना करते हुए न्यास पर पड़ेगा।
- (5) ऋणदाता संस्थान को न्यास द्वारा गारंटी दावे का भुगतान ऋणी से समस्त बकाया ऋण राशि को वसूल करने के लिए ऋणदाता संस्थान के उत्तरदायित्वों को निभाने के मामले में सामने नहीं आएगा। ऋणदाता संस्थान सभी आवश्यक सावधानियां बरतेगा और अपने द्वारा दिए गए आवास ऋण की समस्त राशि के लिए ऋणी अपने उपाय को बनाए रखेगा तथा न्यास द्वारा यथा परामर्श ऐसी कार्रवाई को सम्मिलित करते हुए बकाया राशि की वसूली के लिए ऐसी आवश्यक कार्रवाई शुरू कर देगा।

(6) ऋणदाता संस्थान ऐसे निदेशनों, जो गारंटी खाते में वसूली को सुसाध्य बनाने के लिए समय-समय पर न्यास द्वारा यथा जारी, या गारंटीदाता के रूप में अपने ब्याज को सुरक्षित रखने के लिए जैसा भी न्यास उपयुक्त समझे न्यास द्वारा यथा जारी होंगे, उन निदेशनों का पालन करेगा और ऋणदाता संस्थान ऐसे निदेशनों का अनुपालन करने के लिए बाध्य रहेगा।

(7) ऋणदाता संस्थान गारंटी खाते के संबंध में देयताओं की वसूली करने में विवेक को उपयोग में लाएगा, और यदि न्यास द्वारा गारंटी नहीं प्रस्तुत की गई है तो सामान्य तरीके से न्यास के ब्याज को सुरक्षित रखने हुए हर तरीके से अपनी कार्रवाई करने के लिए स्वतंत्र है। ऋणदाता संस्थान सामान्य रूप से वह गारंटी, जो गारंटीदाता के रूप में न्यास के ब्याज पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हो, को दूर करने के लिए या तो पूर्व में ही या फिर बाद में अपनी कार्रवाई कर सकता है। ऋणदाता संस्थान विशेष रूप से व्यक्तिगत गारंटी (यां) या सिक्योरिटी की छूट या जो डिस्चार्ज पर प्रभाव डालते हों, कोई भी वायदा या प्रबंध करते हुए न्यास को सूचित करेगा।

9. विवरणियां और निरीक्षण

(1) ऋणदाता संस्थान इस योजना के अंतर्गत किसी भी आवासीय ऋण के संबंध में जैसा न्यास अपेक्षित समझे, उसी के अनुसार ऐसे विवरण प्रस्तुत करेगा और ऐसी सूचना प्रदान करेगा।

(2) ऋणदाता संस्थान न्यास को वह सभी दस्तावेज, प्राप्तियां, प्रमाण-पत्र और अन्य अपेक्षित दस्तावेज भी प्रस्तुत करेगा और ऐसे दस्तावेज, प्राप्तियां, प्रमाण-पत्र और अन्य दस्तावेज सत्य हैं, जैसे संदर्भों में पुष्टि करेगा, व्यवस्था करेगा कि कोई भी दावा खारिज नहीं होगा और विश्वास में कोई भी कार्य करने के लिए ऋणदाता संस्थान या उसके कोई भी अधिकारी के लिए कोई भी देयता नहीं होगी।

अध्याय-III

गारंटी, शुल्क और दावे

10. गारंटी की सीमा

न्यास निमानुसार गारंटी प्रदान करेगा :—

श्रेणी	अधिकतम गारंटी सीमा जहाँ आवासीय ऋण निमानुसार है :
व्यक्ति विशेष	2 लाख रुपये तक या ऐसी राशि जिसको न्यास द्वारा समय-समय पर निर्धारित किया जाता है।
ऋणी द्वारा आवासीय ऋण	स्वीकृत आवासीय ऋण राशि के 90% तक उच्चतम सीमा की शर्त राशि का 90%
2 लाख रुपये तक या ऐसी राशि जिसको न्यास द्वारा समय-समय पर निर्धारित किया जाता है।	5 लाख रुपये तक या ऐसी राशि जिसको न्यास द्वारा समय-समय पर निर्धारित किया जाता है।
स्वीकृत आवासीय ऋण राशि के 90% तक उच्चतम सीमा की शर्त राशि का 90%	85% तक उच्चतम सीमा की शर्त राशि का 85%

(1) गारंटी की अवधि इस योजना की धारा 2 के खंड (20) के अंतर्गत परिभाषित अनुसार होगी।

11. गारंटी शुल्क

(1) आवास ऋण के प्रथम संवितरण की तिथि से 30 दिन अथवा गारंटी मांग सलाह की तिथि से 30 दिन, जो भी बाद में हो

अथवा न्यास द्वारा यथा निर्धारित तिथि को, गारंटी प्राप्त करने वाले संस्थान द्वारा, कुल ऋण राशि के 1% की निर्दिष्ट दर से अथवा आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय से समय-समय पर अनुमोदन प्राप्त करने के बाद न्यास द्वारा यथानिर्दिष्ट दर पर एक बार गारंटी शुल्क सीधे न्यास को दिया जाएगा।

(2) सीधे संसाधन शुल्क के रूप में लाभभोगी से शुल्क नहीं लिया जाएगा। लेकिन बैंक 50 प्रतिशत गारंटी शुल्क को कवर करने के लिए ब्याज दर को बदल सकते हैं। ऋणदाता संस्थान द्वारा प्रभारित प्रीमियम का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत कोई वार्षिक सेवा शुल्क नहीं लिया जाएगा।

(3.) कुछेक मामलों को छोड़ कर ऋणदाता संस्थान द्वारा न्यास को एक बार चुकाई गई गारंटी शुल्क वापस नहीं की जाएगी, जैसे कि :—

(क) अधिक राशि का प्रेषण

(ख) उसी ऋण आवेदन के प्रति एक बार से अधिक किया गया प्रेषण

(ग) देय नहीं गारंटी शुल्क

(घ) अग्रिम चुकाई गई गारंटी का शुल्क लेकिन इस योजना के अंतर्गत गारंटी कवर के लिए अनुमोदन रहित आवेदन आदि।

12. गारंटी देना

(1) ऋणदाता संस्थान आवासीय ऋण के संबंध में गारंटी देगा :— जहाँ समाप्त लॉक-इन अवधि से पूर्व एनपीए के रूप में, लॉक-इन अवधि की समाप्ति के एक वर्ष में ऋण वर्गीकृत है, तो उस मामले में; या समाप्त लॉक-इन अवधि के पश्चात् एनपीए के रूप में, जहाँ एनपीए के रूप में वर्गीकृत रहे ऋण एक वर्ष के अन्दर, ऋण वर्गीकृत है, तो उस मामले में। बशर्ते कि निम्नलिखित शर्तें पूरी होती हों :—

(क) ऐसे अवास ऋण के संबंध में गारंटी जो कि खाते के एनपीए हो जाने के समय लागू थी।

(ख) लॉक-इन अवधि समाप्त हो चुकी है;

(ग) आवास ऋण के संबंध में ऋणदाता संस्थान को देय और देययोग्य राशि को चुकाया नहीं गया है और देयताओं को गैर-निष्पादन परिस्परियों के रूप में ऋणदाता संस्थान द्वारा वर्गीकृत किया गया है। बशर्ते कि, ऋणदाता संस्थान न्यास द्वारा जारी मार्गनिर्देशिकाओं का उल्लंघन करने या कार्रवाईयों के लिए/लिए गए निर्णयों के प्रतिकूल उपचित उक्त आवास ऋण के संबंध में यदि हानि होती है, तो उस आवास ऋण के संबंध में न्यास पर कोई दावा नहीं करेगा और न ही दावा करने का पात्र होगा।

(घ) आवास ऋण वापस ले लिया गया है और कानूनी प्रक्रिया के अंतर्गत वसूली प्रक्रिया की कार्रवाई शुरू कर दी गई

(1) है। सीजीएस के अंतर्गत दावे की कार्रवाई के प्रयोजन से विधिक कार्रवाईयाँ शुरू करने के रूप में एसएआरएफएसआई अधिनियम, 2002 के अंतर्गत ऋण वापसी नेटिस जारी नहीं किया जा सकता। पात्र ऋणदाता संस्थानों को उपरोक्त अधिनियम की धारा 13(4) में निर्दिष्ट किए गए के अनुसार आगामी कार्रवाई करने का परामर्श दिया जाता है जिसमें वह एक प्रतिभूति क्रेडिटर गारंटी राशि की पहली किश्त के लिए दावे को प्रस्तुत करने से पूर्व उसमें दर्शाएं गए चार साधनों के अलावा एक या अधिक वसूली साधनों को अपना सकता है। उपरोक्त अधिनियम की धारा 13(4) में दर्शायी गई किसी भी कार्रवाई को करने की स्थिति में यदि ऋणदाता सक्षम नहीं है, तो उस मामले में वह किसी अन्य लागू कानून के तहत नये सिरे से वसूली कार्रवाई और न्यास से पहली किश्त का दावा करने की अपेक्षा कर सकते हैं।

(2) दावा ऋणदाता संस्थान द्वारा उस तरीके से किया जाए, जैसा कि न्यास द्वारा इस मामले में विनिर्दिष्ट किया हुआ हो।

(3) किए जा रहे दावे की शर्त पर दावे का निपटान करने के लिए आवेदन करते हुए 60 दिनों के अन्दर ऋणदाता संस्थान द्वारा माँग (इन्वोकेशन) दावे पर गारंटीशुदा राशि के 75 प्रतिशत का भुगतान न्यास करेगा अन्यथा सभी मामलों में क्रमानुसार और पूर्ण माना जाएगा। गारंटीशुदा राशि का शेष 25% राशि ऋणदाता संस्थान द्वारा वसूली कार्रवाईयों के समेकन पर चुकाया जाएगा। चुकाए जा रहे दावे पर न्यास को संबंधित ऋणी के संबंध में लागू गारंटी के मामले में इसकी सभी देयताओं से डिस्कार्ड किया हुआ समझा जाएगा।

(4) चूक के मामले में ऋणदाता संस्थान न्यास की अनुमति लेकर ऋणीओं की परिसम्पत्तियों पर कब्जा करने के लिए अपने अधिकार, यदि कोई हों, तो उनको उपयोग में ला सकता है और ऐसी परिसम्पत्तियों या अन्यथा से वसूल की गई राशि यदि कोई हो, तो उसको पहले गारंटीशुदा राशि के शेष 25% इसके दावे से पूर्व न्यास को दिया जाएगा। यदि न्यास ऐसा चाहे, तो यह गारंटीशुदा राशि का शेष 25 प्रतिशत का भुगतान करके परिसम्पत्ति को बनाए रख सकता है और जैसा भी मामला हो, अगले पात्र ऋणी को दे सकता है।

(5) ऋणदाता संस्थान विद्यमान बैंक दर से ऊपर 5% की दर पर दण्ड ब्याज सहित न्यास द्वारा रिलीज दावे को वापस करने का पात्र हो सकेगा, यदि आवास ऋण के मूल्यांकन/नवीकरण/अनुबर्ती कार्रवाई/संवहन के मामले में सामने आयी गंभीर विसंगतियों, या जहाँ दावे का भार एक से ज्यादा है या जहाँ कहीं भी दावों को सैटलमेंट के लिए ऋणदाता संस्थानों की ओर से कोई वास्तविक सूचना का अतिक्रमण किया जाता है के मामले में न्यास द्वारा ऐसा रिकाल किया जाता है। ऋणदाता दावे की वापसी की तिथि तक न्यास द्वारा किए गए दावे की प्रारंभिक रिलीज की तिथि से न्यास द्वारा जब भी मांग की जाती है उसको ऐसे दण्ड ब्याज का भुगतान करेगा।

(6) ऋणदाता संस्थानों के प्रभावी प्रचालन अधिकारियों के अलावा, ब्रान्चों या कार्यालयों से सीधे ही प्राप्त गारंटी दावे पर विचार नहीं किया जाएगा।

13. अधिकारों का उत्तराधिकार और चुकताएं गए दावों के मामले में वसूलियाँ

(1) ऋणदाता संस्थान न्यास को वसूली, वसूलीकरण के लिए अपने प्रयासों का विवरण और समय-समय पर यथा अपेक्षित माँग तथा अपेक्षित विवरणों को प्रस्तुत करेगा। ऋणदाता संस्थान न्यास की ओर से तथा इसकी अपनी तरफ से ऋणी को दिए गए आवासीय ऋण के अलग से सृजित परिसम्पत्तियों पर लियन को अपने पास रखेगा। न्यास किसी भी उत्तराधिकार अधिकार का उपयोग नहीं करेगा एवं कि परिसम्पत्तियों पर कब्जा, परिसम्पत्तियों की बिक्री आदि को समिलित करते हुए देयताओं की वसूली का उत्तराधित्व ऋणदाता संस्थान के पास रहेगा।

(2) ऋणदाता संस्थान को विभिन्न विशेष तथा पृथक डेव्ह रखने के मामले में एवं इसका भुगतान किसी भी एक या ज्यादा को करने की दिशा में, चाहे न्यास की गारंटी में वह खाता शामिल है जिसमें भुगतान किया जाता है या नहीं, ऐसे भुगतान इस खण्ड के प्रयोजन से किए जाएं, तो उनको गारंटी द्वारा शमिल ऋण के लिए ऋणदाता संस्थान द्वारा समुचित समझा गया माना जाएगा एवं ऐसे ऋणी द्वारा यथा संकेतिक प्रत्याशा की पद्धति के बावजूद एवं जिसके संबंध में दावा किया गया है एवं चुकता कर दिया गया है या वह पद्धति जिसमें ऐसे भुगतान वास्तविक रूप में प्रत्याशित हैं।

(3) न्यास को चुकाए जाने वाली देय एवं वसूल प्रत्येक राशि का भुगतान बिना किसी देरी के किया जाएगा, एवं यदि न्यास को देय कोई भी राशि वह तिथि जिसको यह पहली वसूली होनी थी, से 30 दिनों की अवधि से आगे चुकता रहित रह जाती है, तो 30 दिनों की उक्त अवधि की समाप्ति के पश्चात् शेष रहे भुगतान की अवधि के लिए 4% अपरोक्त बैंक दर पर ऋणदाता संस्थान द्वारा न्यास को चुकाई जाएगी।

अध्याय IV

निधि न्यास कोष

14. निधि न्यास कोष

(1) न्यास के पास निम्न आय आवास हेतु ऋण जोखिम गारंटी योजना के प्रचालन हेतु एक न्यास के रूप में न्यासी बोर्ड द्वारा रखे जाने वाले व्यवस्थापक द्वारा अंशदान किया गया एक लाख रुपए का प्रारंभिक कोष होगा।

(2) प्रारंभिक कोष में और अंशदान व्यवस्थापक और राज्य सरकारों जो अपनी स्लम आबादी के अनुसार इससे लेंगे, अर्थात् व्यवस्थापक द्वारा समेकित रूप से एक हजार करोड़ रुपए और राज्य सरकारों द्वारा दो सौ करोड़ रुपए।

(3) व्यवस्थापक और राज्य सरकारों समय-समय पर वित्त मंत्रालय के परामर्श से आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय द्वारा यथा निर्णित अनुपात में न्यास के कोष में और अंशदान कर सकते हैं।

(4) कोष के लिए अतिरिक्त अंशदान राज्य सरकारें, गारंटी फीस, निवेशों पर रिटर्न आदि से आएगा।

(5) भारत सरकार कोष के लिए आवश्यक बजटीय अनुदान प्रदान करते हुए योजना के समग्र प्रचालन में घाटे को पूरा करेगी।

(6) उक्त कोष के लिए समय-समय पर किए जाने वाले किसी भी प्रावधान या तरीके से आगामी दोनों या सभी अंशदानों के साथ-साथ परिसंपत्तियों, और उनके किरायों, उनसे लाभों तथा आय तथा स्टॉक, निधि एवं इसको प्रदर्शित करती संपत्तियों को इसमें से निर्धारित शक्तियों और प्रावधानों तथा उद्देश्यों और प्रयोजनों के लिए न्यास पर बोर्ड आफ ट्रस्टी द्वारा धारित किया जाएगा।

(7) कोष निधि के निवेशों से आने वाली सभी आय को योजना के उद्देश्यों को पूर्ण करने की दिशा में खर्च किया जाएगा, और वर्ष भर में प्रभावित बचतों को कोष निधि में ट्रांसफर किया जाएगा।

15. ऋणदाता संस्थानों से प्राप्त राशि का उपयोग

ऋणदाता संस्थानों से प्राप्त राशि का उपयोग उसी क्रम में किया जाएगा जिसमें गारंटी फीस, दण्ड ब्याज और अन्य प्रभार आते हैं। यदि उसी तिथि को गारंटी फीस और दण्ड ब्याज देय हैं, तो उनका उपयोग पहले गारंटी फीस की दिशा में किया जाएगा और फिर दण्ड ब्याज की दिशा में किया जाएगा और बाद में पात्र आवासीय ऋण के संबंध में देय योग्य किन्हीं भी अन्य प्रभारों की दिशा में किया जाएगा।

16. गारंटी माँगे जाने के परचात आवास ऋण के संबंध में ऋणदाता संस्थान द्वारा जुराई गई राशि का उपयोग।

जहाँ न्यास के उत्तरवर्ती इस योजना की धारा 13 में समाविष्ट प्रावधानों के अनुसरण में चूक राशि की दिशा में उधार संस्थान को राशि जारी की है, तो ऋणदाता संस्थान अपने द्वारा चलाई गई वसूली प्रक्रियाओं के उत्तरवर्ती राशि को वसूलेगा, इस राशि की वसूली के लिए इसके द्वारा खर्च की गई लागत के प्रति समायोजन के पश्चात् न्यास के पास ऋणदाता संस्थान द्वारा यह राशि जमा करवाई जाएगी। न्यास इसका उपयोग पहले ऋणदाता संस्थान द्वारा वसूल की गई राशि की दिशा में आवास ऋण के संबंध में लम्बित फीस, दण्ड ब्याज, और न्यास को देय अन्य प्रभार, यदि कोई हों, तो उनको सम्मिलित करते हुए किन्हीं भी देयताओं की दिशा में करेगा और फिर शेष राशि, यदि कोई हो, तो उसका उपयोग ऐसे तरीके से करेगा जिससे कि न्यास और ऋणदाता के बीच आवास ऋण की वसूली में घाटे के मामले में क्षति की प्रतिपूर्ति की जा सके जिसका अनुपात क्रमशः: आवास ऋणों के मामले में 2 लाख रुपये तथा 90% और 10% होगा, और 2 लाख रुपये से अधिक तथा 5 लाख रुपये तक के आवासीय ऋण के मामले में क्रमशः: 85% तथा 15% होगा।

अध्याय V

ऋण जोखिम गारंटी निधि न्यास

17. न्यास का नाम और पंजीकरण

ऋण जोखिम गारंटी निधि योजना को लागू करने के लिए भारतीय न्यास अधिनियम, 1882 को अंतर्गत एक ऋण जोखिम गारंटी निधि न्यास का गठन किया जाएगा और इसका प्रबंधन बोर्ड आफ ट्रस्टी द्वारा किया जाएगा।

18. उद्देश्य

न्यास के उद्देश्य और प्रयोजन इस प्रकार हैं

(1) ऋणदाता संस्थानों द्वारा किसी भी समपार्श्वक प्रतिभूति के बिना स्वीकृत और संवितरित 5 लाख रुपये तक के किफायती आवास ऋण के लिए गारंटी देना और/या सैटलकर्ता द्वारा यथा निर्णित इंडब्ल्यूएस/एलआईजी श्रेणियों में नये या विद्यमान ऋणीयों को तीसरा हिस्सा (थर्ड पार्ट) गारंटी देना और न्यास द्वारा समय-समय पर यथा निर्णित ऋणदाता संस्थानों से गारंटी फीस/अन्य प्रभार की उगाही करना।

(2) गारंटी शुदा ऋणों के प्रतिभूतिकरण का जिम्मा लेना और बोर्ड आफ ट्रस्टी द्वारा यथा निर्णित तरीके से या तो सीधे ही या फिर अन्यथा यथा आवश्यक अन्य सभी कार्य करना या जिम्मेदारियां निभाना;

(3) स्टाफ नियुक्त करना, अर्जित करना, संपत्ति को रखना और निपटना, न्यास के समुचित तथा कुशल प्रबंधन के लिए आवश्यक सभी खर्च करना, और इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यथा आवश्यक अन्य सभी कार्य करना या जिम्मेदारियां निभाना या संचालन करना;

(4) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दानकर्ताओं/एजेंसियों से अनुदान, दान, अंशदान प्राप्त करना;

(5) वह सभी कार्य करना या जिम्मेदारियां निभाना जो इसमें प्रदत्त उद्देश्यों के लिए यथा प्रासंगिक यथा आवश्यक हों;

उपरोक्त उद्देश्यों पर अमल करते हुए यह न्यास कम आय आवास के लिए ऋण जोखिम गारंटी निधि योजना का क्रियान्वयन करेगा।

19. बोर्ड आफ ट्रस्टी

(1) न्यास का प्रबंधन और प्रशासन निम्नलिखित सदस्यों (इसमें बाद में “बोर्ड आफ ट्रस्टी” के नाम से जाना जाएगा) को सम्मिलित करते हुए बोर्ड आफ ट्रस्टी द्वारा चलाया जाएगा। बोर्ड आफ ट्रस्टी का संविधान निम्नानुसार है :--

(क) सचिव (आवास और शहरी गरीबी उपशमन) न्यास का पदन अध्यक्ष होगा

(ख) संयुक्त सचिव (आरएवाई) पदन उपाध्यक्ष होगा

(ग) संयुक्त सचिव वित्तीय सेवाएं विभाग - सदस्य

(घ) संयुक्त सचिव व्यव विभाग - सदस्य

(ड) अध्यक्ष और प्रबन्ध निदेशक, हाऊसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन - सदस्य

(च) अध्यक्ष और प्रबन्ध निदेशक, नैशनल हाऊसिंग बैंक - सदस्य

(छ) अध्यक्ष और प्रबन्ध निदेशक, स्माल इंडस्ट्री डेवलपमेंट बैंक आफ इण्डिया - सदस्य

(ज) अध्यक्ष, इण्डियन बैंक एसोसिएशन - सदस्य

(झ) आवास वित्त/बैंकिंग में अनुभवी - आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय, केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित किया जाएगा।

(११) न्यास का प्रमुख कार्यकारी अधिकारी सदस्य सचिव होगा।

(२) अपनी पदेन क्षमता में उपरोक्त के अनुसार नियुक्त ट्रस्टी जब तक उस कार्यालय का प्रभार संभाले हुए है, तब तक केवल ट्रस्टी के रूप में रहेगा और उस कार्यालय को छोड़ने पर उसका उत्तराधिकारी बिना किसी आगामी एकट या डीड का ट्रस्टी बना रहेगा।

(३) सेटलर, यदि आवश्यक हो, तो नये कॉर्पोरेट सदस्य या अन्यथा को सम्मिलित करते हुए बोर्ड ऑफ ट्रस्टी के गठन में परिवर्तन कर सकता है और उपरोक्त खण्ड (१) के अन्तर्गत यथा कथित बोर्ड ऑफ ट्रस्टी के रूप में विद्यमान सदस्यगण ऐसे समय तक ऐसे सदस्य को बोर्ड ऑफ डायरेक्टर के सदस्यों के रूप में विचार किया जा सकता है।

(४) निधि का ट्रस्टी भारत का नागरिक होगा। ट्रस्टी का पद रिक्त हो जाएगा यदि वह स्थायी रूप से भारत छोड़ देता है या यदि बीमारी की वजह से अक्षम या मानसिक असमर्थता के कारण सरकार के मतानुसार ट्रस्टी के रूप में कार्य करने में अक्षम या अकुशल है।

(५) कोई भी ट्रस्टी सरकार को लिखित में सात दिनों को नोटिस देने के पश्चात् किसी भी समय सेवानिवृत हो सकता है और यदि वह बोर्ड ऑफ ट्रस्टी का चेयरपर्सन है, नोटिस की एक प्रति चेयरपर्सन को भेजी जाएगी।

20. बोर्ड ऑफ ट्रस्टी की बैठक

(१) बोर्ड ऑफ ट्रस्टी की बैठक चेयरपर्सन के निदेशनों पर प्रमुख कार्यकारी अधिकारी द्वारा बुलाई जाएगी।

(२) प्रत्येक ट्रस्टी को न्यास की बैठक की सूचना दी जाएगी।

(३) बोर्ड ऑफ ट्रस्टी जब भी आवश्यक समझेंगे, बैठक बुलाएंगे और छह महीनों में कम से कम एक बार।

(४) बोर्ड ऑफ ट्रस्टी में रिक्तियाँ बोर्ड ऑफ ट्रस्टी की किन्हीं भी कार्यवाइयों को इनवेलिडेट नहीं करेंगी।

(५) बोर्ड ऑफ ट्रस्टी की बैठक का कोरम तीन या इसकी कुल सदस्य संख्या का एक तिहाई, जो भी उच्चतम है, वह होगा।

(६) बोर्ड ऑफ ट्रस्टी की बैठकों की अध्यक्षता चेयरपर्सन या उसकी अनुपस्थिति में वाइस-चेयरपर्सन करेगा।

(७) बोर्ड ऑफ ट्रस्टी की बैठक में निर्णय उपस्थित ट्रस्टी और वोटिंग के बहुमत के बोट द्वारा की जाएगी। बोट की समानता के मामले में बैठक का चेयरपर्सन का बोट द्वितीय विकल्प या निर्णायक बोट होगा।

(८) चेयरपर्सन विशेषज्ञों या अनुभवकर्ताओं को बोर्ड ऑफ ट्रस्टी की बैठक में विशेष रूप से आमंत्रित करेगा जैसा वे आवश्यक समझे क्योंकि उन्हें बोट देने का अधिकार नहीं है।

(९) न्यासी बोर्ड के कार्य

(१) न्यासी बोर्ड न्यास के कार्यों का प्रबंध और व्यवस्था करेगा तथा उसके प्रासंगिक सभी मामलों पर तथा न्यास का समग्र पर्यवेक्षण और अधीक्षण होगा।

(२) न्यासी बोर्ड न्यास के उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करेगा तथा योजना का क्रियान्वयन करायेगा।

(३) न्यासी बोर्ड को, किसी भी दान अथवा अंशदान (चाहे वह दान या अंशदान नकदी में हो या चल अथवा अचल सम्पत्ति के रूप में हों) को भारत में तथा/अथवा विदेश में स्थित किसी भी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों, एजेंसियों, संस्थानों, कार्पोरेट निकाय आदि से, ऐसी शर्तों पर जिन्हें वह उपयुक्त समझें, स्वीकार करने की शक्ति और विवेक होगा, बशर्ते कि जिन शर्तों पर ऐसे दान अथवा अंशदान स्वीकार किए जाएंगे, वे किसी भी प्रकार न्यास के उद्देश्यों के साथ असंगत अथवा विरुद्ध नहीं होंगे तथा न्यास के नाम के साथ कोई भी नाम नहीं जोड़ा जाएगा।

(४) उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए न्यासी बोर्ड को वित्तीय समझदारी और पारदर्शिता के प्रति सम्पत्तियों को अर्जित करने, रखने तथा निपटाने का विवेक और शक्तियां होंगी चाहे चल या अचल तथा संदर्भित हों।

(५) न्यासी बोर्ड, इसमें उपरोक्त प्रावधानों के प्रति, सम्पत्तियों, परिसम्पत्तियों तथा न्यास की निधियों तथा ऐसे सभी विनासों (एंडोवर्मेंट), तथा सरकारी अनुदानों और ऐसे अन्य स्रोतों से, जहां से वे प्राप्त कर सकें, को, जिसे वे उपयुक्त समझे ऐसी धनराशि न्यास के रखरखाव और सम्पत्तियों के प्रति खर्च करेंगा। सभी किराये और कर अदा करेगा, खंड 34 में वर्णित न्यासियों द्वारा लिए गए किन्हीं भी उधारों के प्रति ऐसी धनराशि की वापसी अदायगी करेगा और उन सभी खर्चों को वहन करेगा जिन्हें न्यासी अपने विवेक से न्यास के समुचित और सक्षम प्रबंधन के लिए आवश्यक समझे, और विशेषतः सभी स्टाफ और सेवाकार्मियों के बेतन और भत्तों को अदा करेगा, पुस्तकों, उपकरणों और फर्नीचर की खरीद करेगा, स्टाफ की भविष्य निधि, ग्रेचुयी, पेंशन आदि के लिए प्रबंधन का अंशदान करेगा।

(६) न्यासी बोर्ड, किसी भी ठेके के निष्पादन, वचन पत्र, स्टॉक, शेयर प्रमाण पत्र, प्रतिभूतियों तथा न्यास के नाम से दर्ज या के नाम से धारित या हस्तागत वस्तुओं के स्वामित्व के दस्तावेजों के पृष्ठांकन और अंतरण तथा बिलों के आहरण, स्वीकार करने और पृष्ठांकन अथवा अन्य निर्देशों के विनियम तथा अन्य सभी लेखों, प्राप्तियों, दस्तावेजों अथवा कागजातों पर हस्ताक्षर करने के लिए न्यास की ओर से किसी भी खाते को खोलने और चलाने के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी अथवा अन्य किसी अधिकारी को प्राधिकृत करेगा।

(७) न्यासी बोर्ड ऐसे उद्देश्यों के लिए जिसे वह उपयुक्त समझे अंशतः न्यासी बोर्ड के सदस्यों को मिलाकर और सरकारी संस्थानों, वाणिज्यिक बैंकों, आवास वित्त कम्पनियों का

प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों सहित अंशतः अन्य व्यक्तियों को मिलाकर ऐसी सलाहकार समितियों का गठन कर सकता है। इस प्रकार गठित सलाहकार समितियों के गैर-सरकारी सदस्यों को ऐसे शुल्क और भत्ते दिए जाएंगे जो ऐसी समितियों की बैठकों में शामिल होने के लिए न्यासी बोर्ड द्वारा निर्धारित किए जाएंगे।

(8) न्यास को आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय के पूर्व अनुमोदन से नीतिगत मार्गदर्शी सिद्धांतों को निर्धारित करने की शक्ति होगी तथा उसके सुगम क्रियाकलाप के लिए निर्णय लेगा। उसे गारंटी फीस को आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय, भारत सरकार के पूर्व अनुमोदन से, यदि आवश्यक हुआ तो बदलने की शक्ति होगी।

22. न्यास के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के कार्य

(1) न्यास के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर न्यासी बोर्ड द्वारा सौंपी गई शक्तियों के अनुसार मुख्य कार्यकारी अधिकारी न्यास के कार्यों को करेगा तथा न्यास के दैनिक कार्यों की देखरेख करेगा।

(2) मुख्य कार्यकारी अधिकारी के माध्यम से न्यासी चला सकता है अथवा उस पर बाद किया जा सकता है, जो न्यास की ओर से यथा आवश्यक शपथ पत्रों, दस्तावेजों, बाद पत्रों, लिखित विवरणों, वकालतनामा तथा ऐसे अन्य दस्तावेजों अथवा कागजातों पर हस्ताक्षर करेगा।

23. स्टॉफ

न्यास की व्यवस्था राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा की जाएगी तथा कानूनी सहायता यदि कोई आवश्यक हो तो आवास और शहरी विकास निगम से प्राप्त की जाएगी।

24. कार्यालय कर्मियों के रूप में न्यासियों को भत्ते

यदि किसी समय कोई न्यासी न्यास के पूर्णकालिक कार्यालय कर्मी के रूप में कार्य करता है तो न्यासी बोर्ड अपने विवेक से जैसा वह उचित समझे ऐसा पारिश्रामिक अथवा भत्ते अदा करेगा।

25. लेखा परीक्षा

(1) न्यास के खाते चार्टड अकाउंटेंट अथवा चार्टड अकाउंटेंट जिन्हें भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की सिफारिशों पर न्यासी बोर्ड द्वारा नियुक्त किया जाएगा, की फर्म द्वारा प्रतिवर्ष लेखा परीक्षा की जाएगी। ऐसे लेखा परीक्षक की अवधि और पारिश्रामिक न्यासी बोर्ड द्वारा निर्धारित की जाएगी।

(2) न्यास के लेखा परीक्षित खाते न्यासी बोर्ड इन उद्देश्यों के लिए बुलाई गई बैठक में अंगीकृत किए जाएंगे और उसकी एक प्रति लेखा परीक्षा रिपोर्ट के साथ प्रत्येक निर्णयिक को पृथक रूप से ऐसे अंगीकरण की एक माह की अवधि के बीच प्रस्तुत किए जाएंगे।

26. क्षतिपूर्ति

(1) न्यासी बोर्ड का प्रत्येक सदस्य द्वारा स्वयं जान बूझकर या इच्छा से की गई चूक या गलती को छोड़कर अपनी डूरी के निवाह

करने के संबंध में किए गए सभी खर्चों और नुकसानों की न्यास द्वारा क्षतिपूर्ति की जाएगी।

(2) कोई भी ट्रस्टी स्वयं द्वारा किए गए कार्य तथा स्वयं के अधीनस्थ किसी भी सम्पत्ति के संबंध में, को छोड़कर न्यासी द्वारा किए गए विश्वास भंग के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

27. निर्णयिक की शक्तियां

(1) आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय, भारत सरकार न्यास का निर्णयिक होगा। वह न्यास को प्रोन्त और समाप्तेलित करेगा। वह न्यासियों को नियुक्त करने तथा हटाने के प्राधिकार को संरक्षित रखेगा, और उनके पास समय-समय पर नीति निर्देशों को जारी करने की शक्तियां होंगी।

(2) न्यास के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय के अनुमोदन से नियुक्त किया जाएगा।

(3) इसके खंड 30 के प्रावधान के प्रति न्यास अप्रतिसंहरणीय है विषय जैसा कि ऊपर बताया गया है इस घोषणा के नियमों और शर्तों को निर्णयिक द्वारा प्रतिवर्तित या संशोधित किया जा सकता है।

बशर्ते कि इसमें पहले निर्धारित न्यास के उद्देश्यों के प्रतिकूल कोई भी संशोधन वैध और प्रभावी नहीं होगा।

(4) उपरोक्त खंड (2) की शर्तों के अनुसार

(क) निर्णयिक किसी भी समय पर इसके बाद प्रतिसंहरणीय या अप्रतिसंहरणीय विलेख या उसके प्रति इस शक्ति या सम्पत्ति के लिए अभिव्यक्त रूप से संदर्भित कार्य द्वारा ऐसे नए अथवा अन्य न्यासियों को न्यास निधि के संबंध में नियुक्त करेगा, जैसा कि वे उचित समझें।

(ख) निर्णयिक समय-समय पर न्यासी बोर्ड के संविधान, कार्य करने के संबंध में उनकी शक्तियां तथा नियम और विनियमों और सभी मामले जिनके संबंध में इस घोषणा में प्रावधान किए गए हैं, जैसे भी वो उचित समझे जाएं, को मिलाकर इस घोषणा के प्रावधानों में परिवर्तन कर सकता है।

28. निरीक्षण

न्यास को, जहां तक योजना के उद्देश्यों के लिए आवश्यक हो, निरीक्षण करने का अधिकार होगा अथवा ऋणदाता संस्थान के, तथा ऋणदाता संस्थान से किसी ऋणी की खाता बहियों तथा अन्य रिकार्डों (अग्रिमों के आचरण के संबंध में सामान्य निर्देशों को शामिल करते हुए निर्देशों या नियमावली या परिपत्रों सहित) की प्रतियां मांगने का अधिकार होगा। यह निरीक्षण या तो न्यास के अधिकारियों के माध्यम से या निरीक्षण के उद्देश्य से न्यास द्वारा नियुक्त किसी अन्य व्यक्ति/संस्थान द्वारा किया जाएगा। प्रत्येक अधिकारी या ऋणदाता संस्थान के अन्य कर्मचारी या ऋणी, जो ऐसा करने की स्थिति में हो, वह न्यास के अधिकारियों को या निरीक्षण हेतु नियुक्त व्यक्ति, जो भी हो, को खाता बहियां तथा अन्य रिकार्ड और सूचना, जो उसके कब्जे में हो, को उपलब्ध कराएगा।

29. न्यास की समाप्ति

यदि न्यास के उद्देश्य, जिसके लिए इसे बनाया गया है, असफल हो जाते हैं तथा उन्हें न्यासी मंडल द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता, तो न्यास को समाप्त कर दिया जाएगा। न्यास की समाप्ति पर, न्यास निधि पर पहला दावा व्यवस्थापक (आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय) द्वारा किया जाएगा और/या बकाया का भुगतान करने के बाद, शेष न्यास निधि भारत की संचित निधि में लौट दी जाएगी।

30. क्रियान्वयन और प्रचालन लागत

- (1) प्रशासनिक, इंफ्रास्ट्रक्चर तथा कम्प्यूटरीकरण सहित सभी आरंभिक स्थापना लागत आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय, भारत सरकार अथवा किसी अन्य संगठन के साथ किए गए व्यवस्था करार के अनुसार प्रदान की जाएगी।
- (2) योजना की पूरी प्रचालन लागत को ऋणदाता संस्थान से न्यास द्वारा प्रभारित गारंटी फीस सहित न्यास की आय में से पूरा किया जाएगा।

31. कुछ मामलों में न्यास का दायित्व समाप्त करना

- (1) यदि योजना के अंतर्गत किसी पात्र आवासीय ऋण गारंटी के संबंध में ऋणी के दायित्व को ऋणदाता संस्थान के प्रति अंतरित या किसी अन्य ऋणदाता को सुपुर्द किया जाता है तथा यदि ऋणी की पात्रता की शर्तें तथा सुविधा की मात्रा और अन्य कोई नियम और शर्तें, यदि कोई, जिसके प्रति इस योजना के अंतर्गत आवासीय ऋण की गारंटी दी जा सकती है, वे कथित अंतरण या सुपुर्दगी के बाद संतुष्ट नहीं हैं, तो आवासीय ऋण के संबंध में गारंटी को कथित अंतरण और सुपुर्दगी की तारीख से समाप्त माना जाएगा।
- (2) यदि ऋणी किसी भी कारण से इस योजना के अंतर्गत किसी आवासीय ऋण के प्रदान किए जाने के लिए पात्र हो जाता है तो योजना के अंतर्गत ऋणदाता संस्थान द्वारा उसे प्रदान किए गए आवासीय ऋण के संबंध में न्यास का दायित्व, उस तारीख को जब ऋणी इस प्रकार अपात्र हो जाता है, ऋणी का ऋणदाता संस्थान के प्रति दायित्व सीमित होगा, बर्शेंत तथापि योजना के अंतर्गत न्यास के दायित्व पर सीमा को निर्धारित नहीं कर दिया जाता। फिर भी, संयुक्त ऋणीओं में से किसी एक की मृत्यु के होते हुए भी यदि ऋणदाता संस्थान जीवित भागीदार या जीवित ऋणी या ऋणीओं को आवासीय ऋण जारी रखने का पात्र है तो जैसी भी मामला हो और यदि आवासीय ऋण पहले ही गैर-निष्पादन परिसम्पत्ति नहीं बना है, तो ऐसे आवासीय ऋण के संबंध में गारंटी को समाप्त हुआ नहीं माना जाएगा जैसा कि इस पैराग्राफ में दिया गया है।

32. निवेश

न्यास निवेश की ऐसी प्रतिभूतियों/माध्यमों में निवेश कर सकता है या कोर्पस निधि या अन्य किसी निधि या खाते में उपलब्ध राशि को शीघ्रावधि राशि या अन्य राशि बाजारों में उधार दे सकता है जिनकी वित्तीय समझदारी के सिद्धान्तों पर सक्रिय न्यासी बोर्ड द्वारा यथा अनुमोदित ऐसे प्रारूप में न्यास के उद्देश्यों को चलाने के लिए इस समय आवश्यकता नहीं है।

33. उधार

न्यासी बोर्ड को यथा आवश्यक न्यास के उद्देश्यों को चलाने के लिए या योजना के क्रियान्वयन के लिए भारत तथा: अथवा विदेश से ऐसे संगठनों या व्यक्तियों से निधि उधार लेने की शक्तियां होंगी, तथा साथ ही ऐसे उधार के लिए यथा आवश्यक प्रतिभूतियों के रूप में न्यास की परिसम्पत्तियों को देने अथवा गारंटी देने की शक्तियां होंगी बशर्ते कि ऐसे सभी उधार एचयूपीए मंत्रालय में सरकार के पूर्व अनुमोदन के बाद किए जाएंगे।

अध्याय-VI

विविध

34. न्यायालय का अधिकार क्षेत्र

दिल्ली में सक्षम न्यायालय अथवा राज्य में सक्षम न्यायालय जहाँ न्यास का पंजीकृत कार्यालय है वहाँ इस घोषणा की व्याख्या तथा प्रारूपन के संबंध में अथवा न्यास के प्रशासन तथा संबंधित मामलों के संबंध में किसी भी प्रश्न पर निर्णय के लिए इसका अनन्य अधिकार क्षेत्र होगा।

35. व्याख्या

यदि योजना के किसी भी प्रावधानों की व्याख्या के संबंध में अथवा इससे संबंधित दिए गए कोई भी निर्देशों अथवा अनुदेशों अथवा स्पष्टीकरणों के संबंध में कोई भी प्रश्न उठता है तो आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय का निर्णय अंतिम होगा।

36. अनुपूरक और सामान्य प्रावधान

ऐसे किसी भी मामले के संबंध में, जिसका इस योजना में विशिष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया गया है, न्यास ऐसे अनुपूरक या अतिरिक्त प्रावधान कर सकता है या ऐसे निर्देश अथवा स्पष्टीकरण जो योजना के उद्देश्य से आवश्यक हों, को जारी कर सकता है।

37. योजना के अंतर्गत शमिल किसी भी राशि के प्राथमिक लेन-देन को एनएचबी द्वारा या ऐसे मुद्रे/मुद्रों के लिए उपयुक्त प्राथमिक प्रतिभूतियों की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए न्यास द्वारा निर्धारित किसी भी अन्य निर्दिष्ट संगठन द्वारा संपन्न किए जायेंगे।

सुशील कुमार
संयुक्त सचिव

पर्यावरण और वन मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 14 अप्रैल 2012

नियम

सं. 17011/01/2012-आई. एफ. एस.-2—भारतीय वन सेवा रिक्तियों के लिए 2012 में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा ली जाने वाली प्रतियोगिता परीक्षा के नियम आगे जानकारी के लिए प्रकाशित किए जा रहे हैं :—

1. इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर भरी जाने वाली रिक्तियों की संख्या आयोग द्वारा जारी किए गए नोटिस में निर्दिष्ट की जाएगी। अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़ी श्रेणियों तथा शारीरिक रूप से अक्षम श्रेणी के उम्मीदवारों के लिए रिक्तियों के आरक्षण सरकार द्वारा निर्धारित रूप में किए जाएंगे।

2. इस परीक्षा में बैठने वाले प्रत्येक उम्मीदवार को जो अन्यथा पात्र हो चार बार परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जाएगी। यह प्रतिबंध 1984 में हुई परीक्षा से लागू है। परन्तु यह भी कि अन्य पिछड़े वर्गों के उम्मीदवारों के लिए अनुमत अवसरों की संख्या 7 होगी, बशर्ते कि वे अन्यथा रूप से पात्र हों।

परन्तु अवसरों की संख्या से सम्बद्ध यह प्रतिबंध अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के अन्यथा पात्र उम्मीदवारों पर लागू नहीं होगा।

टिप्पणी 1 : यदि उम्मीदवार परीक्षा में किसी एक या अधिक प्रश्न-पत्रों में वस्तुतः परीक्षा देता है तो यह समझ लिया जाएगा कि उसने एक अवसर प्राप्त कर लिया है।

टिप्पणी 2 : अयोग्यता के कारण उम्मीदवारी के रद्द होने के बावजूद उम्मीदवार की परीक्षा में उपस्थिति का तथ्य एक प्रयास गिना जाएगा।

3. संघ लोक सेवा आयोग यह परीक्षा इन नियमों के परिशिष्ट-1 में निर्धारित ढंग से लेगा।

परीक्षा की तारीख और स्थान आयोग द्वारा निर्धारित किए जाएंगे।

4. उम्मीदवार या तो :—

(क) भारत का नागरिक हो, या

(ख) नेपाल की प्रजा हो, या

(ग) भूटान की प्रजा हो, या

(घ) ऐसा जनजाती शरणार्थी हो जो भारत में स्थाई रूप से रहने की इच्छा से 1 जनवरी, 1962 से पहले भारत आ गया हो,

(ङ) ऐसा भारतीय मूल का व्यक्ति हो, जो भारत में स्थाई रूप से रहने की इच्छा से पाकिस्तान, बर्मा, श्रीलंका, कीनिया, उगांडा, संयुक्त राज्य तंजानिया, जाम्बिया, मलावी, ज़ेरे, इथियोपिया के पूर्वी अफ्रीकी देशों और वियतनाम से भारत आया हो।

परन्तु उपरोक्त (ख), (ग), (घ) और (ङ) वर्गों के अन्तर्गत आने वाले उम्मीदवार के पास भारत सरकार द्वारा दिया गया पात्रता प्रमाण-पत्र अवश्य होना चाहिए।

ऐसे उम्मीदवार को भी उक्त परीक्षा में प्रवेश दिया जा सकता है जिसके बारे में पात्रता प्रमाण-पत्र प्राप्त करना आवश्यक हो किन्तु उसका नियुक्ति प्रस्ताव भारत सरकार द्वारा उसके सम्बन्ध में पात्रता प्रमाण-पत्र जारी कर दिए जाने के बाद ही भेजा जा सकता है।

5. (क) उम्मीदवार के लिए आवश्यक है कि उसकी आयु पहली अगस्त, 2012 को 21 वर्ष पूरी हो गई हो, किन्तु 30 वर्ष न हुई हो, अर्थात् उसका जन्म 2 अगस्त, 1982 से पहले और पहली अगस्त, 1991 के बाद नहीं हुआ हो।

(ख) ऊपर निर्धारित अधिकतम आयु में निम्नलिखित स्थितियों में छूट दी जा सकती है :—

(1) यदि उम्मीदवार, किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति का हो, तो अधिक से अधिक 5 वर्ष।

(2) अन्य पिछड़ी श्रेणियों के उन उम्मीदवारों के मामले में अधिकतम तीन वर्ष तक जो ऐसे उम्मीदवारों के लिए लागू आरक्षण को पाने के पात्र हों।

(3) ऐसे उम्मीदवारों के मामले में, जिन्होंने 01 जनवरी, 1980 से 31 दिसंबर, 1989 तक की अवधि के दौरान साधारणतया जम्मू तथा कश्मीर राज्य में अधिवास किया हो, अधिकतम 5 वर्ष तक।

(4) रक्षा सेवाओं के उन कर्मचारियों के मामले में अधिक से अधिक तीन वर्ष तक जो किसी विदेशी देश के साथ संधर्ष में अथवा अशान्ति ग्रस्त क्षेत्र में फैज़ी कार्रवाई के दौरान, विकलांग हुए तथा उसके परिणामस्वरूप निर्मुक्त हुए हों।

(5) जिन भूतपूर्व सैनिकों और कमीशन प्राप्त अधिकारियों/आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों/अल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित ने पहली अगस्त, 2012 को कम से कम 5 वर्ष की सैनिक सेवा की है और जो

(1) कदाचार या अक्षमता के आधार पर बर्खास्त न होकर अन्य कारणों से कार्यकाल के समाप्ति पर कार्यमुक्त हुए हैं, इनमें वे भी सम्मिलित हैं, जिनका कार्यकाल पहली अगस्त, 2012 से एक वर्ष के अन्दर पूरा होना है, या (2) सैनिक सेवा में हुई शारीरिक अपंगता या (3) अशक्तता के कारण कार्यमुक्त हुए हैं उनके मामलों में अधिक से अधिक पांच वर्ष तक।

(6) आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों/अल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों के उन मामलों में, जिन्होंने पहली अगस्त, 2012 को सैनिक सेवा के 5 वर्ष की सेवा की प्रारम्भिक अवधि पूरी कर ली है और जिनका कार्यकाल 5 वर्ष से आगे भी बढ़ाया गया है तथा जिनके मामले में रक्षा मंत्रालय एक प्रमाण-पत्र जारी करता है कि वे सिविल रोजगार

के लिए आवेदन कर सकते हैं और चयन होने पर नियुक्ति प्रस्ताव प्राप्त होने की तारीख के तीन माह के नोटिस पर उन्हें कार्यभार से मुक्त किया जाएगा, अधिकतम 5 वर्ष।

(7) नेत्रहीन, मूक-बधिर तथा शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के मामले में अधिकतम 10 वर्ष तक।

टिप्पणी 1 : अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़े वर्गों से संबंधित वे उम्मीदवार जो उपर्युक्त नियम 5 (ख) के किन्हीं अन्य खंडों अर्थात् जो भूतपूर्व सैनिकों, जम्मू तथा कश्मीर राज्य में अधिवास करने वाले, नेत्रहीन, मूक-बधिर तथा शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों की श्रेणी के अंतर्गत आते हैं, दोनों श्रेणियों के अन्तर्गत दी जाने वाली संचयी आयु सीमा-छूट प्राप्त करने के पात्र होंगे।

टिप्पणी 2 : भूतपूर्व सैनिक शब्द उन व्यक्तियों पर लागू होगा जिन्हें समय-समय पर यथासंशोधित भूतपूर्व सैनिक (सिविल सेवा और पद में पुनः रोजगार) नियम, 1979 के अधीन भूतपूर्व सैनिक के रूप में परिभाषित किया जाता है।

टिप्पणी 3 : आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों/अल्पकालीन सेवा के कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित वे भूतपूर्व सैनिक तथा कमीशन अधिकारी, जो स्वयं के अनुरोध पर सेवामुक्त हुए हों, उन्हें उपर्युक्त नियम 5 (ख)(5) तथा (6) के अधीन आयु सीमा में छूट नहीं दी जाएगी।

टिप्पणी 4 : उपर्युक्त नियम 5 (ख) (7) के अन्तर्गत आयु में छूट के बावजूद शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवार की नियुक्ति हेतु पात्रता पर भी विचार किया जा सकता है जब वह (सरकार या नियोक्ता प्राधिकारी, जैसा भी मामला हो, द्वारा निर्धारित शारीरिक परीक्षण के बाद) सरकार द्वारा शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवारों को आबंदित संबंधित सेवाओं/पदों के लिए निर्धारित शारीरिक एवं चिकित्सा मानकों की अपेक्षाओं को पूरा करता हो।

उपर्युक्त व्यवस्था को छोड़कर निर्धारित आयु सीमा में किसी भी स्थिति में छूट नहीं दी जाएगी।

आयोग जन्म की वह तारीख स्वीकार करता है जो मैट्रिकुलेशन या माध्यमिक विद्यालय छोड़ने के प्रमाण-पत्र या किसी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा मैट्रिकुलेशन के समकक्ष माने गए प्रमाण-पत्र या किसी विश्वविद्यालय द्वारा अनुरक्षित मैट्रिकुलेशन के रजिस्टर में दर्ज की गई हो और वह उद्धरण विश्वविद्यालय के समुचित प्राधिकारी द्वारा प्रमाणित हो या उच्चतर माध्यमिक परीक्षा या उसकी समकक्ष परीक्षा प्रमाण-पत्र में दर्ज हो।

आयु के संबंध में कोई अन्य दस्तावेज जैसे कि जन्म कुण्डली, शपथ-पत्र, नगर निगम से और सेवा अभिलेख से प्राप्त जन्म सम्बन्धी उद्धरण तथा उन जैसे प्रमाण स्वीकार नहीं किए जायेंगे।

अनुच्छेद के इस भाग में आये “मैट्रिकुलेशन/उच्चतर माध्यमिक परीक्षा” प्रमाण-पत्र वाक्यांश के अन्तर्गत उपर्युक्त वैकल्पिक प्रमाण-पत्र सम्मिलित हैं।

टिप्पणी 1 : उम्मीदवारों को ध्यान में रखना चाहिए कि आयोग जन्म की उसी तारीख को स्वीकार करेगा जो कि आवेदन-पत्र प्रस्तुत करने की तारीख को मैट्रिकुलेशन/उच्चतर माध्यमिक परीक्षा या समकक्ष परीक्षा के प्रमाण-पत्र में दर्ज है और इसके बाद में उसमें परिवर्तन के किसी अनुरोध पर न तो विचार किया जाएगा और न ही स्वीकार किया जाएगा।

टिप्पणी 2 : उम्मीदवार यह भी ध्यान रखें कि उनके द्वारा किसी परीक्षा में प्रवेश के लिए जन्म की तारीख एक बार घोषित कर देने के और आयोग द्वारा उसे अपने अभिलेख में दर्ज कर लेने के बाद उसमें या आयोग की अन्य किसी परीक्षा में किसी भी आधार पर परिवर्तन करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

6. उम्मीदवार के पास भारत के केन्द्र या राज्य विधान मण्डल द्वारा नियमित किसी विश्वविद्यालय से या संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित या विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम, 1956 के खण्ड 3 के अधीन विश्वविद्यालय के रूप में मांगी गई किसी अन्य शिक्षा संस्था में प्राप्त पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान, बनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, भू-विज्ञान, गणित, भौतिकी, सांख्यिकी और प्राणी विज्ञान में एक विषय के साथ स्नातक डिग्री अवश्य होनी चाहिए अथवा कृषि विज्ञान वानिकी या इंजीनियरी की स्नातक डिग्री होनी चाहिए।

टिप्पणी 1 : ऐसे उम्मीदवार जो कि ऐसी परीक्षा में बैठ चुके हैं जिसे पास करने से वह इस परीक्षा में बैठने के पात्र बनते हैं लेकिन जिनके परीक्षाफल की सूचना उन्हें नहीं मिली है, इस परीक्षा में प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र भेज सकते हैं। यदि कोई उम्मीदवार किसी अर्हक परीक्षा में बैठ रहे हों तो वह भी आवेदन-पत्र दे सकते हैं। ऐसे उम्मीदवार को यदि, वह अन्यथा पात्र हो तो परीक्षा में प्रवेश मिल जाएगा लेकिन उनके प्रवेश को अनंतिम समझा जाएगा तथा अर्हक परीक्षा को पास करने का प्रमाण प्रस्तुत न करने की स्थिति में रद्द कर दिया जाएगा। उक्त प्रमाण परीक्षा के लिखित भाग के परिणाम के आधार पर अर्हता प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों द्वारा आयोग को विस्तृत आवेदन-पत्र के साथ प्रस्तुत करना होगा।

टिप्पणी 2 : विशेष परिस्थितियों में संघ लोक सेवा आयोग ऐसे उम्मीदवार को भी परीक्षा में प्रवेश पाने का पात्र मान सकता है जिसके पास उपर्युक्त अर्हताओं में से कोई भी अर्हता न हो बशर्ते कि उस उम्मीदवार ने अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित कोई ऐसी परीक्षा पास कर ली हो जिसके स्तर को देखते हुए आयोग उसकी परीक्षा में प्रवेश होने के लिए आवेदन करना उचित समझे।

7. उम्मीदवारों को आयोग के नोटिस में निर्धारित फीस अवश्य देनी होगी।

8. जो व्यक्ति पहले से ही सरकारी नौकरी में आकस्मिक या दैनिक दर कर्मचारी से इतर स्थाई या अस्थाई हैंसियत से या कार्य प्रभारित कर्मचारियों की हैसियत से कार्य कर रहे या जो लोक उद्यमों के अन्तर्गत सेवा कर रहे हैं उन्हें परिवर्तन (अण्डरटेकिंग) प्रस्तुत करना होगा कि उन्होंने लिखित रूप से

अपने कार्यालय/विभाग के अध्यक्ष को सूचित कर दिया है कि उन्होंने इस परीक्षा के लिए आवेदन किया है।

उम्मीदवारों को ध्यान रखना चाहिए कि यदि आयोग को उनके नियोक्ता के उनके उक्त परीक्षा के लिए आवेदन करने/परीक्षा में बैठने से सम्बद्ध अनुमति रोकते हुए कोई पत्र मिलता है तो उसका आवेदन-प्रपत्र अस्वीकृत किया जा सकता है/उनकी उम्मीदवारी रद्द की जा सकती है।

9. परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवार के आवेदन-प्रपत्र को स्वीकार करने तथा उसकी पात्रता या अपात्रता के बारे में आयोग का निर्णय अन्तिम होगा।

परीक्षा में आवेदन करने वाले उम्मीदवार यह सुनिश्चित कर लें कि वे परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए पात्रता की सभी शर्तें पूरी करते हैं। परीक्षा के उन सभी स्तरों, जिसमें आयोग ने उन्हें प्रवेश दिया है अर्थात् लिखित परीक्षा तथा व्यक्तित्व परीक्षण के लिए साक्षात्कार में उनका प्रवेश अनन्तिम होगा तथा उनके निर्धारित पात्रता की शर्तें को पूरा करने पर आधारित होगा यदि लिखित परीक्षा तथा व्यक्तित्व परीक्षण के लिए साक्षात्कार के पहले या बाद में सत्यापन करने पर यह पता चलता है कि वे पात्रता की किर्णी शर्तें को पूरा नहीं करते हैं तो आयोग द्वारा परीक्षा के लिए उनकी उम्मीदवारी रद्द कर दी जाएगी।

10. किसी उम्मीदवार को परीक्षा में तब तक नहीं बैठने दिया जाएगा जब तक कि उसके पास आयोग का प्रवेश प्रमाण-पत्र (सर्टिफिकेट आफ एडमीशन) नहीं होगा।

11. यदि किसी उम्मीदवार को आयोग द्वारा निम्नलिखित बातों के लिए दोषी पाया गया हो या दोषी घोषित कर दिया गया हो कि उसने :--

(1) निम्नलिखित तरीकों से अपनी उम्मीदवारी के लिए समर्थन प्राप्त करना, अर्थात् :--

(क) गैर-कानूनी रूप से परितोषण की पेशकश करना, या

(ख) दबाव डालना, या

(ग) परीक्षा आयोजित करने से संबंधित किसी भी व्यक्ति को ब्लैकमेल करना अथवा उसे ब्लैकमेल करने की धमकी देना, अथवा

(2) नाम बदल कर परीक्षा दी है, अथवा

(3) किसी अन्य व्यक्ति से छद्म रूप से कार्य साधन कराया है, अथवा

(4) जाली प्रमाण-पत्र या ऐसे प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किए हैं जिनमें तथ्यों को बिगाड़ा गया है, अथवा

(5) गलत या झूठे वक्तव्य दिए हैं या किसी महत्वपूर्ण तथ्य को छिपाया है, अथवा

(6) परीक्षा के लिए अपनी उम्मीदवारी के संबंध में निम्नलिखित साधनों का प्रयोग करना, अर्थात् :--

(क) गलत तरीकों से प्रश्न-पत्र की प्रति प्राप्त करना,

(ख) परीक्षा से सम्बन्धित गोपनीय कार्य से जुड़े व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करना,

(ग) परीक्षकों को प्रभावित करना, या

(7) परीक्षा के समय अनुचित तरीके अपनाए हैं, अथवा

(8) उत्तर-पुस्तिकाओं पर असंगत बातें लिखना या भद्दे रेखाचित्र बनाना, अथवा

(9) परीक्षा भवन में दुर्व्यवहार करना जिनमें उत्तर-पुस्तिकाओं को फाड़ना, परीक्षा देने वालों को परीक्षा का बहिष्कार करने के लिए उक्तसाना अथवा अव्यवस्था तथा ऐसी ही अन्य स्थिति पैदा करना शामिल है, अथवा

(10) परीक्षा चलाने के लिए आयोग द्वारा नियुक्त कर्मचारियों को परेशान किया हो या अन्य किसी प्रकार की शारीरिक क्षति पहुंचाई हो, अथवा

(11) परीक्षा के दौरान कोई मोबाइल फोन/पेजर या किसी अन्य प्रकार का इलैक्ट्रॉनिक उपकरण या यंत्र अथवा संचार यंत्र के रूप में प्रयोग किए जा सकने वाला कोई अन्य उपकरण प्रयोग करते हुए या अपने पास रखे हुए पाया गया हो; या

(12) परीक्षा में प्रवेश हेतु उम्मीदवार को जारी किसी भी आदेश का उल्लंघन, या

(13) उपर्युक्त खण्डों में उल्लिखित सभी अथवा किसी भी काम को करने या कराने के लिए उक्तसाने का प्रयत्न किया हो, तो उस पर आपाराधिक अभियोग (क्रिमिनल प्रोसीक्यूशन) चलाया जा सकता है, उसके साथ ही उसे :--

(क) आयोग द्वारा उस परीक्षा में, जिसका वह उम्मीदवार है, बैठने के लिए, अयोग्य ठहराया जा सकता है, और अथवा

(ख) उससे अस्थायी रूप से अथवा एक विनिर्दिष्ट अवधि के लिए:--

(1) आयोग द्वारा ली जाने वाली किसी भी परीक्षा अथवा चयन के लिए,

(2) केन्द्रीय सरकार द्वारा अपनी किसी भी नौकरी से अपवर्जित किया जा सकता है, और

(ग) यदि वह सरकार के अधीन पहले से ही सेवा में हो तो उसके विरुद्ध उपयुक्त नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्रवाई की जा सकती है।

किन्तु शर्त यह है कि इस नियम के अधीन कोई शास्ति तब तक नहीं दी जाएगी जब तक :--

(1) उम्मीदवार को इस सम्बन्ध में लिखित अभ्यावेदन जो वह देना चाहे प्रस्तुत करने का अवसर न दिया गया हो, और

(2) उम्मीदवार द्वारा प्रयुक्त समय में प्रस्तुत अभ्यावेदन पर, यदि कोई हो, विचार न कर लिया गया हो।

12. जो उम्मीदवार लिखित परीक्षा में उतने न्यूनतम अर्हक अंक प्राप्त कर लेगा जितने आयोग अपने निर्णय से निश्चित करे तो उसे आयोग व्यक्तित्व परीक्षा हेतु साक्षात्कार के लिए बुलाएगा।

किन्तु शर्त यह है कि यदि आयोग के मतानुसार अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों या अन्य पिछड़े वर्गों के उम्मीदवार इन जातियों के लिए आरक्षित रिक्तियों को भरने के लिए सामान्य स्तर के आधार पर

पर्याप्त संख्या में व्यक्तित्व परीक्षण हेतु साक्षात्कार के लिए नहीं बुलाए जा सकेंगे तो आयोग द्वारा स्तर में ढील देकर अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों या अन्य पिछड़े वर्गों के उम्मीदवारों को व्यक्तित्व परीक्षण हेतु साक्षात्कार के लिए बुलाया जा सकता है।

13. (1) परीक्षा के बाद आयोग उम्मीदवारों द्वारा प्राप्त कुल अंकों के आधार पर योग्यताक्रम में उनकी सूची बनाएगा और उसी क्रम से उन उम्मीदवारों में से जितने लोगों को आयोग परीक्षा के आधार पर योग्य समझेगा उनको इन रिक्तियों पर नियुक्त कराने के लिए अनुशंसा की जाएगी। वे नियुक्तियों जितनी अनारक्षित रिक्तियों को भरने का निर्णय किया जाता है, उसको देखकर होंगी।

(2) आयोग द्वारा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों के उम्मीदवारों को अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षित रिक्तियों की संख्या तक, स्तर में छूट देकर सिफारिश की जा सकेगी किंतु शर्त यह है कि वे उम्मीदवार सेवा पर नियुक्ति के लिए उपयुक्त हों।

परन्तु अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ी श्रेणियों के जिन उम्मीदवारों की अनुशंसा आयोग द्वारा परीक्षा के किसी भी चरण में अहंता या चयन माप दण्डों में रियायत/छूट दिए बिना की जाती है, उनका समायोजन अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़ी श्रेणियों के लिए आरक्षित रिक्तियों में नहीं किया जाएगा।

14. प्रत्येक उम्मीदवार को परीक्षाफल की सूचना किस रूप में और किस प्रकार दी जाए, इसका निर्णय आयोग स्वयं करेगा। आयोग परीक्षाफल के बारे में किसी भी उम्मीदवार से पत्राचार नहीं करेगा।

15. परीक्षा में पास हो जाने पर नियुक्ति का अधिकार तब तक नहीं मिलता, जब तक कि सरकार की आवश्यक जांच के बाद संतुष्टि न हो जाए, कि उम्मीदवार चरित्र तथा पूर्ववृत्त की दृष्टि से इस सेवा में नियुक्ति के लिए हर प्रकार से योग्य है।

16. (i) जो उम्मीदवार लिखित भाग के परिणाम के आधार पर अहंता प्राप्त करते हैं, उन्हें विस्तृत आवेदन प्रपत्र में भारतीय बन सेवा में नियुक्ति किए जाने की स्थिति में अपने 'गृह राज्य' सहित विविध राज्य संघर्गों में से वरीयताक्रम में अपनी पसंद का उल्लेख करना होगा।

(ii) भारतीय बन सेवा के लिए नियुक्त उम्मीदवारों पर संवर्ग आवंटन के समय प्रचलित संवर्ग आवंटन की नीति लागू होगी। परीक्षा के परिणाम के आधार पर आवंटन के समय उम्मीदवार द्वारा अपने आवेदन के समय विभिन्न संघर्गों के लिए व्यक्त प्राथमिकताओं पर समुचित रूप से विचार किया जाएगा।

17. उम्मीदवार को मानसिक और शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ होना चाहिए और उसमें कोई ऐसा शारीरिक दोष नहीं होना चाहिए जिससे वह संबंधित सेवा के अधिकारी के रूप में अपने कर्तव्यों को कुशलतापूर्वक न निभा सके। सरकार या नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा जैसी भी स्थिति हो, निर्धारित चिकित्सा परीक्षा के बाद किसी उम्मीदवार के बारे में यह पाया जाता है कि वह इन अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर सकता है तो उसकी नियुक्ति नहीं की जाएगी। व्यक्तित्व परीक्षण के लिए आयोग द्वारा बुलाए गए उम्मीदवारों की चिकित्सा परीक्षा भाग-I कराई जाएगी तथा इस परीक्षा के आधार पर अंतिम रूप से सफल घोषित किए जाने पर चिकित्सा परीक्षा भाग-II कराई जाएगी। चिकित्सा परीक्षण के भाग-I तथा भाग-II के विवरण इन-

नियमावली के परिशिष्ट-3 में दिए गए हैं। उम्मीदवारों को अपीलीय मामले के अलावा चिकित्सा परीक्षा के लिए चिकित्सा बोर्ड का कोई शुल्क नहीं देना होगा।

बशर्ते यह भी कि सरकार शारीरिक रूप से निःशक्त अभ्यर्थियों की स्वास्थ्य परीक्षा करने के लिए उस क्षेत्र के विशेषज्ञों का एक विशेष मेडिकल बोर्ड गठित कर सकती है।

नोट :- कहीं निराश न होना पड़े, इसलिए उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे परीक्षा में प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र भेजने से पहले सिविल सर्जन के स्तर के किसी सरकारी चिकित्सा अधिकारी से अपनी जांच करवा लें। नियुक्ति से पहले उम्मीदवार की किस प्रकार की डाक्टरी जांच होगी और उसके स्वास्थ्य का स्तर किस प्रकार का होना चाहिए इसके बौरे इन नियमों के परिशिष्ट-3 में दिए गए हैं। रक्षा सेवाओं के भूतपूर्व विकलांग सैनिकों की सेवाओं की आवश्यकताओं के अनुरूप डाक्टरी जांच के स्तर में छूट दी जाएगी।

पुरुष उम्मीदवारों के लिए 4 घण्टे में 25 किलोमीटर पैदल चलने की और महिला उम्मीदवारों के लिए 4 घण्टे में 14 किलोमीटर पैदल चलने की स्वास्थ्य की दृष्टि से क्षमता की शर्त की ओर विशेषतः ध्यान आकर्षित किया जाता है।

18. शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के लिए आरक्षित रिक्तियों के लिए आरक्षण का लाभ लेने के लिए पात्रता वही होगी जो “अक्षम व्यक्ति (समान अवसर, अधिकार संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995” में है :

बशर्ते, कि शारीरिक रूप में अक्षम उम्मीदवारों को शारीरिक अपेक्षाओं/कार्यात्मक वर्गीकरण (सक्षमताओं/अक्षमताओं) के संबंध में उन विशेष पात्रता मापदण्ड को पूरा करना भी अपेक्षित होगा जो इसके संवर्ग नियंत्रण प्राधिकारी द्वारा निर्धारित अभिज्ञात सेवा/पद के अपेक्षाओं की संगत हों।

उदाहरणार्थ, शारीरिक अपेक्षाएं और कार्यात्मक वर्गीकरण निम्न में से एक या अधिक हो सकते हैं :

कोड	शारीरिक अपेक्षाएं
एमएफ (MF)	1. हाथ (अंगुलियों से) द्वारा निष्पादित किए जाने वाले कार्य।
पीपी (PP)	2. खंडीच कर तथा धक्के द्वारा किए जाने वाले कार्य।
एल (L)	3. उत्थापन (लिफ्टिंग) द्वारा किए जाने वाले कार्य।
केसी (KC)	4. घुटने के बल बैठकर तथा क्राउचिंग द्वारा किए जाने वाले कार्य।
बीएन (BN)	5. झुककर किए जाने वाले कार्य।
एस (S)	6. बैठकर (बैंच या कुर्सी पर) किए जाने वाले कार्य।
एसटी (ST)	7. खड़े होकर किए जाने वाले कार्य।
डब्ल्यू (W)	8. चलते हुए किए जाने वाले कार्य।
एसई (SE)	9. देख कर किए जाने वाले कार्य।

एच (H)	10. सुनकर या बोल कर किए जाने वाले कार्य।
आरडब्ल्यू (RW)	11. पढ़कर तथा लिखकर किए जाने वाले कार्य।
सी (C)	12. वार्तालाप।
कोड	कार्यात्मक वर्गीकरण
बीएल (BL)	1. दोनों पैर प्रभावित लेकिन भुजाएं नहीं।
बीए (BA)	2. दोनों भुजाएं प्रभावित
बीएलए (BLA)	3. दोनों पैर तथा दोनों भुजाएं प्रभावित
ओएल (OL)	4. एक पैर प्रभावित
ओए (OA)	5. एक भुजा प्रभावित
ओएएल (OAL)	6. एक भुजा और एक पैर प्रभावित
एमडब्ल्यू (MW)	7. मांसपेशीय दुर्बलता तथा सीमित शारीरिक शक्ति
बी (B)	8. नेत्रहीन
एलवी (LV)	9. आंशिक दृष्टि
एच (H)	10. सुनना

टिप्पणी: उपर्युक्त सूची संशोधन के अध्यधीन है।

19. किसी भी उम्मीदवार को समुदाय संबंधी आरक्षण का लाभ, उसकी जाति को केन्द्र सरकार द्वारा जारी आरक्षित समुदाय संबंधी सूची में शामिल किए जाने पर ही मिलेगा। यदि कोई उम्मीदवार भारतीय बन सेवा परीक्षा के अपने प्रपत्र में यह उल्लेख करता है, कि वह सामान्य श्रेणी से संबंधित है लेकिन कालांतर में अपनी श्रेणी को आरक्षित सूची की श्रेणी में तब्दील करने के लिए आयोग को लिखता है, तो आयोग द्वारा ऐसे अनुरोध को किसी भी हालत में स्वीकार नहीं किया जाएगा।

जबकि उपर्युक्त सिद्धांत का सामान्य रूप से पालन किया जाएगा, फिर भी कुछ ऐसे मामले हो सकते हैं, जिनमें किसी समुदाय विशेष को आरक्षित समुदायों की किसी भी सूची में शामिल करने के संबंध में सरकारी अधिसूचना जारी किए जाने और उम्मीदवार द्वारा आवेदन करने की तारीख के समय के बीच थोड़ा बहुत अंतर (अर्थात् 2-3 महीने) हुआ हो, ऐसे मामलों में, समुदाय को सामान्य से आरक्षित समुदाय में परिवर्तित करने संबंधी अनुरोध पर आयोग द्वारा मैरिट के आधार पर विचार किया जाएगा।

20. आवेदन पत्र प्राप्त करने की निर्धारित अंतिम तारीख उम्मीदवारों के अन्य पिछड़ा वर्ग की स्थिति (क्रीमीलेयर सहित) के निर्धारण की तारीख मानी जाएगी।

21. ऐसा कोई पुरुष/स्त्री

(क) जिसने किसी ऐसे स्त्री/पुरुष से विवाह किया है, जिसका पहले से जीवित पति/पत्नी हो, या

(ख) जिसका पति/पत्नी जीवित रहते हुए उसने किसी स्त्री/पुरुष से विवाह किया हो।

उक्त सेवा में नियुक्ति का पात्र नहीं होगा।

परन्तु केन्द्रीय सरकार यदि इस बात से सन्तुष्ट हो कि ऐसे पुरुष/स्त्री तथा जिस स्त्री/पुरुष से उसने विवाह किया हो उन पर लागू व्यक्तिगत कानून के

अधीन ऐसा किया जा सकता हो और ऐसा करने के अन्य आधार हों तो उस उम्मीदवार को इस नियम से छूट दे सकती है।

22. उम्मीदवारों को सूचित किया जाता है कि सेवा में भर्ती से पहले ही हिन्दी का कुछ ज्ञान होना उन विभागीय परीक्षाओं को पास करने की दृष्टि से लाभदायक होगा जो उम्मीदवार को सेवा में भर्ती होने के बाद देनी पड़ती हैं।

23. इस परीक्षा के द्वारा जिस सेवा के लिए भर्ती की जा रही है उसका संक्षिप्त ब्यौरा परिशिष्ट-2 में दिया गया है।

जोसेफ लुईखम
अवर सचिव

परिशिष्ट-1

खण्ड-I

परीक्षा की रूपरेखा

भारतीय बन सेवा के लिये प्रतियोगिता परीक्षा में निम्नलिखित सम्मिलित हैं :--

(क) लिखित परीक्षा में निम्नलिखित प्रश्न-पत्र होंगे :--

प्रश्न पत्र I सामान्य अंग्रेजी 300 अंक

प्रश्न पत्र II सामान्य ज्ञान 300 अंक

प्रश्न पत्र III, IV, V और VI नीचे पैरा-2 में निर्धारित वैकल्पिक विषयों की सूची से कोई दो विषय चुने जाने हैं प्रत्येक विषय के दो प्रश्न पत्र होंगे-प्रत्येक प्रश्न-पत्र के 200 अंक।

नोट: पेपर-II (सामान्य ज्ञान) के लिए आयोग द्वारा यथानिर्धारित न्यूनतम अंक प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों के उत्तर के स्क्रिप्ट की जांच की जाएगी।

(ख) ऐसे उम्मीदवारों का, जो आयोग द्वारा साक्षात्कार के लिये बुलाये जायेंगे, व्यक्तित्व परीक्षण हेतु साक्षात्कार (इस परिशिष्ट का खण्ड III देखें) अधिकतम 300 अंक

2. वैकल्पिक विषयों की सूची

(i) कृषि विज्ञान

(ii) कृषि इंजीनियरी

(iii) पशुपालन एवं पशुचिकित्सा विज्ञान

(iv) वनस्पति विज्ञान

(v) रसायन विज्ञान

(vi) रसायन इंजीनियरी

(vii) सिविल इंजीनियरी

(viii) वानिकी

(ix) भू-विज्ञान

(x) गणित

(xi) यांत्रिक इंजीनियरी

- (xii) भौतिकी
- (xiii) सांख्यिकी
- (xiv) प्राणि विज्ञान

किंतु शर्त यह है कि उम्मीदवारों को निम्नलिखित विषयों को एक साथ लेने की अनुमति नहीं दी जायेगी:—

- (क) कृषि विज्ञान और कृषि इंजीनियरी।
- (ख) कृषि विज्ञान और पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान।
- (ग) कृषि विज्ञान और वानिकी।
- (घ) रसायन विज्ञान और रसायन इंजीनियरी।
- (ड) गणित और सांख्यिकी।
- (च) इंजीनियरी विषयों जैसे कृषि इंजीनियरी, रसायन इंजीनियरी, सिविल इंजीनियरी तथा यांत्रिक इंजीनियरी में एक से अधिक विषय नहीं।

नोट:— ऊपर लिखे विषयों के स्तर और पाठ्य विवरण इस परिशिष्ट की अनुसूची में दिया गया है।

सामान्य :—

1. परीक्षा के सभी विषयों के प्रश्नपत्र परम्परागत (निबन्ध शैली) के होंगे।
2. सभी प्रश्न-पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में ही लिखने होंगे। प्रश्न पत्र केवल अंग्रेजी में ही होंगे।
3. ऊपर उल्लिखित प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिये तीन घण्टे का समय दिया जायेगा।
4. उम्मीदवारों को प्रश्नपत्रों के उत्तर स्वयं लिखने चाहिए। किसी भी परिस्थिति में उन्हें उत्तर लिखने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की सहायता लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी। तथापि, दृष्टिहीन उम्मीदवारों को लेखन सहायक (स्क्राइब) की सहायता से परीक्षा में उत्तर लिखने को अनुमति होगी। दृष्टिहीन उम्मीदवारों को प्रत्येक पेपर में अतिरिक्त 30 मिनट दिए जाएंगे।

नोट (1): स्क्राइब की पात्रता संबंधी शर्तों, परीक्षा भवन में उनके आचरण और भारतीय वन सेवा परीक्षा लिखने के लिए वे किस तारीख एवं किस सीमा तक दृष्टिहीन उम्मीदवार की मदद कर सकते हैं, पर संघ लोक सेवा आयोग द्वारा इस संबंध में जारी अनुदेश लागू होंगे। इन सभी या इनमें से किसी अनुदेश का उल्लंघन होने पर दृष्टिहीन उम्मीदवार की उम्मीदवारी रद्द की जा सकती है। इसके अतिरिक्त संघ लोक सेवा आयोग लेखन सहायक के विरुद्ध अन्य कार्रवाई भी कर सकता है।

नोट (2): इन नियमों के प्रयोजनार्थ किसी उम्मीदवार को दृष्टिहीन उम्मीदवार तभी माना जाएगा जब उसकी दृष्टिबाधिता चालीस प्रतिशत (40%) अथवा इससे अधिक है। तथापि, जिस सीमा तक दृष्टिबाधिता है उसे विस्तृत आवेदन प्रपत्र के साथ केन्द्र/राज्य सरकार द्वारा गठित चिकित्सा बोर्ड द्वारा विहित प्रमाण पत्र में प्रमाणित होना चाहिए।

नोट (3): दृष्टिहीन उम्मीदवारों को देय छूट निकट दृष्टिदोष से पीड़ित उम्मीदवारों को देय नहीं होगी।

5. आयोग अपने निर्णय इस परीक्षा के किसी एक या सभी पेपरों के अहंक अंक (क्वालीफाइंग मार्क्स) निर्धारित कर सकता है।
6. यदि किसी उम्मीदवार की लिखावट आसानी से पढ़ने लायक नहीं होगी तो उसे अन्यथा मिलने वाले कुल अंकों में से कुछ अंक का लिये जायेंगे।
7. मात्र सतही ज्ञान के लिये अंक नहीं दिये जायेंगे।
8. परीक्षा के सभी विषयों में इस बात का श्रेय दिया जायेगा कि अभिव्यक्ति कम से कम शब्दों से, क्रमबद्ध, प्रभावपूर्ण ढंग की ओर सही हो।
9. प्रश्न पत्रों में यथा आवश्यक एस.आई.इकाईयों का प्रयोग किया जायेगा।
10. उम्मीदवारों को प्रश्न-पत्रों के उत्तर लिखते समय भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप (अर्थात् 1, 2, 3, 4, 5, 6 आदि) का ही प्रयोग करना चाहिये।
11. उम्मीदवारों को संघ लोक सेवा आयोग की परंपरागत (निबंध) शैली के प्रश्न पत्रों के लिए साइंटिफिक (नान प्रोग्रामेबल) प्रकार के कैलकुलेटरों का प्रयोग करने की अनुमति है। यद्यपि प्रोग्रामेबल प्रकार के कैलकुलेटरों का प्रयोग उम्मीदवार द्वारा अनुचित साधन अपनाया जाना माना जाएगा। परीक्षा भवन में कैलकुलेटरों को मांगने या बदलने की अनुमति नहीं है।

खण्ड-II

व्यक्तित्व परीक्षण

उम्मीदवारों का साक्षात्कार सुयोग्य और निष्पक्ष विद्वानों के बोर्ड द्वारा किया जाएगा। जिसमें समस्त उम्मीदवार का सर्वांगीण जीवनवृत्त होगा। साक्षात्कार का उद्देश्य यह है कि इस सेवा के लिए उम्मीदवार बुद्धि से उपयुक्त है अथवा नहीं। उम्मीदवारों से आशा की जायेगी कि वे केवल विद्याध्यन के विशेष विषयों में ही सूझबूझ के साथ रुचि न लेते हों अपितु उन घटनाओं में भी रुचि लेते हों जो उनके चारों ओर अपने राज्य या देश के भीतर और बाहर घट रही हैं तथा आधुनिक विचारधाराओं और उन नई खोजों में रुचि लें जिनके लिये प्रति एक सुशिक्षित व्यक्ति में जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

2. साक्षात्कार महज जिरह की प्रक्रिया नहीं है, अपितु स्वाभाविक प्रयोजनयुक्त वार्तालाप प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य उम्मीदवारों के मानसिक गुणों और समस्याओं को समझने की शक्ति को अभिव्यक्त करना है, बोर्ड द्वारा उम्मीदवारों को मानसिक सतर्कता, आलोचनात्मक ग्रहण शक्ति, सन्तुलित निर्णय और मानसिक सतर्कता, सामाजिक संगठन की योग्यता, चारित्रिक ईमानदारी, नेतृत्व की पहल और क्षमता के मूल्यांकन पर विशेष बल दिया जायेगा।

अनुसूची

सामान्य अंग्रेजी और सामान्य ज्ञान के प्रश्नपत्रों का स्तर, ऐसा होगा जिसकी भारतीय विश्वविद्यालय के विज्ञान या इंजीनियरी ग्रेजुएट से आशा की जाती है।

इस परीक्षा के वैकल्पिक विषयों के प्रश्न-पत्र लगभग आनंद डिग्री स्तर को होंगे अर्थात् बैचलर डिग्री से कुछ अधिक और मास्टर डिग्री से कुछ कम। इंजीनियरी विषयों के मामले में ये स्तर बैचलर डिग्री होगा।

किसी भी विषय में प्रायोगिक परीक्षा नहीं ली जायेगी।

सामान्य अंग्रेजी

उम्मीदवारों को एक विषय पर अंग्रेजी में निबन्ध लिखना होगा। अन्य प्रश्न इस प्रकार के पूछे जायेंगे कि जिससे उसके अंग्रेजी भाषा के ज्ञान तथा शब्दों के कार्य सार्थक प्रयोग की जांच हो सके। संक्षेपण अथवा सारलेखन के लिये सामान्यतः गदांश दिये जायेंगे।

सामान्य ज्ञान

सामान्य ज्ञान जिसमें सामयिक घटनाओं का ज्ञान तथा दैनिक अनुभव की ऐसी बातों का वैज्ञानिक दृष्टि से ज्ञान भी सम्मिलित है जिसकी किसी शिक्षित व्यक्ति से आशा भी की जा सकती है जिसने किसी वैज्ञानिक शिक्षित विषय का विशेष अध्ययन न किया हो। इस प्रश्न-पत्र में देश की राजनीतिक प्रणाली सहित भारतीय राज्य व्यवस्था और भारत का संविधान, भारत के इतिहास और भूगोल के ऐसे प्रश्न भी होंगे जिसका उत्तर उम्मीदवारों के विशेष अध्ययन के बिना ही आना चाहिए।

वैकल्पिक विषय

वैकल्पिक विषयों के प्रश्न-पत्रों में प्रश्नों की कुल संख्या आठ होगी। सभी प्रश्नों के अंक बराबर होंगे। प्रत्येक प्रश्न के दो भाग होंगे अर्थात् भाग (क) और भाग (ख) प्रत्येक भाग में चार प्रश्न होंगे। आठ प्रश्नों में से पाँच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक भाग से एक प्रश्न अनिवार्य होगा। प्रत्येक भाग से कम से कम एक-एक प्रश्न लेते हुए उम्मीदवारों को छह प्रश्नों में तीन और प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। इस प्रकार प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर देने होंगे अर्थात् एक अनिवार्य प्रश्न तथा एक अन्य प्रश्न।

कृषि

प्रश्न-पत्र--1

परिस्थिति विज्ञान और मानव के लिए उसकी प्रासंगिकता, प्राकृतिक संसाधन, उन्हें कायम रखने का प्रबंध तथा संरक्षण, फसलों के उत्पादन तथा वितरण के कारक के रूप में भौतिक तथा सामाजिक पर्यावरण। फसलों के वृद्धि में जलवायीय मूल तत्वों का प्रभाव, पर्यावरण के संकेतक के रूप में सस्य क्रम पर परिवर्तनशील पर्यावरण का प्रभाव। फसलों, प्राणियों व मानवों के पर्यावरणी प्रदूषण से संबद्ध संकट।

देश के विभिन्न कृषि जलवायी क्षेत्रों में सस्य क्रम। सस्य क्रम में विस्थापन पर अधिक पैदावार वाली तथा अल्पावधि किसीं का प्रभाव। बहु-सस्यन, बहुस्तरीय, अनुपद तथा अंतरा सस्यन की संकलनपा तथा खाद्य उत्पादन में इनका महत्व। देश के विभिन्न क्षेत्रों में खरीफ तथा रबी मौसीमों में उत्पादित मुख्य अनाज, दलहन, तिलहन, रेशा, शकरा व्यावसायिक तथा चारा फसलों के उत्पादन हेतु पैकेज रीतियां।

विविध प्रकार के बन रोपन जैसे बन विस्तार, सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी तथा प्राकृतिक बनों की मुख्य विशेषताएं, क्षेत्र तथा विस्तार।

खरपतवार, उनकी विशेषताएं, प्रकीर्णन तथा विभिन्न फसलों के साथ उनकी संबद्धता, उनका गुणन, खरपतवारों का कर्षण, जैविक तथा रासायनिक नियन्त्रण।

मृदा—भौतिक, रासायनिक तथा जैविक गुण। मृदा रचना के प्रक्रम तथा कारक। भारतीय मृदाओं का आधुनिक वर्गीकरण। मृदा के खनिज तथा कार्बनिक संगठक और मृदा की उत्पादकता बनाए रखने में उनकी भूमिका। पौधों के लिए आवश्यक पोषक पदार्थ तथा मृदा और पौधों के अन्य लाभकारी तत्व। मृदा उर्वरता के सिद्धांत तथा विवेकपूर्ण उर्वरक प्रयोग और समाकलित पोषण प्रबंध का मूल्यांकन। मृदा में नाइट्रोजेन की हानि, जलमण्ड धान-मृदा में नाइट्रोजेन उपयोग क्षमता, मृदा में नाइट्रोजेन यौगिकीकरण। मृदाओं में फासफोरस तथा पोटेशियम का यौगिकीकरण तथा उनका दक्ष उपयोग। समस्याजनक मृदाएं तथा उनके सुधार के तरीके।

जल विभाजन के आधार पर मृदा संरक्षण योजना। पर्वतीय, गिरिपादों तथा घाटियों में अपरदन तथा अपवाह प्रबंधन, इनको प्रभावित करने वाले प्रक्रम तथा कारक। वारानी कृषि तथा उससे संबंधित समस्याएं। वर्षा पोषित क्षेत्रों में कृषि उत्पादन में स्थिरता लाने की प्रौद्योगिकी।

सस्य उत्पादन से संबंधित जल उपयोग क्षमता, सिंचाई कार्यक्रम के मानदंड, सिंचाई जल की अपवाह हानि को कम करने की विधियां तथा साधन (उपाय)। ड्रिप (टपकाकर) तथा छिड़काव द्वारा सिंचाई। जलाक्रांत भूमि से जल का निकास सिंचाई जल की गुणवत्ता, मृदा जल-प्रदूषण पर औद्योगिक बहिसालों का प्रभाव।

फार्म प्रबंध, विषय क्षेत्र, महत्व तथा विशेषताएं, फार्म आयोजना। संसाधनों का इष्टतम उपयोग तथा बजट बनाना। विभिन्न प्रकार की कृषि प्रणालियों की अर्थ व्यवस्था।

कृषि निवेशों और उत्पादों का विपणन और मूल्य निर्धारण, मूल्य उत्तर-चढ़ाव तथा उनकी लागत; कृषि अर्थव्यवस्था में सहकारी संस्थाओं की भूमिका; कृषि के प्रकार तथा प्रणालियों और उसको प्रभावित करने वाले कारक।

कृषि विस्तार, इसका महत्व तथा भूमिका, कृषि विस्तार कार्यक्रमों के मूल्यांकन की विधियां, सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण तथा छोटे-बड़े और सीमांत कृषकों व भूमिहीन कृषि श्रमिकों की स्थिति, फार्म यंत्रीकरण तथा कृषि उत्पादन और ग्रामीण रोजगार में उनकी भूमिका। विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम; प्रयोगशाला से खेतों तक का कार्यक्रम।

प्रश्न-पत्र--2

कोशिका सिद्धांत, कोशिका संरचना, कोशिका अंगक तथा उनके कार्य, कोशिका विभाजन, न्यूक्लीक अम्ल--संरचना तथा कार्य, जीन संरचना तथा उनका कार्य। आनुवांशिकता के नियम तथा पादप प्रजनन में उनकी सार्थकता। गुणसूत्र (क्रोमोसोम) संरचना, गुण मूत्र विपर्यास, सहलगनता एवं जीन विनियम तथा पुनर्जीवन प्रजनन में उनकी सार्थकता। बहुगुणिता, सगुणित तथा असुगुणित। सूक्ष्म एवं गुरु उत्परिवर्तन तथा फसल सुधार में उनकी भूमिका। विविधता, विविधता के घटक। वंशागतित्व, बंध्यता तथा असंयोज्यता, वर्गीकरण तथा फसल सुधार में उनका अनुप्रयोग। कोशिकाद्रव्यी वंशागति, लिंग सहलगन, लिंग प्रभावित तथा लिंग सीमित लक्षण।

पादप प्रजनन का इतिहास। जनन की विधियां, स्वनिषेचन तथा संकरण तकनीकें। फसली पौधों का उद्भव एवं विकार उद्भव का केंद्र, समजात श्रेणी के नियम, सस्य आनुवांशिक संसाधन--संरक्षण तथा उपयोग। प्रमुख फसलों के सुधार में पादप प्रजनन के सिद्धांतों का अनुप्रयोग। शुद्ध

वंशक्रम वरण, वंशावली, समूह तथा पुनरावर्ती वरण, संयोजी क्षमता, पादप प्रजनन में उसका महत्व, संकर ओज एवं उसका उपयोग, प्रजनन की प्रतीप संकरण विधि, रोग एवं पीड़िक प्रतिरोध के लिए प्रजनन, अंतराजातीय तथा अंतरावंशीय संकरण की भूमिका। पादप प्रजनन में जैव प्रौद्योगिकी की भूमिका। विभिन्न फसली पौधों की उन्नत किस्में, संकर, मिश्र।

बीज प्रौद्योगिकी एवं उसका महत्व, विभिन्न प्रकार के बीज तथा बीज उत्पादन और संसाधन की तकनीकें। भारत में बीज उत्पादन, संसाधन तथा विपणन में सरकारी एवं निजी क्षेत्रों की भूमिका।

शरीर क्रिया विज्ञान और कृषि विज्ञान में इसका महत्व। अंतः शोषण पृष्ठ तनाव, विसरण और परासरण, जल का अवश्योषण और स्थानांतरण, वाष्पोत्सर्जन और जल की मितव्ययिता।

प्रक्रिण्व (एन्जाइम) और पादप वर्णक; प्रकाश संश्लेषण—आधुनिक संकल्पनाएं और इसके प्रक्रम को प्रभावित करने वाले कारक, आक्सी व अनाक्सी श्वसन; सी₃, सी₄ तथा सी. ए. एम. क्रिया विधि। कार्बोहाइड्रेट प्रोटीन तथा वसा उपापचय।

वृद्धि व परिवर्धन, दीप्तिकालिता और बसन्तीकरण। आक्सिन, हामोन, और अन्य पादप नियामक—इनकी क्रिया की क्रिया विधि तथा कृषि में महत्व। बीज परिवर्धन तथा अंकुरण की कार्यिकी, प्रसूति जलवायवीय आवश्यकताएं तथा प्रमुख फलों, सब्जियों, और पुष्पी पौधों का कर्षण, पैकेज रीतियों और उनका वैज्ञानिक आधार। फलों व सब्जियों के संभलाव तथा विपणन की समस्याएं। महत्वपूर्ण फलों तथा सब्जियों के उत्पादों के परिक्षण की मुख्य विधियां, संसाधन तकनीकें तथा उपस्कर। मानव पोषण में फलों और सब्जियों की भूमिका। शोभाकारी पौधों को उगाना, लान और बाग-बगीचों का अभिकल्पन तथा अभिविन्यास।

भारत में सब्जियों, फलोद्यानों और रोपण फसलों की बीमारियां और पीड़िक (नाशक जीव)। पादप पीड़िकों तथा बीमारियों के कारण तथा वर्गीकरण। पादप पीड़िकों तथा बीमारियों के नियंत्रण के सिद्धांत। पीड़िकों और रोगों का जैविक नियंत्रण। पीड़िकों व रोगों का समाकलित प्रबंधन। जानपदिक रोग निदान एवं पूर्वानुमान। पीड़िकनाशियों, संरूपण एवं क्रिया विधि। राइजोवियमी निवेश द्रव्य के साथ उनकी संगतता। सूक्ष्मजीवी आविष।

अनाज व दालों के भण्डार पीड़िक तथा रोग और उनका नियंत्रण।

भारत में खाद्य उत्पादन तथा उपभोग की प्रवृत्तियां। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य नीतियां। उत्पादन प्राषण, वितरण और संसाधन के अवरोध। राष्ट्रीय आहार प्रतिमान से खाद्य उत्पादन का सम्बन्ध, कैलोरियों और प्रोटीन की विशेष कमियां।

कृषि इंजीनियरी

प्रश्न-पत्र 1

खण्ड-क

1. मृदा तथा जल संरक्षण : मृदा तथा जल संरक्षण का क्षेत्र। भूमि कटाव की प्रक्रिया तथा प्रकार और उनके कारण। वर्षा, अपवाह तथा

अवसादन सापेक्षता और उनका मापन। भूमि कटाव के जैविक तथा अभियांत्रिकी नियंत्रक उपाय जिनमें धारा-किनारा संरक्षण, वनस्पतिक (वेजिटेटिव) अवरोधक, समोच्च बांध, समोच्च खाइयां, समोच्च पथरीली, दीवारें, बेदिकाएं (ट्रैस), निकासी तथा घासाच्छादित जल-मार्ग शामिल हैं। नाली नियंत्रण संरचनाएं—अस्थाई तथा स्थाई—स्थाई मृदा संरचनाएं जैसे डूलवी नाली (शूट), जलप्रपात तथा बेग-नियंत्रक, उत्पलव मार्ग का अभिकल्प। फार्म तालाब तथा अंतराजी तालाबों का अभिकल्प। बाढ़ नियंत्रण—बाढ़ अनुशीलन के सिद्धांत। जल विभाजन प्रबन्ध—अन्वेषण, योजना तथा कार्यान्वयन—प्राथमिकताओं पर क्षेत्रों का चयन तथा जल विभाजन कार्य योजना, जल हार्डेस्टिंग तथा आर्द्रता संरक्षण। भूमि विकास समतलन, खनन मिट्टी आयतन का आकलन और लागत निर्धारण। बायु कटाव—प्रक्रम—शैलटर बैल्टों तथा बायु आरोधों का अभिकल्प तथा उनका प्रबंध। वन (संरक्षण) अधिनियम।

2. बायकीय फोटोग्राफी तथा सुदूर संवेदन—फोटोग्राफिक छवि की मूलभूत विशेषतायें, व्याख्या शैलियां, व्याख्या के लिये उपस्कर, भूमि उपयोग, भूविज्ञान, मृदा तथा वानिकी के लिये छवि व्याख्या। सुदूर संवेदन—परम्परागत तथा सुदूर संवेदी उपगमन के गुण तथा अवगुण। उपग्रह छवियों के प्रकार उपग्रह छवि व्याख्या के मूल सिद्धान्त। मृदा जल तथा भूमि उपयोग के प्रबन्ध के लिये दृश्य तथा अंकीय निर्वचन की तकनीकें। वन व्यवस्था, जलस्त्रोतों आदि सहित जल विभाजकों, वनों की योजना तथा विकास में जी. आई. एस. का उपयोग।

खण्ड-ख

3. सिंचाई तथा जलनिकास (डेनेज) : सिंचाई के लिये जल को स्रोत, लघु सिंचाई परियोजनाओं की योजना तथा डिजाइन—मृदा आर्द्रता मापन की तकनीकें—प्रयोगशाला तथा स्वस्थाने। मृदा जल पादप सम्बन्धी फसल की जल अपेक्षाएं। भूतल तथा भूमिगत जल के कंजकिट्य प्रयोग की योजना। सिंचाई जल का मापन, मापने के साधन, मुखछेद, बंधारा तथा अधनलिका। सिंचाई की पद्धतियां—सतही, छिड़काव तथा टपकना, फर्मिशेन। सिंचाई कुशलतायें और उनका आकलन। नहरों, खेतों में जल-मार्ग, भूमिगत पाइप-लाइन, निकासद्वार, दिशा परिवर्तन कक्ष तथा सड़क पार करने की संरचनाओं का डिजाइन तथा निर्माण।

भूजल की प्राप्ति, कुओं की जल व्यवस्था, कुओं के प्रकार ट्यूबवैल तथा ओपन (वैल) और उनका निर्माण। कुओं का विकास और परीक्षण। पम्पों के प्रकार, चयन तथा स्थापना। रुग्ण तथा विफल कुओं की पुनर्स्थापना। जल निकास-जल ग्रसन के कारण तथा लवण समस्यायें। जल निकास की पद्धतियां—सिंचित तथा असिंचित भूमि का जल विकास। सतह, उपसतह तथा उर्ध्वाधर जल निकास पद्धतियां। निकृष्ट जल का सुधार तथा उपयोग। सेलीन और अल्काली मृदाओं का उद्धार। सिंचाई तथा जल निकास प्रणालियों का अर्थशास्त्र/व्यर्थ जल का सिंचाई के लिये उपयोग—दीर्घावधि सिंचाई, संगतता तथा अर्थोपाय के लिये व्यर्थ जल के मानक स्तर।

4. कृषिक संरचनायें : फार्म प्रतिष्ठान, फार्म हाउस, पशुग्रह, डेयरी भुतोरा, मुर्गी-गृह, शूकर गृह, मशीनें तथा उपस्कर स्थल के लिये स्थान का चयन, डिजाइन व निर्माण, खाद्यान्नों, भोजन तथा चारे के लिये भण्डारण संरचनायें। बाढ़ तथा कृषि सड़कों के लिये डिजाइन और निर्माण। पादप पर्यावरण के लिये संरचनायें—ग्रीन हाउस, पाली हाउस

तथा शैड हाउस। निर्माण में प्रयोग की जाने वाली सामान्य भवन निर्माण सामग्री :—टिम्बर, इंट, पत्थर, टाइलें, कंक्रीट आदि और उनके गुणधर्म। जल आपूर्ति, जल निकास तथा स्वच्छता प्रबन्ध पद्धतियाँ।

प्रश्न पत्र-2

खण्ड-क

1. फार्म पावर तथा मशीनरी : कृषि यंत्रीकरण और इसका क्षेत्र। फार्म पावर के स्रोत—संधीय तथा इलैक्ट्रो यांत्रिक। तापगतिकी, आंतरिक दहन इंजनों की संरचना और कार्यप्रणाली। आंतरिक दहन इंजनों के लिये ईंधन, प्रज्ञलन, स्नेहन, शीतलन तथा नियंत्रण प्रणाली। विभिन्न प्रकार के ट्रैक्टर तथा पावर ट्रिल्लर। पावर ट्रांसमिशन, ग्राउण्ड ड्राइव, पावर टेक-आफ तथा कन्ट्रोल सिस्टम। प्राथमिक तथा द्वितीयक जुटाई के लिये फार्म मशीनरी का प्रचालन तथा रख-रखाव। कर्षण सिद्धांत। बुआई, प्रति-रोपण तथा निराई-गुड़ाई उपकरण तथा औजार। पादप संरक्षण यंत्र छिड़काव तथा प्रकीर्ण। फसल कटाई, श्रेसिंग तथा कम्बाइन उपकरण। अर्थ-मूर्चिंग तथा भूमि विकास मशीनरी-पद्धतियाँ तथा लागत आकलन। अगर्नामिक्स आफ मेन-मशीन सिस्टम। बागवानी तथा कृषि वानिकी के लिये उपकरण, भोज्य एवं चारा। कृषि तथा वन उत्पादों की ढुलाई।

2. कृषि ऊर्जा : कृषि सम्बन्धी कार्यों तथा कृषि संसाधनों की ऊर्जा जरूरतें। कृषि अनुप्रयोगों के लिये बिजली की मोटरों का चुनाव, अधिष्ठापन, सुरक्षा तथा रख-रखाव सौर (थर्मल तथा फोटोबोल्टेक) पवन तथा बायोगैस ऊर्जा और कृषि में उनका उपयोग। आई. सी. इंजनों के प्रचालन तथा इलैक्ट्रिक पावर उत्पादन के लिये बायोगैस का गैसीकरण ऊर्जा दक्ष कुकिंग स्टोव तथा विकल्पी कुकिंग ईंधन। कृषि तथा कृषि उद्योग अनुप्रयोगों के लिये बिजली का वितरण।

खण्ड-ख

3. कृषि संसाधन इंजीनियरी : फसलों की उपजोत्तर प्रौद्योगिकी और इसका क्षेत्र। कृषि उत्पादों और उपोत्पादों के इंजीनियरी गुणधर्म। यूनिट प्रचालन-कृषि उत्पादों तथा उपोत्पादों की सफाई, ग्रेडिंग, आकार, न्यूनन, घनीकरण सांद्रण, शुष्कन/निर्जलीकरण, वाष्पन, फिल्टरन, प्रशीतन तथा संवेष्टन-सामग्री संभालने के उपकरण—

वैल्ट तथा स्क्रूवाहक, वाल्टी उत्थापक,

उनकी क्षमता तथा शक्ति अपेक्षाएं।

दुग्ध तथा डेयरी उत्पादों का संसाधन-सभांगीकरण, क्रीम पृथक्करण, पाश्चुरीकरण, निर्जर्माकरण, स्प्रे तथा रोलर शुष्कन, मक्खन बनाना, आईसक्रीम, पपीर तथा श्रीखंड बनाना। अपशेष तथा उपोत्पाद उपयोग-चावल की भूसी, चावल का चोकर, गन्ने की खोई, पादप अवशिष्ट तथा कोयर मज्जा।

4. कृषि इंजीनियरी में मापयंत्रण तथा कम्प्यूटर अनुप्रयोग : इलैक्ट्रॉनिक साधन तथा उनके लक्षण-दिष्टकारी, प्रवर्धक, दोलित्र, बहुकम्पित्र, अंकीयसर्किट-अनुक्रमिक तथा संयुक्त प्रणालियाँ। अंकड़े प्राप्त करने तथा कृषि इंजीनियरी प्रक्रम नियंत्रण में माइक्रोप्रोसेसरों का अनुप्रयोग। तल, प्रवाह, विकृति, बल, बल-आधूर्ण, शक्ति, दबाव, निर्वात तथा तापमान के लिए माप पद्धतियाँ। कम्प्यूटर-परिचय, इनपुट/आउटपुट डिवाइसेज, सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट, मैमोरी डिवाइसेज, आपरेटिंग सिस्टम,

प्रोसेसर की-बोर्ड तथा प्रिंटर्स। कृषि इंजीनियरी में कलनविधि प्रवाह चार्ट विनिर्देश, प्रोग्राम रूपान्तरण तथा समस्या विश्लेषण। मल्टीमीडिया तथा श्रांगदृश्य सहायक सामग्री।

पशुपालन तथा पशु चिकित्सा विज्ञान

प्रश्न पत्र-1

1. पशु पोषण : ऊर्जा, स्रोत, ऊर्जा उपापचय तथा दुग्ध, मांस, अण्डों और उन के अनुरक्षण और उत्पादन की आवश्यकताएं। खाद्यों का ऊर्जा स्रोतों के रूप में मूल्यांकन।

1.1 प्रोटीन पोषण की प्रवृत्तियाँ : प्रोटीन के स्रोत, उपापचय तथा संश्लेषण, आवश्यकताओं के संदर्भ में प्रोटीन की मात्रा तथा गुणवत्ता। राशन में ऊर्जा प्रोटीन अनुपात।

1.2 पशु आहार में खनिज : स्रोत, कार्य प्रणाली, आवश्यकताएं तथा विरल तत्वों सहित आधारभूत खनिज पोषकों के साथ उनका संबंध।

1.3 विटामिन, हारमोन तथा वृद्धि प्रेरक पदार्थ: स्रोत, कार्य प्रणाली, आवश्यकताएं तथा खनिजों के साथ पारस्परिक संबंध।

1.4 रोमन्थी पोषण के क्षेत्र में विकास-डेरी पशु दुग्ध उत्पादन तथा इसके संघटन के संदर्भ में पोषक पदार्थ तथा उनके उपापचय। बछड़ों/बछियों, निर्दूध तथा दूधारू गायों तथा भैंसों के लिए पोषक पदार्थों की आवश्यकताएं। विभिन्न आहार प्रणालियों की सीमाएं।

1.5 गैर-रोमन्थी पोषण के क्षेत्र में विकास-कुक्कुट-कुक्कुट मांस तथा अण्डों के उत्पादन के संदर्भ में पोषक पदार्थ तथा उनके उपापचय। पोषक पदार्थों की आवश्यकताएं तथा आहार सूत्रण एवं विभिन्न आयुवर्गों के चूजे।

1.6 गैर-रोमन्थी पोषण के क्षेत्र में विकास-सूअर-मांस उत्पादन में वृद्धि तथा उसकी गुणवत्ता के संदर्भ में पोषक पदार्थों तथा उनका उपापचय। शिशु सूअरों तथा तैयार सूअरों के लिए पोषक पदार्थों की आवश्यकताएं और आहार सूत्रण।

1.7 अनुपयुक्त पशु पोषण में विकास-आहार प्रयोगों, पाच्यता तथा संतुलन अध्ययन की क्रांतिक समीक्षा तथा मूल्यांकन। आहार मानक तथा आहार ऊर्जा के मापदण्ड। वृद्धि, अनुरक्षण तथा उत्पादन के लिए पोषण की आवश्यकताएं। संतुलित राशन।

2. पशु शरीर-क्रिया विज्ञान :

2.1 पशु वृद्धि तथा उत्पादन : प्रसवपूर्व तथा प्रसवोत्तर वृद्धि, परिपक्वन, वृद्धि-वक्र, वृद्धि का मापन, वृद्धि, संरूपण, शरीर संरचना और मांस की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कारक।

2.2 दुग्ध तथा जनज और पाचन :

स्तन्य विकास, दुग्ध स्रवण तथा दुग्ध निष्कासन के बारे में हारमोनल नियंत्रण की वर्तमान स्थिति, नर और मादा जनेंद्रियाँ, उनके घटक तथा कार्य। पाचन अंग तथा उनके कार्य।

2.3 पर्यावरणीय शरीर-क्रिया विज्ञान : क्रियात्मक संबंध तथा उनका नियमन, अनुकूलन की क्रिया-विधियाँ, पशु व्यवहार के लिए आवश्यक पर्यावरणीय कारक तथा नियामक क्रिया विधियाँ, जलवायबी दबाव को नियंत्रित करने के तरीके।

2.4 सीमेन गुणवत्ता : परिरक्षण तथा कृत्रिम गर्भाधान-सीमेन के अवयव, शुक्राणुओं की बनावट, स्खलित सीमेन के रासायनिक तथा भौतिक गुण। विवो और विट्री में सीमेन को प्रभावित करने वाले कारक, सीमेन उत्पादन को प्रभावित करने वाले कारक तथा गुणवत्ता, परिरक्षण, तनुकारकों का संघटन, शुक्राणु सांद्रता, तनुवृत्त सीमेन का परिवहन। गायों, भेड़ों तथा बकरियों, सूअरों और कुकुरुओं के गहन हिमीकरण की तकनीक। बेहतर गर्भधारण के लिए सम्भोग तथा वीर्य सेचन के समय का पता लगाना।

3. पशुधन उत्पादन तथा प्रबंध :

3.1 व्यावसायिक डेरी फार्मिंग :—भारत में डेरी फार्मिंग, उसकी विकसित देशों के साथ तुलना। मिश्रित कृषि के अधीन तथा विशिष्ट कृषि के रूप में डेरी उद्योग, किफायती डेरी फार्मिंग। डेरी फार्म का प्रारम्भीकरण। पूंजी तथा भूमि की आवश्यकता, डेरी फार्म को संगठित करना। वस्तुओं की (अधि) प्राप्ति, डेरी फार्मिंग के अवसर, डेरी पशुओं की क्षमता के निर्धारण कारक, पशुओं के समूह का अभिलेखन, बजट बनाना, दुग्ध उत्पादन की लागत, मूल्य निर्धारण नीति, कार्मिक प्रबन्ध, डेरी पशुओं के लिए व्यावहारिक तथा किफायती राशन का विकास, पूरे वर्ष के दौरान हरे चारे की पूर्ति, डेरी फार्म के लिए भूमि तथा चारे की आवश्यकताएं, तरुण पशु, सांड, बछड़ियों और प्रजनन पशुओं के लिए दिनभर की आहार व्यवस्था, तरुण तथा वयस्क पशुधन को आहार देने की नई प्रवृत्तियाँ। आहार रिकांड।

3.2 व्यावसायिक मांस, अंडे तथा ऊन उत्पादन :

भेड़ों, बकरियों, सूअरों, खरगोशों तथा कुकुरुओं के लिए व्यावहारिक तथा कम लागत वाले राशन का विकास करना। तरुण, परिपक्व पशुओं के लिए हरे चारे, चारे की आपूर्ति तथा आहार व्यवस्था। उत्पादन बढ़ाने तथा प्रबंध में सुधार लाने की नई प्रवृत्तियाँ। पूंजी तथा भूमि की आवश्यकताएं तथा सामाजिक-आर्थिक अवधारण।

3.3 सूखे, बाढ़ तथा अन्य प्राकृतिक विपर्तियों की स्थिति में पशुओं के आहार तथा उनकी देखभाल का प्रबंध।

4. आनुवंशिकी तथा पशु प्रजनन :

समसूत्रण तथा अर्द्धसूत्रण, मेन्डेलीय वंशागति, मेन्डेलीय आनुवंशिकी का विचलन: जीन-अभिव्यक्ति, सहलगता तथा जीनविनियम, लिंग निर्धारण, लिंग प्रभावित तथा लिंग सीमित लक्षण, रक्त समूह तथा बहुरूपता, गुणसूत्र विपर्थन, जीन और उसकी संरचना, आनुवंशिकी द्रव्य पदार्थ के रूप में डी. एन. ए., आनुवंशिकी कोड और प्रोटीन संश्लेषण, पूनर्संयोजक डी. एन. ए. टेक्नोलॉजी, उत्परिवर्तन, उत्परिवर्तन के प्रकार, उत्परिवर्तनों तथा उत्परिवर्तन दर का पता लगाने के तरीके।

4.1 पशु प्रजनन में अनुप्रयुक्त पशुसंख्या अनुवांशिकी :

संख्यात्मकता बनाम गुणात्मकता विशेषताएं : हार्डी विनबर्ग नियम, समस्ति बनाम ईकाई, जीन तथा समजीनीय आवृत्ति, जीन आवृत्ति को बदलने वाली शक्तियाँ, पशुओं का यादृच्छिक इधर-उधर हो जाना तथा उनकी संख्या कम हो जाना, पथ गुणांक का सिद्धांत, अंतः प्रजनन, अंतः प्रजनन गुणांक के अनुमान की पद्धति, अंतः प्रजनन की प्रणालियाँ, पशु संख्या का प्रभावशाली आकार, प्रजनन का महत्व, प्रजनन के महत्व का

मूल्यांकन प्रभाविता तथा एपिस्टैटिक विचलन, विषमता विभाजन, समजीनी एक्स पर्यावरण सह सम्बन्ध तथा समजीनी एक्स पर्यावरण अन्योन्यक्रिया, बहुयोजनीय मापों की भूमिका, रक्त संबंधियों में समानताएं।

4.2 प्रजनन प्रणाली :

वंशांगतित्व, पुनरावृत्ति तथा आनुवंशिक एवं समलक्षणीय सह संबंध, उनके प्राक्कलन के तरीके तथा प्राक्कलनों की परिशुद्धता चयन में सहायक कारक तथा उनके सापेक्षिक गुण, व्यष्टिगत, वंशावली, परिवार तथा अंतः परिवारिक चयन, संतति परीक्षण, चयन की विधियाँ, चयन तालिकाओं का निर्माण तथा उनका प्रयोग, चयन की विभिन्न विधियों के माध्यम से आनुवंशिक वृद्धि का तुलनात्मक मूल्यांकन, अप्रत्यक्ष चयन तथा सहसंबंधित अनुक्रिया, अंतः प्रजनन, श्रेणी उन्नत करना, संकरण तथा प्रजातियों का संश्लेषण, व्यावसायिक उत्पादन के लिए अंतः प्रजातियों का संकरण, सामान्य और विशिष्ट गुणों को संयुक्त करने के लिए चयन, प्रारम्भिक गुणों के लिए प्रजनन।

प्रश्न पत्र--2

1. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता :

1.1 ऊत्क विज्ञान तथा ऊत्कीय तकनीकें:

अभिरंजक—जैव वैज्ञानिक कार्यों में प्रयुक्त अभिरंजकों का रासायनिक वर्गीकरण—ऊत्कों को अभिर्जित करने के सिद्धांत—रंग बंधक—प्रगामी तथा प्रतिगामी अभिरंजक—कौशिकाद्वयी तथा संयोजी ऊत्क तत्वों की विभेदक अभिरंजना—ऊत्कों को तैयार करने तथा संसाधित करने की विधियाँ—सैलोडिन अंतः स्थापन—प्रीर्ज़िग माइक्रोटोमी—सूक्ष्म-दर्शकी—ब्राईटफील्ड माइक्रोस्कोप तथा इलैक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप। कोशिका विज्ञान—कोशिका की संरचना, कोशिकांग तथा अन्तर्वेशन, कोशिका विभाजन, कोशिका के प्रकार—ऊत्क तथा उनका वर्गीकरण—प्रणीय तथा परिपक्व ऊत्क।

अवयवों का तुलनात्मक ऊत्क विज्ञान—संवहनी, तंत्रीय, पाचन, श्वसन, कंकाल-पेशी तथा जननमूत्र तंत्र—अंतः स्नावी ग्रथियाँ—अध्यावरण—ज्ञानेन्द्रियाँ।

1.2 भूषणविज्ञान:

ऐजीज (पक्षि-वर्ग) तथा घरेलू स्तनधारियों के विशेष संदर्भ में कशेरूकियों का भूषण विज्ञान—युग्मक जनन—निषेचन—कीटाणु परत—गर्भ झिल्ली तथा अपरान्यास—घरेलू स्तनधारियों में अपरा (प्लेसेन्टा) के प्रकार—विरूपताविज्ञान यमज—एवं यमजन—अंग विकास—कीटाणुपरत के व्युत्पन्न रूप—अंतस्त्वचीय मैसोडर्मी, तथा बाह्य त्वचा के व्युत्पन्न रूप।

1.3 गोजातीय शरीर रचना—शरीर रचना पर क्षेत्रीय प्रभाव:

गोजातीय (ओएक्स) पशुओं की उपनासीय शिरानाल-लार ग्रथियों की बाह्य रचना। अवनेत्र कोटर की क्षेत्रीय संरचना, जैमिका, चिकुक कूपिका, मानसिक तथा कार्निया तंत्रिका अवरोध—पराकशेस्का तंत्रिका, उपास्थिक तंत्रिका, माध्यिका, अंतः मणिबंधिका तथा बर्हिप्रकोष्ठिका तंत्रिका—अन्तर्जंघिका, बहिर्जंघिका तथा अंगुलि तंत्रिका, कपाल तंत्रिका—अधि दुड़ तानिका निश्चेतना में सम्मिलित संरचना—बाह्य लसीका गाठ—वक्षीय उदरीय तथा श्रोणीय गुहिका के अन्तरांगों का सतही शरीर

क्रिया विज्ञान-गति विषयक उपस्कर की तुलनात्मक विशेषताएं तथा स्तनधारीय शरीर की जैव यांत्रिकी में उनका अनुप्रयोग।

1.4 कुकुट की शरीर रचना:

कंकालपेशीय तंत्र-श्वास लेने तथा उड़ने, पाचन तथा अंडोत्पादन के संबंध में क्रियात्मक शरीर रचना विज्ञान।

1.5 रक्त का शरीर क्रिया-विज्ञान तथा इसका परिसंचरण, श्वसन, मल विसर्जन, स्वास्थ्य और रोगों में अन्तः स्रावी ग्रंथियां।

1.5.1 रक्त के घटक:

गुणधर्म तथा कार्य-रूधिर कोशिका निर्माण-हीमोग्लोबिन संश्लेषण तथा इसका रसायन-प्लाज्मा प्रोटीन उत्पादन, वर्गीकरण तथा गुणधर्म, रूधिर स्कंकदन: रक्त स्राव सम्बन्धी विकार-प्रतिस्कंदक-रूधिर समूह-रूधिर आयतन-प्लाज्मा वर्धक-रक्त उभयरोधी तन्त्र-रोग निदान में जैव-रासायनिक परीक्षण तथा उनका महत्व।

1.5.2 परिसंचरण:

हृदय क्रिया विज्ञान, हृदय चक्र-हृदय ध्वनियां, हृदय स्पन्द, विद्युतहृद लेख (इलैक्ट्रोकार्डियोग्रॉफ), हृदय के कार्य तथा क्षमता, हृदय के कार्य में आयन का प्रभाव-हृदय पेशी का चयापचय, हृदय का तंत्रिका एवं रासायनिक नियमन, हृदय पर ताप एवं प्रतिबल प्रभाव, रक्तदाब व अति रक्तदाब, परासरणी नियमन, घमनीय स्पन्द, परिसंचरण का वाहिकाप्रेरक नियमन, प्रघात परिहद तथा फृफूसीय परिसंचरण-रक्त-मस्तिष्क रोध-प्रमस्तिष्कमेरु तरल-पक्षियों में परिसंचरण।

1.5.3 श्वसन:

श्वसन की क्रियाविधि, गैसों का परिवहन व विनिमय-श्वसन का तंत्रिय नियंत्रण-रसायनग्राही-अल्पआवसीयता-पक्षियों में श्वसन।

1.5.4 उत्सर्जन :

वृक्क की संरचना व कार्य-मूत्र निर्माण-वृक्कीय कार्य के अध्ययन की प्रणालियां-अम्ल का वृक्कीय नियमन-क्षार संतुलन, मूत्र के शरीर क्रियात्मक अवयव-वृक्कपात-निष्क्रिय शिरा संकुलता, चूजों में मूत्र स्राव-स्वेद ग्रंथियां तथा उनके कार्य। मूत्राशय सम्बन्धी विकारों के लिए जैव-रासायनिक परीक्षण।

1.5.5 अन्तःस्रावी ग्रंथियां :

क्रियात्मक विकार, उनके लक्षण तथा निदान। हारमोन संश्लेषण, स्रावों की प्रक्रिया तथा नियंत्रण, हारमोन ग्राही-वर्गीकरण तथा कार्य।

1.6 भेषज गुण विज्ञान तथा औषधियों के चिकित्सा शास्त्र का सामान्य ज्ञान :

भेषज क्रिया विज्ञान तथा भेषज बलगतिकी का कौशिकीय स्तर-द्रव्यों पर क्रियाशील औषधियां तथा विद्युत-अपघट्य सन्तुलन-स्वसंचालित तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव डालने वाली औषधियां-संवेदनाहरण तथा वियोजक संवेदनाहारी की आधुनिक अवधारणा-उद्दीपक-प्रतिरोगाणु तथा रोगाणु अन्तःशोषण में रसायन चिकित्सा के सिद्धांत-चिकित्सा शास्त्र में हारमोनों का उपयोग-परजीवीय संक्रमणों में रसायन चिकित्सा-पशुओं के खाद्य ऊतकों में औषधि एवं उपयोगी तत्व-अर्बुदीय रोगों की रसायन चिकित्सा।

1.7 जल, वायु तथा आवास के संदर्भ में पशु स्वच्छता :

जल, वायु तथा मृदा प्रदूषण का आकलन--पशु स्वास्थ्य में जलवायु का महत्व--पशु कार्य तथा उसके निष्पादन में वातावरण का प्रभाव--औद्योगीकरण तथा पशु उत्पादन में परस्पर संबंध--पालतू जानवरों के विशिष्ट वर्गों जैसे गर्भवती गायों तथा मादा सूअरों, दुधारू गायों, तरुण पक्षियों के लिए पशु आवासीय आवश्यकताएं--पशु आवास के सन्दर्भ में प्रतिबल विकृति तथा उत्पादकता।

2. पशु रोग :

2.1 रोग जनन, लक्षण, शब्द परीक्षा विक्षिति, निदान तथा पशुओं, सूअरों तथा कुकुटों, घोड़ों, भेड़ों तथा बकरियों में संक्रामक रोगों पर नियंत्रण।

2.2 पशुओं, सूअरों तथा कुकुटों के उत्पादन सम्बन्धी रोगों का--हेतु विज्ञान, लक्षण निदान तथा उपचार।

2.3 पालतू पशुओं तथा पक्षियों में कृपोषण सम्बन्धी रोग।

2.4 संघटन, ब्लोट, अतिसार, अपाचन, निर्जलीकरण, आघात, विषाक्तता, जैसी सामान्य अवस्थाओं का निदान तथा उपचार।

2.5 तंत्रिकीय रोगों का निदान तथा उपचार।

2.6 विशिष्ट रोगों से बचाव हेतु पशुओं के प्रतिरक्षीकरण के सिद्धांत एवं विधियां--पशु प्रतिरक्षा--रोग मुक्त क्षेत्र--रोग “शून्य” अवधारणा--रसायन रोग निरोध।

2.7 संवेदनाहरण--स्थानीय, क्षेत्रीय तथा सामान्य--संज्ञाहरणपूर्व औषध प्रयोग, अस्थिर्भंग तथा विस्थापन के लक्षण तथा शल्य व्यतिकरण, हर्निया, श्वासरोधन, चतुर्थामाशयी विस्थापन सीजरी आपरेशन रुमेनोट्रामी, वन्ध्यकरण।

2.8 रोग अन्वेषण को तकनीकें--प्रयोगशाला जाँच हेतु सामग्री--पशु स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना--रोगमुक्त क्षेत्र।

3. सार्वजनिक पशु स्वास्थ्य :

3.1 पशुजन्य रोग :

वर्गीकरण, परिभाषा, पशु जन्य रोगों के प्रचार तथा प्रसार में पशुओं एवं पक्षियों की भूमिका, व्यावसायिक पशुजन्य रोग।

3.2 जानपदिक रोग विज्ञान :

सिद्धांत, जानपदीय रोग विज्ञान संबंधी शब्दों की परिभाषा, रोगों तथा उनकी रोकथाम के अध्ययन में जानपदीय रोग विज्ञानी उपायों का अनुप्रयोग, वायु, जल तथा खाद्य पदार्थ जनित रोगों के जानपदिक रोग विज्ञानी लक्षण।

3.3 पशु चिकित्सा व्यवहारशास्त्र :

पशुओं की नस्ल सुधारने तथा पशु रोगों की रोकथाम हेतु नियम तथा विनियम, पशु तथा पशु उत्पादों से उत्पन्न होने वाले रोगों की रोकथाम की अवस्था तथा नियंत्रण नियम--एस. पी. ए--पशुओं सम्बन्धी विधिक मामले--प्रमाण पत्र--पशुओं सम्बन्धी विधिक मामलों की छानबीन के नमूने एकत्र करने की विधियां और सामग्री।

4. दुर्घट तथा दुर्घट उत्पाद टेक्नोलॉजी :

4.1 दुर्घट टेक्नोलॉजी :

ग्रामीण दुर्घट प्राप्ति का संघटन, कच्चे दूध का संग्रह और परिवहन। कच्चे दूध की गुणवत्ता, परीक्षण तथा वर्गीकरण, सम्पूर्ण दूध, क्रीम रहित दूध तथा क्रीम की श्रेणियों की गुणवत्ता संचयन, निम्नलिखित प्रकार के दूध का संसाधन, पैकेजिंग, भण्डारण, वितरण, विपणन दोष और उनका नियंत्रण तथा पोषक गुण : पाश्चुरीकृत, मानकित, टोन्ड, डबल टोन्ड, विसंक्रमित, समांगीकृत, पुनर्निर्मित, पुनःसंयोजित तथा सुवासित दूध। संवर्धित (कल्वर्ड) दूध तैयार करना, संवर्धन तथा उनका प्रबन्ध, योगहर्द, दही, लस्सी तथा श्रीखण्ड, सुगंधित तथा विसंक्रमित दूध तैयार करना, वैधानिक मानक, स्वच्छ तथा पीने योग्य दूध और दुर्घट संयंत्र के उपकरणों के लिए स्वच्छता सम्बन्धी आवश्यकताएं।

4.2 दुर्घट उत्पाद टेक्नोलॉजी :

कच्चे माल का चयन, पुरजे जोड़ना, उत्पादन संसाधन, भण्डारण, दूध उत्पादों जैसे मक्खन, घी, खोया, छेना, पनीर का वितरण एवं विपणन, संधनित, वाष्पित सूखा दूध तथा शिशु आहार, आईसक्रीम व कुल्फी, उप उत्पाद, छैने के पानी के उत्पाद, छाँच, लैक्टोस तथा कैसीन। दुर्घट उत्पादों का परीक्षण, श्रेणीकरण तथा निर्णय—बी. आई. एस. तथा एमार्क विनिर्देश, वैधानिक मानक, गुणवत्ता नियंत्रण पोषक गुण, पैकेजिंग, संसाधन तथा प्रचालन नियंत्रण लागत।

5. मांस स्वच्छता तथा प्रौद्योगिकी :

5.1 मांस स्वच्छता :

5.1.1 भोज्य पशुओं की मृत्युपूर्व देखभाल तथा प्रबंध, विसंज्ञा, वध तथा ब्रणोपचार प्रक्रिया, बूचड़खाने की आवश्यकताएं तथा उसके डिजाइन, मांस निरीक्षण प्रक्रियाएं तथा मृत पशु के मांस के टुकड़ों को परखना—मृत पशु के मांस टुकड़ों का वर्गीकरण—पौष्टिक मांस उत्पादन में पशु चिकित्सकों के कर्तव्य तथा कार्य।

5.1.2 मांस के उत्पादन व्यापार में अपनाए जाने वाले स्वस्थ तरीके—मांस का बेकार होना तथा इसे नियंत्रित करने के उपाय—पशुवध के बाद मांस में भौतिक—रासायनिक परिवर्तन तथा इन्हें प्रभावित करने वाले कारक—गुणवत्ता सुधार विधियां—मांस अपमिश्रण तथा दोष—मांस व्यापार तथा उद्योग में नियमक उपबन्ध।

5.2 मांस प्रौद्योगिकी :

5.2.1 मांस की भौतिक तथा रासायनिक विशिष्टताएं, मांस इमलशन—मांस के परीक्षण की विधियां—संसाधन, डिब्बाबन्दी, मांस तथा मांस उत्पाद की पैकेजिंग, मांस उत्पाद तथा सूत्रीकरण (संरूपण)।

5.3 उप उत्पाद :

बूचड़खानों के उप उत्पाद तथा उनका उपयोग—खाद्य तथा अखाद्य उप उत्पाद—बूचड़खानों को उप उत्पादों के समुचित उपयोग में सामाजिक तथा आर्थिक (मंशा) निहितार्थ, खाद्य तथा भेषजिक पदार्थों के लिए अवयव उत्पाद।

5.4 कुक्कुट उत्पाद प्रौद्योगिकी :

कुक्कुट मांस की रासायनिक रचना तथा पोषक गुण, वध से पूर्व देखभाल तथा प्रबन्ध, वध करने की विधियां, निरीक्षण, कुक्कुट मांस तथा उत्पादों का परीक्षण, वैध तथा बी. आई. एस. मानक, अण्डों की संरचना, संघटन तथा पोषक गुण, रोगाणुक विकृति, परीक्षण तथा अनुकरण, कुक्कुट मांस, अण्डों तथा उत्पादों का विपणन।

5.5 खरगोश फर वाले पशुओं का पालन :

खरगोश के मांस उत्पादन की देखरेख तथा प्रबंध। फर एवं ऊन का उपयोग तथा निपटान तथा अवशिष्ट उपोत्पादों का पुनर्प्रयोग। ऊन का श्रेणीकरण।

6. विस्तार :

मूल दर्शन उद्देश्य, विस्तार की अवधारणा तथा इसके सिद्धान्त। ग्रामीण परिस्थितियों के अन्तर्गत कृषकों को शिक्षित करने के लिए अपनाई जाने वाली विभिन्न विधियां। टेक्नोलॉजी का क्रमिक विकास, इसका स्थानान्तरण तथा पुनः निवेश, टेक्नोलॉजी के स्थानान्तरण में बाधाओं की समस्या। ग्रामीण विकास के लिए पशुपालन कार्यक्रम।

वनस्पति विज्ञान

प्रश्न-पत्र : 1

1. सूक्ष्मजैविकी एवं पादप रोग विज्ञान : विषाणु, जीवाणु एवं प्लाज्मिड संरचना एवं जनन : संक्रमण का सामान्य वर्णन। पादप प्रतिरक्षा विज्ञान। कृषि उद्योग, चिकित्सा तथा वायु एवं मृदा एवं जल में प्रदूषण नियंत्रण में सूक्ष्मजैविकी अनुप्रयोग।

विषाणुओं, जीवाणुओं, माइक्रोप्लाज्मा, कवकों तथा सूत्रकृमियों द्वारा होने वाले प्रमुख पादप रोग। संक्रमण और फैलाव की विधियां। संक्रमण तथा रोग प्रतिरोध प्रतिरक्षा की विधियों परजीविता की कार्यकी और नियंत्रण के उपाय। कवक आविष।

2. क्रिप्टोगेम्स : शैवाल, कवक, बायोफाईट, टेरिडोफाईट संरचना और जनन के विकासात्मक पहलू। भारत में क्रिप्टो गेम्स का वितरण और उनके आर्थिक महत्व की संभावनाएं।

3. पुष्पोदामिद : अनावृत्तबीजी : पूर्व अनावृत्तबीजी की अवधारणा। अनावृत्तबीजी का वर्गीकरण और वितरण। साईकैडेलीज, कोनीफैरेलीज और नीटोलीज के मुख्य लक्षण, संरचना व जनन। साईकैडोफिलिकेलीज, बैन्टिटेलीज तथा कार्डेटेलीज का सामान्य वर्णन।

आवृत्तबीजी : (एजियोस्पर्म) : वर्गीकी, शरीर, भ्रूण विज्ञान, परमाणु विज्ञान और जातिवृत्।

आवृत्तबीजियों के वर्गीकरण की विभिन्न प्रणालियों का तुलनात्मक विवरण, आवृत्तबीजी कुलों का अध्ययन—मैग्नो लिएसी, रैनकूलैसी, ब्रैसीकेसी (क्रूसीफेरी), रीजेसी, लेग्यू, मिनोसी, यूफोबिएसी, मालवेसी, डिट्रोकाफेसी, एपिएसी, (अब्लेलीफेरी), एस्क्लेपिडैसी, बर्बेनेसी, सोलैनेसी, रुबिएसी, कुकरबिटेसी, ऐस्टीरेसी (कम्पोजिटी), पोएसी (ग्रामिनी), ऐरोकेसी (पामी), लिलिएसी (म्यूजेसी), आंकिडेसी।

रन्ध्र और उनके प्रकार, विसंगत द्वितीयक वृद्धि, सी-3 और सी-4, पौधों का शरीर।

नर और मादा युग्मकोडभिद का परिवर्धन, परागण, निषेचन। भ्रूणपोष—इसका परिवर्धन और कार्य। भ्रूण परिवर्धन के स्वरूप। बहु भ्रूणता, असंगजनन, परागाण विज्ञान के अनुप्रयोग।

4. पादप उपयोगिता तथा दोहन : कुष्ट पौधों का उद्भव, उद्भव सम्बन्धी बैबीलोव के केन्द्र। खाद्य, चारा, रेशों, मसालों, पेय पदार्थों, औषधियों स्वापकों (नशीले पदार्थों), कीटनाशियों, इमारती लकड़ी, गोद, रेजिनों तथा रंजकों के स्रोतों के रूप में पौधे।

लैटेक्स, सेलुलोस, मण्ड और उनके उत्पाद। इत्रसाजी। भारत के सन्दर्भ में नृकुलवनस्पतिकी का महत्व। ऊर्जा वृक्षरोपण, वानस्पतिक उद्यान और पादपालय।

5. आकारजनन : पूर्णशक्तता घृवणता, सममिति और विभेदन। कोशिका, उत्तक, अंग एवं जीव द्रव्यक संवर्धन। कायिक संकर और द्रव्य संकर।

प्रश्न-पत्र : 2

1. कोशिका जैविकी : कोशिका जैविकी की प्रविधियाँ। प्राक्केंद्रकी और सुकेज्जरकी कोशिकायें—संरचनात्मक और परासंरचनात्मक बारीकियाँ। कोशिका बाह्य आधारी अथवा ई. सी. एम. (कोशिका भित्ति) तथा ज़िल्लयों की संरचना और कार्य/कोशिका आसंजन, ज़िल्ली अभिगमन तथा आशयी अभिगमन। कोशिका अंगकों (हरिजतलवक, सूत्रकणिकायें, ई. आर. राइबोसोम, अन्तः काय, लयनकाय, पर आक्सीसोम (हाइड्रोजिनोसोम) की संरचना और कार्य। केन्द्रक, केन्द्रिक, केन्द्र की रंथ सम्मिश्र। क्रोमोटिन एवं प्लूकिलओसोम। कोशिका संकेतन और कोशिका ग्राही। संकेत पारक्रमण (जी-1 प्रोटीन्स आदि)। समसूत्रण और अर्धसूत्रण, विभाजन, कोशिका चक्र का आण्विक आधार। गुणसूत्रों में संख्यात्मक और संरचनात्मक विभिन्नताएं तथा उनका महत्व। बहुपट्टीय, लैम्प बुश तथा बी.—गुणसूत्रों का अध्ययन—संरचना, व्यवहार और महत्व।

2. आनुवंशिकी, आण्विक जैविकी और विकास : आनुवंशिकी का विकास और जीन बनाम युग्मविकल्पी अवधारणाएं (कूटविकल्पी) परिमाणात्मक आनुवंशिकी तथा बहुकारक। सहलगनता तथा विनिमय—आण्विक मानचित्र (मानचित्रण प्रकार्य की अवधारणा) सहित जीन मानचित्रण की विधियाँ। लिंग गुणसूत्र तथा लिंग सहलगन वंशागति, लिंग निर्धारण और लिंग विभेदन का आण्विक आधार। ऊत्तरिवर्तन (जैव रासायनिक और आण्विक आधार) कोशिका द्रव्यी वंशागति एवं कोशिकाद्रव्यी जीन (नर बंध्यता की आनुवंशिकी सहित) प्रोसंक तथा प्रोसंक परिकल्पना।

न्यूक्लीक अस्लों और प्रोटीनों की संरचना तथा संश्लेषण। आनुवंशिक कूट और जीन अभिव्यक्ति का नियमन। बहुजीन वर्ग।

जैव विकास—प्रमाण, क्रियाविधि तथा सिद्धान्त। उद्भव तथा विकास में आर. एन. ए. की भूमिका।

3. पादप प्रजनन, जैव प्रौद्योगिकी तथा जैव सांख्यिकी : पादप प्रजनन की विधियाँ—आप्रवेश, चयन तथा संकरण। वंशावली, प्रतीप प्रसंस्करण, सामूहिक चयन, व्यापक पद्धति।

नर बंध्यता तथा संकर ओज प्रजनन। पादप प्रजनन में असंगजनन का उपयोग। सूक्ष्म प्रवर्धन तथा आनुवंशिक इंजीनियरी—जीन अन्तरण की विधियाँ तथा पारजीनी सस्य, पादप प्रजनन में आण्विक चिह्नक का विकास एवं उपयोग।

मानक विचलन तथा विचरण गुणांक। (सी. बी.) सार्थकता परीक्षण, (जैड—परीक्षण, टी. परीक्षण तथा काई-वर्ग परीक्षण)। प्रायिकता तथा वितरण (सामान्य, द्विपदी और प्वासों वंटन), सम्बन्धन तथा समाश्रयण।

4. शरीर क्रिया विज्ञान तथा जैव रासायनिकी : जल सम्बन्ध, खनिज पोषण तथा आयन अभिगमन, खनिज न्यूनताएं।

प्रकाश संश्लेषण—प्रकाश रासायनिक अभिक्रियाएं, फोटो—फोटोरिलेशन एवं कार्बन पाथवे जिसमें शामिल हैं सी-पाथवे (प्रकाश श्वसन), सी. 3, सी. 4 और कैम दिशामार्ग। श्वसन (किण्वन सहित अवायुजीवीय और वायुजीवीय)। इलैक्ट्रोन अभिगमन ख और आक्सीकरण। फार्स्कोरिलेशन। रसोपारासरणी सिद्धान्त तथा ए. टी. पी. संश्लेषण। नाइट्रोजन स्थिरीकरण एवं नाइट्रोजन उपापचय। क्रिप्ट, सहक्रिप्ट, ऊर्जा अन्तरण तथा ऊर्जा संरक्षण। द्वितीय उपापचयजों का महत्व। प्रकाशप्रग्रहियों के रूप में वर्णक (स्लैस्ट्रिडियल वर्णक तथा पादपवर्णक) दीप्तिकालिता तथा पुष्पन, बसंतीकरण, जीर्णन। वृद्धि पदार्थ—उनकी रासायनिक प्रकृति, कृषि बागवानी में उनकी भूमिका और अनुप्रयोग, वृद्धि संकेत, वृद्धि गतियाँ। प्रतिबल शरीरक्रियाविज्ञान, (ताप, जल, लवणता, धातु)। फल एवं बीज शरीरक्रियाविज्ञान। बीजों की प्रसूति, भण्डारण तथा उनका अंकुरण। फल का पकना—उसका आण्विक आधार पर तथा मैनिपुलेशन।

5. परिस्थितिविज्ञान तथा पादप भूगोल : पारिस्थितिक कारक। समुदाय की अवधारणाएं और गतिकी। पादप अनुक्रमण जीवमंडल की अवधारणा। पारितंत्र उनका संरक्षण। प्रदूषण और उसका नियन्त्रण (फाईटरेमिडिएशन सहित)।

भारत के बनों के प्रस्तुप—वनरोपण, बनो-मूलन तथा सामाजिक वानिकी। संकटापन पौधे, स्थानिकता तथा रेड डस्ट बुक। जैव विविधता, प्रभुसत्ता अधिकारों तथा बैद्धक सम्पदा अधिकारों पर सम्पेलन। जैव—भूरासायनिक चक्र—वैश्विक तापन।

रसायन विज्ञान

प्रश्न-पत्र 1

1. परमाणु संरचना : क्वांटम सिद्धान्त, हाइसेनबर्ग अनिश्चितता सिद्धान्त, ऑडिंगर तरंग समीकरण (काल अनाश्रित), तरंग फलन की व्याख्या, एकल विमीय वाक्स में कण, क्वांटम संख्याएं, हाइड्रोजन परमाणु तरंग फलन। एस, पी और डी कक्षकों की आकृति।

2. रासायनिक आबंध : आयनी आबंध, आयनी यौगिकों के अभिलक्षण, आयनी यौगिकों की स्थिरता को प्रभावित करने वाले कारक, जालक ऊर्जा, बानहैबर चक्र, सह-संयोजक आबंध तथा उसके सामान्य अभिलक्षण। अणुओं में आबंध की घृवणा तथा उसके द्विध्रुव आधूर्ण। संयोजी आबंध, सिद्धान्त अनुनाद तथा अनुनाद ऊर्जा की अवधारणा। अणु कक्षक सिद्धान्त (एल. सी. ए. ओ. पद्धति); समन्यूक्लीय अणुओं में आबंध, H_2^+ , H_2 से Ne_2 , NO , CO , HF , CN , CH^- , BcH_2 , तथा CO_2 । संयोजी आबंध

तथा अणु कक्षक सिद्धांतों की तुलना, आबंध कोटि, आबंध सामर्थ्य तथा आबंध लम्बाई।

3. ठोस अवस्था (सोलिडस्टेट) : ठोसों के प्रकार, अन्तराफलक कोणों के स्थिरांक का नियम, क्रिस्टल पद्धति तथा क्रिस्टल वर्ण (क्रिस्टलोग्राफिक समूह) क्रिस्टल फलकों, जानक संरचनाओं तथा यूनिट सेल का स्पष्ट उल्लेख। परिमेय सूचकों के नियम, ब्रेग का नियम, क्रिस्टल द्वारा एक्स-रे विवर्तन, क्लोज पैकिंग (सुसंकलित रचना) अर्द्धव्यास अनुपात नियम, लिमिहिंग अर्द्धव्यास अनुपात मूल्यों के आकलन। NaCl, ZnS, CsCl₂, CaF₂, CdI₂ तथा स्टाइल की संरचना। क्रिस्टलों में अपूर्णता स्टाइक्रियोमीट्रिक तथा नान-स्टाइक्रियोमीट्रिक दोष, अशुद्धता दोष, अर्द्धचालक, द्रवरर्वों का प्रारंभिक अध्ययन।

4. गैसअवस्था : वास्तविक गैसों की अवस्था का समीकरण, अंतरा-अणुक पारस्परिक क्रिया, गैसों का द्रवीकरण तथा क्रांतिक घटना “मैक्सवेल” का गति वितरण, अंतराणुक संघट्ट, दीवार पर संघट्ट तथा अभिष्पन्दन।

5. ऊष्मगतिकी तथा सांख्यिकीय ऊष्मगतिकी : ऊष्मगतिकी पद्धति, अवस्थाएं और प्रक्रम, कार्य ऊष्मा तथा आन्तरिक ऊर्जा; ऊष्मगतिकी का प्रथम नियम, निकाय पर किया गया कार्य तथा विभिन्न प्रकार के प्रक्रमों में शोषित ऊष्मा कैलोरीमिति, विभिन्न प्रक्रमों में ऊर्जा एवं एथल्पी परिवर्तन और उनकी ताप पर निर्भरता।

ऊष्मगतिकी का दूसरा नियम; एन्ट्रोपी एक अवस्था फलन के रूप में विभिन्न प्रक्रमों में, एन्ट्रोपी परिवर्तन, एन्ट्रोपी-उत्क्रमणीयता तथा अनुक्रमणीयता, मुक्ज ऊर्जा फलन, साम्यावस्था का मापदंड, साम्य स्थिरांक तथा ऊष्मागतिकीय राशियों के बीच संबंध, नेन्स्ट प्रमेय तथा ऊष्मागतिकी का तीसरा नियम।

सूक्ष्म तथा स्थूल अवस्थाएं, विहित समुदाय तथा विहित विभाजन फलन इलैक्ट्रॉनिक, घुर्णी तथा कम्पनिक विभाजन फलन तथा ऊष्मागतिकी राशियां, आदर्श गैस अभिक्रियाओं में रासायनिक साम्य।

6. प्रावस्था साम्य तथा विलयन : शुद्ध पदार्थों में प्रावस्था साम्य; क्लॉसियस-क्लैपिरन समीकरण; शुद्ध पदार्थों के लिए प्रावस्था आरेख; द्विआधारी पद्धति में प्रावस्था साम्य आंशिक मिश्रणीय द्रव-उच्चतर तथा निम्नतर क्रांतिक विलयन ताप; आंशिक गोलर राशियां, उनका महत्व तथा निर्धारण; आधिक्य ऊष्मागतिकी फलन और उनका निर्धारण।

7. वैद्युत रसायन : प्रबल विद्युत अपघट्यों का डेवाई हुकेल सिद्धांत, विभिन्न साम्य तथा अधिगमन गुणधर्मों के लिए डेवाई हुकेल सीमांत नियम।

गलबैनिक सेल, सान्द्रता सेल इलैक्ट्रोकेमिकल सीरीज, सेलों के ई. एम. एफ. का मापन और उसका अनुप्रयोग; ईंधन सेल तथा बैटरियां।

इलैक्ट्रोड पर प्रक्रम; अंतरापृष्ठ पर द्विस्थर; चार्ज ट्रांसफर की दर, विद्युतधारा घनत्व; अतिविभव; वैद्युत विश्लेषण तकनीक बोल्टमिति, गोलरोग्राफी, एम्परोमिति, चक्रीय-वोल्टमिति, आयरन वरणात्मक इलैक्ट्रोड और उनके उपयोग।

8. रासायनिक बलगतिकी : अभिक्रिया दर की सान्द्रता पर निर्भरता, शून्य, प्रथम, द्वितीय तथा आंशिक कोटि की अभिक्रियाओं के लिए

अवकल और समांकल दर समीकरण; उत्क्रम समान्तरा, क्रमागत तथा श्रृंखला अधिक्रियाओं के दर समीकरण; दर स्थिरांक पर ताप और दाब का प्रभाव। स्टॉपफ्लो और रिलेक्सेशन पद्धतियों द्वारा हुत अभिक्रियाओं का अध्ययन संघट्टन और संक्रमण अवस्था सिद्धांत।

9. प्रकाश रसायन : प्रकाश का अवशोषण; विभिन्न मार्गों द्वारा उत्तेजित अवस्था का अवसान; हाइड्रोजन और हेलोजनों के मध्य प्रकाश रसायन अभिक्रिया और क्वान्टमी लव्धि।

10. पृष्ठीय परिघटना तथा उत्प्रेरकता : ठोस अधिशोषकों पर गैसों और विलयनों का अधिशोषण, अधिशोषण समताप रेखा--लैंगम्यर तथा बी. ई. टी. अधिशोषण रेखा; पृष्ठीय क्षेत्रफल का निर्धारण; विषमांगी उत्प्रेरकों पर अभिक्रिया के अभिलक्षण और क्रियाविधि।

11. जैव अकार्बनिक रसायन : जैविक तंत्रों में धातु आयन तथा भित्ति के पार आयन गमन (आण्विक क्रिया विधि) आइनोफोर्स, फोटोसिंथेसिज-पी.एस. I, पी. एस. II; नाइट्रोजन फिक्सेशन, आक्सीजन अपटेक प्रोटीन, साइटोक्रोम तथा फेरोडोक्सिन में उनकी भूमिका।

12. समन्वय रसायन :

(क) इलैक्ट्रॉनिक विन्यास; संक्रमण धातु संकुल में आबंध सिद्धांतों से परिचय, संयोजकता आबन्ध सिद्धांत, क्रिस्टल फील्ड सिद्धांत और उसमें संशोधन, धातु संकुल के चुंबकीय तथा इलैक्ट्रॉनिक स्पैक्ट्रम की व्याख्या में सिद्धांतों का अनुप्रयोग।

(ख) समन्वयी यौगिकों में आइसोमेरिज्म (समावयकता)। समन्वयी यौगिकों का आई. यू. पी. ए. सी. नामकरण; 4 तथा 6 समायोजन वाले संकुलों का भिविम रसायन, किलेट प्रभाव तथा बहुनामिकीय संकुल; परा-प्रभाव और उसके सिद्धांत; वर्ग समतली संकुल में प्रतिस्थापनिक अभिक्रियाओं की बलगतिकी; संकुलों की तापगतिकी तथा बलगतिकी स्थिरता।

(ग) मैटल कार्बोनिलों का संश्लेषण तथा उनकी संरचना; कार्बोक्सिलेट ऐनियन, कार्बोनिल हाइड्राइड तथा मैटल नाथ्रोसील यौगिक।

(घ) एरोमैटिक प्रणाली के संकुल, मैटल ओलेफिन संकुलों में संश्लेषण, संरचना तथा बंध, एल्काइन तथा सायक्लोपेंटाइडायनिक संकुल, समन्वयी असंतुप्तता; आक्सिडेटिव योगात्मक अभिक्रियाएं, निवेशन अभिक्रियाएं, प्रवाही अणु और उनका अभिलक्षण, मैटल-मैटल आबन्ध तथा मैटल परमाणु गुच्छे वाले यौगिक।

13. ‘एफ’ ब्लॉक तत्वों का सामान्य रसायन : लेस्पेनाइड और एक्टीनाइड : पृथक्करण, आक्सीकरण अवस्थाएं, चुम्बकीय तथा स्पैक्ट्रमी गुणधर्म, लेन्थेनाइड संकुचन।

14. निर्जल विलायक : द्रव NH₃, HF, SO₂ तथा H₂SO₄ में अभिक्रियाएं। विलायक निकाय अवधारणा की असफलता, निर्जल विलायकों का समन्वयन माडल, कुछ उच्च अम्लीय माध्यम, फ्लोरोसल्फूरिक एसिड तथा सुपर एसिड।

प्रश्न-पत्र 2

1. विस्थानित सहसंयोजक बंध: एरोमैटिकता, प्राप्त एरोमैटिकता, एन्युलीन, एजुलीन, द्रोपोलोम्स, केकुलीन फुल्वीन, सिडनोन।

(क) अभिक्रिया क्रियाविधि : उदाहरणों द्वारा कार्बनिक अभिक्रियाओं की क्रियाविधियों के अध्ययन की सामान्य विधियां (गतिक एवं गैर-गतिक दोनों) समास्थानिकों का उपयोग, क्रास-ओवर प्रयोग, मध्यवर्ती ट्रैपिंग, प्रिविम रसायन; सामान्य कार्बनिक अभिक्रियाओं के ऊर्जा डायग्राम--(खाचित्र) संक्रामी अवस्थाएं एवं मध्यवर्ती; संक्रियण ऊर्जा; अभिक्रियाओं का ऊष्मागतिकी नियंत्रण तथा गतिक नियंत्रण।

(ख) अभिक्रियाशील मध्यवर्ती : कारबोनियम तथा कारबेनियम आयनों, कारबेनियनों, मुक्त मूलकों (फ्री रेडिकल) कार्बोनों, बेन्जाइनों तथा नाइट्रोनों का उत्पादन, ज्यामिती स्थिरता तथा अभिक्रिया।

(ग) प्रतिस्थापन अभिक्रियाएं : SN1, SN2, SNi', SN2', SNi तथा SRN1 क्रियाविधियां; प्रतिवेशी समूह भागीदारी, पाइरोल, फ्यूरन, थियोफाइन, इंडोल जैसे हेट्रोसाइक्लिक यौगिकों सहित एरोमैटिक यौगिकों की इलैक्ट्रोफिलिक तथा न्यूक्लियोफिलिक अभिक्रियाएं।

(घ) विलोपन अभिक्रियाएं : E1, E2 तथा E1eb क्रियाविधियां; सेजैफ, तथा हॉफमन-E2 अभिक्रियाओं में दिक् विन्यास; पाईरोलिटिक SYn किलोपन--एसिटेट पाइरोलिसिस, चुग्गीव तथा कोष विलोपन।

(ड.) संकलन अभिक्रियाएं : C=C तथा C≡C के लिए इलैक्ट्रोफिलिक संकलन, C=O, C=N के लिए न्यूक्लियोफिलिक संकलन, संयुग्मी औलिफिन्स तथा कार्बोनिल्स।

(च) पुनर्विन्यास : पिनाकोल-पिनाकोलोन, हॉफमन, बेकमन, बेयर-विलिगर, फैपोस्की, फाईस, क्लैसेन, कोष, स्टीवेन्ज तथा वागनर--गेरबाइन पुनर्विन्यास।

3. पररंभीय अभिक्रियाएं (Pericyclic reactions) : वर्गीकरण और उदाहरण, कुडबर्ड-हॉफमन नियम-इलैक्ट्रो-साइक्लिक अभिक्रियाएं-साइक्लोएडीशन अभिक्रियाएं (2+2 तथा 4+2) तथा सिग्माट्रोपिक शिपट (1,3; 3,3 तथा 1,5), FMO उपगमन।

4. रसायन विज्ञान तथा अभिक्रियाओं की क्रियाविधि : एल्डोल संघनन (डायरेक्टेड एल्डोल संघनन सहित), क्लैसेन संघनन, डीकमन, परकिन, नोवेनेजेल, विट्टा, क्लीमेसन, बोल्फकिशनर, केनिज़ारो तथा फान-रिक्टर अभिक्रियाएं, सूब बेन्जोइन तथा एसिलोइन संघनन; फिशर इंडोल संश्लेषण, स्कराप संश्लेषण, विश्लर-नेपिएरास्की, सैंडमेयर, रेमेर, टाइगन तथा रेफॉर्मास्की अभिक्रियाएं।

5. बहुलक प्रणाली

(क) बहुलकों का भौतिक रसायन: बहुलक विलयन और उनके ऊष्मागतिक गुणधर्म, बहुलकों की संख्या और भार औसत अणुभार। अवसादन (सैडिमेटेशन), लाइट स्केटरिंग, ऑस्मोटिक प्रेशर, श्यानता (Viscosity), अंत्य समूह विश्लेषण पद्धति द्वारा अणुभार का निर्धारण।

(ख) बहुलकों का निर्माण और गुणधर्म: कार्बनिक बहुलक-पॉलिएथिलीन, पालीस्टाइरेन, पालीविना एल्कलोराइड, टेफलॉन, नाइलॉन, टेरीलीन, संश्लिष्ट तथा प्राकृतिक रबड़। अकार्बनिक बहुलक--फोर्स्फोनिट्रिलिक हेलाइड्स, बोराज़ाइन, सिलिकोन और सिलिकेट।

(ग) जैव बहुलक: प्रोटीन, डीएनए, आरएनए में मूलभूत बंध।

6. अभिकारकों के सांश्लेषिक उपयोग : O3O4, HIO4, Cro3, Pb(OAc)4, SeO2, NBS, B2H6, Na द्रव अमोनिया, LiALH4, NaBH4, N=Bali, MCPBA.

7. प्रकाश रसायन: साधारण कार्बनिक यौगिकों की प्रकाश रसायनिक अभिक्रियाएं, उत्तेजित और निम्नतम अवस्थाएं, एकक और त्रिक अवस्थाएं, नोरिश टाइप-I और टाइप-II अभिक्रियाएं।

8. स्पैक्ट्रमिकी सिद्धांत और संरचना के स्पष्टीकरण में उनका अनुप्रयोग।

(क) घूर्णी स्पैक्ट्रम: द्विपरमाणुक अशु समस्थानिक प्रतिस्थापन तथा घूर्णी स्थिरोक।

(ख) कार्पनिक स्पैक्ट्रम: द्विपरमाणुक अणु, रैखिक त्रि-परमाणुक अणु, बहुपरमाणुक अणुओं में क्रियात्मक समूहों की विशिष्ट आवृत्तियां।

(ग) इलैक्ट्रॉनिक स्पैक्ट्रम: एकक और त्रिक अवस्थाएं: N→π* तथा π→π* संकरण; संयुग्मित द्विआबंध तथा संयुग्मित करबोनील में अनुप्रयोग--बुडवर्ड-फिशर नियम।

(घ) नाभिकीय चुम्बकीय अनुवाद: आइसोक्रोनस और एनिसोक्रोनस प्रोटीन; कैमिकल शिफ्ट और कापलिंग स्थिरांक; H N M R का साधारण कार्बनिक अणुओं में अनुप्रयोग।

(ङ) द्रव्यमान स्पैक्ट्रा: पैरैट पीक, बेस पीक, डॉटर पीक, मेटास्टेबल पीक, साधारण कार्बनिक अणुओं का खंडन; OC-क्लिवेज, गैकलैफर्टी पुनर्विन्यास।

(च) इलैक्ट्रॉन चक्रण अनुवाद: अकार्बनिक संकर तथा मुक्त मूलक।

रसायनिक इंजीनियरी

प्रश्न-पत्र 1

खंड-क

(क) तरल तथा कण गतिकी

तरलों की श्यानता, स्तरीय और विक्षुब्ध, प्रवाह, अविच्छिन्नता समीकरण तथा नेवियर-स्टोक्स समीकरण-वर्गों का प्रमेय, प्रवाह मापी। तरल संकर्ष तथा दाव हास-नेनाल्ड संख्या तथा घर्षण गुणक-पाईप (नल) की रुक्षता का प्रभाव-लाभप्रद नल व्यास, पम्प, जल, वायु भाप जेट निष्कासक/इंजेक्टर, संपीडक (सद्धांत तथा उपस्कर)। रिट्जर तथा बांड के नियम-निस्तंदेन तथा निस्तंदेन उपस्कर तरल कण यांत्रिकी-मुक्त तथा अवरुद्ध निषदन (सैटलिंग)--तरलीकरण तथा न्यूनतम तरलीकरण वेग-सम्पीड्य तथा असम्पीड्य प्रवाह की संकल्पना-ठोस पदार्थों का परिवहन।

(ख) द्रव्यमान अन्तरण

आणविक विसरण गुणांक-विसरण का प्रथम तथा द्वितीय नियम-द्रव्यमान अन्तरण गुणांक-द्रव्यमान अन्तरण के फिल्म तथा अन्तर्वेशन आरावन, सरल आसवन, आपेक्षित वाष्पशीलता, आंशिक आसवन, आसवन के प्लेट एवं संकुलित स्तम्भ, प्लेटों की न्यूनतम संख्या का आकलन द्रव--द्रव साम्यावस्था, निष्कर्षण-सिद्धांत तथा व्यवहार, गैस-अवशोषण स्तम्भ का अभिकल्पन, शुष्कन, आर्द्धकरण, अनार्द्धकरण, क्रिस्टलीकरण। उपस्कर का अभिकल्पन।

(ग) ऊष्मा अन्तरण

चालन, तापीय ऊष्मा चालकता, विस्तृत सतह ऊष्मा अन्तरण, मुक्त तथा प्रणोदित संवहन ऊष्मान्तरण गुणांक-नसैल्ट संख्या-एल एम टी डी तथा प्रभावशीलता, द्विपाइप और खोल तथा ट्यूब ऊष्मा विनियमित्र के अभिकल्पन के लिए एन टी यू पद्धतियाँ, ऊष्मा तथा संबंग अन्तरण के बीच सादृश्यता, क्वथन (बायलिंग) तथा संधन तापीय ऊष्मा अन्तरण। एकल तथा बहुलक प्रभावी वाष्पक, विकिरण-स्टोफन-बोल्टजमैन नियम, उत्सर्जकता तथा अवशोषकता-भट्टी के तापीय आधार का आंकलन-सौर तापक।

खण्ड-ख

(घ) नवीन पृथक्करण प्रक्रियाएं

साम्य पृथक्करण प्रक्रियाएं: आयन-विनियम, परासरण, इलैक्ट्रो डायलिसिस, उल्कम (विपरीत) परासरण, परा निस्यन्दन तथा अन्य शिल्ली (मैम्बरेन) प्रक्रियाएं। आणविक आसवन। अति क्रांतिक (सुपर क्रिटिकल) तरल निष्कर्षण।

(ड.) प्रक्रिया उपस्कर अभिकल्पन

बाहिका (वैसल) अभिकल्पन (डिजाइन करने) के निकष को प्रभावित करने वाले कारक, लागत सम्बन्धी विचार संचयन बाहिकाओं का अभिकल्पन-उच्चाधिधर, क्षेत्रिज तथा गोल भूमिगत बाहिका (वैसल), वायुमण्डलीय तथा उच्च दाब के लिए संवरकों का अभिकल्पन, चपटी तथा दीर्घवृतीय शीर्ष वाली संवृतियाँ, आधारों (सपोर्ट्स) का अभिकल्पन (डिजाइन) निर्माण सामग्री-अभिलक्षण तथा चयन।

(च) प्रक्रिया गतिकी तथा नियंत्रण

प्रक्रिया परिवर्त्यों के लिए मापनयंत्र—जैसे तल, दाब, प्रवाह, तापमान, पी एच (pH) तथा सांद्रता को दृश्य/वायु-चालित/सादृश्य/अंकीय सूचक रूपों में दर्शाते हुए, नियंत्रित परिवर्त्य, युक्त प्रयुक्त परिवर्त्य तथा भाराधिक्य पारिवर्त्य, रैखिक नियंत्रण सिद्धांत, लाप्लास-रूपांतर (ट्रांसफार्मर्स) पी आई डी नियंत्रक। खंड अरेखा (ब्लाक डायग्राम) निरूपण, अल्पस्थायी तथा आवृत्ति अनुक्रिया, बंद लूप पद्धति का स्थायित्व उत्तर नियंत्रण नीतियाँ, कम्प्यूटर आधारित प्रक्रिया नियंत्रण।

प्रश्न-पत्र 2

खंड-क

(क) सामग्री तथा ऊर्जा समायोजन

पुनर्शक्रक्षण/उप मार्ग/रंचन (पर्ज) वाली प्रक्रियाओं में सामग्री तथा ऊर्जा संतुलन का आकलन। ठोस/द्रव/गैस ईंधनों का दहन, रससमीकरणमिति (स्टाईकियोमीट्री) समीकरण और अधिक वायु आवश्यकताएं-रुद्धोष्य ज्वाला तापमान।

(ख) रासायनिक इंजीनियरी ऊष्मा गतिकी

ऊष्मा गतिक के नियम-शुद्ध अवयवों तथा मिश्रण के लिए दाब-आयतन तापमान (पी बी टी) समीकरण, ऊर्जा फलन तथा परस्पर सम्बन्ध, मैक्सवैल-समीकरण, पलायनता, सक्रियता तथा रासायनिक विभव आदर्श/अनादर्श, शुद्ध-अवयव तथा बहु-अवयव मिश्रण के लिए वाष्प

द्रव साम्यावस्था। रासायनिक अभिक्रिया साम्यावस्था के मानदण्ड, साम्य स्थिरांक तथा साम्यावस्था रूपान्तरण। ऊष्मा गतिकी चक्र-प्रशीतन तथा शक्ति।

(ग) रासायनिक अभिक्रिया इंजीनियरी

घास (बैच) रिएक्टर, समांगी अभिक्रियाओं की गतिकी तथा गतिकी आंकड़ों की व्याख्या। आदर्श प्रवाह रिएक्टर-सतत विलोडित रिएक्टर (सी एस टी आर), प्लग प्रवाह रिएक्टर तथा उनके निष्यादन समीकरण-ताप प्रभाव तथा अनियंत्रित अभिक्रियाएं। विष्मांगी अभिक्रियाएं-उत्प्रेरित तथा अनुत्प्रेरित अभिक्रियाएं तथा ठोस-गैस, द्रव-गैस अभिक्रियाएं, नैज गतिकी तथा सार्वभौमिक अभिक्रिया दर संकलन। निष्यादन के लिए एक प्रावस्था से दूसरी प्रावस्था में तथा कण के भीतर द्रव्यमान अन्तरण का महत्व। प्रभाविता घटक। समतापीय तथा गैर-समतापीय रिएक्टर तथा रिएक्टर स्थिरता।

खण्ड-ख

(घ) रासायनिक प्रौद्योगिकी

प्राकृतिक कार्बनिक उत्पाद-काष्ठ तथा काष्ठ आधारित रसायन-लुगदी तथा कागज/कृषि उद्योग-शर्करा, खाद्य तेल निष्कर्षण (वृक्ष आधारित बीजों सहित); साबुन तथा डिटर्जेंट। सुगंध तेल, वायोमास गैसीकरण (बायोगैस सहित), कोयला तथा कोयला रसायन-पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस-पेट्रोलियम परिशोधन (वायुमण्डलीय आसवन/भंजन/शोधन) पेट्रोरसायन उद्योग पोलीथिलीन (एल डी पी ई/एच डी पी पी ई) पोलिविनाइल क्लोराइड, पोलिस्टाइरीन, अमोनिया का औद्योगिक निर्माण। सीमेंट तथा चूना उद्योग-रोगन तथा वार्निश-कांच तथा मृत्तिका शिल्प, किण्वन-अल्कोहल तथा प्रतिजैविक (एंटीबायटिक्स)।

(ड) पर्यावरणीय इंजीनियरी तथा सुरक्षा

परिस्थितिकी तथा पर्यावरण। वायु तथा जल में प्रदूषण के स्रोत, ताप नियंत्रण प्रभाव (ग्रीन हाउस इफैक्ट), ओजोन परत का हास, अम्ल बौछार। सूक्ष्म मौसम विज्ञान तथा पर्यावरण में प्रदूषक तत्वों का प्रसरण (प्रदूषण का फैलाव)। प्रदूषण स्तर को मापने की विधियाँ तथा उन पर नियंत्रण की नीतियाँ। डोस अपशिष्ट, उनके जोखिम और उनके निपटाने के तरीके, प्रदूषण नियंत्रण उपस्करों का अभिकल्पन (डिजाइन) तथा निष्यादन विश्लेषण। अग्नि तथा विस्फोट जोखिम निर्धारण, एच ए जैड और पी तथा एच ए जैड ए एन। आपातकालीन योजना, आपदा प्रबन्ध, पर्यावरणीय विज्ञान, जल, वायु तथा पर्यावरण संरक्षण अधिनियम। वन (संरक्षण) अधिनियम।

(च) प्रक्रिया इंजीनियरी अर्थशास्त्र

प्रक्रम उद्योग के लिए नियम (फिक्सड) तथा कार्यशील पूँजी आवश्यकताएं और अनुमान पद्धतियाँ। लागत अनुमान और विकल्पों की तुलना। डिस्काउन्टेड कैश फलो द्वारा निवल वर्तमान मूल्य, वापस भुगतान विश्लेषण। आई. आर. आर., मूल्य हास, कर तथा बीमा। सीमान्त बिन्दु विश्लेषण। परियोजना अनुसूचन, पी. ई. आर. टी. तथा सो. पी. एम.। लाभ तथा हानि लेखा, तुलन-पत्र तथा वित्त विवरण। पाइप लगाने सहित संयंत्र स्थल तथा संयंत्र अभिन्यास।

सिविल इंजीनियरी

प्रश्न-पत्र 1

भाग-क : यांत्रिकी इंजीनियरी, पदार्थ-सामर्थ्य तथा
संरचनात्मक विश्लेषण

यांत्रिकी इंजीनियरी :

मात्रक तथा विभाएं, एस. आई. मात्रक, सदिश, बल की संकल्पना, कण तथा दृढ़ पिण्ड संकल्पना, संगामी, असंगामी तथा समतल पर समान्तर बल, बल आधूर्ण तथा वैरिंगनोन प्रगेय, मुक्त पिण्ड औरेख, सप्रतिबंध साम्यावस्था, कल्पित कार्य का सिद्धांत, समतुल्य बल प्रणाली।

प्रथम तथा द्वितीय क्षेत्र आधूर्ण, द्रव्यमान जड़त्व आधूर्ण।

स्थैतिक घर्षण, आनत तल तथा वैयरिंग।

शुद्धगतिकी तथा गतिक :

कार्तीय शुद्धगतिकी तथा ध्रुवीय निर्देशांक समान तथा असमान त्वरण के अधीन गति, गुरुत्वाधीन गति। गतिक कण : संवेग तथा ऊर्जा सिद्धांत, डी. एल्गार्टर्स सिद्धांत, प्रत्यास्थ पिण्डों का संघटन, दृढ़ पिण्डों का धूर्णन, सरल आवर्त गति, गति पालक चक्र।

पदार्थ-सामर्थ्य :

सरल प्रतिबल तथा विकृति, प्रत्यास्थ स्थिरांक, अक्षीत : भारित संपीड़न, अपरूपण बल तथा बंकन आधूर्ण, सरल बंकन का सिद्धांत, अनुप्रस्थ काट का अपरूपण प्रतिबल वितरण, समसामर्थ्य धरण, पत्तीदार कमानी, प्रत्यक्ष प्रतिबल में विकृति ऊर्जा, बंकन तथा अपरूपण।

धरन विक्षेप : मैकाले विधि, गोर की आधूर्ण क्षेत्र विधि, अनुरूप धरण विधि, एकांक भार विधि, शाप्ट की ऐंठन, संचरण क्षमता, सघन कुंडलित कम्पनी, स्तम्भों का प्रत्यास्थ स्थायित्व। आंयलर, रेनकाइन तथा सीकेट सूत्र। दो विभाओं में प्रमुख प्रतिबल तथा विकृति, मोर का वृत्। प्रत्यास्थ भंग के सिद्धांत स्थूल तथा तनु सिलिंडर : आंतरिक तथा बाह्य दाब के कारण प्रतिबल-लागें समीकरण।

संरचनात्मक विश्लेषण :

कास्टिलियानोस प्रमेय I तथा II, एकांक भार विधि, धरण और कील संधियुक्त कैंची (द्रस) में प्रयुक्त संगत विकृति की विधि। ढाल विक्षेप, आधूर्ण विवरण, अपरिमित धरण तथा दृढ़ ढांचों में प्रयुक्त कनि की विश्लेषण विधि तथा स्तम्भ सादृश्य विधि।

वेलन भार और प्रभाव रेखाएं : धरण के खण्ड पर अपरूपण बल तथा बंकन आधूर्ण के लिए प्रभाव रेखाएं। गतिशील भार प्रणाली द्वारा धरण चक्रमण में अधिकतम अपरूपण बल तथा बंकन आधूर्ण हेतु मानदंड। सरल आलंबित समतल कील संधियुक्त कैंची (द्रस) हेतु प्रभाव रेखाएं।

डाट : त्रिकील, द्विकील तथा आबद्ध डाट, पर्शु का लधीयन तथा तापमान प्रभाव, डाट में प्रभाव रेखाएं।

विश्लेषण की मैट्रिक्स विधि : अपरिमित धरण तथा दृढ़ ढांचों का बल विधि तथा विस्थापन विधि से विश्लेषण।

धरण और ढांचों का प्लास्टिक विश्लेषण : प्लास्टिक बंकन सिद्धांत, प्लास्टिक विश्लेषण, स्थैतिक प्रणाली, यांत्रिकी विधि।

असमित बंकन : जड़त्व आधूर्ण, जड़त्व उत्पाद, उदासीन अक्ष और मुख्य अक्ष की स्थिति बंकन प्रतिबल की परिणाम।

भाग-ख

संरचना अभिकल्प : इस्पात, कंक्रीट तथा चिनाई संरचना

संरचनात्मक इस्पात अभिकल्प :

संरचनात्मक इस्पात : सुरक्षा गुणक और भार गुणक। कवचित, काबला तथा वेलिड जोड़ तथा संयोजन। तनाव तथा संपीड़न इकाइयों का अभिकल्प, संघटित परिच्छेद का धरण, कवचित तथा वेलिड प्लेट गर्डर, गेंद्री गर्डर, वत्ता और बंधक, स्लैब एवं ग्यैटिड (स्तम्भ आधार) कालम बेस सहित स्टंचियन्स।

राजमार्ग तथा रेलवे पुलों का अभिकल्प : यू एंड डेक टाइप प्लेट गर्डर, वरेन गर्डर, प्रांट कैंची।

कंक्रीट तथा चिनाई संरचना का अभिकल्प :

मिश्र अभिकल्प की संकल्पना, प्रबलित कंक्रीट : कार्यकारी प्रतिबल तथा सीमा अवस्था विधि से अभिकल्प--आई. एस. पुस्तिकाओं की सिफारिशें/वन वे एवं टू वे स्लैब का डिजाइन, सोपान-स्लैब, सरल तथा आयताकार सतत् धरन, टी एवं एल काट के सरल एवं सतत् धरण। उक्तेन्द्रित सहित अथवा रहित प्रत्यक्ष भार के अंतर्गत संपीड़न इकाइयां। विलगित एवं संयुक्त नींव। केन्यलिवर एवं पर्शुका युक्त पर्तिधारक भित्ति।

जल टंकी : पृथक्षी पर रखे आयताकार एवं गोलाकार टंकियों के अभिकल्पन के लिए शर्तें।

पूर्व प्रतिबलित कंक्रीट : पूर्व प्रतिबलित के लिए विधियां और प्रणालियां आनति आधारित परिच्छेद पर विश्लेषण और अभिकल्प के द्वारा कार्यकारी प्रतिबल, पूर्व प्रतिबलित हानि।

आई. एस. (पुस्तिकाओं) कोड के अनुसार इट की चिनाई का अभिकल्पन।

चिनाई प्रतिधारक भित्ति अभिकल्पन।

भाग-ग

तरल यांत्रिकी, मुक्त वाहिका प्रवाह एवं द्रवचालित मशीनें

तरल यांत्रिकी :

तरल गुणधर्म तथा तरल गति में उनकी भूमिका, तरल स्थैतिकी जिसमें समतल तथा वक्र सतह पर कार्य करने वाले बल भी शामिल हैं।

तरल प्रवाह की शुद्धगतिकी एवं गतिक : वेग और त्वरण, सरिता रेखाएं, सांतत्य समीकरण, आधूर्ण तथा धूर्ण प्रवाह, वेग विभव एवं सरिता अभिलक्षक, प्रवाह जल, आरेखण प्रवाह जल विधि, स्रोत और निगमन, प्रवाह पृथक्करण, मुक्त तथा प्रतिबलित धंवर।

आयतन नियंत्रण समीकरण, सांतत्य, संवेग, आयतन नियंत्रण समीकरण से ऊर्जा तथा संवेग आधूर्ण, नेवियर स्टोक्स, समीकरण, आयलर आधूर्ण समीकरण, तरल प्रवाह समस्याओं का अनुप्रयोग, पाइप प्रवाह, समतल, वक्र, अचल एवं चल वेन, स्लूइस गेट, बियर, आस्यमापी तथा बैट्री मापी।

विमीय विश्लेषण एवं समरूपता : बर्किंगहग पी--प्रोग्रेस विमारहित प्राचल, समस्या सिद्धान्त, निर्दर्शन नियम, अविकृत एवं विकृत प्रतिरूप।

स्तरीय प्रवाह : समांतर, अचल एवं चल प्लेटों के बीच स्तरीय प्रवाह, द्यूब द्वारा प्रवाह।

परिसीमा परत : चपटी प्लेट पर स्तरीय एवं विक्षुब्ध परिसीमा परत, स्तरीय, उप-परत, भमृण एवं रुक्ष परिसीमाएं, विर्कर्ष एवं लिप्ट।

पाइपों द्वारा विक्षुब्ध प्रवाह : विक्षुब्ध प्रवाह के अभिलक्षण वेग वितरण एवं पाइप घर्षण गुणक की विविधता, जलदाब प्रवनता रेखा तथा सूर्य ऊर्जा रेखा, साइफन, पाइप प्रसारण और संकुचन, पाइप जलकार्य, पाइपों और उल्लोल कुण्डों में जलाधात।

मुक्त वाहिका प्रवाह :

समान एवं असमान प्रवाह, आधूर्ण एवं ऊर्जा संशुद्धि गुणक, विशिष्ट ऊर्जा तथा विशिष्ट बल, क्रान्तिक गहराई, प्रतिरोध समीकरण तथा रुक्षता गुणांक की विविधता, तीव्र परिवर्ती प्रवाह, संकुचन में प्रवाह, अपच्छिन अवपात प्रवाह, जलोच्छल और इसके अनुप्रयोग, प्रोत्कर्ष एवं तरंग, क्रमशः परिवर्ती प्रवाह, पृष्ठ परिच्छादिका वर्गीकरण, नियंत्रण काट, परिवर्ती प्रवाह समीकरण के समाकलन की सोपान विधि, चल प्रोत्कर्ष एवं द्रवचालित बोर।

द्रवचालित यंत्र तथा जलशक्ति :

अपकेन्द्री पम्प--प्रकार, अभिलक्षण, नेट पाजिटिव सक्षण हाईट (एन. पी. एस. एच.) विशिष्ट गति, समांतर पम्प।

प्रत्यगामी पम्प, वायु भांड, द्रवचालित रेग, दक्षता प्राचल, घूर्णी एवं घनात्मक विस्थापन पम्प, डायाफ्राम तथा जेट पम्प।

द्रवचालित टरबाइन, प्रारूप, वर्गीकरण, टरबाइन, चयन, निष्पादन, प्राचल, नियंत्रण, अभिलक्षण, विशिष्ट गति।

जल शक्ति विकास के सिद्धान्त, प्रकार, अभिन्यास तथा घटक, कार्य, प्रोत्कर्ष टैक, प्रकार और चयन, प्रवाह अवधि वक्र तथा आंशित प्रवाह : भण्डारण तथा जल संचयन पंपन भण्डारण संयंत्र, लघु सूक्ष्म जल वैद्युत संयंत्र के विशेष लक्षण।

भाग-घ

भू तकनीकी इंजीनियरी

मृदा के प्रकार, कला सम्बन्ध, गाढ़ता सीमाय, कण आकार वितरण, मृदा वर्गीकरण संरचना तथा मृत्तिका खनिज विज्ञान।

कोशिकीय जल तथा संरचनात्मक जल, प्रभावी प्रतिबल तथा रंध जल दाब, डारसी नियम पारगम्यता को प्रभावित करने वाले कारक, पारगम्यता का निर्धारण, स्तरित मृदा निक्षेपों के पारगम्यता।

रिसन दाब, बाल पंक अवस्था, संपाड़यता तथा संहनन, टेरजाधी का एक विमीय सिद्धांत, प्रहनन परीक्षण।

मृदा संहनन, संहनन क्षेत्र नियंत्रण, कुल प्रतिबल तथा प्रभावी प्रतिबल पारगम्यता, रंध दाब गुणांक। मृदा का सामर्थ्य अपरूपण, मोर कूलांब, भंगता सिद्धांत, अपरूपण परीक्षण, भू दाब विराम सक्रिय तथा निष्क्रिय

दाब, रेनकाइन सिद्धांत, कूलांब का फनी सिद्धांत, प्रतिधारक भित्ती पर भू दाब चादरी स्थूणा भित्ती, बन्धनयुक्त खनन। दिक्षमान धारिता, टेरजाधी तथा अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत, शुद्ध तथा कुल दिक्षमान दाब। आसन्न तथा संचनन प्रबन्ध। ढाल स्थायित्व, कुल प्रतिबल तथा प्रभावी प्रतिबल विधि, फ्लाइसों की रुढ़ विधि, स्थायित्व अंक। अधस्थल अन्वेषण, प्रबेधन विधि, प्रतिचयन अन्तर्वेशन परीक्षण, दाब मापी परीक्षण।

नींव के महत्वपूर्ण लक्षण, नींव के प्रकार, अभिकल्पन मापदंड, नींव के प्रकार का चयन, मृदा में प्रतिबल वितरण, बासिनस्क सिद्धांत, न्यूयार्क चार्ट, दाब बल्ब, संस्पर्श दाब, विभिन्न दिक्षमान धारिता सिद्धांत की अनुप्रयोज्यता, क्षेत्र परीक्षण से दिक्षमान धारिता का मूल्यांकन, अनुज्ञेय दिक्षमान धारिता, निषदन विश्लेषण, अनुज्ञेय निषदन।

पाद अनुपातन, विलगित तथा संयुक्त पाद, रैप्ट्स, उत्पाबवता रैप्ट्स, उत्पाबवता, रैप्ट्स, स्थूणा नींव, स्थूणा के प्रकार, स्थूणा धारिता, स्थितिक तथा गतिक विश्लेषण, स्थूण समूहों के अभिकल्प, स्थूण भार परीक्षण, स्थूण निषदन, पार्श्विक धारिता, पुलों हेतु नींव, भूमि सुधार तकनीक-पूर्व भारण-बालू नाली, पत्थर-स्तम्भ, अभिपूरण, मृदा स्थायीकरण।

प्रश्न-पत्र 2

भाग-क : निर्माण, तकनीक, उपकरण, योजना और प्रबन्ध

1. निर्माण तकनीक :

इंजीनियरी सामग्री :

निर्यात सामग्री के भौतिक गुणधर्म : पत्थर, ईंट तथा टाइल, चूना, सीमेंट तथा सुरखी मसाला, चूना कंक्रीट तथा सीमेंट कंक्रीट। ताजा मिश्रित तथा कठोरित कंक्रीट के गुण धर्म, फर्श की टाइलें प्रबलित सीमेंट, तनु प्रबलित तथा पालिमर कंक्रीट, उच्च सामर्थ्य कंक्रीट तथा हल्की कंक्रीट, प्रकोष्ठ का प्रयोग। इमारती लकड़ी : गुणधर्म एवं प्रयोग, इमारती लकड़ी में दोष, इमारती लकड़ी का संशोषण एवं संरक्षण, प्लास्टिक रबड़ एवं आद्रतारोधी सामग्री, अन्तर्स्थ रोधी, कम लागत के आवास हेतु सामग्री।

निर्माण :

भवन के घटक और उनके कार्य, ईंट-चिनाई, बन्धन, जोड़ पत्थर चिनाई। आई. एस. क्रोडी (पुस्तिकाओं) के अनुसार दीवार की ईंट-चिनाई का डिजाइन, सुरक्षा गुणक, उपयुक्तता तथा सामर्थ्य आवश्यकताएं, प्लास्टर, टीप, फर्शें एवं छतों के प्रकार। संवालन, भवनों की मरम्मत।

भवन की कार्य मूलक योजना : भवन, अभिन्यास, परिसंचरण, क्षेत्रों का समूह, गुप्त संकलना तथा ऊर्जा दक्ष भवन का डिजाइन, राष्ट्रीय भवन कोड व्यवस्था।

भवन आकलन एवं विनिर्देशन, कार्य की लागत, मूल्यांकन।

2. निर्माण उपकरण :

मानक एवं विशेष प्रकार के उपकरण निरोधक अनुरक्षण एवं मरम्मत, उपकरण के चयन को प्रभावित करने वाले कारक, सन्तुलित आयु, समय एवं गति अध्ययन, पूंजी एवं अनुरक्षण लागत।

कंक्रीट उपकरण : तौल बैचर मिश्रक कम्पन, बैलिंग संयंत्र, कंक्रीट पम्प।

मिट्टी कार्य के उपकरण : विद्युत फावड़ा, कुदाल बुलडोजर, डम्पर, ड्रेलर और ट्रैक्टर, रोलर, मेष पाद बेल्लन।

3. निर्माण योजना और प्रबन्ध :

निर्माण, सक्रियता, कार्यक्रम, कार्य अभिन्यास, बार चार्ट, संविदा करने वाली फर्मों का संगठन, परियोजना, नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण। लागत कम करने के उपाय।

नव कार्य विश्लेषण : सी. पी. एम. एवं पी. ई. आर. टी. विश्लेषण, प्लंबी समय, सक्रियता, ध्वंस लागत, इष्टतभीकरण आधुनिकीकरण हेतु नेटवर्क संकुचन, लागत विश्लेषण और साधन नियतन। इंजीनियरी अर्थशास्त्र के तत्व, मूल्य निर्धारण की विधियाँ, वर्तमान मूल्य, वार्षिक लागत, लाभ लागत, वार्षिक विश्लेषण, अनुमाप एवं आकार की अर्थव्यवस्था, निवेश स्तर सहित विकल्पों को चुनना। परियोजना लाभदायिकता।

भाग ख : सर्वेक्षण एवं परिवहन इंजीनियरी

सर्वेक्षण : दूरी एवं कोण मार्वन की सामान्य विधि, प्लैन, टेबल सर्वे, समतलन, चक्रम, सर्वेक्षण, त्रिकोणन सर्वेक्षण, संशोधन एवं समायोजन, रूप रेखण, स्थलाकृतिक, मानचित्र। उपर्युक्त उद्देश्यों के लिए सर्वेक्षण उपकरण, टकीमिती, वृत्ताकार एवं संक्रमण वक्र फोटोग्रामेट्री के सिद्धान्त।

रेलवे : रेल पथ, स्लीपर रेल आबंधन, मिट्टी, कांटे तथा क्रासिंग उत्काम अभिकल्प, स्टेशन तथा यार्ड, (टर्न टेबल), भूमि पटल, सिग्नल तथा अन्तःपाशन, समतल पारक। रेल पथ का निर्माण एवं अनुरक्षण, बाह्योत्थान, रेल का विसर्पण, नियंत्रक प्रवणता, ट्रैक प्रतिरोध, संकरण प्रयास, ट्रैक रिलेकरण (प्रविसारण)।

राजमार्ग इंजीनियरी : राजमार्ग योजना के सिद्धान्त, राजमार्ग सरिखन ज्योमितिक अभिकल्प, अनुप्रस्थ काट, उभार (कोम्बर), बाह्योत्थान, क्षेत्रिज एवं रूर्ध्वकार वक्र। मार्गों का वर्गीकरण, कम लागत मार्ग, नम्य कुटि टम, दृढ़ कुट्टिम, कुट्टिम (पेवर्मेंट) डिजाइन एवं उनका निर्माण, कुट्टिम मंगला और मजबूती का मूल्यांकन।

सड़क अपवाह : बहिस्तल एवं अद्यस्तल अपवाह। यातायात इंजीनियरी : पूर्वानुमान तकनीक, उदागम एवं गंतव्य सर्वेक्षण, राजमार्ग क्षमता। सरणीकृत एवं असरणीकृत परिषेद, धूर्णी अभिकल्पन अवयव, अंकन, चिह्न सिग्नल, मार्ग प्रकाश व्यवस्था: यातायात सर्वेक्षण, राजमार्ग वित्त व्यवस्था के सिद्धान्त।

भाग-ग : जल विज्ञान, जल संसाधन एवं इंजीनियरी

जल विज्ञान, जलीय चक्र, अवक्षण वाष्पीकरण, वाष्पोत्सर्जन, अवनमन संचयन, अंतः स्पंदन, अधिभार प्रवाह, जलारेख, बाढ़ आवृत्ति विश्लेषण, बाढ़ आवकलन, जलाशय द्वारा बाढ़ अनुशीलन, वाहिका प्रवाह मार्गाभिगमन-मस्किंग विधि।

भू जल प्रवाह : विशिष्ट लब्धि, संचयन गुणांक, पारगम्यता गुणांक, परिरुद्ध तथा अपरिरुद्ध जलवाही स्तर, स्रावी जलरोधी स्तर, परिरुद्ध तथा अपरिरुद्ध स्थितियों के अंतर्गत एक कूप के भीतर अरीय प्रवाह, नलकूप, पम्पन तथा पुनर्जाप्ति परीक्षण, भूजल विभव।

जल संसाधन इंजीनियरी : भू तथा धरातल जल संसाधन, एकल तथा बहुउद्देशीय परियोजनाएं, जलाशय की संचयन क्षमता, जलाशय हानियां,

जलाशय अवसादन, जल संसाधन परियोजना का अर्थशास्त्र।

सिंचाई इंजीनियरी : फसलों के लिए जल की आवश्यकता : जल का क्षयी उपयोग, सिंचाई के लिए जल की गुणवत्ता, कृति तथा डैल्यू, सिंचाई के तरीके तथा उनकी दक्षताएं।

नहरें : नहर सिंचाई के लिए आबंटन पद्धति, नहर की क्षमता, नहर की हानियाँ, मुख्य तथा वितरिका नहरों का सरिखन-अत्यधिक दक्ष काट, अस्तरित नहरें, उनके डिजाइन, रिजीग सिद्धान्त, क्रांतिक अपरूप प्रतिबल, तल भार, स्थानीय तथा निर्लंबित भार परिवहन, अस्तरित तथा अनास्तरित नहरों की लागत का विश्लेषण, अस्तर के पीछे जल निकास।

जल ग्रस्तता : कारण तथा नियंत्रण, जल निकास पद्धति का डिजाइन, लवणता।

नहर संरचना : क्रास नियंत्रक का डिजाइन, मुख्य नियामक, नहर प्रपात, जलवाही सेतु, अवनलिका का नहर निकास में मापन।

द्विपरिवर्ती शीर्ष कार्य : पारगम्य तथा अपारगम्य नीवों पर बाधिका के सिद्धांत और डिजाइन, खोसला-सिद्धांत, ऊर्जा क्षय, शगन द्वाणी, अवसाद अपर्जन।

संचयन कार्य : बांधों की किस्में, डिजाइन, दृढ़ गुरुत्व तथा भू-बांधों के सिद्धांत, स्थायित्व विश्लेषण, नीवों का (ट्रीटमेंट) उपचार, जोड़ तथा दीर्घाएं, निस्पदन का नियंत्रण।

उत्पलव मार्ग : उत्पलव मार्ग की किस्में, (शिखर द्वार) क्रस्ट गेट, ऊर्जा क्षय।

नदी प्रशिक्षण : नदी प्रशिक्षण के उद्देश्य, नदी प्रशिक्षण की विधियाँ।

भाग-घ : पर्यावरण इंजीनियरी

जल पूर्ति : भू-पृष्ठ तथा उप भू-पृष्ठ जल स्रोतों का आकलन, जल मांग की प्रामुक्ति, जल की अशुद्धता तथा उसका महत्व, भौतिक, रासायनिक तथा जीवाणु विज्ञान संबंधी विश्लेषण, जल से होने वाली बीमारियाँ, पैदा जल के लिए मानक।

जल का अंतर्ग्रहण : पंपन तथा गुरुत्व योजनाएं। जल उपचार : स्कन्धन के सिद्धांत, ऊर्णन तथा सादन, मंद-, द्वृत-, दाब फिल्टर, क्लोरीनीकरण, मृदुकरण, स्वाद, गंध तथा लवणता को दूर करना।

जल संग्रहण तथा वितरण : संग्रहण एवं संतुलन जलाशय-प्रकार, स्थान और क्षमता।

वितरण प्रणालियाँ : अभिन्यास, पाइप लाईनों की द्रव इंजीनियरी, पाइप फिटिंग, रोधक तथा दाब कम करने वाले वाल्वों सहित अन्य वाल्व, मीटर, वितरण प्रणालियों का विश्लेषण, क्षरण अभिज्ञान, वितरण प्रणालियों का अनुरक्षण, पंपन केन्द्र तथा उनका परिचालन।

वाहिंतगल व्यवस्था : घरेलू तथा औद्योगिक अपशिष्ट, झंझाकवत वाहिंतगल--पृथक और संयुक्त प्रणालियाँ, सीवरों द्वारा बहाव, सीवरों का डिजाइन; सीवर उपस्कर, मैनहोल, अंतर्गम जंक्शन साईफन। सावर्जनिक भवनों में प्लान्बिंग।

सीवेज लक्षण : बी.ओ.डी., सी.ओ.डी., ठोस पदार्थ, विलीन ऑक्सीजन, नाइट्रोजन और टी ओ सी सामान्य जल मार्ग तथा भूमि पर निष्कासन के मानक।

सीवेज उपचार : कार्यकारी नियम, इकाइयाँ, कोष्ठ, अवसादन टैंक, चावी फिल्टर, आक्सीकरण, पोखर, उत्त्रेरित अवपक, प्रक्रिया, सैप्टिक टैंक, अवपक निस्तारण, अवशिष्ट जल का पुनः चालन।

ठोस अपशिष्ट : गाँवों और शहरों में संग्रहण एवं निस्तारण दीर्घकालीन कुप्रभावों का प्रबन्ध।

पर्यावरणीय प्रदूषण : अवलम्बित विकास। रेडियोएक्टिव अपशिष्ट एवं निष्कासन, उष्णीय शक्ति संयंत्रों, खानों, नदी धाटी परियोजनाओं के लिए पर्यावरण संबंधी प्रभाव मूल्यांकन, वायु प्रदूषण, वायु प्रदूषण नियंत्रण अधिनियम।

वानिकी

प्रश्न पत्र--1

खण्ड--क

1. वनवर्धन-सामान्य :

सामान्य वन वर्धन सिद्धान्त-वनस्पति को प्रभावित करने वाले पारिस्थितिकी तथा शरीर विज्ञानीय कारक। वनों का प्राकृतिक तथा कृत्रिम पुनर्संचरण, प्रसार की पद्धतियाँ, ग्राफिंग तकनीक, स्थल कारक; नरसी तथा रोपाण तकनीक-नरसी क्यारियाँ, पोली बैग एवं अनुरक्षण, पौधों के लिए जल निर्धारण, श्रेणीकरण तथा पौधों का दृढ़ीकरण, विशेष आधार, प्रस्थापनाएं तथा देखभाल।

2. वनवर्धन-प्रणालियाँ :

संपूर्ण कटान (विलयर फैलिंग), समरूप छाया काष्ठ चयन, गुल्पवन तथा रूपान्तरण पद्धति। शीतोष्ण, उप-उष्ण कटिबंधी, आर्द्ध-उष्ण कटिबंधी, शुष्क उष्ण कटिबंधी तथा तटीय उष्ण कटिबंधी वनों के वृक्षारोपण वन वर्धन, प्रजाति चयन, मानकों की स्थापना तथा व्यवस्था, उपजाऊपन की पद्धतियाँ, तकनीकी अड़चनें, गहन यंत्रीकरण पद्धतियाँ, हवाई बीज छिड़काव, विरलन के विशेष संदर्भ में वनवर्धन प्रणालियों का प्रबंध।

3. वन वर्धन-कच्छ वनस्पति तथा शीत मरुस्थल :

कच्छ वनस्पति वास तथा लक्षण : कच्छ वनस्पति पौध स्थापना-निकृष्ट कच्छ वनस्पति स्वरूपों की स्थापना तथा पुनःस्थापना, कच्छ वनस्पति के लिए वनवर्धन पद्धति, प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध वास का संरक्षण। शीत मरुस्थल-प्रजातियों के लक्षण, पहचान तथा व्यवस्था।

4. वृक्षों का वनवर्धन

उष्णकटिबंधीय वनवर्धन शोध तथा व्यवहार में परम्परागत तथा नवीनतम विकास। भारत में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण कुछ प्रजातियों का वनवर्धन जैसे खैर/कथ्था (ऐकेसिया कैटेचू), बबूल (ऐकेसिया निलोटिका), ऐकेसिया आरिकुलीफार्मिस, सिरस (ऐल्विजिया लैवेक), ऐल्विजिया प्रोसेरा, कदंब (ऐथोसेफेलस कदंब), एनोगाइस्स लैटिफोलिआ, नीम (ऐजाडिरेक्टा इंडिका), बैंस प्रजाति, ढाक/फ्लास (व्यूटिया मोनोस्पर्मी), कैसिया सिएमिया, कैजूआराइना इक्यूसेटीफोलिया देवदार (सीइस देओदार) चुकरासिया टेबुलारिस, शीशम (डैलवर्जिया सिसो), डिटैरोकार्पस प्रजातियाँ, एम्बीलिका आफसिनालिस यूकेलिप्टस प्रजातियाँ, गंमरी (मेलाइना आर्वारिया), हार्डिंगिया विनाय, लाजस्ट्रीमिया लेनसियोलाय, पाइनस (चीड़वंश)

राक्सवर्गी, पोप्युलस प्रजातियाँ पक्षफली फलघानी (टेगोकार्पस मार्सपियम), विलायती कीकर (पोसोषिस ज्यूलीफ्लोरा), चंदन (सैन्टेलम एलबंम), सिमिकार्पस ऐनाकार्डियम, साल (शोरिया रोबस्टा), सैमल (सेल्मैलिया मालाबेरिकम), सागौन (टैक्टेना ग्रैन्डिस), टर्मिनेलिया ट्रेमेन्ट्योसा, इमली (टेमारिन्डस इंडिका)।

खण्ड-'ख'

1. कृषि वानिकी, सामाजिक वानिकी संयुक्त वन प्रबन्ध तथा ट्राइबालोजी

कृषि वानिकी : कार्यक्षेत्र तथा आवश्यकता, जन और पालतू जानवरों के जीवन तथा समन्वित भूमि उपयोग में भूमिका, विशेष रूप से निम्नलिखित की योजना के संदर्भ में—

- (i) मृदा तथा जल संरक्षण;
- (ii) जल पुनर्भरण (रीचार्ज);
- (iii) फसलों में पोषण उपलब्धता;
- (iv) नाशी जीव-परपक्षी के संबंध के द्वारा पारिस्थितिकी संतुलन सहित प्रकृति तथा परिस्थिति तंत्र संरक्षण, तथा
- (v) जैव विविधता, औषधीन तथा अन्य वनस्पति और जीव जन्तुओं के वर्धन के लिए अवसर प्रदान करना विभिन्न कृषि-पारिस्थितिकी क्षेत्रों के अन्तर्गत कृषि, वानिकी तंत्र, प्रजातियों का चयन तथा बहुउद्देश्यीय वृक्षों की भूमिका—और एन टी एफ पी एस प्रविधियाँ, अन्न, चारा तथा ईंधन सुरक्षा, अनुसंधान तथा विस्तार आवश्यकताएं।

सामाजिक/शहरी वानिकी-उद्देश्य, कार्य क्षेत्र तथा आवश्यकता; जन सहभागिता।

जे. एफ. एम. (संयुक्त वानिकी प्रबंध) सिद्धांत, उद्देश्य, प्रणाली विज्ञान, कार्य क्षेत्र लाभ तथा एन जी ओ (गैर सरकारी संस्था) की भूमिका।

ट्राईबोलाजी-भारत में जन जातीय अवस्था, जन जातियाँ, प्रजातियों की अवधारणा, सामाजिक समूहन के सिद्धांत, जन जातीय अर्थ व्यवस्था, शिक्षा, सांस्कृतिक परम्परा, रूढ़ि, प्रकृति तथा वानिकी कार्यक्रमों में सहभागिता।

2. वन मृदा, मृदा संरक्षण तथा जल-विभाजक प्रबन्ध :

वनों की मृदा, वर्गीकरण, मृदा बिरचन को प्रभावित करने वाले कारक, भौतिक, रासायनिक तथा जैविक गुणधर्म।

मृदा संरक्षण : परिभाषा, अपरदन के कारण, प्रकार-वायु तथा जल अपरदन, अपरदित मृदा/क्षेत्र का संरक्षण तथा प्रबन्ध, वातरोध, रक्षक मेरबला, बालू टिब्बा, लवण और क्षारीय मृदाओं का उद्धार, जल प्लावन तथा अन्य व्यर्थ भूमि, मृदा संरक्षण में वनों की भूमिका, मृदा काबिनिक द्रव्यों का रखरखाव और निर्माण, हरे पत्तों की खाद डालने के लिए कतरन की व्यवस्था, वन पर्णकरकट तथा कम्पोस्टिंग, मृदा को सुधारने में सूक्ष्म घटकों की भूमिका, एन (नाइट्रोजन) और सी (कार्बन) चक्र, बी. ए. एम.

जल-विभाजन प्रबन्ध

जल विभाजकों की अवधारणा एवं समग्र संसाधन प्रबन्धन व्यवस्था में लघु वनों तथा वन वृक्षों की भूमिका, वन जलविज्ञान प्रवाह नियन्त्रण के

संबंध में जल विभाजकों का विकास, नदी जलमार्ग स्थिरीकरण, हिमस्खलन तथा भू-स्खलन नियंत्रण, निकृष्ट क्षेत्र का पुनर्वास, उपगिरि तथा पर्वतीय क्षेत्र, वनों का जल विभाजक प्रबन्धन तथा पर्यावरण संबंधी प्रकार्य। जल शस्य तथा संरक्षण, भूमि जल पुनर्भरण तथा जल विभाजक प्रबन्धन, समन्वित वन वृक्षों की भूमिका, बागवानी फसलें, खेत की फसलें, घास तथा चारा।

3. पर्यावरणीय संरक्षण तथा जैव विविधता:

पर्यावरण

संघटक तथा महत्व, संरक्षण के सिद्धांत, निर्वनीकरण, दावागिन तथा अन्य विभिन्न मानवकृत गतिविधियाँ जैसे खनन, निर्माण तथा विकास परियोजनाएं, जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर प्रभाव।

प्रदूषण

प्रकार, विश्वव्यापी तापन, ग्रीनहाउस प्रभाव, ओजोन लेआर, रिक्तीकरण, अम्लीय वर्षा, प्रभाव तथा नियंत्रण के उपाय, पर्यावरणीय अनुश्रवण, सतत् विकास की अवधारणा। पर्यावरण संरक्षण में वनों तथा वृक्षों की भूमिका, वायु, जल तथा रक्षण पर नियंत्रण तथा रोकथाम। भारत में पर्यावरण नीति तथा विधान पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन जल विभाजकों का विकास तथा साथ ही पारिस्थितिक और पर्यावरणीय संरक्षण का अर्थोपाय मूल्यांकन।

4. वृक्ष सुधार तथा बीज प्रौद्योगिकी:

वृक्ष सुधार की सामान्य अवधारणा, पद्धतियाँ तथा प्रविधियाँ, भिन्नताएं और उनके उपयोग, उद्यम क्षेत्र, बीज स्रोत, विदेशज, वन वृक्ष सुधार के परिमाणात्मक पहलू, बीज उत्पादन बीज उद्यान, संतति परीक्षण, प्राकृतिक वन तथा रबड़ सुधार में वृक्ष सुधार का उपयोग, आनुवंशिक परीक्षण कार्यक्रम, रोगों, कीटों तथा प्रतिकूल पर्यावरण के प्रतिरोध हेतु वरण तथा प्रजनन, आनुवंशिक आधार, वन आनुवंशिक संसाधन और जीन संरक्षण “स्व स्थाने” तथा “बाह्य स्थाने”। लागत-लाभ अनुपात अर्थोपाय मूल्यांकन।

प्रश्न पत्र-2

खण्ड--क

1. वन प्रबंध एवं प्रबंध पद्धति

उद्देश्य तथा सिद्धांत, प्रविधियाँ, रबड़ संरचना एवं गतिकी, सतत् उत्पाद संबंध, आवर्तन, सामान्य वन, वर्धमान संग्रह, उत्पाद के नियमन, वन रोपण का प्रबंधन, वाणिज्यिक वन, वन आच्छादन अनुश्रवण, आधार जैसे:—(i) स्थल विशेष की योजना, (ii) युक्तिपूर्ण योजना, (iii) अनुमोदन, संस्कृति तथा व्यय, (iv) अनुश्रवण और (v) रिपोर्टिंग तथा अभिशासन। शामिल उपायों के विवरण : ग्रामीण वन समिति का गठन, संयुक्त वन सहभागिता प्रबंध।

2. वनों की कार्य योजना

वन योजना, मूल्यांकन तथा अनुश्रवण साधन एवं समन्वित योजना के आधार, वन संसाधनों का बहु-उद्देश्यीय विकास तथा वन उद्योग विकास, कार्य आयोजन तथा कार्य योजना, प्रकृति संरक्षण में उनकी भूमिका, जैव विविधता तथा अन्य आयाम, तैयारी तथा नियन्त्रण। मंडलीय कार्य आयोजन, कार्य संचालन का वार्षिक आयोजन।

3. वन विस्तार-कलन (मैन्सरेशन) तथा दून-संवेदन

मापन पद्धतियाँ-पेड़ों का व्यास, धेरा, ऊंचाई तथा आयतन, रूप विधान, रबड़ (स्टैण्ड) आयतन (वाल्यूम) आकलन, वर्तमान वार्षिक वृद्धि, (माध्य) वार्षिक वृद्धि। प्रतिचयन विधि तथा प्रतिदर्श भूखण्ड (प्लाट)। उपज गणना, उपज तथा रबड़ (स्टैण्ड) सारणियों, सुदूर संवेदन द्वारा वन आच्छादन अनुश्रवण, प्रबंध तथा प्रतिदर्श के लिए भौगोलिक सूचना तंत्र।

4. सर्वेक्षण तथा वन इंजीनियरी

वन सर्वेक्षण-सर्वेक्षण के विभिन्न तरीके, मानचित्र तथा मानचित्र अंकन। वन इंजीनियरी के मूलभूत सिद्धांत। भवन सामग्री तथा निर्माण। सड़क तथा पुल लकड़ी के पुलों के सामान्य, सिद्धांत, उद्देश्य, प्रकार, प्रतिदर्श अभिकल्पना तथा निर्माण।

खंड--ख

1. वन पारिस्थितिकी तथा नृजाति वनस्पति :

वन पारिस्थितिकी—जैव तथा अजैव संघटक, वन परिस्थिति-तंत्र, वन समुदाय संकल्पना; वनस्पति संकल्पना, पारिस्थितिकी वंशक्रम तथा चरमोत्कर्ष, प्राथमिक उत्पादकता, पोषक चक्रण तथा जल संबंध, प्रतिबल वातावरण में शरीर रचना (सूखा, जल भरा, लवणता तथा क्षीरीयता)। भारत में वनों के प्रकार, प्रजातियों की पहचान, संयोजन तथा सह-योजना, वृक्षविज्ञान, वर्गिकी विभाजन, वनस्पति संग्रहालय तथा वनस्पति-वाचिका (हबोरिया व आरबोरेया) के स्थापन के सिद्धांत, वन परिस्थितितंत्र का संरक्षण, कृतक उद्यान (क्लोनल पार्क)। नृजाति वनस्पति की भारतीय आयुर्विज्ञान पद्धतियों में भूमिका, आयुर्वेद तथा यूनानी सुगन्धित तथा औषधीय वनस्पतियों का परिचय, नामपद्धति, आवास, वितरण तथा वानस्पतिक विशेषताएं। औषध वनस्पतियों के असर कारक तत्व और विषाक्तता को प्रभावित करने वाले घटक और उनके रासायनिक संघटक।

2. वन संसाधन तथा उपयोगीकरण

वातावरणीय प्रबल/सांद्र वन उपज प्रक्रियाएं—लांगिना तथा निस्सारण प्रविधियाँ और सिद्धांत, परिवहन पद्धतियाँ, भंडारण तथा बिक्री, गैर-लकड़ी वन उत्पाद (एन. यी. एफ. पी.) परिभाषा और क्षेत्र, गोंद राल, तैलीराल रेशा, तिलहन, दृढ़फल (नट), रबड़, बेंत, बांस, औषधीय वनस्पति, काठकोयला लाख और चमड़ा, कत्था और बीड़ी पते-संग्रहण, संसाधन तथा निपटान। काष्ठ, संशोषण और परिरक्षण की आवश्यकता और महत्व, संशोषण के सामान्य सिद्धांत, आयु तथा भट्टा संशोषण, सौर-अनाद्राताकरण, भाषीय तापित तथा विद्युत भट्टियाँ। मिश्रित काष्ठ, आसंजक निर्माण, गुण उपयोग, प्लाईवुड निर्माण, गुण, उपयोग, फाइबर बोर्ड-निर्माण, गुण उपयोग; निपात (पार्टिकल) बोर्ड-निर्माण, गुण उपयोग। भारत में मिश्रित काष्ठ उद्योग की वर्तमान स्थिति और भविष्य में विस्तार योजनाएं। लुग्दी कागज तथा रेअन, उद्योग को कच्चे माल की आपूर्ति की वर्तमान स्थिति, काष्ठ प्रतिस्थापन, बागान लकड़ी की उपयोगिता, समस्याएं तथा संभाव्यताएं।

काष्ठ की कार्यिक रचना, काष्ठ के दोष तथा असमानताएं, प्रकाष्ठ (टिम्बर) की पहचान—सामान्य सिद्धांत।

3. वन संरक्षण तथा बन्य जीव विज्ञान

वनों की क्षति—अजैव तथा जैव, विध्वंसक शाखाएं (एजेन्सी), कीड़े-मकौड़े तथा बीमारियां, वायु प्रदूषण का वनों पर प्रभाव तथा फोरेस्ट डाई बैक। वनों की क्षति की सुग्राहिता, क्षति का स्वरूप, कारण, रोकथाम, सुरक्षात्मक उपाय तथा रासायनिक तथा जैविक नियन्त्रण से लाभ। अग्नि से वनों की सामान्य सुरक्षा—उपकरण तथा विधि, अग्नि के नियंत्रत उपयोग, आर्थिक तथा पर्यावरणीय लागत, प्राकृतिक आपदाओं के बाद टिम्बर बचाव संचालन। वन रोपण तथा वनों के पुनः संचरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड (CO_2) के विलयन में भूमिका। चक्रीय तथा नियन्त्रित चरान (ग्रेज़िंग), घास चारक तथा पत्ता चारक जानवरों पर नियन्त्रण की विभिन्न विधियां, बन्य जीवों, मानव प्रभाव, अतिक्रमण, बनाधिकार शिकार (पेंचिंग), चरान, बाड़ा लगाना (लाईव फॉसिंग), चोरी, स्थानांतरी जुताई का वनों के संचरण पर प्रभाव और नियन्त्रण।

4. वन अर्थव्यवस्था तथा विधान

वन अर्थव्यवस्था—मौलिक सिद्धान्त—लागत-लाभ विश्लेषण, मांग और पूर्ति का आकलन, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में विश्लेषणों का रुख तथा उत्पादन एवं उपभोक्ता प्रतिमान (पैटर्न) में परिवर्तन, बाजार संरचनाओं का मूल्य निर्धारण तथा प्रक्षेपण, निजी क्षेत्र तथा सहकारिताओं की भूमिका; निर्गमित वित्त पोषण की भूमिका। वनों की उत्पादकता और दृष्टिकोण का सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण; वनों की वस्तुओं तथा सेवाओं का मूल्यांकन।

विधान—वन विकास का इतिहास 1894-1952 तथा 1990 की भारतीय वन नीति। राष्ट्रीय वन नीति 1988, वन आवेष्टन, संयुक्त वन प्रबन्ध, महिलाओं का आवेष्टन, भूमि उपयोग से संबंधित वन नीतियां तथा मुद्रे, टिम्बर तथा गैर-टिम्बर उत्पाद; सतत् वन प्रबंध, औद्योगिकीकरण नीतियां; संस्थागत तथा संरचनात्मक परिवर्तन। विकेन्द्रीकरण तथा वानिकी लोक प्रशासन वन नियम, आवश्यकता; सामान्य सिद्धान्त, भारतीय वन अधिनियम, 1927, वन संरक्षण अधिनियम 1980, बन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 और उनमें संशोधन, भारतीय आचार संहिता का वानिकी में अनुप्रयोग। वनों की सूची का प्रयोजन और उद्देश्य।

भूविज्ञान

प्रश्न-पत्र-1

खण्ड-क

(i) सामान्य भू-विज्ञान :

सौरमंडल (परिवार) उल्का पिंड, पृथ्वी की उत्पत्ति एवं आंतरिक संरचना। रेडियोएक्टिविटी एवं पृथ्वी की आयु, ज्वालामुखी—कारण एवं उत्पाद, ज्वालामुखी मेखला, भूकम्प—कारण, प्रभाव, भूकम्प-मेखलाएं, भारत की भूकंपनीयता, तीव्रता, परिमाण, भूकंपलेखी। द्वीपचारों, गहन सागर खाइयां एवं मध्य सागरीय कटक। महाद्वीपीय विस्थापन—साक्ष्य एवं क्रियाविधि, समुद्र तल विस्तारण, प्लेट विर्वतनिकी, समस्थितिकी, पर्वतन, पश्चजात पर्वतन रचना। महाद्वीप और महासागर।

(ii) भूआकृति विज्ञान एवं सुदूर संवेदन :

भूआकृति विज्ञान की मूलभूत अवधारणाएं। अपक्षय एवं बृहत क्षति। भूआकृतियां, प्रवणता भूआकृति एवं अपवाह। भूआकृतिक चक्र एवं उनकी व्याख्या। आकृति विज्ञान और इनकी संरचना एवं अश्म विज्ञान से संबंध। खनिज पूर्वेक्षण, सिविल इंजीनियरी, जल विज्ञान एवं पर्यावरण अध्ययन में भू आकृति विज्ञान का अनुप्रयोग। भारत उप महाद्वीप की भूआकृति।

वायव फोटोग्राफ एवं उनकी व्याख्या—गुण एवं सीमाएं। विद्युत चुम्बकीय स्पैक्ट्रम। कक्षीय उपग्रह एवं संवेदक तंत्र। भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह। उपग्रह आंकड़ा उत्पाद। भू-विज्ञान में सुदूर संवेदन का अनुप्रयोग। भौगोलिक सूचना पद्धति (GIS) और इनका अनुप्रयोग। विश्वव्यापी स्थितिक तंत्र (GPS)।

(iii) संरचनात्मक भूविज्ञान :

भूवैज्ञानिक मानचित्रण एवं मानचित्र पठन, प्रक्षेपण आरेख, प्रतिबल एवं विकृति दीर्घवृत्तज तथा सुघट्य (प्लास्टिक) एवं श्यान पदार्थों का प्रतिबल—विकृति संबंध। विरूपित शैल में विकृति चिह्न। विरूपण अवस्था के अंतर्गत खनिज एवं शैलों का व्यवहार। बलन एवं ब्रंश-वर्गीकरण एवं क्रिया विधि। बलन, शल्कन, सरेखन, संधि (जोड़) एवं ब्रंश विषम विन्यास की संरचनात्मक विश्लेषण। अध्यारोपित विरूपण। क्रिस्टलीय एवं विरूपण के बीच काल संबंध। शैल सविन्यासी का परिचय।

खण्ड-ख

(iv) जीवाश्म विज्ञान :

जाति-परिभाषा एवं नाम पद्धति। गुरुजीवाश्म और सूक्ष्म-जीवाश्म। जीवाश्म के परिरक्षण की अवस्था। विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म जीवाश्म। सहसंबंध पेट्रोलियम अन्वेषण, पुराजलवायवी एवं पुरा समुद्र विज्ञान अध्ययन में सूक्ष्म जीवाश्म का अनुप्रयोग। शीर्षपाद, ट्राइलोबाट्य, वैकियोपोड़ा, स्काइनाइडिया एवं ऐस्थोजोआ का आकृति विज्ञान, भूवैज्ञानिक इतिहास एवं विकासवादी प्रकृति। ऐमोनाइडिया, ट्राइलोबाट्य, ग्रैटोलाइडिया की स्तरिक उपयोगिता। होमीनिडी, एकिवडी एवं प्रोबोसीडिया (हाथीगण) में विकासवादी प्रवृत्ति। शिवालिक प्राणिजात। गोंडवाना वनस्पति-जात और इनका महत्व।

(v) स्तरिकी एवं भारत का भूविज्ञान :

स्तरिक अनुक्रमों का वर्गीकरण : अश्म स्तरिक, जैव स्तरिक, काल-स्तरिक और चुम्बक स्तरिक तथा उनका अंतर्संबंध। भारत के क्रैम्बियनपूर्व शैलों का वितरण एवं वर्गीकरण। प्राणिजात, वनस्पतिजात और आर्थिक महत्व के संदर्भ में भारत के दृश्यजीवी शैलों का स्तरिक वितरण एवं अश्म विज्ञान का अध्ययन। मुख्य सीमा समस्याएं—क्रैम्बियन। क्रैम्बियनपूर्व, पर्मियन/ट्राइऐसिक, क्रिटेशास तृतीय एवं अतिनूतन/अत्यंत नूतन। भूवैज्ञानिक भूतकाल में भारतीय उपमहाद्वीप में जलवायु दशा, पुराभूगोल तथा आग्नेय क्रियाकलापों का अध्ययन। भारत का विवर्तनिक ढांचा। हिमालय का विकास।

(vi) जलभूविज्ञान एवं इंजीनियरी भूविज्ञान :

जल चक्र और जल का आनुवंशिकी वर्गीकरण। अधस्तल जल की गति। झरना। संरंध्रता, पाराम्प्रता, द्रवचालित चालकता, पाराम्प्रता एवं संचयन गुणांक, जलभृत का वर्गीकरण। शैलों की जलधारी विशेषता। भौमजल रसायन विज्ञान। लवणजल अंतर्वेधन। कूपों के प्रकार। अपवाह द्वारी आकारिति। भौमजल का अन्वेषण। भौमजल पुनर्भरण। भौमजल की समस्या एवं प्रबन्ध। वर्षा जल उपजन। शैलों के इंजीनियरी गुणधर्म। बांध, सुरंग तथा पुलों के लिए भूवैज्ञानिक अन्वेषण। निर्माण पदार्थ के रूप में शैल। क्षार-पूंज प्रतिक्रिया। भूस्खलन-कारण, रोक-थाम एवं पुनर्वास। भूकंप-रोधी संरचनाएं।

प्रश्न पत्र-2

खण्ड-क

(i) खनिज विज्ञान :

क्रिस्टल का समुदाय तथा समर्पित वर्गीकरण। अंतर्राष्ट्रीय क्रिस्टलीन अंकन। क्रिस्टल समर्पित को निरूपित करने के लिए प्रक्षेपण आरेख का उपयोग। क्रिस्टल दोष। एक्स-रे क्रिस्टल विज्ञान के तत्व।

शैल विज्ञानिकीय सूक्ष्मदर्शी एवं उसके उपसाधन। सामान्य शैलकारी खनिजों के प्रकाशिक गुणधर्म। खनिजों में बहुवर्णता, विलोप कोण, द्विअपवर्तन/अपवर्जन, यमलन एवं प्रकीर्णन।

शैलकारी सिलिकेट खनिज वर्गों के भौतिक एवं रासायनिक लक्षण। सिलिकेटों का संरचनात्मक वर्गीकरण। आग्नेय एवं कायांतरी शैलों के सामान्य खनिज। कार्बोनेट, फासेट, सल्फाइड एवं हेलाइड वर्गों के खनिज।

(ii) आग्नेय तथा कायांतरी शैलविज्ञान :

मैग्मा का उत्पादन एवं क्रिस्टलन। ऐल्बाइट-एनॉर्थाइट, डाइ-आप्साइट-एनॉर्थाइट एवं डाइआप्साइट-वोलोस्टोनाइट-सिलिका समुदाय का क्रिस्टलन। क्रिया सिद्धान्त। मैग्मीय विभेदन एवं स्वांगीकरण। आग्नेय शैलों का गठन एवं संरचना की शैल आनुवंशिक महत्व। ग्रेनाइट, साइनाइट, डाइओराइट, अल्पसिलिक एवं अत्यल्पसिलिक, चार्नोकाइट, ऐनौर्थोसाइट एवं क्षारीय शैलों की शैलवर्णना एवं शैलोत्पत्ति। कार्बोनाइट। दक्षिण ज्वालामुखी शैल क्षेत्र।

कायांतरण के प्रकार एवं कारक : कायांतरी कोटि एवं मंडल। प्रावस्था (फेज) नियम। प्रादेशिक एवं संसर्पण कायांतरण के लिए संलक्षी। ए सी एफ एवं ए के एफ आरेख। कायांतरी शैलों का गठन (बुनावट) एवं संरचना। बालुकामय, मुण्डय एवं अल्प सिलिक शैलों का कायांतरण। खनिज समुच्चय। पश्चगतिक कायांतरण। तत्वांतरण एवं ग्रेनाइटीकरण, मिर्मेटाइट। भारत के ग्रेनुलाइट भू-भाग (शैल प्रदेश)।

(iii) अवसाद विज्ञान :

अवसादी शैल : निर्माण की प्रक्रिया, प्रसंघनन और शिलीभवन। अवसाद (तलहद) के गुणधर्म। खंडज और अखंडज शैल—उनका वर्गीकरण, शैलवर्णना एवं निक्षेपण पर्यावरण। अवसादी संलक्षी और उद्गम क्षेत्र। अवसादी संरचना और उनका महत्व। भारी खनिज और उनका महत्व। भारत के अवसादी द्रोणियां।

खण्ड-ख

(iv) आर्थिक भूविज्ञान :

अयस्क, अयस्क खनिज एवं गैंग, अयस्क का औसत प्रतिशत। अयस्क निक्षेप का वर्गीकरण। खनिज निक्षेप के निर्माण की प्रक्रिया। अयस्क स्थानीयकरण का नियंत्रण। अयस्क का गठन (बुनावट) एवं संरचना। धातुजनिक युग एवं क्षेत्र। एल्यूमिनियम क्रोमियम, तांबा, सोना, लोहा, शीशा, जस्ता, मैंगनीज, टिईनियम, यूरेनियम और थोरियम एवं औद्योगिक खनिजों के महत्वपूर्ण भारतीय निक्षेप का भूविज्ञान, भारत में कोयला एवं पैट्रोलियम का निक्षेप। राष्ट्रीय खनिज नीति। खनिज संसाधन का संरक्षण एवं उपयोगिता। समुद्री खनिज संसाधन और समुद्री नियम।

(v) खनन भूविज्ञान :

पूर्वेक्षण विधि—भूवैज्ञानिक, भूभौतिकीय, भूरासायनिक एवं भूवानस्पतिक। प्रतिचयन तकनीक। अयस्क निचय का आकलन। अवेषण तथा खनन की विधियां—धात्विक अयस्क, औद्योगिक खनिज एवं समुद्री खनिज संसाधन। खनिज सज्जीकरण एवं अयस्क प्रसाधन।

(vi) भू-रसायन विज्ञान तथा पर्यावरणीय भूविज्ञान:

तत्वों का अन्तरक्षीय बाहुल्य : ग्रह तथा उल्कापिंड की बनावट। पृथ्वी की संरचना तथा बनावट एवं तत्वों का वितरण। अल्प मात्रिक तत्व/लेश तत्व। क्रिस्टल रसायनिक के तत्व। रसायनिक बंधनों के प्रकार, निर्देशांक संख्या। समाकृतिकता और बहुकृतिकता। प्रारंभिक उष्मगतिकी।

प्राकृतिक संकट-बाढ़, भूस्खलन, तटीय अपरदन, भूकंप एवं ज्वालामुखीय क्रियाकलाप तथा न्यूनीकरण। शहरीकरण। शहरीकरण का पर्यावरणीय प्रभाव, विवृत खनन, औद्योगिक तथा विघटनामिक अपशिष्ट निपटान, उर्वरक का प्रयोग, खनिज अपशिष्ट का ढेर और फ्लाई ऐश। भाम तथा भूपृष्ठ जल प्रदूषण, समुद्री प्रदूषण। पर्यावरण सुरक्षा—भारत में विधायी उपाय।

गणित

प्रश्न पत्र--1

खण्ड-क

रैखिक बीजगणित

सदिश समष्टि, रैखिक आश्रितता एवं स्वतंत्रता, उप समष्टि, आधार, विभा, परिमितिविमीय सदिश समष्टि। आव्यूह (मैट्रिसेस), केले-हैमिल्टन प्रमेय, अभिलक्षणिक मान एवं अभिलक्षणिक सदिश, रैखिक रूपान्तरण का आव्यूह, पंक्तीय एवं स्तंभीय लघुकरण, सोपानक रूप, तुल्यता, समशेषा एवं समरूपता, विहित रूप का लघुकरण, कोटि, लंबकोशीय/लांबिक, समर्पित, विषय समर्पित, ऐकिक, हर्मिटीय, विषम हर्मिटीय रूप या उनके अभिलक्षणिक मान। द्विधाती एवं हर्मिटीय समघातों के लंबकोशीय/लांबिक एवं ऐकिक लघुकरण, घनात्मक निश्चित द्विधाती समघात।

कलन :

वास्तविक संख्याएं, सीमान्त सांतत्य, अवकलनीयता, सभी माध्यमान प्रमेय, शेषफलों के साथ टेलर का प्रमेय, अनिर्धारित रूप, उच्चिष्ठ एवं अल्पिष्ठ; अनंतस्पर्शी। बहुचरों के फलन: सांतत्य, अवकलनीयता, आंशिक अवकलज, उच्चिष्ठ एवं अल्पिष्ठ, लग्रांज की गुणक विधि, जैकोवियन। निश्चित समाकलों की रीमान परिभाषा, अनिश्चित समाकल, अनन्त (इनफिनिट एवं इम्प्रापर) समाकल बीटा तथा गामा फलन। द्विधा एवं त्रिधा समाकल (केवल मूल्यांकन प्रविधियां) क्षेत्र, पृष्ठ एवं आयतन, गुरुत्व--केन्द्र।

विश्लेषिक ज्यामिति :

दो तथा तीन विमाओं में कार्तीय तथा ध्रुवीय निर्देशांक दो तथा तीन विमाओं में द्वितीय कोटि समीकरण, विहित रूपों का लघुकरण, सरल रेखाएं, दो विषमतलीय रेखाओं के बीच की लघुतम दूरी, समतल, गोलक, शंकु, बेलन, परबलयज, दीर्घवृत्तज, एक तथा दो पृष्ठी अतिपरवलजय एवं उनके गुणधर्म।

खण्ड --ख

साधारण अवकल समीकरण :

अवकल समीकरणों का संग्रहण, कोटि एवं घात प्रथम कोटि तथा प्रथम घात का समीकरण, समाकलन गुणक, प्रथम कोटि के किन्तु प्रथम घात के नहीं, समीकरण, क्लेरो का समीकरण विचित्र हल नियत (अचर) गुणांक वाले उच्चतर कोटि के रैखिक समीकरण, पूरक फलन एवं विशेष समाकल, व्यापक हल, ऑयलर कौशी समीकरण। चर गुणांक वाले द्वितीय कोटि के रैखिक समीकरण, पूर्ण हल का निर्धारण जब एक हल ज्ञान हो। प्राचलों के विवरण की विधि।

गतिकी, स्थैतिकी तथा द्रव स्थैतिकी :

स्वतंत्रता की कोटि एवं व्यवरोध, ऋजुरेखीय गति, सरल आवर्तगति, समतल में गति, प्रक्षेप्य, व्यवरोध, गति, कार्य एवं ऊर्जा, ऊर्जा का संरक्षण, आवेगी बल के अन्तर्गत गति, कैप्स्लर के नियम, केन्द्रीय बल के अन्तर्गत कक्षाएं, परिवर्ती द्रव्यमान की गति, प्रतिरोध के अन्तर्गत गति। कणनिकाय का सन्तुलन, कार्य एवं स्थितिज ऊर्जा, घर्षण, साधारण कैटनरी, कल्पित कार्य के सिद्धान्त, साम्यावस्था/सन्तुलन का स्थायित्व, तीन विमाओं में बल साम्यावस्था/सन्तुलन।

भारी तरल का दाब, दिये गये बल निकाय के अन्तर्गत तरल की साम्यावस्था/सन्तुलन, बरनूली का समीकरण, दाब केन्द्र, बक्र पृष्ठ पर प्रणोद, तैरा हुए पिण्डों की साम्यावस्था/सन्तुलन, साम्यावस्था/सन्तुलन का स्थायित्व, आप्लब केन्द्र, गैसों का दबाव।

संदिश विश्लेषण:

अदिश एवं संदिश क्षेत्र, त्रिक गुणनफल, अदिश घर के संदिश फलन का आकलन, कार्तीय में प्रवणता, अपसरण एवं कर्ल, बेलनाकार और गोलीय निर्देशांक तथा उनकी भौतिक व्याख्या। उच्चतर कोटि अवकलज, सद्विश तत्समक एवं सद्विश समीकरण।

ज्यामितीय का अनुप्रयोग :

आकाश में बक्र, बक्रता एवं ऐंठन सेरेट-फेनेट के सूत्र, माउस एवं स्टोक के प्रमेय, ग्रीन के तत्समक।

प्रश्न पत्र--2

खण्ड--क

बीज गणित :

समूह, उपसमूह, प्रसामान्य उप समूह, समूहों की समाकारिता, विभाग समूह मूल तुल्यकारिता के प्रमेय, साइलो-समूह, क्रमचय समूह, कैली-प्रमेय। बलय एवं गुणजावली, मुख्य गुणजावली प्रांत, अद्वितीय गुणनखंडन प्रांत एवं यूक्लीडियन प्रांत (डोमेन) क्षेत्र के विस्तार, परिमित क्षेत्र।

वास्तविक विश्लेषण :

वास्तविक संख्या निकाय, क्रमित समुच्चय, परिबंध, क्रमित क्षेत्र, न्यूनतम उपरिपरिबंध युक्त क्रमित क्षेत्र को मानते हुए वास्तविक संख्या निकाय, कौशी अनुक्रम पूर्णतया के रूप में वास्तविक संख्या निकाय। फलनों का सांतत्य एवं एक समान सांतत्य, संहत समुच्चयों पर सांतत्य फलनों के गुण धर्म। रीमान समाकल, अनंत समाकल, वास्तविक तथा सम्मिश्र पदों की श्रेणियों (मालाओं) का निरक्षेप तथा संप्रतिबंध अभिसरण। श्रेणियों (मालाओं) का पुनर्विन्यास। फलनों के अनुक्रमों तथा श्रेणियों के लिए एक

समान अभिसरण, सांतत्य, अवकलनीयता एवं समाकलनीयता। बहुचरों वाले फलनों का अवकलन, आंशिक अवकलजों के क्रम में परिवर्तन, अस्पष्ट फलन प्रमेय, उच्चवष्ट एवं अल्पष्ट, बहु समाकल।

सम्मिश्र विश्लेषण :

विश्लेषिक फलन, कौशी-रीमान फलन, कांशी का प्रमेय, कौशी का समाकल सूत्र, घात श्रेणी, टेलर श्रेणी, लोरां श्रेणी, विचित्रताएं, कौशी अवशेष प्रमेय, कन्नूर समाकलन। अनुकोण प्रतिचित्रण, द्विरैखिक रूपान्तरण।

रैखिक प्रोग्रामन :

रैखिक प्रोग्रामन समस्याएं आधारी हल, आधारी सुसंगत हल एवं इस्तम हल, आलेखी विधि तथा हल की एकधा विधि। द्वैतता। परिवहन तथा नियतन समस्याएं। भ्रमणशील विक्रेता की समस्याएं।

खण्ड--ख

आंशिक अवकल समीकरण :

तीन विभागों में बक्र तथा पृष्ठ, आंशिक अवकल समीकरण का संरूपण, $dx/P = dy/q = dz/r$; प्रकार के समीकरणों का हल, लंबकोणीय संछेदी, फेफियन अवकल समीकरण, प्रथम कोटि का आंशिक अवकल समीकरण, कौशी अभिलक्षण विधि द्वारा हल, हलों की चार्पिट विधि, नियत गुणांकों से युक्त द्वितीय कोटि के रैखिक आंशिक अवकल समीकरण, कॉर्पिट तंतु के समीकरण, ताप समीकरण, लाप्लास समीकरण।

संख्यात्मक विश्लेषण एवं कम्प्यूटर क्रमादेशन :

संख्यात्मक विधियां : द्विविभाजन द्वारा एक चर के बीजगणितीय तथा अवीजीय समीकरणों का हल, मियपास्थिति (रेगुला फारसी) तथा न्यूटन-राफसन विधियां। गाऊसीय निराकरण तथा गाऊस-जार्डन (प्रत्यक्ष) विधियों द्वारा, गाऊस सैडल पुनरावर्ती विधि द्वारा रैखिक समीकरणों के निकाय का हल। न्यूटन का (अग्र तथा पश्च) तथा लग्रांज की अंतर्वेशन विधि।

संख्यात्मक समाकलन : सिम्पसन का तिहाई नियम, समलंबी नियम, गाऊसीय क्षेत्रकलन सूत्र।

साधारण अवकल समीकरणों का संख्यात्मक हल : आयलर तथा रूनोकुट्ट-विधियां।

कम्प्यूटर क्रमादेशन (प्रोग्रामन) : कम्प्यूटरों में अंकों का संचयन, बिट्स, बाइट्स तथा बर्ड्स, द्विआधारी पद्धति, अंकों पर गणितीय तथा तर्क संगत संक्रियाएं, विट्वार संक्रियाएं AND, OR, XOR, NOT एवं विस्थापन घूर्णन संकारक। अष्ट आधारी तथा पोडसआधारी पद्धतियां। दशमलव पद्धति से तथा दशमलव पद्धति में रूपान्तरण।

अचिन्तित पूर्णांकों, चिन्हित पूर्णांकों तथा वास्तविक, द्वि परिशुद्धता वास्तविक तथा दीर्घ पूर्णांकों का निरूपण।

संख्यात्मक विश्लेषण समस्याओं के हल के लिए एलगोरिद्धम तथा प्रवाह संचित्र।

संख्यात्मक विश्लेषण में ली जाने वाली समस्याओं संबंधी प्रविधियों के लिए बेसिक में साधारण क्रमादेशन (प्रोग्रामन) का विकास।

यांत्रिकी एवं तरल गतिकी:

व्यापीकृत निर्देशांक, व्यवरोध, होलोनोमीय तथा गैर होलोनोमीय पद्धतियां। डी ए मर्कट सिद्धान्त तथा लग्रांज के समीकरण, हैमिल्टन के समीकरण, जड़त्व-आघूर्ण दो विभागों में दृढ़ पिण्डों की गति।

सांतत्य समीकरण, अश्यान प्रवाह के लिए औंगलर का गति समीकरण, प्रवाह रेखाएं, कण का पथ, विभव प्रवाह, द्विविमीय तथा अक्षतः सममित गति, उद्गम तथा अभिगम, भ्रमिल गति, बेलन और गोलक के पार प्रवाह प्रतिक्रियाओं की विधि, श्यान तरल के लिए नेवियर स्टाक समीकरण।

यांत्रिक इंजीनियरी

प्रश्न पत्र--1

1. मशीनों का सिद्धान्त :

समतलीय यांत्रिकल का शुद्ध-गतिकी और गतिकी विश्लेषण। कैम, गियर तथा गियर मालाएं, गतिपालक चक्र, अधिनियंत्रक (गवर्नर्स)। दृढ़ घूर्णकों का संतुलन, एकल तथा बहुसिलिंडर इंजनों का सन्तुलन। यांत्रिक तंत्रों का रेखीय कंपन विश्लेषण (एकल तथा द्वि स्वातंत्र्य कोटि), शैफ्टों की क्रांतिक गति और क्रांतिक पूर्णी गति, स्वतः नियंत्रण। पट्ट्य चालन तथा शृंखला चालन। द्रवगतिक वेयरिंग।

2. ठोस यांत्रिकी:

दो विमाओं में प्रतिबल और विकृति, मुख्य प्रतिबल और विकृति, मोहर निर्माण, रेखीय प्रत्यास्थ पदार्थ, समदैशिकता और विषमदैशिकता (Anisotropic) प्रतिबल-विकृति संबंध, एक अक्षीय (Uniaxial) भारण, तापीय प्रतिबल, घरन, बंकन आघूर्ण और अपरूपण बल अरेख, बंकन प्रतिबल और धरनों का विक्षण, अपरूपण प्रतिबल, विपरण, शैफ्टों की ऐठन, कुंडजिली स्प्रिंग सुयुक्त प्रतिबल, मोटी और पतली दीवारों वाले दाब पात्र, संपीड़न और संस्थंभ, विकृति ऊर्जा संकल्पना और विफलता सिद्धान्त। घूर्णी चक्रिका, संकुचन अन्वायोजन।

3. इंजीनियरी पदार्थ :

ठोस पदार्थों की संरचना की मूल संकल्पनाएं, क्रिस्टलीय पदार्थ, क्रिस्टलीय पदार्थों में दोष, मिश्रधातु और द्विअंकी कला अरेख, सामान्य इंजीनियरी पदार्थों की संरचना और गुणधर्म, इस्पात का ऊष्मा उपचार, प्लास्टिक, मृतिका और संयोजित पदार्थ, विभिन्न पदार्थों के सामान्य अनुप्रयोग।

4. निर्माण विज्ञान :

मर्चेन्ट का बल विश्लेषण, टेलर की औजार-आयु समीकरण, मशीन सुकरता और मशीनन का आर्थिक विवेचन। दृढ़, लघु और लचीला स्वचालन, एन सी, सी एन सी। आधुनिक मशीनन पद्धतियाँ-ई डी एम, ई सी एम और पराश्रव्यकी। लेजर और प्लाज्मा का अनुप्रयोग। प्ररूपण प्रक्रमों का विश्लेषण। उच्च ऊर्जा दर प्ररूपण। जिग, अन्वायुक्तियाँ, औजार और गेज। लम्बाई, स्थिति, प्रोफाइल तथा पृष्ठ परिष्कृति का निरीक्षण।

5. निर्माण प्रबंध :

उत्पादन, आयोजना तथा नियंत्रण, पूर्वानुमानन-गतिमान माध्य, चरघातांकी मसृणीकरण, संक्रिया, अनुसूचन, समन्वायोजन रेखा संतुलन, उत्पाद विकास, संतुलन-स्तर विश्लेषण, धारिता आयोजन, पर्ट और सी पी एम नियंत्रण संक्रिया: माल सूची नियंत्रण—ए बी सी विश्लेषण, ई ओ क्यू निर्दश, पदार्थ आवश्यकता योजना, कृत्यक अभिकल्पना, कृत्यक मानक, कार्य मापन, गुणवत्ता प्रबंध-गुणवत्ता विश्लेषण और नियंत्रण, सांख्यकीय गुणवत्ता नियंत्रण; संक्रिया अनुसंधान: रेखीय प्रोग्रामन-ग्राफीय और सिम्प्लैक्स

विधियां, परिवहन और समनुदेशन निर्दर्श, एकल परिवेषक पंक्ति निर्दर्श। मूल्य इंजीनियरी : लागत/मूल्य विश्लेषण, पूर्ण गुणवत्ता प्रबंध तथा पूर्वानुमानन तकनीकें। परियोजना प्रबंध।

6. अभिकलन के घटक :

अभिकलित्र (कंप्यूटर) संगठन, प्रवाह संचित्रण, सामान्य कंप्यूटर भाषाओं-फोटोन, डी-बेस III, लोटस 1-2-3, सीके अभिलक्षण और प्रारंभिक क्रमादेशन (प्रोग्रामन)।

प्रश्न पत्र-2

1. उष्मागतिकी :

मूल संकल्पनाएं, विवृत एवं संवृत्त तंत्र, उष्मागतिकी नियमों के अनुप्रयोग, गैस समीकरण, क्लेपिरान समीकरण, उपलब्धता, अनुक्रमणीयता तथा यी डी एस संबंध।

2. आई. सी. इंजन, ईंधन तथा दहन :

स्फुलिंग प्रज्जवलन, तथा संपीड़न प्रज्जवलन इंजन, चतुरस्ट्रोक इंजन तथा द्वि-स्ट्रोक इंजन, यांत्रिक, ऊष्मीय तथा आयतनिक दक्षता ऊष्मा संतुलन। एस. आई. तथा सी. आई. इंजनों में दहन प्रक्रम, एस. आई. इंजन में पूर्वज्जवलन अधिस्फोटन, सी. आई. इंजन में डीजल-अपस्फोटन, इंजन के ईंधन का चुनाव, आक्टेन तथा सीटेन निर्धारण, वैकल्पिक ईंधन, काबुरिशन तथा ईंधन अन्तःक्षेपण, इंजन उत्सर्जन तथा नियंत्रण। गैसीय ईंधन, वायु के तात्त्विक मिश्रण की अपेक्षाएं तथा ठोस, तरल तथा अतिरिक्त वायु गुणक; फलू गैस विश्लेषण उच्चतर तथा न्यूनतम कैलोरी मान तथा उनका मापन।

3. ऊष्मा-अंतरण, प्रशीतन तथा वातानुकूलन :

एक तथा द्विविमी ऊष्मा चालन, विस्तारित पृष्ठों से ऊष्मा अंतरण, प्रणोदित तथा मुक्त संवहन द्वारा ऊष्मा अंतरण, ऊष्मा-विनियमित्र, विसरित तथा संवहनी द्रव्यमान अंतरण के मूल सिद्धान्त, विकिरण नियम, श्याम और गैर श्याम पृष्ठों के मध्य ऊष्मा विनियम, नेटवर्क विश्लेषण। ऊष्मा पंप, प्रशीतन चक्र तथा तंत्र, संघनित्र, वाष्पित तथा प्रसार युक्तिया तथा नियंत्रण। प्रशीतक द्रव्यों के गुण धर्म तथा उनका चयन, प्रशीतन तंत्र तथा उनके अवयव, आर्द्रता मिति, सुखदता सूचकांक, शीतन भार परिकलन, सौर प्रशीतन।

4. टर्बो यंत्र तथा विद्युत संयंत्र :

अविच्छिन्नता, संवेग तथा ऊर्जा समीकरण, रूद्धोष्म तथा समदैशिक प्रवाह, फैनों रेखाएं रैले रेखाएं, अक्षीय प्रवाह टरबाइन और संपीड़क के सिद्धान्त तथा अभिकल्पना, टर्बो मशीन ब्लैंड में से प्रवाह, सोपानी अपकेन्द्री संपीड़क। विमीय विश्लेषण तथा निर्दर्शन, भाप, जल, नाभिकीय तथा आपातपोयोगी विद्युत शक्ति संयंत्रों के लिए स्थल का चुनाव, आधुनिक उच्च दाब, गुरुकार्य बॉयलर, प्रवाह तथा धूलि हातने के उपस्कर, ईंधन तथा जल शीतन तंत्र, ऊष्मा संतुलन, स्टेशन तथा संयंत्र ऊष्मा दरें, विभिन्न विद्युत शक्ति संयंत्रों का प्रचालन एवं अनुरक्षण, निरोधक अनुरक्षण, विद्युत उत्पादन का आर्थिक विवेचन।

भौतिकी
प्रश्न पत्र-1
खण्ड-क

1. क्लासिकी यांत्रिकी

(क) कण गतिकी

द्रव्यमान केन्द्र तथा प्रयोगशाला निर्देशांक, रेखीय तथा कोणीय आधूर्णों का संरक्षण। राकेट समीकरण। रदरफोर्ड प्रकीर्णन। गैलीलियन रूपान्तरण, जड़त्वीय तथा अजड़त्वीय फ्रेम, घूर्णी फ्रेम। अपकेन्द्री तथा कोरियालिस बल, फूको लोलक।

(ख) कण निकाय

व्यवरोध, स्वतन्त्रता की कोटि, सामान्यीकृत निर्देशांक तथा आधूर्णी, लग्नांज का समीकरण तथा रेखीय सनांदि दौलित्र में उसके अनुप्रयोग, सरल लोलक तथा केन्द्रीय बल समस्याएं, चक्रीय निर्देशांक, हेमिल्टनियन, हेमिल्टन के सिद्धांत से लग्नांज समीकरण।

(ग) दृढ़ पिंड गतिकी

आयलरी कोण, जड़त्व तानिका, जड़त्व के मुख्य आधूर्णी। दृढ़ पिंड की गति का आयलर का समीकरण। दृढ़ पिंड की बल मुक्त गति, घूर्णक्ष स्थायी (जाइरो स्कोप)।

2. विशिष्ट आपेक्षिकी, तरंग तथा ज्यामितीय प्रकाशिकी।

(क) विशिष्ट आपेक्षिकी

माइकल्सन-मोर्ले प्रयोग और उसके अनुषंगिक। लारेंज रूपान्तरण दैर्घ्य संकोच, काल वृद्धि, वेग परिवर्द्धन, विपया तथा डाप्लर प्रभाव, द्रव्यमान ऊर्जा संबंध, क्षय प्रक्रिया के सरल अनुप्रयोग। मिंकोट्स्की चित्र, चतुष आयामी आधूर्णी सदिश भौतिकी समीकरणों के सह प्रसरण।

(ख) तरंगे

सरल आवर्त गति, अवमंदित दोलन, प्रणोदित दोलन तथा अनुवाद, विस्पन्द। तन्तु में स्थिर तरंगे। स्पन्दन तथा तरंग संचायिका, प्रावस्था तथा समूह वेग। हाईजन के सिद्धांत से परावर्तन तथा अपवर्तन।

(ग) ज्यामितीय प्रकाश विज्ञान

फरमेट के सिद्धांत से परावर्तन तथा अपवर्तन के नियम, उपाक्षीय प्रकाश विज्ञान में आव्यूह (मैट्रिक्स) पद्धति, पतले लेंस के सूत्र, निस्पन्द तल, दो पतले लैस्सों की प्रणाली, वर्ण तथा गोलीय विपद्धन।

3. भौतिकी प्रकाश विज्ञान

(क) व्यतिकरण

प्रकाश का व्यतिकरण—यंग का प्रयोग, न्यूटन बलय, तनु फिल्मों द्वारा व्यतिकरण, माइकल्सन व्यतिकरणमापी, विविध किरणपुंज व्यतिकरण तथा फेब्री-पेरेट व्यतिकरण मापी। होलोग्राफी तथा उसके सरल अनुप्रयोग।

(ख) विवर्तन

फ्रानहोफर विवर्तन-एकल रेखा छिद्र (स्लिट), द्विरेखा छिद्र, विवर्तन ग्रेटिंग,

विभेदन क्षमता-फ्रेजनेल विवर्तन-अर्द्ध आवर्तन जोन तथा जोन प्लेट। फ्रेजनेल समाकल। कोर्न केसर्पिल (स्पिरल) का एक सीधे कोर पर विवर्तन तथा लंबी संकीर्ण रेखाछिद्र के विश्लेषण में अनुप्रयोग-वृत्तीय द्वारक द्वारा विवर्तन तथा वायवीय पैटर्न।

(ग) ध्रुवीकरण तथा आधुनिक प्रकाश विज्ञान

रेखीय, वृत्तीय तथा दीर्घवृत्तीय ध्रुवित प्रकाश का उत्पादन तथा अभिज्ञान द्विअपवर्तन, चतुर्थांश तरंग प्लेट, ध्रुवण धूर्णकता रेशा प्रकाशिकी के सिद्धांत क्षीणन, स्टेप-इंडेक्स तथा परबलयिक इंडेक्स तंतुओं में स्पंद परिक्षेपण, पदार्थ परिक्षेपण एकल रूप रेशा (फाइबर), लेसर-आइनस्ट्राइन के और खगुणांक। रुबी तथा हीलियम-नियान लेसर। लेसर प्रकाश की विशेषताएं, स्थानिक तथा कालिक सम्बद्धता, लेसर किरणपुंज को फोकस करना। लेसर क्रिया के लिए तीन स्तरीय योजना।

खंड-ख

4. विद्युत एवं चुम्बकत्व

(क) स्थिर वैद्युत एवं स्थिर चुम्बकीय

स्थिर वैद्युत में लाप्लेस एवं प्वासों समीकरण एवं उनका अनुप्रयोग। आवेश निकाय की उर्जा, अदिश विभव का वहुध्रुव प्रसार। प्रतिबिम्ब विधि एवं उनका अनुप्रयोग। द्विध्रुव के कारण विभव एवं क्षेत्र, बाह्य क्षेत्र में द्विध्रुव पर बल एवं बल आधूर्ण। परावैद्युत, ध्रुवण। परिसीमा-मान समस्या का हल-एक समान वैद्युत क्षेत्र में चालक तथा परावैद्युत गोलक। चुम्बकीय कोशा, एक समान चुम्बकित गोलक। लौह चुम्बकीय पदार्थ, शैथिल्य, उर्जा हास।

(ख) धारा विद्युत

किरखोक नियम एवं उनका अनुप्रयोग। बायो-स्वार्ट नियम ऐम्पियर का नियम, फैराडे का नियम, लेन्ज का नियम। स्व-एवं अन्योन प्रेरकत्व। प्रत्यावर्ती धारा (प्र. धा.) परिपथ में माध्य एवं वर्ग माध्य मूल (आर. एम. एस.) मान। एल. आर., सी. आर., एवं एल. सी. आर. परिपथ—श्रेणीबद्ध एवं समान्तर अनुनाद। गुणता कारक। परिणामित्र (ट्रान्सफार्मर) के सिद्धांत।

5. विद्युत चुम्बकीय सिद्धांत एवं कृष्णिका विकिरण

(क) विद्युत चुम्बकीय सिद्धांत

विस्थापन धारा एवं मैक्सवेल का समीकरण। निर्वात में तरंग समीकरण। प्लाइटिंग प्रमेय। सदिश एवं अदिश विभव। प्रमाणी निश्चरता, लोरेन्ट्स एवं कूलाम प्रमाणी। विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र प्रदिश, मैक्सवेल समीकरण का सहप्रसरण। समदैशिक परावैद्युत में तरंग समीकरण।

दो परावैद्युतों के परिसीमा पर परावर्तन तथा अपवर्तन। फ्रेनल संबंध। प्रसामान्य एवं असंगत वर्ण विक्षेपण। रैले प्रकीर्णन।

(ख) कृष्णिका विकिरण

कृष्णिका विकिरण एवं प्लांक विकिरण नियम-स्टेफॉन-बोल्जमान नियम, बीन विस्थापन नियम तथा रैले-जीन्स नियम। प्लांक द्रव्यमान, प्लांक लम्बाई, प्लांक समय, प्लांक तापमान एवं प्लांक ऊर्जा।

6. तापीय एवं सांचिकीय भौतिकी

(क) उष्मागतिकी

उष्मागतिकी का नियम, उक्तम्य तथा अप्रतिक्रम्य प्रक्रम एन्ट्रोपी। समतापी, रुद्धौष्म, समदाब, समभायतन प्रक्रम तथा एन्ट्रोपी परिवर्तन। ऑटो एवं डीजल इंजन, गिव्स प्रावस्था नियम एवं रासायनिक विभव। वास्तविक गैस की अवस्था के लिए वान्डरबाल समीकरण, क्रांतिक स्थिरांक। आण्विक वेग के लिए मैक्सवेल वोल्जमान वितरण, परिवहन परिघटना, समविभाजन, वीरियल प्रमेय। ठोस की विशिष्ट उष्मा का ड्यूला-पेती, आइंस्टाइन, डेवाह सिद्धांत। मैक्सवेल संबंध एवं भनुप्रयोग। क्लेपिरॉन क्लासिअस समीकरण रुद्धौष्म विचुंकन, जूल-केल्विन प्रभाव एवं गैसों का द्रवण।

(ख) सांचिकीय भौतिकी

साहा आयनन सूत्र। बोस-आइंस्टाइन द्रवण/संघनन। आदर्श फर्मी गैस का उष्मागतिक व्यवहार। चन्द्रशेखर सीमा, न्यूटन तारा एवं पैल्सार के विषय में प्रारंभिक धारणा। यादृच्छिक घ्रमण के रूप में ब्रा गति, विसरण प्रक्रम। नाकारात्मक ताप की अवधारणा।

प्रश्न पत्र-2

खण्ड-क

1. क्वान्टम यांत्रिकी-I:

कण तरंग द्वैतत। श्रोडिंगर समीकरण एवं प्रत्याशामान। अनिश्चिता सिद्धांत। एक विमीय श्रोडिंगर समीकरण का हल-मुक्त कण [गाउसीय तरंग-वेस्टन (पैकेट)] बाक्स में कण, परिमित कूप में कण, रैखिक आवर्ती लोलक। विभव स्टेप एवं आयताकार रोधिक द्वारा परावर्तन एवं संचरण। अल्फाहास समस्या में जीवन अवधि परिकलन हेतु डब्ल्यू के बी सूत्र का उपयोग।

2. क्वान्टम यांत्रिकी-II एवं परमाणु भौतिकी:

(क) क्वान्टम यांत्रिकी-II:

त्रिविमीय बाक्स में कण, अवस्थाओं का घनत्व, धातुओं का मुक्त इलैक्ट्रन सिद्धांत। कोणीय संवेग समस्या। हाइड्रोजन परमाणु। अर्द्ध चक्रण समस्या एवं पाउली चक्रली आव्यूह के गुणधर्म।

(ख) परमाणु भौतिकी:

स्टर्न-गलेंक प्रयोग, इलैक्ट्रन चक्रण, हाइड्रोजन परमाणु की सूक्ष्म संरचना। एल-एस (एल.-एस.) युग्मन, जे-जे (जे.-जे.) युग्मन।

परमाणु अवस्था का स्पेक्ट्रमी संकेतन। जेमान प्रभाव। फ्रॉक-कॉडन सिद्धांत एवं अनुप्रयोग।

3. आण्विक भौतिकी:

द्विपरमाणु अणु के धूर्णनी, काम्पनिक एवं इलैक्ट्रॉनिक स्पेक्ट्रम का प्राथमिक सिद्धांत। रामन प्रभाव एवं आण्विक संरचना। लेजर रामन स्पेक्ट्रम विज्ञान। खगोल-विज्ञान एवं उदासीन हाइड्रोजन परमाणु। आण्विक हाइड्रोजन एवं आण्विक हाइड्रोजन आयन का महत्व। प्रतिदीप्ति एवं स्फुरंदीप्ति। एन. एम. आर. (एन. एम. आर.) का प्राथमिक सिद्धांत एवं अनुप्रयोग। लैम्ब सुति की प्राथमिक व्याख्या एवं इनका महत्व।

खण्ड-ख

4. नाभिकीय भौतिकी :

मूलभूत नाभिकीय गुणधर्म आकार, बंधन ऊर्जा, कोणीय संवेग, समता, चुम्बकीय आघूर्ण। सामि-आनुभविक संहति सूत्र एवं अनुप्रयोग। द्रव्यमान परवलय। डयूटरॉन की मूल अवस्था, चुम्बकीय आघूर्ण एवं अकेन्द्रीय बल। नाभिकीय बल का मेसान सिद्धांत। नाभिकीय बल की प्रमुख विशेषताएं। नाभिक का कोश मॉडल—सफलता एवं सीमाएं। बीटा हास में समता का उल्लंघन। गामा हास एवं आंतरिक रूपान्तरण। मासबोर स्पैक्ट्रम विज्ञान के बारे में प्राथमिक धारणा। नाभिकीय अभिक्रिया का (क्यू)-मान। नाभिकीय विखंडन एवं संलयन, ताराओं में ऊर्जा उत्पादन। नाभिकीय रिक्टर।

5. कण भौतिकी एवं ठोस अवस्था भौतिकी :

(क) कण भौतिकी :

मूल कणों का वर्गीकरण एवं उनकी अन्योन्यक्रिया। संरक्षण नियम। हाइड्रोन की क्वार्क संरचना। क्षीण वैद्युत एवं प्रबल अन्योन्य क्रिया का क्षेत्र क्वाण्ट्य, बलों के एकीकरण की प्राथमिक व्याख्या। न्यूट्रिनों की भौतिकी।

(ख) ठोस अवस्था भौतिकी :

घनीय क्रिस्टल संरचना। ठोसों का पट्ट सिद्धान्त—चालक विद्युतरोधी एवं अर्द्धचालक। अतिचालकता के अवयव, माइस्नर प्रभाव, जोजेफसन संधि एवं अनुप्रयोग। उच्च तापक्रम अतिचालकता की प्राथमिकता व्याख्या।

6. इलैक्ट्रॉनिकी :

नेज एवं बाह्य अर्द्धचालक -p-n-p (पी-एन-पी) एवं -n-p-n (एन-पी-एन) ट्रांजिस्टर। प्रवर्धक एवं दोलित्र। संक्रियात्मक प्रवर्धक FET (एफईटी) JFET (जे-एफईटी) एवं MOSFET (एम ओ एस एफ ईटी)। अंकीय इलैक्ट्रॉनिकी—वूलीय तत्समक, डी मार्गन नियम, तर्कद्वार एवं सत्यमान सारणी। सरल तर्क परिपथ, उष्म प्रतिरोधी (धर्मिस्टर), सौर सेल माइक्रोप्रोसेसर एवं अंकीय संगणक।

सांचिकी

प्रश्न पत्र-1

प्रायिकता :

प्रतिदर्श समष्टि एवं घटनाएं—प्रायिकता मेय और प्रायिकता समष्टि, मेय फलन के रूप में यादृच्छिक चर, यादृच्छिक चर का बंटन फलन, असंतत तथा संतत प्रकार के यादृच्छिक चर, प्रायिकता द्रव्यमान फलन, प्रायिकता घनत्व फलन, सदिश-मान यादृच्छिक चर, उपांत और सप्रतिबंध बंटन, घटनाओं और यादृच्छिक चरों की प्रसंभाव्य स्वतंत्रता, यादृच्छिक चर की प्रत्याशा तथा आघूर्ण सप्रतिबंध प्रत्याशा, यादृच्छिक चरों की शृंखला का, बंटन में, प्रायिकता में, प्रय माध्यम में, तथा लगभग सर्वत्र स्थिति में अभिसरण उनका मानदंड तथा पारस्परिक संबंध : मोरेल-कैटेली प्रमेयिका, चेबीशेय तथा खिंचिन के बृहत संख्याओं के दुर्बल नियम, बृहत संख्याओं के सबल नियम तथा कोल्मोगोरोव के प्रमेय, ग्लीबैन्को-कैटेली प्रमेय, प्रायिकता जनक फलन, अभिलाक्षणिक फलन, प्रतिलोमन प्रमेय, लाप्लेस का रूपान्तरण, संबंधित अद्वितीयता और सांतत्य की विभिन्न प्रमेय, बंटन का

उसके आधूर्ण द्वारा निर्धारण, लिंडेनबर्ग तथा लेबी के केन्द्रीय सीमा प्रमेय, मानक संतत व असंतत प्रायिकता बंटन, उनका पारस्परिक संबंध तथा सीमान्त बंटन, परिमित माकौव शृंखला के सामान्य गुण धर्म।

सांख्यिकीय अनुमति :

संगति, अनभिनतता, दक्षता, पर्याप्तता, न्यूनतम पर्याप्तता, पूर्णता, सहायक प्रतिदर्शन, गुणन खंडन प्रमेय, बंटन का चरघातांकी समूह व इसके गुणधर्म, सशरूप न्यूनतम प्रसरण अनभिनत (यू.एम.पी.यू.) आकलन, राव-ब्लैकबैल और लेहमौशेफै प्रमेय, बंटन के एकल व बहु-प्राचल समूहों के लिए क्रामर-राव असमिका, न्यूनतम प्रसरण परिबद्ध आकलक तथा इसके गुणधर्म, क्रामर-राव असमिका के आपरिवर्तन व विस्तार, चैपमैन-रोविन्स असमिका, भट्ट्याचार्य के परिबद्ध, आधूर्ण विधि द्वारा आकलन, अधिकतम संभाविता, न्यूनतम वर्ग, न्यूनतम काईवर्ग तथा आपरिवर्तित न्यूनतम काईवर्ग, अधिकतम संभावित व अन्य आकलकों के गुणधर्म, उपगामी दक्षता की धारणा पूर्व तथा पश्च बंटनों की धारणा, बेज़ आकलक।

यादृच्छिकृत व अयादृच्छिकृत परीक्षण, क्रासिक फलन, एम.पी. परीक्षण, नेमन मियर्सन प्रमेजिका, यू.एम.पी. परीक्षण, एकदिष्ट संभाविता अनुपात सामान्यीकृत नेमन विजर्सन प्रमेयिका, समरूप व अनभिनत परीक्षण, एकल व बहु-प्राचल बंटन समूहों के लिए यू.एम.पी.यू. परीक्षण, संभाविता अनुपात परीक्षण और इसके बहुत प्रतिदर्श गुणधर्म, काई-वर्ग समंजन-सुष्ठुता परीक्षण व इसके उपगामी बंटन।

विश्वास्यता परिबद्ध तथा परीक्षणों के साथ इसके संबंध, एमसमान यथार्थतम (यू.एम.ए.) व यू.एम.ए. अनभिनत विश्वास्यता परिबद्ध।

समंजन सुष्ठुता के लिए कोल्मोगोरोव का परीक्षण और इसकी संगति, चिह्न परीक्षण व इसका इष्टतमत्व, बिलकोवसन चिह्नित-कोटि परीक्षण और इसकी संगति, कोल्मोगोरोव-स्मिर्नोव का दो-प्रतिदर्श परीक्षण, परंपरा परीक्षण, बिलकोवसन-मैन-हिटनी परीक्षण व माध्यिका परीक्षण, उनकी संगति व उपगामी प्रसामान्यता।

वाल्ड का एस.पी.आर.टी. व इसके गुणधर्म, ओ. सी. व ए.एस.एन. फलन, बाल्ड की मूल सर्वसमिका, अनुक्रमिक आकलन।

रैखिक अनुमिति और बहुचर विश्लेषण :

रैखिक सांख्यिकीय निर्दर्श, न्यूनतम् वर्गों का सिद्धान्त और प्रसरण विश्लेषण, गास-मार्कोंक सिद्धान्त, सामान्य समीकरण, न्यूनतम वर्ग आकलक व इनकी परिशुद्धता, एकधा, द्विधा त्रिधा वर्गीकृत आँकड़ों में न्यूनतम वर्ग सिद्धान्त पर आधारित सार्थकता परीक्षण एवं अंतराल आकलक, समान्यता विश्लेषण, रैखिक समान्यता, वक्ररेखी समान्यता व लंबकोणीय बहुपद, बहुपदीय समान्यता, बहु व आंशिक सहसंबंध, समान्यता नंदानिक व संवेदिता विश्लेषण, अंशशोधन समस्याएं, प्रसरण व सहप्रसरण घटकों का आकलन, MINQUE सिद्धान्त, बहुचर-प्रसामान्य बंटन, महालोनोबिस का D^2 व होटेलिंग का T^2 प्रतिदर्शज व उनके अनुप्रयोग व गुणधर्म, बिबिकतर विश्लेषण, विहित सहसंबंध, एकधा MANOVA : मुख्य घटक विश्लेषण, उपादान विश्लेषण के अवयव।

प्रतिचयन सिद्धान्त तथा प्रयोगों की अभिकल्पना

निश्चित समष्टि व महा-समष्टि उपगमन की रूपरेखा, परिमित समष्टि प्रतिचयन के सुप्स्पष्ट लक्षण, प्रायिकता प्रतिचयन अभिकल्पना सरल यादृच्छिक

प्रतिचयन-प्रतिस्थापन के साथ और बिना प्रतिस्थापन के, स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन, क्रमबद्ध प्रतिचयन और संरचित समष्टि के लिए उसकी प्रभाविता, गुच्छ प्रतिचयन, द्विचरण तथा बहुचरण प्रतिचयन, एक अथवा अधिक सहायक चरों के लिए अनुपात व समान्यता पद्धतियां, द्विचरण प्रतिचयन प्रतिस्थापन के साथ व उसके बिना प्रायिकता अनुपातिक आमाप्र प्रतिचयन, हैम्सन-हरबिट्ज और हरबिट्ज-थाम्पसन के आकलक, हरबिट्ज-थाम्पसन आकलक के संदर्भ में ऋणोंतर प्रसरण आकलन, अप्रतिचयन त्रुटियां, संवेदनशील अभिलक्षणों के लिए वार्नर की यादृच्छिक उत्तर तक नीक।

नियत प्रभाव निर्दर्श (द्विधा वर्गीकरण), यादृच्छिक एवं मिश्रित प्रभाव निर्दर्श (सम संख्या प्रति कोष्ठिका प्रेक्षणों के साथ द्विधा वर्गीकरण) सी. आर.डी., आर. बी. डी., एल. एस. डी. व उनके विश्लेषण, अपूर्ण खंड अभिकल्पना, लंबकोणीयता व संतुलन की संकल्पना, बी.आई.वी.डी., अप्राप्त क्षेत्रक प्रतिधि, क्रमगुणित अभिकल्पना : 2^4 , 3^2 एवं 3^3 क्रमगुणित प्रयोगों में संकरण, विभक्त-क्षेत्र और सरल जालक अभिकल्पनायें।

प्रश्न पत्र-2

I. औद्योगिक सांख्यिकी :

प्रक्रिया एवं उत्पाद नियंत्रण : नियंत्रण संचित्रों के सामान्य सिद्धान्त; चरों एवं गुणों के लिए विभिन्न प्रकार के नियंत्रण संचित्र; X, R, S, P, np, एवं C संचित्र; संचयी योग संचित्र; V मास्क; गुणों के लिए एकल, द्वि, बहु एवं अनुक्रमिक प्रतिचयन योजनाएं; ओ.सी., ए.एस.एन.; ए.ओ. व्यू., एवं ए.टी. आई.व्ह.क्र, उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं के जोखिम की संकल्पना; ए.व्यू., एल.एल.टी.पी.डी. और ए.ओ. व्यू. एल.; चरों के लिए प्रतिचयन योजना, डॉज रोमिंग एवं सैनिक मानक सारणियों का उपयोग।

विश्वसनीयता की संकल्पना; अनुरक्षणीयता एवं उपलब्धता; शृंखला एवं सामान्तर पद्धति की विश्वसनीयता और अन्य सरल विन्यास; पुनः स्थापना घनत्व एवं पुनः स्थापना फलन, अतिजीविता निर्दर्श (चरघातांकी, बेबुल, लघुगुणक, रैले और बाथ-ट्टब); अतिरिक्तता के विभिन्न प्रकार और विश्वसनीयता सुधारों में अतिरिक्तता का उपयोग; आमु परीक्षण में समस्याएं; चरघातांकी प्रतिरूपों के लिए छिन्न और खंड वर्जित प्रयोग।

II. इष्टतमीकरण प्रविधि:

संक्रिया विज्ञान में विभिन्न प्रकार के निर्दर्श, उनकी संरचना और हल करने की सामान्य विधियां; अनुकरण और मांटेकार्लो विधि, रैखिक प्रोग्रामन (एल.पी.) समस्या की संरचना और सूत्रण, सरल रैखिक प्रोग्रामन प्ररूप और उसका आलेखी हल, एकधा प्रक्रिया, द्विचरण विधि और कृतिम चरों सहित एम. तकनीक, रैखिक प्रोग्रामन का द्वैथ सिद्धान्त और उसका आर्थिक निर्वचन; सुग्राहिता विश्लेषण, परिवहन एवं नियतन समस्या; आयतीत खेल; द्विव्यक्तीक शून्य-योग खेल; हल करने की विधियां (आलेखी एवं बीजगणितीय)

विफल एवं गुण हस्त मर्दों का प्रतिस्थापन; समूह और व्यष्टि प्रतिस्थापन नीतियां; वैज्ञानिक तालिका प्रबंधन की संकल्पना तथा तालिका समस्याओं की विश्लेषिक संरचना; अप्रता काल के साथ तथा उसके बिना निर्धरणात्मक एवं प्रसंभाव्य मांग के सरल निर्दर्श, डैम प्रकार के विशेष संदर्भ सहित संचयन निर्दर्श।

समाधात विविक्ता—काल मार्कोव शृंखलाएं, संक्रमण प्रायिकता आव्यूह, स्थितियों का वर्गीकरण तथा अभ्यतिप्राय के प्रमेय समघात, सतत-काल

मार्कोव, शृंखलाएं; प्यासों प्रक्रिया, पंक्ति सिद्धान्त के अवयव, एम./एम/1, एम./एम./के., जी./एम/जी.

प्रचलित साफ्टवेयर पैकेज, जैसे एस. पी. एस. एस., के उपयोग से सांख्यिकीय समस्याओं का कम्प्यूटर हल।

III. मात्रात्मक अर्थशास्त्र व राजकीय सांख्यिकी:

प्रवृत्ति निर्धारण, मौसमी व चक्रीय घटक; बाक्स--जैन-किन्स विधि; शृंखला की स्थिरता के लिए परीक्षण, ए. आर. आई. एम. ए. (अरिमा) निर्दर्श तथा स्वसमाश्रण व गतिमान माध्य अवयवों का क्रम निर्धारण, पूर्वानुमान।

साधारणतया प्रयुक्त सूचकांक-लैसपियर व पाशे एवं फिशर का आदर्श सूचकांक; शृंखला-आधारित सूचकांक, सूचकांक के प्रयोग व सीमाएं थोक मूलों का सूचकांक, उपभोक्ता मूल का सूचकांक, कृ॒षि व औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक, सूचकांक के परीक्षण जैसे आनुपातिकता परीक्षण, काल-विपर्यय, उपादान उत्क्रमण परीक्षण, शृंखलिक परीक्षण व विमीय निश्चिरता परीक्षण।

व्यापक रैखिक निर्दर्श, आकलन की साधारण न्यूनतम वर्ग व व्यापकीकृत न्यूनतम वर्ग विधियां, बहुसेरेखता की समस्या, बहुसेरेखता के परिणाम व समाधान, स्वसहसंबंध व इसके परिणाम, विक्षेप की विषम विचालिता व इसका परीक्षण, विक्षेप की स्वतंत्रता हेतु परीक्षण, जैलनर का प्रतीयमान असंबद्ध समाश्रयण समीकरण निर्दर्श व इसका आकलन, संरचना की संकल्पना और युगपत समीकरण हेतु निर्दर्श, अभिनिर्धारण की समस्या अभिनिर्धारण के हेतु कोटि एवं क्रम प्रतिबंध; आकलन की द्विस्तरीय न्यूनतम वर्ग विधि।

भारत में जनसंख्या, कृषि, औद्योगिक उत्पादन, व्यापार, और मूल्य की वर्तमान शासकीय सांख्यिकीय प्रणाली; शासकीय आंकड़ों के संग्रह करने की विधियां, उनकी विश्वसनीयता एवं सीमा और प्रधान प्रकाशन जो ऐसे आंकड़ों को अंतर्विष्ट करते हैं, आंकड़ों के संग्रह के लिए उत्तरदायी विभिन्न शासकीय एजेंसियां और उनके मुख्य कार्य।

IV. जनसांख्यिकी और मनोमिति

जनगणना से प्राप्त जनसांख्यिकीय आंकड़े, पंजीकरण, राष्ट्रीय, प्रतिदर्श सर्वेक्षण तथा अन्य सर्वेक्षण, उनकी सीमा और उपयोग, परिभाषा, जीवन, मरण दर और अनुपात की रचना और उपयोग, उर्वरता की माप, जनन दर, अस्वस्थता दर, मानकीकृत मृत्युदर, पूर्ण और संक्षिप्त वय सारणियां, जन्म मरण आंकड़ों और जनगणना विवरणियों के आधार पर वय सारणी का निर्माण, वय सारणियों का उपयोग, वृद्धिचातृ और अन्य जनवृद्धि वक्र, वृद्धिचातृ वक्र समंजन, जनसंख्या प्रक्षेप; स्थाई जनसंख्या सिद्धान्त, जनसांख्यिकीय प्राचलों के आंकलन में स्थाई और कल्पस्थाई जनसंख्या प्रविधियों के उपयोग, अस्वस्थता और उसकी माप, मृत्यु के कारण द्वारा मानक वर्गीकरण, स्वास्थ्य सर्वेक्षणों और अस्पताल के आंकड़ों का उपयोग।

मापक्रमों और परीक्षणों की मानकीकरण पद्धतियां, Z-समंक, मानक समंक, T-समंक, शततमक समंक, बौद्धिक स्तर और उसकी माप तथा उपयोग, परीक्षण समंक की मान्यता और उसका निर्धारण मनोमिति में उपादान विश्लेषण और पथ-विश्लेषण का उपयोग।

प्राणि विज्ञान

प्रश्न पत्र--1

भाग-क

1. अरजुकी और रजुकी :

- (क) विभिन्न फाइलमों का उपवर्गों तक वर्गीकरण एवं सम्बन्ध; एसीलोमेटा और सीलोमेटा, प्रोटोस्टोम और ड्यूटेरोस्टोम, बाइलेटरेलिया और रेडिएटा; प्रोटिस्टा, पैराजोआ, ओनिकोफोरा तथा हैमिकॉर डाया का स्थान, समिति।
- (ख) प्रोटोजोआ : गमन, पोषण तथा जनन, लिंग का विकास; पैरामीशियम मानोसिस्टम प्लाज्मोडियम तथा लीशमेनिया के सामान्य लक्षण एवं जीवनवृत्त।
- (ग) पोरिफेरा : कंकाल, नाल तंत्र तथा जनन।
- (घ) सीलेंट्रेया : बहुरूपता, रक्षा संरचनाएं तथा उनकी क्रियाविधि; प्रवाल भित्तियां और उनका निर्माण; मेटाजेनेसिस; ओबीलिया और औरीलिया के सामान्य लक्षण एवं जीवन-वृत्त।
- (ङ) प्लैटिहेल्मिंथीस : परजीवी अनुकूलन; फैलिसओला तथा टीनिया के सामान्य लक्षण एवं जीवन-वृत्त तथा मानव के साथ उनका सम्बन्ध।
- (च) नेमेटहेल्मिंथीस : ऐसकेरिस के सामान्य लक्षण, जीव वृत्त तथा परजीवी अनुकूलन; नेमेटहेल्मिंथों का मानव से सम्बन्ध।
- (छ) एंनेलिडा : सीलोम और विखण्डता, पॉलीकीटों में जीवन-विधियां नेरीस (नीएंथीस), कैंचुआ (फेरिटिमा) तथा जॉक (हिर्लिनेरिया) के सामान्य लक्षण तथा जीवन-वृत्त।
- (ज) आर्थोपोडा : क्रस्टेशिया में डिम्ब प्रकार और परजीविता, आर्थोपोडो (झींगा, तिलचट्टा तथा चिच्छु) में दृष्टि और श्वसन, कीटों (झींगा, तिलचट्टा मच्छर, मक्खी, मधुमक्खी तथा तितली) में मुखांगों का रूपान्तरण कीटों में कायांतरण तथा इसका हार्मोनी नियमन; कीटों (दीमकों तथा मधु-मक्खियों) में सामाजिक संगठन।
- (झ) मोलस्का : अशन, श्वसन, गमन, कवच विविधता; लैमेलिडेस्स, पाइला तथा सीपिया के सामान्य लक्षण एवं जीवन-वृत्त; गैस्ट्रोपोडों में ऐंठन तथा अव्यावर्तन।
- (ञ) एकाइनोडमेटा : अशन, श्वसन, गमन, डिम्ब प्रकार; ऐस्टीरिअस के सामान्य लक्षण तथा जीवन-वृत्त।
- (ट) प्रोटोकांडेय : रज्जुकियों का उद्भव, ब्रैकियोस्टोमा तथा हर्डिमानिया के सामान्य लक्षण तथा जीवनवृत्त।
- (ठ) पाइसाज : शल्क, श्वसन, गमन, प्रवासन।
- (ड) ऐम्फिबिया : चतुष्पादों का उद्भव, जनकीय देखभाल, शावकांतरण।
- (ढ) रेस्टीलिया वर्ग : सरीसृपों की उत्पत्ति; करोटि के प्रकार स्केनोडॉन तथा मगरमच्छों का स्थान।

(ग) एवीज़ : पक्षियों का उद्भव : उड्डयन अनुकूलन तथा प्रवासन।

(त) मैमेलिया : स्तनधारियों का उद्भव; दन्त विन्यास (अंडा देने वाले स्तनधारियों, कोष्ठधारी स्तनधारियों, जलीय स्तनधारियों तथा प्राइमेटों के सामाय लक्षण; अन्तः स्नावी ग्रंथियों तथा अन्य हार्मोन उत्पन्न करने वाली संरचनाएं) (पीयूष ग्रंथि, अवटु ग्रंथि, परावट ग्रंथि, अधिवृक्क ग्रंथि, अग्न्याशय जनन ग्रंथि) तथा उनमें अन्तर्संबन्ध।

(थ) करोरुकी प्राणियों के विभिन्न तन्त्रों का तुलनात्मक कार्यात्मक शरीर अध्यावरण तथा इसके व्युत्पाद अन्तः कंकाल, चलन अंग, पाचन तंत्र; श्वसन तंत्र, हृदय तथा महाधमनी चाहों सहित परिसंचारी तंत्र; मूत्र-जनन तंत्र, मस्तिष्क तथा ज्ञानेन्द्रियां (आंख तथा कान)

भाग-ख

I. पारिस्थितिकी :

(क) जीवमण्डल, जैवभूरसायन चक्र, ग्रीन हाउस प्रभाव, ओजोन परत तथा इसका प्रभाव; पारिस्थितिक अनुक्रम, जीवोम तथा ईकोटेन।

(ख) समष्टि, विशेषताएं, समष्टि गतिकी, समष्टि स्थिरीकरण।

(ग) प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण—खनिज खनन, मत्स्य उद्योग, जलकृषि, वानिकी, धास स्थल; बन्य जीवन (बाघ परियोजना), कृषि में बनाये रखा जाने वाला उत्पादन—एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन।

(घ) पर्यावरणीय जैव निम्नीकरण, प्रदूषण तथा जीवमण्डल पर इसके प्रभाव एवं उसकी रोकथाम।

II. व्यवहारिकी :

(क) व्यवहार : संवेदी निस्यंदन, प्रतिसंवेदिता, चिह्न उद्दीपन, सीखना, कृषि, अभ्यास, प्रानुकूलन, अध्यंकन।

(ख) चालन में हारमोनों की भूमिका, संचेतन प्रसार में फोरेमोनों की भूमिका; गोपकता, परपक्षी पहचान, परपक्षी तौर-तरीके, कीटों तथा प्राइमेटों में सामाजिक व्यवहार, प्रणय—(डोसोफिला त्रिकंटक स्टिकलबेक तथा पक्षी)।

(ग) अभिविन्याय, संचालन, अभिगृह, जैविक लय जैविक नियतकालिकता, ज्वारीय ऋतुपरक तथा दिवसप्राय लय।

(घ) प्राणी व्यवहार के अध्ययन की विधियाँ।

III. आर्थिक प्राणि विज्ञान :

(क) मधुमक्खी पालन, रेशमकीट पालन, लाख कीट पालन, शफरी संबंध, सीप पालन, झींगा पालन।

(ख) प्रमुख संक्रामक एवं संचरणीय रोग (चेचक, प्लेग, मलेरिया, क्षय रोग, हैजा तथा एड्स), (उनके वाहक, रोगाणु तथा रोकथाम)।

(ग) पशुओं तथा मवेशियों के रोग, उनके रोगाणु (हेलमिन्थस) तथा वाहक (चिंचड़ी, कुटकी, टेबेनस, स्टोमोक्सिस)।

(घ) गन्ने का नाशी जीव (पाइरिला, परपुसिएला), तिलहन का (एकिक्या जनाया) तथा चावल का (सिटोफिलस ओरिजे)।

IV. जैवसंग्रहिकी :

प्रयोगों की अभिकल्पना; निराकरणीय परिकल्पना; सह-सम्बन्ध, परावर्तन, केन्द्रीय प्रवृत्ति के परिमाण और वितरण, काई-क्वेयर विद्यार्थी टी-टेस्ट, एफ-टेस्ट (एक मार्गी तथा द्विमार्गी एफ टेस्ट)।

V. उपकरणीय पद्धति

(क) स्पेक्ट्रमी प्रकाशमापन, ज्वाला प्रकाशमिति, गाइगर मुलर गणित्र, प्रस्फुरण गणना।

(ख) इलैक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी (टी. इ. एम., एस. इ. एम.)।

प्रश्न पत्र--2

भाग-क

I. कोशिका जीव विज्ञान :

(क) कोशिका तथा इसके कोशिकांगों (केन्द्रक, प्लाज्मा फिल्ली, माइटोकान्ड्रिया, गाल्जी काय, अंतर्द्रव्यी, जालिका) (राइबोसोम तथा लाइसोसोम्स) की संरचना एवं कार्य, कोशिका विभाजन (समसूत्री और अर्ध सूत्री) समसूत्री तर्कु तथा समसूत्री तंत्र, गुणसूत्र गति।

(ख) डी. एन. ए. का बाट्सन एवं क्रीक, मॉडल, डी. एन. ए. की प्रतिकृति, प्रोटीन, संश्लेषण, अनुलेखन तथा अनुलेखन कारक।

II. आनुवंशिकी :

(क) जीन संरचना तथा कार्य, आनुवंशिकी कूट।

(ख) डोसोफिला, नेमेटोडों तथा मानव में लिंग गुण-सूत्र तथा लिंग निर्धारण।

(ग) वंशागति के मैंडलीय नियम, पुनर्योजन, सहलगनता, सहलगनता चित्र, बहु-युग्म विकल्पी, सिस्ट्रॉन अवधारणा, रक्त समूहों की आनुवंशिकी।

(घ) उत्परिवर्तन तथा उत्परिवर्तजनन : विकिरणी तथा रासायनिक।

(ङ) क्लोनिंग तकनीक, वाहकों के रूप में प्लेज़मिड्स तथा कॉस्मिड्स, ट्रान्सजेनिक्शन, ट्रान्सपोसोन्स, डी. एन. ए. क्रम क्लोनिंग तथा पूर्ण प्राणी क्लोनिंग (सिद्धांत तथा क्रियापद्धति)।

(च) प्रो तथा यू-कैरियाट्रस में नियमन तथा जोन अभिव्यक्ति।

(छ) संकेत पारक्रमण, बंशावली—विश्लेषण, मानव के जन्मजात रोग।

(ज) मानव जीनोम चित्रांकन, डी. एन. ए. फिंगर प्रिंटिंग।

III. विकास :

- (क) जीवन का उद्भव।
- (ख) प्राकृतिक वरण, विकास में उत्परिवर्तन की भूमिका, अनुहरण, विभिन्नता, पृथक्करण जाति उद्भवन।
- (ग) जीवाश्म तथा जीवाश्मीकरण, घोड़े, हाथी तथा मानव का विकास।
- (घ) हार्डी—बीनबर्ग नियम, जीन आवृति में परिवर्तन के विविध कारण।
- (ड) महाद्वीपीय विस्थापन तथा प्राणियों का वितरण।

IV. वर्गीकरण :

- (क) प्राणिवैज्ञानिक नामावली, अंतर्राष्ट्रीय नियम, क्लैडिस्टिक्स।

भाग-ख

I. जैवरसायन:

- (क) कार्बोहाइड्रेट, वसाओं, लिपिडें, प्रोटीनों, अमीनों अम्लों, न्यूक्लिक अम्लों की संरचना एवं भूमिका। संतुप्त तथा असंतुप्त वसा, अम्ल, कोलेस्ट्रोल।
- (ख) ग्लाइकोलाइसिस तथा क्रेब्स चक्र, आक्सीकरण, तथा अपचयन, आक्सीकरणी फास्फोरीलेशन; ऊर्जा संरक्षण तथा विमोचन; ए. टी. पी., चक्रीय ए. एम. पी.-इसकी संरचना तथा भूमिका।
- (ग) हार्मोन वर्गीकरण (स्टेराइड तथा पेप्टाइड हार्मोन), जैव संश्लेषण तथा कार्य।
- (घ) एन्जाइम : क्रिया के प्रकार तथा क्रिया विधियां, इम्यूनोग्लोब्युलिन तथा रोधक्षमता, विटामिन तथा को-एन्जाइम।
- (ड) जीवोर्जिकी :

II. कार्यिकी (स्तनधारियों के विशेष संदर्भ में)

- (क) रक्त की संघटना तथा रचक, मानव में रक्त समूह तथा "आर. एच." कारक, स्कंदन क्रिया, स्कंदन के कारक तथा क्रिया-विधि; अम्ल क्षारक साम्य, ताप-नियमन।
- (ख) आक्सीजन तथा कार्बन डाइऑक्साइड अभिगमन, हीमोग्लोबिन: इसके रचक तथा नियमन में इसकी भूमिका।
- (ग) पोषणिक आवश्यकताएँ : पाचन में लार ग्रंथियों, जिगर, आग्न्याशय तथा आंत्र ग्रंथियों की भूमिका तथा अवशोषण।
- (घ) उत्सर्जी उत्पाद, नेप्रान तथा मूत्र विरचन का नियमन; परासरण नियमन।
- (ड) पेशियों के प्रकार, कंकाल पेशियों की संकुचन की क्रियाविधि।
- (च) न्यूरान, तंत्रिका आवेग—उसका पालन तथा अन्त-ग्रंथनी संचरण: न्यूरोट्रांसमीटर।
- (छ) मानव में दृष्टि, श्रवण तथा प्राणबोध।
- (ज) हार्मोन क्रिया की क्रिया-विधि।
- (झ) जनन की कार्यिकी, हार्मोनों तथा फेरोमानों की भूमिका।

III. परिवर्धन जीव-विज्ञान :

- (क) युग्मक से न्यूरूला अवस्था तक का विभेदीकरण; निर्विभेदन, मेटालोसिया; विप्रेरण; संरचना विकास तथा मारफोजेन, मैंटक तथा चूँजे में कन्डुकों के नियति चित्र, आंख तथा हृदय का अंगजनन, स्तनधारियों में अपरान्याए।
- (ख) परिवर्धन में कोशिका-द्रव्य की भूमिका तथा परिवर्धन का आनुवंशिक नियंत्रण। कोशिका वंशपरम्परा, मैंटक तथा कीटों में कायांतरण का उद्भावन, शावकीजनन तथा विभ्रूणता, वृद्धि, विवृद्धि तथा कोशिका मृत्यु, जरण, ब्लास्टोजेनोसिस, पुनर्जनन; विरुपजनन; आर्बुदता।
- (ग) अपरा की आक्रामकता; पात्रे निषेचन; भ्रूण स्थानान्तरण, क्लोनिंग।
- (घ) वेयर का नियम; एवो-डेवी अवधारणा।

परिशिष्ट-2

भारतीय बन सेवा संबंधी संक्षिप्त व्यौरे (देखिए नियम 20)।

- (क) नियुक्तियां परिवीक्षा के आधार पर की जाएंगी जिसकी अवधि तीन वर्ष की होगी और उसे बढ़ाया भी जा सकेगा। सफल उम्मीदवारों को परिवीक्षा की अवधि में भारत सरकार के निर्णय के अनुसार निश्चित स्थान पर और निश्चित रीति से कार्य करना होगा और निश्चित परीक्षाएं पास करनी होंगी।

- (ख) यदि सरकार की राय में किसी परिवीक्षाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो तो उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की सम्भावना न हो तो सरकार उसे तत्काल सेवा मुक्त कर सकती है या यथास्थिति उस स्थायी पद पर प्रत्यावर्तित किया जा सकता है जिस पर उसका पुनर्ग्रहण अधिकार है या होगा बशर्ते कि उक्त सेवा में नियुक्त से पहले उस पर लागू नियमों के अन्तर्गत पुनर्ग्रहण अधिकार निलम्बित न कर दिया गया हो।

- (ग) परिवीक्षा अवधि के समाप्त होने पर सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा-मुक्त कर सकती है या उसकी परिवीक्षा की अवधि को बढ़ा सकती है।

- (घ) यदि सरकार में सेवा में नियुक्ति करने की अपनी शक्ति किसी अधिकारी को सौंप रखी हो तो वह अधिकारी ऊपरी खण्ड (ख) और (ग) के अन्तर्गत सरकार की किसी भी शक्ति का प्रयोग कर सकता है।

- (ङ) भारतीय बन सेवा में संबद्ध अधिकारी को केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार के अधीन भारत में कहीं भी या विदेश में सेवा करनी पड़ सकती है।

(च) वेतनमान :

- 1. कनिष्ठ वेतनमान : रुपये 8,000-275-13,500/-

2. वरिष्ठ वेतनमान :

- (1) वेतनमान

- रुपये 10,000-325-15,200/-

(2) कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड :

- रुपये 12,000-375-16,500/-

(3) चयन ग्रेड :

रूपये 14,300-400-18,300/-

3. सुपर टाइम स्केल :

(1) वन संरक्षक :

रूपये 16,400-450-20,000/-

(2) अपर मुख्य वन संरक्षक/मुख्य वन संरक्षक :

रूपये 18,400-500-22,400/-

4. सुपर टाइम स्केल से ऊपर के वेतनमान :

(1) अपर प्रिंसिपल चीफ-वन संरक्षक :

रूपये 22,400-525-24,500/-

(2) प्रिंसिपल चीफ-वन संरक्षक :

रूपये 24,050-650-26,000/-

समय-समय पर जारी किए गए आदेशों के अनुसार महंगाई भत्ता अनुदेय होगा।

परिवीक्षाधीन अधिकारी की सेवा कनिष्ठ वेतनमान में प्रारम्भ होगी और उसे परिवीक्षा पर बिताई गई अवधि के समय वेतनमान में अवकाश पैशन या वेतन वृद्धि के लिए गिनने की अनुमति होगी।

(छ) भविष्य निधि—भारतीय वन सेवा के अधिकारी समय-समय पर संशोधित अखिल भारतीय सेवा (भविष्य निधि) नियमावली, 1955 से शासित होते हैं।

(ज) अवकाश—भारतीय वन सेवा के अधिकारी समय-समय पर संशोधित अखिल भारतीय सेवा (अवकाश) नियमावली, 1955 से शासित होते हैं।

(झ) डॉक्टरी परिचर्या—भारतीय वन सेवा के अधिकारियों को समय-समय पर संशोधित अखिल भारतीय सेवा (डॉक्टरी) परिचर्या नियमावली, 1954 के अन्तर्गत प्राप्त डाक्टरी परिचर्या सुविधाएं पाने का हक है।

(ज) सेवा-निवृत्ति लाभ—प्रतियोगिता के आधार पर नियुक्त किए गए भारतीय वन सेवा के अधिकारी, समय-समय पर संशोधित अखिल भारतीय सेवा (मृत्यु व सेवा निवृत्ति लाभ) नियमावली, 1958 द्वारा शासित होते हैं।

परिशिष्ट-3

(देखिये नियम 17.)

उम्मीदवारों की शारीरिक परीक्षा के बारे में विनियम

[ये विनियम उम्मीदवार की सुविधा के लिए प्रकाशित किए जाते हैं ताकि वे यह अनुमान लगा सकें कि वे अपेक्षित शारीरिक स्तर के हैं या नहीं। ये विनियम स्वास्थ्य परीक्षकों के मार्ग निर्देशन के लिए भी हैं। चिकित्सा परीक्षा दो भागों में आयोजित की जाएगी अर्थात् भाग-I जिसमें छाती के रेडियो-ग्राफिक परीक्षण (एक्स-रे-परीक्षण) को छोड़कर सम्पूर्ण चिकित्सा सम्मिलित है, मेडिकल बोर्ड द्वारा निर्धारित की जाएगी। भाग-II जिसमें

रेडियोग्राफिक परीक्षण (छाती का एक्स-रे परीक्षण) सम्मिलित होगा। भाग-II परीक्षा के बाल उन्हीं उम्मीदवारों की ली जाएगी जो प्रथम परीक्षा के आधार पर सफल घोषित किए जाएंगे। भारत सरकार को स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड की रिपोर्ट पर विचार करके उसे स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार होगा।]

1. नियुक्ति के लिए स्वस्थ ठहराए जाने के लिए ज़रूरी है कि उम्मीदवार का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य ठीक हो और उसमें कोई ऐसा शारीरिक दोष न हो जिससे नियुक्ति के बाद दक्षतापूर्वक काम करने में बाधा पड़ने की सम्भावना हो।

2. चलने की परीक्षा—पुरुष उम्मीदवारों को चार घंटों में पूर्ण होने वाली 25 किलोमीटर और महिला उम्मीदवारों को 4 घंटे में पूर्ण होने वाली 14 किलोमीटर चलने की परीक्षा में सफलता प्राप्त करनी होगी। वन महानिरीक्षक, भारत सरकार द्वारा इस परीक्षा की व्यवस्था इस प्रकार की जायेगी कि वह स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड के साथ-साथ हो सके।

बशर्ते यदि वह उम्मीदवार जिसे परीक्षा के लिखित भाग के परिणाम की घोषणा के उपरान्त चाल परीक्षण हेतु उपस्थित होने के लिए बुलाया गया है, या तो निर्धारित समय सीमा के भीतर चाल परीक्षण पूर्ण करने में असफल रहता है या परीक्षण में उपस्थित नहीं हो पाता है, उसे परीक्षा के अन्तिम परिणाम के आधार पर भारतीय वन सेवा हेतु चयन हो जाने के बाद चाल परीक्षण हेतु उपस्थित होने का एक और अवसर दिया जाएगा। यदि वह पुनः परीक्षण में उपस्थित/उत्तीर्ण होने में असफल रहता है तो उसे चाल परीक्षण में उपस्थित होने का और अवसर नहीं दिया जाएगा।

3. (क) भारतीय (एंग्लो-इण्डियन सहित) जाति के उम्मीदवारों की आयु, कद और छाती के धेर के परस्पर सम्बन्ध के बारे में मेडिकल बोर्ड के ऊपर यह बात छोड़ दी गई है कि वह उम्मीदवारों की परीक्षा में मार्ग-दर्शन के रूप में जो भी परस्पर सम्बन्ध के आंकड़े सबसे अधिक उपयुक्त समझें, व्यवहार में लाएं। यदि वजन, कद और छाती के धेर में विषमता हो तो जांच के लिए उम्मीदवार को अस्पताल में रखना चाहिए और छाती का एक्स-रे लेना चाहिए। ऐसा करने के बाद ही बोर्ड उम्मीदवार को स्वस्थ अथवा अस्वस्थ घोषित करेगा। केवल उन उम्मीदवारों की छाती का एक्स-रे किया जाएगा जिन्हें चिकित्सा परीक्षण के भाग-II के लिए मेडिकल बोर्ड के समक्ष उपस्थित होने के निर्देश दिए जाएंगे।

(ख) कद और छाती के धेर के लिए कम से कम मानक निम्नलिखित हैं जिस पर पूरा न उतरने पर उम्मीदवार को स्वीकार नहीं किया जा सकता :—

कद	छाती का धेरा (पूरा फुला कर)	फुलाव
163 सें.मी.	84 सें.मी.	5 सें.मी. (पुरुषों के लिए)
150 सें.मी.	79 सें.मी.	5 सें.मी. (महिलाओं के लिए)

अनुसूचित जनजातियों तथा गोरखा, नेपालियों, असमियों, मेघालय जनजातियों, लद्दाखियों, सिक्किमियों, भूटानियों, कुमाऊनियों, गढ़वालियों, नागाओं तथा अरुणाचल प्रदेश के उम्मीदवारों के मामले में, जिनका औसत

कद विशिष्टतया कम होता है, कद में छूट देने के लिए कम से कम निर्धारित मानकें निम्नलिखित हैं :—

पुरुष	152.5 सें.मी.
महिला	145.0 सें.मी.

4. उम्मीदवारों का कद निम्नलिखित विधि से मापा जाएगा। वह अपने जूते उतार देगा और उस मापदण्ड (स्टैप्ड) से इस प्रकार सटकर खड़ा किया जाएगा कि उसके पांव आपस में जुड़े रहें और उनका बज़न सिवाय ऐड़ियों के पावों की उंगलियों या किसी और हिस्से पर न पढ़े। वह बिना अकड़े सीधा खड़ा होगा और उसकी ऐड़ियां, पिण्डलियां, निताब और कन्धे मापदण्ड के साथ लगे होंगे। उसकी ठेड़ी नीची रखी जायेगी ताकि सिर का स्तर (वरटेक्स आफ हेड) हारिजन्टल बार (आड़ी छड़ा) के नीचे आए। कद सेंटीमीटर और आधे सेंटीमीटर में मापा जाएगा।

5. उम्मीदवार की छाती मापने का तरीका निम्न प्रकार है :

उसे इस भाँति खड़ा किया जायेगा कि उसके पांव जुड़े हों और उसकी भुजाएं सिर से ऊपर उठी हों। फीते को छाती के गिर्द इस तरह लगाया जायेगा कि पीछे और उसका ऊपरी किनारा असफलक (शोल्डर ब्लेड) के निम्न कोणों (इनफिरीयर एंगल्स) से लगा रहे और यह फीते को छाती के गिर्द ले जाने पर उसी आड़े समतल (हारिजन्टल प्लेन) में रहे। फिर भुजाओं को नीचे किया जायेगा और उन्हें शरीर के साथ लटके रहने दिया जायेगा। किन्तु इस बात का ध्यान रखा जायेगा कि कन्धे ऊपर या पीछे की ओर न किए जाएं ताकि फीता अपने स्थान से हट न पाए। तब उम्मीदवार को कई बार गहरा सांस लेने के लिए कहा जायेगा और कम से कम और अधिक से अधिक फैलाव सेंटीमीटर में रिकार्ड किया जाएगा 84-89, 86-93 आदि। नाप का रिकार्ड करते समय आधे सेंटीमीटर से कम के भिन्न (फ्रेक्शन) को नोट नहीं करना चाहिए।

विशेष ध्यान दें :— अन्तिम निर्णय करने से पूर्व उम्मीदवार का कद और छाती दुबारा नापने चाहिए।

6. उम्मीदवार का बज़न भी किया जायेगा और उसका बज़न किलोग्राम में रिकार्ड किया जाएगा, आधे किलोग्राम से कम के फ्रेक्शन को नोट नहीं करना चाहिए।

7. उम्मीदवार की नज़र की जांच निम्नलिखित नियमों के अनुसार की जाएगी। प्रत्येक जांच का परिणाम रिकार्ड किया जाएगा :—

- (1) सामान्य (जनरल) — किसी रोग या असमानता (एबनार्मलिटी) का पता लागाने के लिए उम्मीदवार की आंख की सामान्य परीक्षा की जायेगी। यदि उम्मीदवार को भैगापन या आंखों की पलकों अथवा साथ लगती संरचनाओं (कंटीनुअस स्ट्रक्चर्स) का विकास होगा जिसे भविष्य में किसी भी समय सेवा के लिए उसके अयोग्य होने की संभावना हो तो उम्मीदवार को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।
- (2) दृष्टि तीक्ष्णत (विजुअल एक्विटी) — दृष्टि की तीव्रता का निर्धारण करने के लिए दो बार जांच की जायेगी एक दूर की नज़र के लिए और दूसरी नज़दीक की नज़र के लिए। प्रत्येक आंख की अलग परीक्षा की जाएगी।

चरमे के बिना (नैकेड आई विज़न) की कोई न्यूनतम सीमा (मिनीमम लिमिट) नहीं होगी कि प्रत्येक मामले में मेडिकल बोर्ड या अन्य मेडिकल प्राधिकारी द्वारा ये रिकार्ड किया जाएगा क्योंकि इसमें आंख की हालत के बारे में मूल सूचना (बेसिक इन्फारेशन) मिल जाएगी।

भारतीय बन सेवा एक तकनीकी सेवा है।

चरमे के साथ और चरमे के बिना दूर और नज़दीक की नज़र का मानक निम्नलिखित होगा :—

दूर की नज़र	नज़दीक की नज़र
अच्छी आंख	खराब आंख
(ठीक की हुई आंख)	(ठीक की हुई आंख)

6/6 6/6 एन 5 एन 5

किस प्रकार का इलाज करने की अनुमति दी गई।

सबसे अच्छा इलाज (आनिर्दिष्ट) “रेडियल केरोटोमी”

टिप्पणी :

(1) फण्डस परीक्षा—मायोपिया फण्डस के प्रत्येक मामले में जांच करनी चाहिए और नतीजों को रिकार्ड किया जाना चाहिए, यदि उम्मीदवार को ऐसी रोगात्मक अवस्था हो जिसके बढ़ने और उससे उम्मीदवार की कार्यकुशलता पर असर पड़ने की संभावना हो तो उसे अयोग्य घोषित कर देना चाहिए।

मायोपिया का कुल परिणाम (सिलेण्डर सहित) -8.00 डि. से अधिक नहीं होना चाहिए। हाईपर मैट्रोपिया (सिलेण्डर सहित) +4.00 डि. से अधिक नहीं होना चाहिए।

शर्त यह है कि उम्मीदवार हाई मायोपिया के कारण अयोग्य पाया जाए तो यह मामला तीन दृष्टि विशेषज्ञों के विशिष्ट बोर्ड को भेज दिया जाएगा जो यह घोषणा करेगा कि यह मायोपिया रोगात्मक है या नहीं। यदि यह मामला रोगात्मक नहीं हो तो उम्मीदवार को योग्य घोषित किया जाएगा, बशर्ते वह अन्यथा दृष्टि सम्बन्धी अपेक्षाएं पूरी करें।

(2) कलर विजन :—(क) रंगों के संदर्भ में नज़र की जांच आवश्यक होगी।

(ख) नीचे दी हुई तालिका के अनुसार रंग का प्रत्यक्ष ज्ञान उच्चतर (हायर) और निम्नतर (लोअर) ग्रेड में होना चाहिए जो लैंटर्न के द्वारक (एपर्चर) के आकार पर निर्भर हों :—

ग्रेड	रंग के प्रत्यक्ष ज्ञान का	रंग के प्रत्यक्ष ज्ञान का
उच्चतर ग्रेड		निम्नतर ग्रेड
1. लैम्प और उम्मीदवार के बीच की दूरी	16 फीट	16 फीट
2. द्वारक (एपर्चर)	1.3 मि. मीटर	1.3 मि. मी.
का आकार		
3. उद्भासन काल	5 सैकण्ड	5 सैकण्ड

(ग) लाल संकेत, हरे संकेत और सफेद रंग को आसानी से और हिंचकिचाहट के बिना पहचान लेना संतोषजनक कलर विजन है। इशिहारा की स्लेटों के इस्तेमाल को जिन्हें एड्रिज ग्रीन लैंटर्न जैसी उपयुक्त लैंटर्न और उसकी रोशनी में दिखाया जाता है। कलर विजन की जांच करने के लिए बिल्कुल विश्वसनीय समझा जाएगा। वैसे तो दोनों जांचों में से किसी भी एक जांच को साधारण तथा पर्याप्त समझा जा सकता है। लेकिन सङ्क, रेल और

हवाई यातायात से सम्बन्धित सेवाओं के लिए लैंटर्न से जांच करना लाजिमी है। शक वाले मामले में जब उम्मीदवार को दोनों में से किसी एक जांच करने पर अयोग्य पाया जाए तो दोनों परीक्षण किए जाने चाहिए।

टिप्पणी : भारतीय बन सेवा में नियुक्ति के लिए कलर विजन का निम्न ग्रेड पर्याप्त माना जाएगा।

(3) दृष्टि क्षेत्र (फोल्ड आफ विजन) सभी सेवाओं के लिए सम्मुख विधि कन्फ्रनेशन मेथड द्वारा दृष्टि क्षेत्र की जाएगी। जब ऐसी जांच का नतीजा असंतोषजनक या संदिग्ध हो तब दृष्टि क्षेत्र को परिमापी (पैरामीटर) पर निर्धारित किया जाना चाहिए।

(4) रत्नधी (नाइट ब्लाइंडनेस) -- केवल विशेष मामलों को छोड़कर रत्नधी की जांच नेमी रूप से जरूरी नहीं है। रत्नधी या अंधेरे में दिखाई न देने की जांच करने के लिए कोई नियत स्टैण्डर्ड टेस्ट नहीं है। मेडिकल बोर्ड को ही ऐसे काम चलाऊ टेस्ट कर लेने चाहिए जैसे रोशनी कम करके या उम्मीदवार को अंधेरे कमरे में ले जाकर 20 से 30 मिनट के बाद उससे विधि चीजों की पहचान करवा कर दृष्टि तीक्ष्णता रिकार्ड करना। उम्मीदवारों के अपने कथनों पर कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए किन्तु उन पर उचित विचार किया जाना चाहिए।

(5) दृष्टि की तीक्ष्णता से भिन्न की अवस्थाएं (आक्युलर कन्डीशन)।

(क) आंख की इस बीमारी को या बढ़ती हुई अपवर्तन त्रुटि (प्रोग्रेसिव रिफ्रैक्टिव एर) को, जिसके परिणामस्वरूप दृष्टि की तीक्ष्णता के कम होने की संभावना ही अयोग्यता का कारण समझना चाहिए।

(ख) रोहे (ट्रैकोमा) -- यदि रोहे जटिल न हों तो ये आमतौर से योग्यता का कारण नहीं होंगे।

(ग) भैंगापन--द्विनेत्री--(वाईनैकुलर) दृष्टि का होना लाजिमी है। नियत स्टैण्डर्ड की दृष्टि की तीक्ष्णता होने पर भी भैंगापन को अयोग्यता का कारण समझना चाहिए।

(घ) एक आंख वाले व्यक्ति-नियुक्ति के लिए एक आंख वाले व्यक्तियों की अनुरुपता नहीं की जाती।

8. रक्त दाब (ब्लड प्रेशर) :

ब्लड प्रेशर के सम्बन्ध में बोर्ड अपने निर्णय से काम लेगा। नार्मल, उच्चतम, सिस्ट्युलिक प्रेशर के आकलन की काम चलाऊ विधि नीचे दी जाती है :--

(1) 15 से 25 वर्ष के व्यक्तियों में औसत ब्लड प्रेशर लगभग 100+आयु होती है।

(2) 25 से ऊपर की आयु वाले व्यक्तियों में ब्लड प्रेशर के आकलन का सामान्य नियम यह है कि 110 में आधी आयु जोड़ दी जाए। यह तरीका बिल्कुल सन्तोषजनक दिखाई पड़ता है।

विशेष ध्यान दें--सामान्य नियम के रूप में 140 से ऊपर के सिस्ट्युलिक प्रेशर और 90 से ऊपर डायस्ट्रालिक प्रेशर को संदिग्ध मान लेना चाहिए और उम्मीदवार को अयोग्य या योग्य ठहराने के सम्बन्ध में अपनी अन्तिम राय देने से पहले बोर्ड को चाहिए कि उम्मीदवार को अस्पताल में रखें। अस्पताल में रखने की रिपोर्ट से यह पता लगाना चाहिए कि घबराहट (एक्साइटमेंट) आदि के कारण ब्लड प्रेशर थोड़े समय रहने वाला है या इसका कारण कोई

कायिक (आर्गेनिक) बीमारी है। ऐसे सभी मामलों में हृदय के एक्सरे और इलेक्ट्रो कार्डियोग्राफी जांच और रक्त यूरिया निकास (क्लियरेंस) की जांच भी नेमी तौर पर की जानी चाहिए। फिर भी उम्मीदवार के योग्य होने के बारे में अन्तिम फैसला केवल मेडिकल बोर्ड ही करेगा।

ब्लड प्रेशर (रक्त दाब) लेने का तरीका :

नियमतः पारे वाले दाब मापी (मर्करी मैनोमीटर) किस्म का उपकरण इस्तेमाल करना चाहिए। किसी किस्म के व्यायाम या घबराहट के बाद पन्द्रह मिनट तक रक्त दाब नहीं लेना चाहिए। रोगी बैठा या लेटा हो बशर्ते कि वह और विशेषकर उसकी भुजा शिथिल हो और आराम से हो। लगभग हारिंजन्टल स्थिति में रोगी के पार्श्व पर से कन्धे तक कपड़ा उतार देना चाहिए। कफ में से पूरी हवा निकाल कर बीच की रबड़ को भुजा के अन्दर की ओर रखकर और उसके निचले किनारे को कोहनी कोमोड़ से एक या दो इंच ऊपर करके लगाना चाहिए। इसके बाद कपड़ों की पट्टी को फैलाकर समान रूप से लपेटना चाहिए ताकि हवा भरने पर कोई हिस्सा फूल कर बाहर न निकले।

कोहनी के मोड़ पर प्रगण्ड धर्मनी (ब्रेकियल आर्टी) को दबा-दबा कर ढूँढ़ा जाता है तब इसके ऊपर बीचों-बीच स्टेथोस्कोप को हल्के से लगाया जाता है जो कफ के साथ न लगे। कफ में लगभग 200 एम. एम. एच. जी. हवा भरी जाती है और इसके बाद इसमें से धीरे-धीरे हवा निकाली जाती है। हल्की क्रमिक ध्वनियां सुनाई पड़ने पर जिस स्तर पर पारे का कालम टिका हुआ होता है वह सिस्ट्युलिक प्रेशर दर्शाता है जब और हवा निकाली जाएगी तो ध्वनियां सुनाई पड़ेंगी। जिस स्तर पर वे साफ और स्पष्ट सुनाई पड़ने वाली ध्वनियां हल्की दबी हुई सी लुप्त प्रायः हो जाएं यह डायस्ट्रालिक प्रेशर है। ब्लड प्रेशर काफी थोड़ी अवधि में ही लेना चाहिए क्योंकि कफ पर लम्बे समय का दबाव रोगी के लिए क्षोभकर होता है और इससे रीडिंग गलत होती है। यदि दोबारा पड़ताल करनी जरूरी हो तो कफ से पूरी हवा निकाल कर कुछ मिनट के बाद ही ऐसा किया जाए। कभी-कभी कफ में से हवा निकलने पर एक निश्चित स्तर पर ध्वनियां सुनाई पड़ती हैं। दाब गिरने पर ये गायब हो जाती हैं। निम्न स्तर पर पुनः प्रकट हों तो इस साईलैंस गैप से रीडिंग में गलती हो सकती है।

9. परीक्षक की उपस्थिति में किए गए मूत्र की परीक्षा की जानी चाहिए और परिणाम रिकार्ड किया जाना चाहिए। जब मेडिकल बोर्ड को किसी उम्मीदवार के मूत्र की रासायनिक जांच द्वारा शक्कर का पता चले तो बोर्ड इसके सभी पहलुओं की परीक्षा करेगा और मधुमेह (डायबिटीज) के द्वातक चिह्न और लक्षणों को भी विशेष रूप से नोट करेगा। यदि बोर्ड उम्मीदवार को ग्लूकोज मेह (ग्लाइकोसूरिया) के सिवाय अपेक्षित मेडिकल फिटनेस के स्टैण्डर्ड के अनुरूप पाए तो यह उम्मीदवार को इस शर्त के साथ फिट घोषित कर सकता है कि ग्लूकोज मेह अमधुमेही (नानाडायबिटिक) हो और बोर्ड केस को मेडिकल के किसी ऐसे निर्दिष्ट विशेषज्ञ के पास भेजेगा जिसके पास अस्पताल और प्रयोगशाला की सुविधाएं हों। मेडिकल विशेषज्ञ, स्टैण्डर्ड ब्लड शूगर टालरेंस टेस्ट समेत जो भी व्याप्तिक या लेबोरेटरीज परीक्षाएं जरूरी समझेगा, करेगा और अपनी रिपोर्ट मेडिकल बोर्ड को भेज देगा जिस पर मेडिकल बोर्ड की “फिट” या “अनफिट” की अंतिम राय आधारित होगी। बोर्ड के सामने दूसरे अवसर पर उम्मीदवार को स्वयं उपस्थित होना जरूरी नहीं होगा। औषधि के प्रभाव को समाप्त करने के लिए यह जरूरी हो सकता है कि उम्मीदवार को कई दिन तक अस्पताल में कड़ी देख-रेख में रखा जाए।

10. यदि जांच के परिणामस्वरूप कोई महिला उम्मीदवार 12 हफ्ते या उससे अधिक समय की गर्भवती पाई जाती है तो उसको अस्थाई रूप से तब तक अस्वस्थ घोषित किया जाना चाहिए जब तक कि उसका प्रसव न हो जाए। किसी रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टीशनर से आरोग्यता का स्वस्थता प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने पर प्रसूती की तारीख के 6 हफ्ते बाद आरोग्य प्रमाण-पत्र के लिए उसकी फिर से स्वास्थ्य परीक्षा की जानी चाहिए।

11. निम्नलिखित अतिरिक्त बातों का प्रेक्षण करना चाहिए :--

(क) उम्मीदवार को कानों से अच्छा सुनाई पड़ता है या नहीं और कान की बीमारी का कोई चिह्न है या नहीं। यदि कोई कान की खराबी हो तो उसकी परीक्षा कान विशेषज्ञ द्वारा की जानी चाहिए। यदि सुनने की खराबी का इलाज शल्यक्रिया (आपरेशन) या हियरिंग एड के इस्तेमाल से हो सके तो उम्मीदवार को इस आधार पर अयोग्य घोषित नहीं किया जा सकता बशर्ते कानों की बीमारी बढ़ने वाली न हो। चिकित्सा परीक्षा प्राधिकारी के मार्गदर्शन के लिए इस सम्बन्ध में निम्नलिखित मार्गदर्शन जानकारी दी जाती है।

(1) एक कान में प्रकट अथवा पूर्ण बहरापन, दूसरा कान सामान्य होगा।	यदि उच्च फ्रीक्वेंसी बहरापन 30 डेसीबल तक हो तो गैर-तकनीकी काम के लिए योग्य।
(2) दोनों कानों में बहरेपन का प्रत्यक्ष बोध जिससे श्रवण तंत्र (हियरिंग एड) द्वारा कुछ सुधार संभव है।	यदि 1000 से 4000 हर्ट्ज तक की स्पीच या फ्रीक्वेंसी से बहरापन 30 डेसीबल तक हो तो तकनीकी तथा गैर-तकनीकी दोनों प्रकार के काम के लिए योग्य।
(3) सेंट्रल अथवा मार्जिनल टाइप के टिम्पेनिक मेम्ब्रेन में छिद्र।	(i) एक कान सामान्य हो दूसरे कान में टिम्पेनिक मेम्ब्रेन में छिद्र हो तो अस्थायी आधार पर अयोग्य। कान की शल्य-चिकित्सा की स्थिति सुधारने से दोनों कानों में मार्जिनल या अन्य छिद्र वाले उम्मीदवारों को अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित करके उस पर नीचे दिए गए नियम 4(ii) के अधीन विचार किया जा सकता है। (ii) दोनों कानों में मार्जिनल या एटिक छिद्र होने पर अयोग्य। (iii) दोनों कानों में सेन्ट्रल छिद्र होने पर अस्थायी रूप से अयोग्य।
(4) कान के एक ओर से दोनों ओर से मस्टायड केविटी सबनार्मल श्रवण	(1) किसी एक कान के सामान्य रूप से एक ओर से मस्टायड केविटी से सुनाई देता हो दूसरे कान से सबनार्मल श्रवण देता हो तो अस्थायी रूप से अयोग्य।

(5) बहते रहने वाला कान औपरेशन किया गया/ बिना औपरेशन वाला।

(6) नासापट की हड्डी संबंधी विरूपताओं (बोनी डिफार्मिटी) सहित अथवा उससे रहित नाक की जीर्ण प्रदाहक एलर्जिक दशा।

(7) यौंसिल और अथवा स्वर यंत्र लरिंग्स की जीर्ण प्रदाहक दशा।

(8) कान, नाक, गले (ई. एन. टी.) के हल्के अथवा अपने स्थान पर घातक ट्यूमर

(9) आस्ट्रेकिल रोसिस

(10) कान, नाक अथवा गले के जन्मजात दोष

(11) नेजल पॉली

(ख) उम्मीदवार बोलने में हकलाता/हकलाती नहीं हो।

(ग) उसके दांत अच्छी हालत में हैं या नहीं और अच्छी तरह चबाने के लिए जरूरी होने पर नकली दांत लगे हैं या नहीं (अच्छी तरह भरे हुए दांतों को ठीक समझा जाएगा)।

से सबनार्मल श्रवण वाले कान मस्टायड केविटी होने पर तकनीकी तथा गैर-तकनीकी दोनों प्रकार के कार्यों के लिए योग्य।

(2) दोनों ओर से मस्टायड केविटी। तकनीकी काम के लिए अयोग्य। किसी भी कान की श्रवणता श्रवण तंत्र लगाकर अथवा बिना लगाए सुधार कर 30 डेसीबल हो जाने पर गैर-तकनीकी कार्यों के लिए योग्य।

तकनीकी तथा गैर तकनीकी दोनों प्रकार के लिए अस्थायी रूप से अयोग्य।

(1) प्रत्येक मामले पर परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लिया जाएगा।

(2) यदि लक्षणों सहित नासापट सेपटम अपसरण विद्यमान होने पर अस्थायी रूप से अयोग्य।

(1) यौंसिल और/अथवा स्वर यंत्र की जीर्ण प्रदाहक दशायें।

(2) यदि आवाज में अत्यधिक कर्कशता विद्यमान हो तो स्थाई रूप से अयोग्य।

(1) हल्का ट्यूमर--अस्थाई रूप से अयोग्य।

(2) घातक ट्यूमर--अयोग्य श्रवण तंत्र की सहायता से।

आौपरेशन के बाद श्रवण 30 डेसीबल के अन्दर होने पर योग्य।

(1) यदि काम-काज में बाधक न हो तो--योग्य।

(2) भारी मात्रा में हकलाहट हो तो--अयोग्य।

अस्थाई रूप से अयोग्य।

(घ) उसकी छाती की बनावट अच्छी है या नहीं और छाती काफी फैलती है या नहीं तथा उसका दिल या फेफड़ा ठीक है या नहीं।

(ङ) उसे पेट की कोई बीमारी है या नहीं।

(च) उसे रपचर है या नहीं।

(छ) उसे हाइड्रोसील, बढ़ी हुई बेरिकोजशिरा (बेन) या बवासीर है या नहीं।

(ज) उसके अंगों, हाथों और पैरों की बनावट और विकास अच्छा है या नहीं और उसकी ग्रंथियाँ भली-भांति स्वतंत्र रूप से हिलती हैं या नहीं।

(झ) उसे कोई चिरस्थाई त्वचा की बीमारी है या नहीं।

(ञ) कोई जन्मजात कुरचना या दोष है या नहीं।

(ट) इसमें किसी उग्र या जीर्ण बीमारी के निशान हैं या नहीं, जिससे कमज़ोर गठन का पता लगे।

(ठ) कारगर टीके के निशान हैं या नहीं।

(ड) उसे कोई संचारी (कम्युनिकेबल) रोग है या नहीं।

12. हृदय तथा फेफड़ों की किन्हीं ऐसी असामान्यताओं का पता लगाने, जिन्हें सामान्य शारीरिक परीक्षण के आधार पर नहीं देखा जा सकता है, के लिए छाती का रेडियोग्राफी परीक्षण केवल उन्हीं उम्मीदवारों का किया जाएगा जिन्हें संबंधित भारतीय वन सेवा परीक्षा में अन्तिम रूप से सफल घोषित किया जाता है।

जब कोई दोष मिले तो प्रमाण-पत्र में अवश्य ही नोट किया जाए। मेडिकल परीक्षक को अपनी राय लिख देनी चाहिए कि उम्मीदवार से अपेक्षित दक्षतापूर्ण इयूटी में इससे बाधा पड़ने की संभावना है या नहीं।

सरकारी सेवाओं के लिए उम्मीदवार के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जहां कहीं संदेह हो, चिकित्सा बोर्ड का अध्यक्ष उम्मीदवार की योग्यता अथवा अयोग्यता का निर्णय लिए जाने के प्रश्न पर किसी उपयुक्त अस्पताल के विशेषज्ञ से परामर्श कर सकता है। जैसे किसी उम्मीदवार पर मानसिक त्रुटि अथवा विप्रयन (एबरशन) से पीड़ित होने का संदेह होने में बोर्ड का अध्यक्ष अस्पताल के किसी मनोविकार विज्ञानी/मनोविज्ञानी से परामर्श कर सकता है।

टिप्पणी :—उम्मीदवारों को चेतावनी दी जाती है कि उपर्युक्त सेवाओं के लिए उनकी योग्यता का निर्धारण करने के लिए नियुक्त स्पेशल या स्टैंडिंग मेडिकल बोर्ड के खिलाफ उन्हें अपील करने के लिए कोई हक नहीं है किन्तु यदि सरकार को प्रथम बोर्ड की जांच में निर्णय की गलती की संभावना के सम्बन्ध में प्रस्तुत किए गए प्रमाण के बारे में तसल्ली हो जाए तो सरकार दूसरे बोर्ड के सामने एक अपील की इजाजत दे सकती है। ऐसा प्रमाण उम्मीदवार की प्रथम मेडिकल बोर्ड के निर्णय भेजने की तारीख के एक महीने के अन्दर पेश करना चाहिए वरना दूसरे मेडिकल बोर्ड के सामने अपील करने की प्रार्थना पर विचार नहीं किया जाएगा।

यदि प्रथम बोर्ड के निर्णय की गलती की संभावना के बारे में प्रमाण के रूप में उम्मीदवार मेडिकल प्रमाण-पत्र पेश करें तो इस प्रमाण-पत्र पर उस हालत पर विचार नहीं किया जाएगा, जबकि इससे सम्बन्धित मेडिकल

प्रैक्टिशनर का उस आशय का नोट नहीं होगा कि यह प्रमाण-पत्र इस तथ्य के पूर्ण ज्ञान के बाद ही दिया गया है कि उम्मीदवार पहले से ही सेवाओं के लिए मेडिकल बोर्ड द्वारा अयोग्य घोषित करके अस्वीकृत किया जा चुका हो।

मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट

मेडिकल परीक्षक के मार्गदर्शन के लिए निम्नलिखित सूचना दी जाती है :—

(१) शारीरिक योग्यता (फिटनेस) के लिए अपनाए जाने वाले स्टैण्डर्ड से सम्बन्धित उम्मीदवार की आयु और सेवाकाल (यदि हों) के लिए उचित गुजाइश रखनी चाहिए।

किसी ऐसे व्यक्ति को पब्लिक, सर्विस में भर्ती के लिए योग्य नहीं समझा जाएगा जिसके बारे में यथास्थिति सरकार या नियुक्त करने वाले प्राधिकारी (अप्वाइंटिंग अथारिटी) को यह तसल्ली नहीं होगी कि उसे ऐसी कोई बीमारी या शारीरिक दुर्बलता (बोडिली इनफर्मिटी) नहीं है जिससे उस सेवा के लिए अयोग्य हो या उसके अयोग्य होने की संभावना हो।

यह बात समझ लेनी चाहिए कि योग्यता का प्रश्न भविष्य से भी उतना ही सम्बन्ध है जितना वर्तमान से है और मेडिकल परीक्षा का एक मुख्य उद्देश्य निरन्तर कारगर सेवा प्राप्त करना और स्थायी नियुक्ति के उम्मीदवारों के मामले में अकाल मृत्यु होने पर समय पूर्व पेशन या अदायगियों को रोकना है। साथ वहीं यह भी नोट कर लिया जाए कि यहां प्रश्न केवल निरन्तर कारगर सेवा की संभावना का है और उम्मीदवार को स्वीकृत करने की सलाह इस हाल में नहीं दी जानी चाहिए जबकि उसमें कोई ऐसा दोष हो जो केवल बहुत कम परिस्थितियों में निरन्तर कारगर सेवा में बाधक पाया गया हो।

महिला उम्मीदवार की परीक्षा के लिए किसी लेडी डाक्टर को मेडिकल बोर्ड के सदस्य के रूप में सहयोगित किया जाएगा।

मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट को गोपनीय रखना चाहिए। ऐसे मामलों में जबकि किसी उम्मीदवार को सरकारी सेवा में नियुक्ति के लिए अयोग्य करार कर दिया जाता है तो मोटे तौर पर उसके अस्वीकार किए जाने के आधार उम्मीदवार को बताए जा सकते हैं किन्तु मेडिकल बोर्ड ने जो खराबी बताई हो उनका विस्तृत और नहीं दिया जा सकता।

ऐसे मामलों में जहां मेडिकल बोर्ड आ यह विचार हो कि सरकारी सेवा के लिए उम्मीदवार को अयोग्य बताने वाली छोटी-मोटी खराबी चिकित्सा (मेडिकल या सर्जिकल) द्वारा ठीक हो सकती है वह मेडिकल बोर्ड द्वारा इस आशय का कथन रिकार्ड किया जाना चाहिए। नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा उस बारे में उम्मीदवार को बोर्ड की राय सूचित किए जाने में कोई आपत्ति नहीं है और जब यह खराबी दूर हो जाए तो दूसरे मेडिकल बोर्ड के सामने उस व्यक्ति को उपस्थित होने के लिए कहने से सम्बन्धित प्राधिकारी स्वतंत्र है। यदि कोई उम्मीदवार अस्थायी तौर पर अयोग्य करार दे दिया जाए तो दुबारा परीक्षा की अवधि साधारणतया कम से कम छः महीने से कम नहीं होनी चाहिए। निश्चित अवधि के बाद जो दुबारा परीक्षा की जाए तो ऐसे उम्मीदवारों को और आगे अवधि के लिए अस्थायी तौर पर अयोग्य घोषित न करके नियुक्ति के लिए उसकी योग्यता के सम्बन्ध में अथवा वे इस नियुक्ति के लिए अयोग्य है, ऐसा अन्तिम रूप से निर्णय दिया जाना चाहिए।

(क) उम्मीदवार का कथन और घोषणा :—

अपनी मेडिकल परीक्षा से पूर्व उम्मीदवार को निम्नलिखित अपेक्षित स्टेटमेंट देना चाहिए और उसके साथ लगी हुई घोषणा पर हस्ताक्षर करने

चाहिए। नीचे दिए गए नोट में उल्लिखित चेतावनी की ओर उस उम्मीदवार को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए :

1. अपना पूरा नाम लिखें

(साफ अक्षरों में)

2. अपनी आयु और जन्म स्थान बताएं।

3. (क) क्या आप अनुसूचित जनजाति या ऐसी जाति जैसे गोरखा, नेपाली, असमिया, मेघालय, आदिवासी, लद्दाखी, सिक्किमी, भूटानी, गढ़वाली, कुमाऊँनी, नागा और अरुणाचल प्रदेशीय जातियों से संबंधित हैं। जिनका औसत कद स्पष्टतः दूसरों से कम होता है। उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में लिखें और यदि उत्तर 'हाँ' है तो उस, जनजाति/जाति का नाम लिखें।

(ख) क्या आपको कभी चेचक रुक-रुक कर होने वाली या कोई दूसरी बुखार, थिर्यक (गलैण्डस) का बनना या नसों में पीप पड़ना, थूक में खून आना, दमा, दिल की बीमारी, फेफड़े की बीमारी, मूर्छा के दौरे, रमेटिज्म, एर्पेंडिसाइट्स हुआ है।

अथवा

दूसरी कोई ऐसी बीमारी या दुर्घटना जिनके कारण शर्क्या पर लेटे रहना पड़ता है। और जिसका मेडिकल/सर्जिकल इलाज किया गया हो, हुई है ?

4. क्या आपको अधिक काम या किसी दूसरे कारण से किसी की अधीरता (नर्वसनेस) हुई है ?

5. अपने परिवार के सम्बन्ध में निम्नलिखित ब्यौरे दें :-

1	2	3	4
यदि पिता जीवित हों तो उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	मृत्यु के समय पिता की आयु और मृत्यु का कारण	आपके कितने भाई जीवित हैं, उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	आपके कितने भाइयों की मृत्यु हो चुकी है, मृत्यु के समय उनकी आयु और मृत्यु का कारण

1	2	3	4
यदि माता जीवित हों तो उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	मृत्यु के समय माता की आयु और मृत्यु का कारण	आपकी कितनी बहनें जीवित हैं, उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	आपकी कितनी बहनों की मृत्यु हो चुकी है, मृत्यु के समय उनकी आयु और मृत्यु का कारण

6. क्या पहले किसी मेडिकल बोर्ड ने आपकी परीक्षा की है ?

7. यदि ऊपर के प्रश्न का उत्तर 'हाँ' हो तो बताइए किस सेवा/किन सेवाओं के लिए आपकी बोर्ड परीक्षा की गई थी ?

8. परीक्षा लेने वाला प्राधिकारी कौन था ?

9. कब और कहाँ मेडिकल बोर्ड हुआ ?

10. मेडिकल बोर्ड की परीक्षा का परिणाम यदि आपको बताया गया हो अथवा आपको मालूम हो ?

11. उपर्युक्त सभी उत्तर मेरी सर्वोत्तम जानकारी तथा विश्वास के अनुसार सही हैं तथा मैं अपने द्वारा दी गई किसी सूचना में की गई विवृति या किसी संगत जानकारी को छुपाने के लिए कानून के अंतर्गत किसी भी कार्रवाई का भागी हूंगा। द्वूटी सूचनाएं देना व किसी महत्वपूर्ण सूचना को छिपाना अयोग्यता मानी जाएगी और मुझे सरकार के अन्तर्गत नियुक्ति के लिए अयोग्य माना जाएगा। मेरे सेवाकाल के दौरान किसी भी समय ऐसी कोई जानकारी मिलती है कि मैंने कोई गलत सूचना दी है या किसी महत्वपूर्ण सूचना को छिपाया है तो मेरी सेवाएं रद्द कर दी जाएंगी।

उम्मीदवार के हस्ताक्षर

उपस्थिति में हस्ताक्षर

बोर्ड के अध्यक्ष के हस्ताक्षर

प्रपत्र-I

(उम्मीदवार का नाम) की शारीरिक परीक्षा की मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट।

1. सामान्य विकास अच्छा

बीच का कम पोषण

पतला औसत माप

कद (जूते उतार कर)

(वजन कब था) वजन

कोई हाल ही में आया परिवर्तन

तापमान

2. छाती का धेरा :-

(1) पूरा सांस खींचने पर

(2) पूरा सांस निकालने पर

त्वचा की कोई जाहिर बीमारी।

3. नेत्र--

(1) कोई बीमारी

(2) रत्तेंधी

(3) कलर वीज़न का दोष

(4) दृष्टि नेत्र (फील्ड आफ वीज़न)

(5) तीक्ष्णता (विजूअल एक्विवरी)

(6) फण्डस की जांच

दृष्टि की तीक्ष्णता चश्मे बिना	चश्मे से चश्मे की पावर
गोल एक्सेस	सिल
दूर की नज़र	
दा. ने.	
बा. ने.	
पास की नज़र	
दा. ने.	
बा. ने.	
हाईपरमैट्रोपिया (व्यक्त)	
दा. ने.	
बा. ने.	
4. कान निरीक्षण श्रवण—दायां कान	बायां कान
5. ग्रंथियाँ-----थायराइड	
6. दांतों की हालत-----	
7. श्वसन तंत्र (रेस्पिरेटरी सिस्टम) क्या शारीरिक परीक्षण करने पर सांस के अंगों में किसी असमानता का पता लगा है तो असमानता का पूरा व्यौरा दें।	
8. परिसंचरण तंत्र सरकुलेटरी सिस्टम :—	
(क) हृदय : कोई आंगिक गति (आर्गेनिक लीजन) गति (रेट) खड़े होने पर-----	
25 बार कुदाए जाने के बाद-----	
कुदाए जाने के 2 मिनट बाद-----	
(ख) ब्लड प्रेशर-----सिस्टीलिक डायस्टीलिक	
9. उदर (पेट) : (धेर)-----सदस्य-----	
(टैंडरनेस) हर्निया-----	
(क) दबाकर मालूम पड़ना/जिगर-----	
तिल्ली-----गुर्दे-----	
दयूमर-----	
(ख) रक्तांश-----भगांदर-----	
10. तांत्रिक तंत्र (नर्वस सिस्टम)---तांत्रिक या मानसिक अशक्तता का संकेत।	
11. चाल तंत्र (लोकोमीटर सिस्टम) की असमानता।	
12. जनन तंत्र (जनिये यूरिनरी सिस्टम)-----	
हाइड्रोसील, वेरिकासील आदि का कोई संकेत, मूत्र परीक्षा।	
(क) कैसा दिखाई पड़ता है-----	
(ख) अपेक्षित गुरुत्व (स्पैसिफिक ग्रेविटी)-----	
(ग) एल्बूमन-----	
(घ) शक्कर-----	
(ड) कास्ट-----	
(च) कोशिकाएं (सैल्स)-----	

13. क्या उम्मीदवार के स्वास्थ्य में कोई ऐसी बात है जिससे वह भारतीय वन सेवा को दक्षतापूर्वक निभाने के लिए अयोग्य हो सकता है।

टिप्पणी :—यदि उम्मीदवार कोई महिला है और यदि वह 12 सप्ताह या उससे अधिक समय से गर्भवती है तो उसे विनियम 10 के अनुसार अस्थायी रूप से अयोग्य कर दिया जाएगा।

14. क्या वह भारतीय वन सेवा में दक्षतापूर्वक और निरन्तर इयूटी निभाने के लिए सभी तरह से योग्य पाया गया है;

टिप्पणी 1 :—बोर्ड को अपने जांच परिणाम निम्नलिखित तीन वर्गों में से किसी एक वर्ग में रिकार्ड करना चाहिए :—

(i) स्वस्थ

(ii) -----के कारण अस्वस्थ

(iii) -----के कारण अस्थाई रूप से अस्वस्थ

टिप्पणी 2 :—उम्मीदवार की छाती का एक्स-रे परीक्षण नहीं किया गया है, इस कारण उपर्युक्त निष्कर्ष अन्तिम नहीं है और छाती के एक्स-रे परीक्षण की रिपोर्ट के अध्यधीन है।

स्थान :	अध्यक्ष
हस्ताक्षर	सदस्य
	सदस्य

दिनांक :	मेडिकल बोर्ड की मुहर
प्रपत्र-II	

उम्मीदवार का कथन/घोषणा

1. अपना नाम लिखें :

(बड़े अक्षरों में)

2. रोल नम्बर :

उम्मीदवार के हस्ताक्षर

मेरी उपस्थिति में हस्ताक्षर किए

बोर्ड के अध्यक्ष के हस्ताक्षर

मेडिकल बोर्ड द्वारा भरे जाने के लिए

टिप्पणी :—बोर्ड को उम्मीदवार की छाती के एक्स-रे परीक्षण की जांच रिपोर्ट के संबंध में अपने निष्कर्ष निम्नलिखित तीन वर्गों में से किसी एक वर्ग के अन्तर्गत रिकार्ड करने चाहिए :—

उम्मीदवार का नाम-----

(i) स्वस्थ

(ii) -----के कारण अस्वस्थ

(iii) -----के कारण अस्थाई रूप से अस्वस्थ

स्थान :	अध्यक्ष
हस्ताक्षर	सदस्य
	सदस्य

दिनांक :	मेडिकल बोर्ड की मुहर
----------	----------------------

LOK SABHA SECRETARIAT

New Delhi, the 14th June 2012

No. 10/1/2/OBC/2012—Consequent upon adoption of a Motion moved in the Lok Sabha on 21 December, 2011 by the Minister of Parliamentary Affairs and Water Resources, a Committee on the Welfare of Other Backward Classes (OBCs) was constituted. The members of the Committee shall hold office for a period of one year from the date of the first meeting of the Committee which shall be reconstituted thereafter for one year at a time.

The following Members of the Lok Sabha and Rajya Sabha have been elected to serve as Members of the Committee :—

MEMBERS

Lok Sabha

1. Shri Hansraj Gangaram Aahir
2. Shri Sameer Bhujbal
3. Shri Dara Singh Chauhan
4. Dr. Charles Dias
5. Shri T. K. S. Elangovan
6. Shri Mukesh Kumar Bheravdanji Gadhwani
7. Shri Anant Gangaram Geete
8. Shri Bijoy Krishna Handique
9. Dr. Kruparani Killi
10. Shri P. Kumar
11. Shri P. C. Mohan
12. Shri Ponnambalam Prabhakar
13. Shri Amarnath Pradhan
14. Shri Ramkishun
15. Advocate A. Sampath
16. Shri Ganesh Singh
17. Shri Manicka Tagore
18. Shri Arun Yadav
19. Shri Hukmadeo Narayan Yadav
20. Prof. (Dr.) Ranjan Prasad Yadav

Rajya Sabha

21. Shrimati Jharna Das Baidya
22. Shri Birendra Prasad Baishya
23. Shri Devender Goud T.
24. Shri Rama Chandra Khuntia

25. Dr. Ram Prakash

26. Shri V. Hanumantha Rao

27. Shri Arvind Kumar Singh

28. Shri Ramchandra Prasad Singh

29. Shri Natuji Halaji Thakor

30. Vacant

The Speaker is pleased to appoint Shri Bijoy Krishna Handique, MP as the Chairman of the Committee.

Sd/- ILLEGIBLE
Additional Director

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi, the 20th June 2012

No. U-13019/1/2010-CPD—Following amendments/ additions/deletions are made in this Ministry's Notification No. U-13019/1/2010-CPD dated 04.06.2010 regarding constitution of Home Minister's Advisory Committee for the Union Territory of Daman & Diu :—

- (i) Existing sub-paras (c) and (d) of para 2 are substituted as under :—
 - (c) President-cum-Chief Councillor of District Panchayat, Daman.
 - (d) President, Municipal Council, Daman.
- (ii) Existing sub para (e) of para 2 is substituted as under :—
 - (e) President, Municipal Council, Diu
- (iii) Following are inserted as sub-paras (f) & (g) of para 2
 - (f) Mrs. Lina Machado, Ex-Councillor, Opp. Football Ground, Moti-Daman.
 - (g) Shri Shamji Premji Solanki, Vice-President, Diu Municipal Council, Diu.
- (iv) Para 3 is deleted.
- (v) Para 4, 5 are to be read as para 3, 4 respectively.
- (vi) Existing para 6 is substituted as under :—
 - "5. The term of the Members referred to in sub-paras (f) and (g) of para 2 shall be two years.

M. L. VARMA
Dy. Secy.

MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS

New Delhi, the 12th June 2012

No. A-36011/1/2012-Ad.II—In exercise of the powers conferred by Clause (ii) of Sub-Section (1) of Section 209A

of the companies Act, 1956, the Central Government hereby authorize Shri V. G. Sathiyamoorthy, Assistant Director in the Office of Regional Director (SER), Ministry of Corporate Affairs, Hyderabad for the purpose of the said section.

R. K. PANDEY
Under Secy.

MINISTRY OF TEXTILES

New Delhi, the 25th June 2012

No. 9/4/2010-TUFS—The Government of India has decided to constitute the Cotton Yarn Advisory Board, comprising the following members :—

1. Textile Commissioner Chairman
2. Joint Secretary (Cotton) or his/her representative Member
3. Director (Cotton) Member
4. Development Commissioner (Handloom), Member New Delhi or his/her representative
5. Director General of Foreign Trade (DGFT) Member or his nominee
6. CMD, Cotton Corporation of India (CCI) Member
7. Chairman, Textile Export Promotion Council Member (TEXPROCIL)
8. Chairman, Apparel Export Promotion Council Member (AEPC)
9. Chairman, Confederation of Indian Textile Industry (CITI) Member
10. Chairman, South Indian Mills Association Member (SIMA), Coimbatore
11. President, Tirupur Exports Association (TEA), Member Tirupur
12. Chairman, North India Textile Manufacturer's Association (NITMA) Member
13. President, Clothing Manufacturer's Association Member of India (CMAI)
14. Chairman, Powerloom Development and Export Promotion Council (PDEXCIL), Mumbai Member
15. Chairman, All India Powerloom Federation Member
16. Managing Director, Nation Handloom Development Corporation, Lucknow U.P. Member
17. Director, South India Textile Research Association (SITRA) Member
18. Director, Ahmedabad Textile Industry Research Association (ATIRA) Member

19. CMD, NTC Ltd. Member
20. Shri B.K. Patodia, CMD, GTN Textiles Ltd. Member
21. Shri V.S. Velayutham, MD, Sri Gomathi Mills Pvt. Ltd. Member
22. Shri R.K. Agrawal, Joint Managing Director Member Suryavanshi Spinning Mills Ltd., Secunderabad
23. Secretary General, SIMA Member
24. Shri Jaikumar Krishnaswamy, Chief Executive, Member Sri Saravana Spinning Mills Pvt. Ltd., Dindigul
25. Shri T. Rajkumar, MD, Sri Mahashakti Mills Ltd., Coimbatore Member
26. President, Garment Exporters Association Member of Rajasthan, Jaipur
27. President, Apparel Exporters and Manufacturers Association, New Delhi Member
28. Shri Vijaykumar Aggrawal, Creative Garments Member Mumbai
29. Shri Prashant Agarwal, Bombay Rayon, Member Mumbai
30. Shri Harish Ahuja, Shahi Exports, Member New Delhi
31. Shri Rajan Hinduja, Gokuldas Exports, Member Bangalore
32. Shri S.P. Oswal, Chariman, Vardhman Spinning and General Mills Ltd., Ludhiana Member
33. Shri Mukund Choudhary, MD, Spentex Industries Ltd., New Delhi Member
34. Shri K.K. Agarwal, Chairman, Alps Industries Ltd., Ghaziabad Member
35. President, Powerloom Weavers Co-op. Association Ltd., Ichalkaranji Member
36. CMD, Palladam Hi-Tech Weaving Park, Member Palladam
37. Shri P Nataraj, MD, KPR Mills Ltd., Member Coimbatore
38. President, Federation of Hosiery Manufacturers Association of India (FOHMA) Member
39. President, TASMA, Dindigul Member
40. Shri Govind Shrikhande, MD, Shoppers Stop, Mumbai Member
41. Shri Kailash Bhatia, Director, Future Group, Member Pantaloons, Mumbai

42. Shri N. Chandran, CMD, Eastman Exports, Member Tirupur

43. Shri AL Ramchandra, MD, Vijayeswari Textiles Member Ltd., Coimbatore

44. Shri Navin Seksaria, JG Hosiery Pvt. Ltd., Member Tirupur

45. Jt. Textile Commissioner (Economics) Member Secretary

2. The Board will advise the Government on matters pertaining to production, consumption and availability of different types of cotton yarns and also provide a forum for liaison between stakeholders i.e. spinners, weavers, TRA's Government etc.

3. The Board will monitor the domestic and international prices of cotton yarn and suggest measures for increasing the availability of cotton yarn at reasonable prices for domestic consumption.

4. The Board will monitor the import and export of cotton yarn and prepare the Cotton Yarn Balance Sheet.

5. The Board will ordinarily meet once in a quarter or as often as necessary.

6. The members of the Boards will serve on the Board upto 31st March, 2014 or until further orders whichever is earlier.

7. T.A./D.A., if any, in respect of Government officials and the Textile Research Association officials shall be borne by their respective Departments and organizations respectively. In respect of other members T.A/D.A. shall be borne by the organizations, which the members represent.

8. Secretariat Assistance will be provided by the Office of the Textile Commissioner, Mumbai.

Ordered that the copy of this Notification be communicated to all concerned.

Ordered also that it be published in the Gazette of India.

V. SRINIVAS
Jt. Secretary

MINISTRY OF MINES

New Delhi, the 3rd July 2012

RESOLUTION

No. 35/1/2011-M.III—Whereas with a view to strengthening the links between Indian Bureau of Mines and the various organisations interested in or connected with the function of the Indian Bureau of Mines to enable the Government to have objective appraisal of the effectiveness of the working of the Indian Bureau of Mines and of the ways and means by which its utility and effectiveness can be continually enhanced, the Indian Bureau of Mines Review Committee, in its Report submitted in December, 1979 had recommended

the formation of an Advisory Board for Indian Bureau of Mines. Accordingly the Central Government vide its Resolution No. 23012/99/80-M.VI dated the 12th January, 1981 constituted an Advisory Board for Indian Bureau of Mines.

And whereas vide Resolution No. F. 12014/10/85-M.VI dated the 28th January, 1986, No. F. 12014/2/88-M.VI dated the 8th April, 1988, No. F. 12014/6/90-M.VI dated 23rd May, 1990, No. 35/1/95-M.III dated the 20th July, 1995, Office Memorandum No. 35/1/96-M.III dated the 23rd May, 1997 Resolution No. 35/2/99-M.III dated the 3rd November, 1999, No. 35/1/2002-M.III dated the 31st May, 2002 and No. 35/2/2007-M.III dated 14th November, 2008 the said Advisory Board has been reconstituted from time to time.

Now, therefore, in supersession of all earlier resolutions, the Advisory Board of Indian Bureau of Mines is reconstituted with the following composition:—

COMPOSITION

CHAIRMAN

Secretary, Ministry of Mines.

MEMBERS

1. Special Secretary/Additional Secretary, Ministry of Mines.
2. Additional/Joint Secretary & Financial Advisor, Ministry of Mines.
3. Joint Secretary (In-charge IBM), Ministry of Mines.
4. Director/Deputy Secretary (In-Charge of IBM), Ministry of Mines.
5. Controller General, Indian Bureau of Mines, Nagpur.
6. Director General, Geological Survey of India, Kolkata.
7. Director General, Directorate of Mines Safety, Dhanbad.
8. Advisor (I&M), Planning Commission, New Delhi.
9. A Representative, of Ministry of Steel, New Delhi.
10. A Representative of Department of Science and Technology, New Delhi.
11. A Representative of Ministry of Environment and Forest, New Delhi.
12. President/Secretary, Federation of Indian Mineral Industries, New Delhi.
13. A Representative of Government of Odisha.
14. A Representative of Government of Chhattisgarh.
15. A Representative of Government of Gujarat.
16. A Representative of Government of Andhra Pradesh
17. A Representative of Government of Rajasthan.

18. A Representative of Government of Karnataka.
19. A Representative of Government of Goa.
20. Chairman-cum-Managing Director, Hindustan Copper Limited, Kolkata.
21. Chairman-cum-Managing Director, National Aluminium Company Ltd., Bhubaneshwar.
22. Chairman-cum-Managing Director, MOIL Ltd., Nagpur.
23. Director, National Metallurgical Laboratory, Jamshedpur.
24. Director, Indian School of Mines, Dhanbad.
25. Professor, Department of Mining, VNIT, Nagpur.
26. Any other member as Special Invitee.

MEMBER SECRETARY

Technical Secretary, IBM, Nagpur

The functions of its Board will be advisory in character. It will advise both the Indian Bureau of Mines and the Government. The Board will be at liberty to correspond directly with Government. The Indian Bureau of Mines will provide the Secretariat of the Board. The Board should devise its own working rules and procedures but the Government would expect it to meet at least twice a year. The functions of the Board will be as follows:—

FUNCTIONS

1. To review and advise on the Annual and Five Year Plan and proposals of Indian Bureau of Mines.
2. To review and advise on the programme of work during the coming year.
3. To review and advise on the implementation of restructuring programme of IBM.
4. To appraise from time to time the work, in different areas, done by the Indian Bureau of Mines.
5. To advise on the matter of SDF and its implementation.
6. To advise on implementation of Mining Tenement System (MTS).
7. To advise on implementation of Rule 45 of Mineral Conservation and Development Rules 1988.
8. To advise on systems of Management Information and Management Accounting.
9. To advise on ways and means of making Indian Bureau of Mines functioning more effective.

TENURE

The Advisory Board will generally function for two years from the date of its constitution unless the term is extended by the Government.

ORDER

Ordered that this Resolution be communicated to all the State Governments and Central Ministries of the Government of India, Prime Minister's Office, Cabinet Secretariat, Ministry

of Parliamentary Affairs, Planning Commission, Comptroller and Auditor General of India, Indian Bureau of Mines, Geological Survey of India and Department of Atomic Energy.

ROKHUM LALREMRUATA
Director

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT**(DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION)**

New Delhi, the 6th June 2012

RESOLUTION

Subject:—Reconstitution of the National Monitoring Committee for Minorities' Education (NMCME) on expiry of tenure.

No. 6-4/2010-MC(Pt.)—In continuation of this Ministry's Resolution of even number dated 23rd December, 2011 on the subject mentioned above, the Government of India has decided to nominate Shri Niaz Ahmed Farooqui, Secretary, Jamiat Ulema-I-Hind, No. 1, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110002 as Member of the National Monitoring Committee for Minorities' Education (NMCME) listed under the head academics, activists and administrators connected with minority issues in place of Shri Maulana Arshad Madani who has declined to be on the Committee.

ORDER

Ordered that a copy of the resolution be communicated to the Chairman and other members of the Committee.

Ordered also that the resolution be published in the Gazette of India for general information.

AMIT KHARE
Jt. Secy.

MINISTRY OF HOUSING & URBAN POVERTY ALLEVIATION

New Delhi, the 21st June 2012

No. O-17034/122/2009-H—In pursuance of the approval of the Cabinet vide its minutes of the meeting dated 23rd March, 2012, the Central Government hereby makes the following scheme for the purpose of providing guarantees in respect of low income housing loans, namely :—

1. Short title and commencement
- (1) The Scheme shall be known as the Credit Risk Guarantee Fund Scheme for Low Income Housing, 2012.
- (2) It shall come into force on the date of its publication in the Official Gazette.
- (3) It shall cover eligible housing loan extended by the lending institutions to eligible borrowers effective from the date of publication of the Scheme in the Official Gazette.

2. Definitions

For the purposes of this Scheme :—

- (1) “Amount in Default” means the principal and interest amount outstanding in the account(s) of the borrower in respect of housing loan, as on the date of the account becoming Non Performing Assets (NPA), or the date of lodgement of claim application whichever is lower or such of the date as may be specified by the Credit Risk Guarantee Fund Scheme (CRGFS) for preferring any claim against the guarantee cover subject to a maximum of amount Guaranteed.
- (2) “Base Rate” means the rate so declared by the lending institution for the relevant time period/duration for which the housing loan has been extended.
- (3) “Bank Rate” means the rate at which the Reserve Bank of India (RBI) lends money to other banks or financial institutions.
- (4) “Carpet area” means the net usable floor area of an immoveable property, excluding the area covered by the walls.
- (5) “Collateral security” means the security provided in addition to the primary security, in connection with the housing loan extended by a lending institution to a borrower.
- (6) “Eligible borrower” means new or existing individual borrowers in EWS/LIG categories of the population who are seeking individual housing loans not exceeding a sum of Rs. 5 lakh or such amount as may be decided by the Trust from time to time and a housing unit of size upto 430 Sqft (40 Sqm) carpet area and to which housing loan has been provided by the lending institution without any collateral security and/or third party guarantees. Eligible borrowers, as defined above, forming a group or housing society of at least 20 members, shall also be eligible under the scheme”.
- (7) “Economically Weaker Section (EWS)” means households with monthly household income upto Rs. 5,000/- per month or as revised by the Ministry of Housing & Urban Poverty Alleviation, Government of India, from time to time.
- (8) “Eligible Activity” means home improvement, construction, acquisition, and purchase of new or second hand dwelling units involving a housing loan amount not exceeding Rs. 5 lakh per person.
- (9) “Guarantee Cover” means maximum cover available per eligible borrower of the amount in default in respect of the housing loan extended by the lending institution.
- (10) “Housing Loan” means any financial assistance by way of housing loan extended by the lending institution to the eligible borrower for home improvement, construction, and extension of an affordable dwelling unit. For the purpose of calculation of guarantee fee, the “housing loan extended” shall mean the amount of financial assistance committed by the lending institution to the borrower, whether disbursed or not.
- (11) “Lending institution(s)” means a commercial bank for the time being included in the second Schedule to the Reserve Bank of India Act, 1934 Regional Rural Banks, Urban Co-operative Banks, Non Banking Financial Companies-Micro Finance Institutions (NBFC-MFIs) and Apex Co-operative Housing Finance Societies registered under the State Co-operative Societies Act, eligible under RBI guidelines, as may be specified by the Trust from time to time, Housing Finance Institutions registered with National Housing Bank, or any other institution (s) as may be directed by the Govt. of India from time to time. The Trust may, on review of performance, remove any of the lending institutions from the list of eligible institutions.
- (12) “Lock-in Period” means the period for which a lender agrees to hold steady the agreed upon terms of finance on the loan irrespective of the market conditions. In this case, the lender cannot make any claim on the Trust for settlement within the period of 24 months after the last disbursement was made to the borrower or within the period of 24 months from the date of the guarantee cover coming into force in respect of the particular housing loan or 2 months after the completion of the house, whichever is later.
- (13) “Lower Income Group (LIG)” means households with monthly income between Rs. 5001/- to Rs. 10,000/- per month or as fixed by the Ministry of Housing & Urban Poverty Alleviation, Government of India, from time to time.
- (14) “Low Income Housing” means a housing unit, for economically weaker and low income individuals, of size upto 430 Sqft (40 Sqm) carpet area.
- (15) “Material date” means the date on which the guarantee fee on the amount covered in respect of eligible borrower becomes payable by the lending institution to the Trust.
- (16) “Non Performing Assets” means a loan classified as a non-performing based on the instructions and guidelines issued by the Reserve Bank of India/ National Housing Bank from time to time.
- (17) “Primary security” in respect of a housing loan shall mean the assets created out of the housing loan so extended and/or existing unencumbered

assets of the borrower which are directly associated with the property for which the housing loan has been extended.

(18) “Scheme” means the Credit Risk Guarantee Fund Scheme for Low Income Housing (CRGFS).

(19) “Settlor” means a person or an organization in relation to a settlement if the settlement was made by that person or organization. In this case the Ministry of Housing and Urban Poverty Alleviation, Government of India is the settler of the Trust.

(20) “Tenure of guarantee cover” means the period of guarantee cover from Guarantee start date which shall run through the agreed tenure of the housing loan and for a maximum period of 25 years or loan termination date, whichever is earlier or such period as may be specified in the agreement between the lender and the Trust.

(21) “Trust” means the Credit Risk Guarantee Fund Trust created under sub-section 18 to administer the Scheme.

CHAPTER I

SCOPE AND EXTENT OF THE SCHEME

Guarantee by the Trust

(1) Subject to the other provisions of the Scheme, the Trust undertakes, in relation to housing loan extended to an eligible borrower from time to time by an eligible lending institution which has entered into the necessary agreement for this purpose with the Trust, to provide a guarantee on account of the said housing loans.

(2) The Trust reserves the discretion to accept or reject any proposal referred by the lending institution which otherwise satisfies the norms of the Scheme.

3. Housing Loans eligible under the Scheme

(1) The Trust shall cover housing loans extended by eligible lending Institution(s) to an eligible borrower in the low income housing sector for housing loan not exceeding Rs. 5 lakh by way of housing loans on or after entering into an agreement with the Trust, without any collateral security and/or third party guarantees or such amount as may be decided by the Trust time to time.

Provided that the lending institution applies for guarantee cover in respect of loan proposals sanctioned in the quarter April-June, July-September, October-December and January-March prior to expiry of the following quarter viz. July-September, Octoter-December, January-March and April-June respectively.

Provided further that, as on the material date

- (a) The dues to the lending institution have not become bad or doubtful of recovery, and/or
- (b) The property/asset of the borrower for which the housing loan was granted has not ceased; and/or
- (c) The housing loan has not wholly or partly been utilised for adjustment of any debts deemed bad or doubtful or recovery, without obtaining a prior consent in this regard from the Trust.
- (d) The borrower has paid the necessary fees and charges for the said property.

(2) Housing loans can be extended by more than one lending institution jointly and/or separately to eligible borrower up to a maximum loan up to Rs. 5 lakh per borrower and per primary security subject to ceiling amount of individual lending institution or such amount as may be specified by the Trust.

(3) The eligible borrower shall be required to submit an undertaking to the lending institution to the effect that she/he has not availed any other housing loan covered under this scheme nor any additional risk cover has been granted to the housing loan availed by her/him by Government or by any general insurer or any institution or any other person or association of persons carrying on the business of insurance, guarantee or indemnity.

4. Housing loans not eligible under the Scheme

The following housing loans shall not be eligible for being guaranteed under the Scheme :—

- (1) Any housing loan in respect of which risks are additionally covered by Government or by any general insurer or any institution or any other person or association of persons carrying on the business of insurance, guarantee or indemnity, to the extent they are so covered.
- (2) Any housing loan granted to any borrower, who has availed himself of any other housing loan covered under this scheme or under the schemes mentioned in clause (1) above and where the lending institution has invoked the guarantee provided by the Trust or under the schemes mentioned in clause (1) but has not repaid any portion of the amount due the Trust or under the schemes mentioned in clause (1) as the case may be, by reason of any default on the part of the borrower in respect of that housing loan.
- (3) Any housing loan which has been sanctioned by the lending institution against collateral security and/or third party guarantee.
- (4) Any housing loan which has been sanctioned by the lending institution with interest rate more than

the prevailing interest rate applicable for that eligible loan category or “2% over the base rate of the lending institutions in cases where base rate is applicable”, whichever is easier. However, the Trust may revise such ceiling from time to time keeping in view the prevailing interest rate scenario, base rates of lending institutions and RBI’s Credit Policies, at that time.

5. Modifications and exemptions

- (1) The Ministry of Housing & Urban Poverty Alleviation reserves to itself the right to modify, cancel or replace the scheme so, however, that the rights or obligations arising out of, or accruing under a guarantee issued under the Scheme up to the date on which such modification, cancellation or replacement comes into effect, shall not be affected.
- (2) Notwithstanding anything herein contained, the Trust shall have a right to alter the terms and conditions of the Scheme in regard to an account in respect of which guarantee has not been invoked as on the date of such alteration.
- (3) In the event of the Scheme being cancelled, no claim shall lie against the Trust in respect of facilities covered by the Scheme, unless the provisions contained in Clause (1) and (2) of Section 13 of the Scheme are complied with by the lending institution.

CHAPTER II

LENDING INSTITUTIONS

6. Agreement to be executed by the lending institution

A lending institution shall not be entitled to a guarantee in respect of any eligible housing loan granted by it unless it has entered into an agreement with the Trust in such form as may be required by the Trust for covering by way of guarantee, under the Scheme all the eligible housing loans granted by the lending institution, for which provision has been made in the Scheme.

7. Conditions imposed under the Scheme to be binding on the lending institution

- (1) Any guarantee given by the Trust shall be governed by the provisions of the Scheme as if the same had been written in the documents evidencing such guarantee.
- (2) The lending institution shall as far as possible ensure that the conditions of any contract relating to an account guaranteed under the Scheme are not in conflict with the provisions of the Scheme but notwithstanding any provision in any other document or contract, the lending institution shall

in relation to the Trust be bound by the conditions imposed under the Scheme.

8. Responsibilities of lending institution under the scheme
 - (1) The lending institution shall evaluate housing loan applications by using prudent banking judgment and shall use their business discretion/due diligence in selecting housing loan proposals and conduct the account(s) of the borrowers with normal banking prudence.
 - (2) The lending institution shall closely monitor the borrower account.
 - (3) The lending institution shall safeguard the primary securities taken from the borrower in respect of the housing loan in good and enforceable condition.
 - (4) The lending institution shall ensure that the guarantee claim in respect of the housing loan and borrower is lodged with the Trust in the form and in the manner and within such time as may be specified by the Trust in this behalf and that there shall not be any delay on its part to notify the default in the borrowers account which shall result in the Trust facing higher guarantee claims.
 - (5) The payment of guarantee claim by the Trust to the lending institution does not in any way take away the responsibility of the lending institution to recover the entire outstanding loan amount from the borrower. The lending institution shall exercise all the necessary precautions and maintain its recourse to the borrower for entire amount of housing loan owed by it and initiate such necessary actions for recovery of the outstanding amount, including such action as may be advised by the Trust.
 - (6) The lending institution shall comply with such directions as may be issued by the Trust, from time to time, for facilitating recoveries in the guaranteed account, or safeguarding its interest as a guarantor, as the Trust may deem fit and the lending institution shall be bound to comply with such directions.
 - (7) The lending institution shall, in respect of any guaranteed account, exercise the same diligence in recovering the dues, and safeguarding the interest of the Trust in all the ways open to it as it might have exercised in the normal course if no guarantee had been furnished by the Trust. The lending institution shall, in particular, refrain from any act of omission or commission, either before or subsequent to invocation of guarantee, which may adversely affect the interest of the Trust as the guarantor. In particular, the lending institution should intimate the Trust while entering into any compromise or arrangement, which may have effect of discharge or waiver of personal guarantee(s) or security.

9. Returns and Inspections

- (1) The lending institution shall submit such statements and furnish such information as the Trust may require in connection with any housing loan under this Scheme.
- (2) The lending institution shall also furnish to the Trust all such documents, receipts, certificates and other writings as the latter may require and shall be deemed to have affirmed that the contents of such documents, receipts, certificates and other writings are true, provided that no claim shall be rejected and no liability shall attach to the lending institution or any officer thereof for anything done in good faith.

CHAPTER III

GUARANTEE, FEES AND CLAIMS

10. Extent of the guarantee

The Trust shall provide guarantee as under :

Category	Maximum extent of guarantee where Housing Loan is	
Housing Loans by Individual Borrowers	<p>Upto Rs. 2 lakh or such amount as decided by the Trust from time to time.</p> <p>90% of the amount in default subject to the ceiling of 90% of the sanctioned housing loan amount</p>	<p>Above Rs. 2 lakh and upto Rs. 5 lakh or such amount as decided by the Trust from time to time.</p> <p>85% of the amount in default subject to ceiling of 85% of the sanctioned housing loan amount</p>

- (1) The tenure of the guarantee cover shall be as defined under clause (20) of Section 2 of the Scheme.

11. Guarantee Fee

- (1) One-time guarantee fee at specified rate of 1.00% or as specified by the Trust after taking approval from the Ministry of Housing and Urban Poverty Alleviation from time to time of the total loan amount shall be paid upfront to the Trust by the institution availing of the guarantee within 30 days from the date of first disbursement of housing loan or 30 days from the date of Demand Advice of guarantee fee whichever is later or such date as specified by the Trust.
- (2) The guarantee fee shall not be charged from the beneficiary as an upfront processing fee. However, banks may alter the interest rate to cover upto 50% of the guarantee fee. The premium charged should be clearly disclosed by the lending institutions.

There shall be no annual servicing fee under this Scheme.

- (3) The guarantee fee once paid by the lending institution to the Trust is non-refundable, except under certain circumstances like:—
 - (a) Excess remittance,
 - (b) Remittance made more than once against the same loan application,
 - (c) Guarantee fee not due,
 - (d) Guarantee fee paid in advance but application not approved for guarantee cover under the scheme, etc.

12. Invocation of guarantee

- (1) The lending institution shall invoke the guarantee in respect of housing loan—

In case the loan is classified as NPA before the lock-in period expires, within one year of the expiry of the lock-in period; or

In case the loan is classified as NPA after the lock-in period expires, within one year of the loan being classified as NPA.

Subject to the following conditions being satisfied :—

- (a) The guarantee in respect of that housing loan was in force at the time of account turning NPA;
- (b) The lock-in period has elapsed;
- (c) The amount due and payable to the lending institution in respect of the housing loan has not been paid and the dues have been classified by the lending institution as Non Performing Assets. Provided that the lending institution shall not make or be entitled to make any claim on the Trust in respect of the said housing loan if the loss in respect of the said housing loan had occurred owing to actions/decisions taken contrary to or in contravention of the guidelines issued by the Trust.

- (d) The housing loan has been recalled and the recovery proceedings have been initiated under due process of law. Mere issuance of recall notice under SARFAESI Act 2002 cannot be construed as initiation of legal proceedings for purpose of preferment of claim under CGS. Eligible lending institutions are advised to take further action as contained in Section 13 (4) of the above Act wherein a secured creditor can take recourse to any one or more of the recovery measures out of the four measures indicated therein before submitting claims for first installment of guaranteed amount. In case the lending institution is not in a position to

take any of the action indicated in Section 13(4) of the aforesaid Act, they may initiate fresh recovery proceeding under any other applicable law and seek the claim for first installment from the Trust.

- (2) The claim should be preferred by the lending institution in such manner as may be specified by the Trust in this behalf.
- (3) The Trust shall pay 75 per cent of the guaranteed amount on invocation claim by the lending institution, within 60 days of applying for the settlement of claim, subject to the claim being otherwise found in order and complete in all respects. The balance 25 per cent of the guaranteed amount will be paid on conclusion of recovery proceedings by the lending institution. On a claim being paid, the Trust shall be deemed have been discharged from all its liabilities on account of the guarantee in force in respect of the borrower concerned.
- (4) In the event of default the lending institution shall exercise its rights, if any, to take over the assets of the borrowers by taking permission of the Trust and the amount realised, if any, from the sale of such assets or otherwise shall first be credited in full by the lending institutions to the Trust before it claims the remaining 25 per cent of the guaranteed amount. If the Trust so desires, it can retain the asset by paying remaining 25 per cent of the guaranteed amount and may give it to the next eligible borrower or as the case may be.
- (5) The lending institution shall be liable to refund the claim released by the Trust together with penal interest at the rate of 5% above the prevailing Bank Rate, if such a recall is made by the Trust in the event of serious deficiencies having existed in the matter of appraisal/renewal/follow-up/conduct of the housing loan or where lodgment of the claim was more than once or where existed suppression of any material information on part of the lending institutions for the settlement of claims. The lending institution shall pay such penal interest, when demanded by the Trust, from the date of the initial release of the claim by the Trust to the date of refund of the claim.
- (6) The Guarantee Claim received directly from the branches or offices other than respective operating offices of lending institutions will not be entertained.

13. Subrogation of rights and recoveries on account of claims paid

- (1) The lending institution shall furnish to the Trust, the details of its efforts for recovery, realisations and such other information as may be demanded or required from time to time. The lending institution will hold lien on assets created out of the housing loan extended to the borrower, on its own behalf and on behalf of the Trust. The Trust shall not exercise any subrogation rights and that the responsibility of the recovery of dues including takeover of assets, sale of assets, etc., shall rest with the lending institution.
- (2) In the event of a borrower owing several distinct and separate debts to the lending institution and making payments towards any one or more of the same, whether the account towards which the payment is made is covered by the guarantee of the Trust or not, such payments shall, for the purpose of this clause, be deemed to have been appropriated by the lending institution to the debt covered by the guarantee and in respect of which a claim has been preferred and paid, irrespective of the manner of appropriation indicated by such borrower or the manner in which such payments are actually appropriated.
- (3) Every amount recovered and due to be paid to the Trust shall be paid without delay, and if any amount due to the Trust remains unpaid beyond a period of 30 days from the date on which it was first recovered, interest shall be payable to the Trust by the lending institution at the rate which is 4% above Bank Rate for the period for which payment remains outstanding after the expiry of the said period of 30 days.

CHAPTER IV

CORPUS OF THE FUND TRUST

14. Corpus of the Fund Trust

- (1) The Trust will have an initial corpus fund of Rs. One Lakh contributed by the Settlor to be held by the Board of Trustees by way of a Trust for the operation of Credit Risk Guarantee Scheme for Low Income Housing.
- (2) Further contributions will be made to the initial corpus by the Settlor and State Governments who draw on it, in accordance with their slum population, i.e. Rupees one thousand crores in the aggregate by the settlor and rupees two hundred crores by State Governments.
- (3) The Settlor and the State Governments may make further contributions to the corpus fund of the Trust, in the proportion, as decided by the Ministry of Housing & Urban Poverty Alleviation, in consultation with the Ministry of Finance from time to time.
- (4) The additional contribution to the corpus may come from State Governments, guarantee fees, return on investments, etc.

- (5) Government of India shall meet the deficit, in the overall operation of the scheme by providing necessary budgetary grant to the Corpus.
- (6) The assets, together with all further donations and contributions, in any manner or form made to the said Corpus from time to time, and the rents, profits and income thereof and the stocks, funds and properties representing the same shall be held by the Board of Trustees upon Trust for the objects and purposes and subject to powers and provisions hereinafter set out.
- (7) All income arising out of the investments of the corpus fund shall be spent towards fulfilling the objectives of the Scheme, and the savings affected in any year shall be transferred to the corpus fund.

15. Appropriation of amount received from the lending institutions

The amount received from the lending institutions shall be appropriated in the order in which the guarantee fee, penal interest and other charges have fallen due. If the guarantee fee and the penal interest have fallen due on the same date, then the appropriation shall be made first towards guarantee fee and then towards the penal interest and finally towards any other charges payable in respect of the eligible housing loan.

16. Appropriation of amount realised by the lending institution in respect of a housing loan after the guarantee has been invoked.

Where subsequent to the Trust having released a sum to the lending institution towards the amount in default in accordance with the provisions contained in the Section 13 of this scheme, the lending institution recovers money subsequent to the recovery proceedings initiated by it, the same shall be deposited by the lending institution with the Trust, after adjusting towards the cost incurred by it for recovery of the amount. The Trust shall appropriate the same first towards any dues including the pending fees, penal interest, and other charges due to the Trust, if any, in respect of the housing loan towards which the amount has been recovered by the lending institution, and the balance, if any, shall be appropriated in such a manner so that losses on account of deficit in recovery of the housing loan between the Trust and the lending institution are in the proportion of 90% and 10%, respectively, in the case of housing loans upto Rs. 2 lakh and 85% and 15%, respectively, in the case of housing loans above Rs. 2 lakh and upto Rs. 5 lakh.

CHAPTER V

CREDIT RISK GUARANTEE FUND TRUST

17. Name and Registration of the Trust

To administer the Credit Risk Guarantee Fund Scheme, a Credit Risk Guarantee Fund Trust shall be set up

under the Indian Trust Act, 1882, and shall be administered by a Board of Trustees.

18. Objectives

The objects and purposes of the Trust are :

- (1) To guarantee affordable housing loan upto Rs. 5 lakh sanctioned and disbursed by the lending institutions without any collateral security and/or third part guarantees to the new or existing borrowers in the EWS/LIG categories as may be decided by the settlor from time to time and to levy guarantee fee/other charges on the lending institutions as may be decided by the Trust from time to time.
- (2) To undertake securitization of the guaranteed loans and to do all other acts or things as may be necessary therefore, either directly or otherwise, in such manner as may be decided by the Board of Trustees;
- (3) To appoint staff, to acquire, hold and dispose of property, to meet all expenses necessary for the proper and efficient management of the Trust, and to do all other acts or things as may be necessary or conducive to the attainment of the objectives;
- (4) To receive grants, donations, contributions from national and international donors/agencies.
- (5) To do such other acts and things as may be incidental to or consequential to the objectives hereinafter provided.

In consonance with the above objectives, the Trust shall implement the Credit Risk Guarantee Fund Scheme for Low Income Housing

19. Board of Trustees

- (1) The Trust shall be managed and administered by a Board of Trustees consisting of the following members (hereinafter called as "The Board of Trustees"). The constitution of the Board of Trustees is as under:-
 - (a) Secretary (HUPA) shall be the ex-officio Chairperson of the Trust
 - (b) Joint Secretary (RAY) shall be the ex-officio Vice-Chairperson
 - (c) Joint Secretary, Department of Financial Services - Member
 - (d) Joint Secretary, Department of Expenditure - Member
 - (e) CMD, Housing & Urban Development Corporation - Member
 - (f) CMD, National Housing Bank - Member
 - (g) CMD, Small Industry Development Bank of India - Member

(h) Chairperson, Indian Banks' Association - Member

(i) An expert in housing finance/banking - to be nominated by the Ministry of HUPA, Central Government.

(j) The Chief Executive Officer of the Trust shall be the Member Secretary

(2) A Trustee appointed as above in his/her ex-officio capacity shall remain as a Trustee only as long as he/she holds that office and upon his/her vacating that office, his/her successor shall become a Trustee without any further act or deed.

(3) The Settlor may, if required, change the constitution of the Board of Trustees by incorporating a new corporate entity or otherwise and till such time the existing members of the Board of Trustees, as stated under clause (1) above may be considered as the members of the Board of Directors of such entity.

(4) The Trustee of the Fund shall be resident of India. The office of the Trustee shall be vacated if he shall permanently leave India or if for reasons of illness of infirmity or mental incapacity he, in the opinion of the Government, becomes incompetent or incapable to act, as Trustee.

(5) A trustee may retire at any time after giving seven days' notice in writing to the Government and unless he is the Chairperson of the Board of Trustees, a copy of the notice shall also be sent to Chairperson.

20. Meeting of the Board of Trustees

(1) The meeting of the Board of Trustees shall be called by the Chief Executive Officer upon the instructions of the Chairperson.

(2) A notice of the meeting of the Trustees shall be given to each Trustee.

(3) The Board of Trustees shall meet as often as necessary as and not less than once in six months.

(4) Vacancies in the Board of Trustees shall not invalidate any of the proceedings of the Board of Trustees.

(5) The quorum for the meeting of the Board of Trustees shall be three or one-third of its total strength, whichever is higher.

(6) The meetings of the Board of Trustees shall be chaired by the Chairperson or in his absence the Vice-Chairperson.

(7) Decisions at the meeting of the Board of Trustees shall be taken by a vote of the majority of the Trustees present and voting. In the case of equality of votes, the Chairperson of the meeting shall have a second or casting vote.

(8) The Chairperson may invite experts or specialists, as he may deem necessary or expedient, as special to the meeting of the Board of Trustees without having voting rights.

21. Functions of the Board of Trustees

(1) The Board of Trustees shall manage and administer the affairs of the Trust and shall have overall supervision and superintendence of the Trust and all matters incidental thereto.

(2) The Board of Trustees shall strive to fulfill the objectives of the Trust and Carryout the implementation of the scheme.

(3) The Board of Trustees shall have the power and discretion to accept, upon such terms as it may deem fit, any donations or contributions (whether such donation or contribution be in cash or other movable or immovable property), from any person or persons, agencies, institutions, body corporate, etc, situated in India and/or abroad, provided always that the terms upon which such donations or contributions shall be accepted shall not, in any way be inconsistent with or repugnant to the objectives of this Trust and that no other name shall be associated with the name of the Trust.

(4) To achieve the objectives, the Board of Trustees shall have the power and discretion to acquire, hold and dispose of properties whether movable or immovable and to context, subject to norms of financial prudence and transparency.

(5) The Board of Trustees shall, subject to the provisions hereinabove, from and out of the income realized from the properties, assets and funds of the Trust, and from other such endowments, and from the government Grants, and from any other sources which they may get, expend such sum of sums of money as they may deem proper towards the maintenance of the properties of the Trust, pay all rents and taxes, pay such sums towards the repayment of any borrowing by the trustees as stated at Section 34 and meet all expenses which the trustees may in their discretion think necessary for the proper and efficient management of the Trust, and the particular pay the salaries and allowances of all staff and servants, purchase books, equipment and furniture, pay management contributions for the Provident Fund of the staff, Gratuity, Pension etc.

(6) The Board of Trustees may authorize Chief Executive Officer or any other official of the Trust to open and operate any account on behalf of the Trust, to execute any contract, to endorse and transfer promissory notes, stock, share certificates, securities and documents of title to goods standing in the name of or held in the name of or held by the Trust and to draw, accept and endorse bills or

exchange and other instructions and to sign all other accounts, receipts, documents or papers.

- (7) The Board of Trustees may constitute such Advisory Committees consisting partly of members of the Board of Trustees and partly of other persons including persons representing Government Institutions, Commercial Banks, Housing Finance Companies for such purposes as it may think fit. The non-official members of the Advisory Committees so constituted shall be paid such fees and allowances as may be determined by the Board of Trustees for attending the meetings of such Committees.
- (8) The Trust will have the powers to lay down policy guidelines, with the prior approval of the Ministry of HUPA and take decisions for its smooth functioning. It will have the power to change the guarantee fee, if necessary, with the prior approval of the Ministry of Housing & Urban Poverty Alleviation, Government of India.

22. Functions of the Chief Executive Officer of the Trust

- (1) The Chief Executive Officer shall carry out the functions of the Trust and manage the day to day affairs of the Trust in accordance with the powers delegated by the Board of Trustees, from time to time, keeping in view the objectives of the Trust.
- (2) The Trust may sue or be sued through its Chief Executive Officer who shall sign affidavits, documents, plaints, written statements, vakalatnama and such other documents or papers as may be necessary on behalf of the Trust.

23. Staff

The Trust shall be managed by National Housing Bank and legal assistance, if any, will be obtained from Housing and Urban Development Corporation Limited.

24. Allowances to Trustees as Office Bearers

If at any time any Trustee acts as a whole time office bearer of the Trust, the Board of Trustees may in its discretion pay such remuneration or allowances to such trustee as it may think proper.

25. Audit

- (1) The accounts of the Trust shall be audited every year by the Chartered Accountant or a firm of Chartered Accountants who will be appointed by the Board of Trustees on the recommendations of Comptroller and Auditor General of India. The remuneration and tenure of such auditor shall be determined by the Board of Trustees.
- (2) The audited accounts of the Trust shall be adopted at a meeting of the Board of Trustees called for the purposes and a copy thereof together with auditor's

report shall be furnished to each Settlor separately within a period of one month of such adoption.

26. Indemnity

- (1) Every member of the Board of Trustee shall be indemnified by the Trust against all losses and expenses incurred by him/her in relation to the discharge of his/her duties except such as are caused by his/her own deliberate or willful acts of omission or commission.
- (2) No Trustee shall be liable for any breach of trust committed by the co-trustee except in respect of his/her own act and in respect of any property in his/her custody.

27. Powers of the Settlor

- (1) The Ministry of Housing and Poverty Alleviation, Govt. of India would be the settlor of the Trust. It would promote and incorporate the Trust. It shall reserve the authority to appoint and remove the trustees; and shall have powers to issue policy directions from time to time.
- (2) The Chief Executive Officer of the Trust shall be appointed by the National Housing Bank with the approval of the Ministry of HUPA.
- (3) Subject to provision of Clause 30 hereof, the Trust is irrevocable. Subject as aforesaid, the terms of this declaration may be altered or modified by the Settlor.
Provided, however, that no amendment contrary to the objectives of the Trust hereinbefore set forth shall be valid and effective.
- (4) Subject to the clause (2) above,
 - (a) The Settlor, may at any time or times hereafter by any deed or deeds revocable or irrevocable or conduct expressly referring to this power or the property subject thereto, appoint such new or other trustees and concerning the Trust fund as they may think fit.
 - (b) The Settlor may from time to time alter the provisions of this declaration including constitution of the Board of Trustees, their powers and rules and regulations with regard to the conduct of the business and all matters in respect of which provisions are made in this declaration, as they may deem proper.

28. Inspections

The Trust shall, insofar as it may be necessary for the purposes of the Scheme, have the right to inspect or call for copies of the books of account and other records (including any book of instructions or manual or circulars covering general instructions regarding conduct of advances) of the lending institution, and of any borrower

from the lending institution. Such inspection may be carried out either through the officers of the Trust or any other person/Institution appointed by the Trust for the purpose of inspection. Every officer or other employee of the lending institution or the borrower, who is in a position to do so, shall make available to the officers of the Trust or the person appointed for the inspection as the case may be, the books of account and other records and information which are in his possession.

29. Extinction of the Trust

If the objectives for which the Trust has been created shall fail and cannot be fulfilled by the Board of Trustees, the trust shall cease to exist. On extinction of the Trust, the Trust Fund on first charge to the settlor (MoHUPA) and/or the rest of the Trust fund after settling dues, will return to the Consolidated Fund of India.

30. Implementation and Operational Cost

- (1) All the initial setting up costs including administrative, infrastructure and computerization shall be provided by Ministry of HUPA, Govt. of India or as per the arrangements agreed with any other Organisation.
- (2) The entire operational cost of the scheme will be met out of the income of the Trust including guarantee fees to be charged by the Trust from the lending institutions.

31. Trust's liability to be terminated in certain cases

- (1) If the liabilities of a borrower to the lending institution on account of any eligible housing loan guaranteed under this Scheme are transferred or assigned to any other borrower and if the conditions as to the eligibility of the borrower and the amount of the facility and any other terms and conditions, if any, subject to which the housing loan can be guaranteed under the Scheme are not satisfied after the said transfer or assignment, the guarantee in respect of the housing loan shall be deemed to be terminated as from the date of the said transfer or assignment.
- (2) If a borrower becomes ineligible for being granted any housing loans under the Scheme, by any reason, the liability of the Trust in respect of any housing loans granted to him by a lending institution under the Scheme shall be limited to the liability of the borrower to the lending institution as on the date on which the borrower becomes so ineligible, subject, however, to the limits on the liability of the Trust fixed under this Scheme. However, notwithstanding the death of one of the joint borrowers, if the lending institution is entitled to continue the housing loans to the surviving partner or partners or the surviving borrower or

borrowers, as the case may be and if the housing loans have not already become non performing asset, the guarantee in respect of such housing loans shall not to be deemed to be terminated as provided in this paragraph.

32. Investment

The Trust may invest in such of the securities/instruments of investment or lend in the call money or other money markets the amounts available in the corpus fund or any other fund or account which are not for the time being required for the carrying out the objectives of the Trust in such manner as may be approved by the Board of Trustees acting on the principles of financial prudence.

33. Borrowings

The Board of Trustees shall have powers to borrow funds from India and/or Abroad from such organisation(s) or person(s), as may be necessary, for carrying out the objectives of the Trust or implementation of the scheme as also powers to give the assets of the Trust as securities or to give guarantee, as may be necessary for such borrowing provide that all such borrowings shall be made after the prior approval of Government in the Ministry of HUPA.

CHAPTER VI

MISCELLANEOUS

34. Jurisdiction of the Courts

The Competent Court in Delhi shall have exclusive jurisdiction to decide any question regarding the interpretation and construction of this declaration or administration of the Trust and the related matters.

35. Interpretation

If any question arises in regard to the interpretation of any of the provisions of the Scheme or of any directions or instructions or clarifications given in connection therewith, the decision of the Ministry of Housing and Poverty Alleviation shall be final.

36. Supplementary and general provisions

In respect of any matter not specifically provided for in this Scheme, the Trust may make such supplementary or additional provisions or issue such instructions or clarifications as may be necessary for the purpose of the Scheme.

37. Any amount of secondary transaction covered under the Scheme shall be done by the NHB or any other designated entity as decided by the Trust ensuring availability of adequate primary securities for such issue/issues.

SUSHEEL KUMAR
Jt. Secy.

MINISTRY OF ENVIRONMENT AND FORESTS

New Delhi, the 14th April 2012

No. 17011/01/2012-IFS-II.—The Rules for a competitive examination to be held by the Union Public Service Commission in 2012 for the purpose of filling vacancies in the Indian Forest Service are published for general information.

1. The number of vacancies to be filled on the result of the examination will be specified in the Notice issued by the Commission. Reservation will be made for candidates belonging to the Scheduled Castes, the Scheduled Tribes, Other Backward Classes and Physically Handicapped Category in respect of vacancies as may be fixed by the Government.

2. Every candidate appearing at the Examination, who is otherwise eligible, shall be permitted four attempts at the examination. The restriction is effective from the examination held in 1984.

Provided that this restriction on the number of attempts will not apply in the case of Scheduled Caste and Scheduled Tribe candidates who are otherwise eligible.

Provided further that the number of attempts permissible to candidates belonging to Other Backward Classes, who are otherwise eligible, shall be seven.

Note 1.—A candidate shall be deemed to have made an attempt at the examination if he/she actually appears in any one or more papers.

Note 2.—Notwithstanding the disqualification/cancellation of candidature the fact of appearance of the candidate at the examination will count as an attempt.

3. The examination will be conducted by the Union Public Service Commission in the manner prescribed in Appendix I to these rules.

The dates on which and the places at which the examination will be held shall be fixed by the Commission.

4. A candidate must be either :—

- (a) a citizen of India, or
- (b) a subject of Nepal, or
- (c) a subject of Bhutan, or
- (d) a Tibetan refugee who came over to India before the 1st January, 1962 with the intention of permanently settling in India, or
- (e) a person of Indian origin who has migrated from Pakistan, Burma, Sri Lanka, East African Countries of Kenya, Uganda, the United Republic of Tanzania, Zambia, Malawi, Zaire, Ethiopia and Vietnam with the intention of permanently settling in India.

Provided that a candidate belonging to categories (b), (c), (d) and (e) above shall be a person in whose favour a certificate of eligibility has been issued by the Government of India.

A candidate in whose case a certificate of eligibility is necessary may be admitted to the examination but the offer of appointment may be given only after the necessary eligibility certificate has been issued to him/her by the Government of India.

5. (a) A candidate must have attained the age of 21 years and must not have attained the age of 30 years on 1st August 2012 i.e. he/she must have been born not earlier than 2nd August 1982 and not later than 1st August 1991.

(b) The upper age limit prescribed above will be relaxable :—

- (i) upto a maximum of five years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe;
- (ii) upto a maximum of three years in the case of candidates belonging to Other Backward Classes who are eligible to avail of reservation applicable to such candidates;
- (iii) upto a maximum of five years if a candidate had ordinarily been domiciled in the State of Jammu & Kashmir during the period from the 1st January, 1980 to the 31st day of December, 1989;
- (iv) upto a maximum of three years in the case of Defence services personnel disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area and released as a consequence thereof;
- (v) upto a maximum of five years in the case of ex-servicemen including Commissioned Officers and ECOs/SSCOs who have rendered at least five years Military Service as on 1st August, 2012 and have been released (i) on completion of assignment (including those, whose assignment is due to be completed within one year from 1st August, 2012) otherwise than by way of dismissal or discharge on account of the misconduct or inefficiency or (ii) on account of physical disability attributable to Military Service, or (iii) on invalidment;
- (vi) upto a maximum of five years in the case of ECOs/SSCOs who have completed an initial period of assignment of five years of Military Service as on 1st August, 2012 and whose assignment has been extended beyond five years and in whose case the Ministry of Defence issues a certificate that they can apply for civil employment and they will be released on three months notice on selection from the date of receipt of offer of appointment;

(vii) upto a maximum of 10 years in the case of blind, deaf-mute and orthopaedically handicapped person.

NOTE I—Candidates belonging to the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes and the Other Backward Classes who are also covered under any other clauses of rule 5 (b) above, viz. those coming under the category of Ex-servicemen, persons domiciled in the State of J&K., blind, deaf-mute and orthopaedically handicapped etc. will be eligible for grant of cumulative age relaxation under both the categories.

NOTE II—The term Ex-servicemen will apply to the persons who are defined as ex-servicemen in the Ex-servicemen (Re-employment in Civil Services and Posts) rules, 1979 as amended from time to time.

NOTE III—The age concession under rule 5 (b) (v) and (vi) will not be admissible to Ex-Servicemen and Commissioned officers including ECOs/SSCOs, who are released at own request.

NOTE IV—Notwithstanding the provision of age relaxation under rule 5 (b) (vii) above a physically disabled candidate will be considered to be eligible for appointment only if he/she (after such physical examination as the Government or appointing authority, as the case may be, may prescribe) is found to satisfy the requirements of physical and medical standards for the concerned Services/Posts to be allocated to the physically disabled candidates by the Government.

SAVE AS PROVIDED ABOVE THE AGE LIMITS PRESCRIBED CAN IN NO CASE BE RELAXED

The date of birth accepted by the Commission is that entered in the Matriculation or Secondary School Leaving Certificate or in a certificate recognised by an Indian University as equivalent to Matriculation or in an extract from a Register of Matriculates maintained by a University which extract must be certified by the proper authority of the University or in the Higher Secondary or an equivalent examination certificate.

No other documents relating to age like horoscopes, affidavits, birth extracts from Municipal Corporation, Service records and the like will be accepted.

The expression Matriculation/Higher Secondary Examination Certificate in this part of the instruction include the alternative certificates mentioned above.

NOTE 1 :—Candidates should note that only the date of birth as recorded in the Matriculation/Secondary Examination Certificate or an equivalent certificate on the date of submission of application will be accepted by the Commission and no subsequent request for its change will be considered or granted.

NOTE 2 :—Candidates should also note that once a date of birth has been claimed by them and entered in the records of the Commission for the purpose of admission to an

Examination, no change will be allowed subsequently (or at any other examination of the Commission) on any grounds whatsoever.

6. A candidate must hold a Bachelor's degree with at least one of the subjects, namely: Animal Husbandry & Veterinary Science, Botany, Chemistry, Geology, Mathematics, Physics, Statistics and Zoology or Bachelor's degree in Agriculture, Forestry or in Engineering of any University incorporated by an Act of the Central or State Legislature in India or other educational institutions established by an Act of Parliament or declared to be deemed as a University under Section 3 of the University Grants Commission Act, 1956 or possess an equivalent qualification.

NOTE I :—Candidate who have appeared at an examination the passing of which would render them educationally qualified for the Commission's examination but have not been informed of the results as also the candidates who intend to appear at such a qualifying examination will also be eligible for admission to the Examination. Such candidates will be admitted to the examination if otherwise eligible but their admission would be deemed to be provisional and subject to cancellation if they do not produce proof of having passed the requisite examination alongwith the detailed application which will be required to be submitted to the Commission by the candidates who qualify on the result of the written part of the examination.

NOTE II :—In exceptional cases the Union Public Service Commission may treat a candidate who does not any of the foregoing qualifications, as a qualified candidate provided that he/she has passed examinations conducted by the other institutions the standard of which in the opinion of the Commission justifies his/her admission of the examination.

7. Candidates must pay the fee prescribed in the Commission's Notice.

8. All candidates in Government Service, whether in a permanent or in temporary capacity or as work-charged employees other than casual or daily rated employees or those serving under Public Enterprises will be required to submit an undertaking that they have informed in writing to their Head of Office/Department that they have applied for the examination.

Candidates should note that in case a communication is received from their employer by the Commission withholding permission to the candidates applying for/appearing at the examination, their application will be liable to be rejected/ candidature will be liable to be cancelled.

9. The decision of the Commission as to the acceptance of the application of a candidate and his/her eligibility or otherwise for admission to the examination shall be final.

The candidates applying for the examination should ensure that they fulfil all the eligibility conditions for admission to the examination. Their admission at all the stages of examination for which they are admitted by the Commission viz. Written Examination and Interview for Personality Test will be purely provisional subject to their satisfying the prescribed eligibility conditions. If on verification at any time before or after the written examination or Interview for Personality Test, it is found that they do not fulfil any of eligibility conditions, their candidature for the examination will be cancelled by the Commission.

10. No candidate will be admitted to the examination unless he/she holds a certificate of admission from the Commission.

11. A candidate who is or has been declared by the Commission to be guilty of :—

- (i) obtaining support for his/her candidature by the following means, namely :—
 - (a) offering illegal gratification to, or
 - (b) applying pressure on; or
 - (c) blackmailing or threatening to blackmail any person connected with the conduct of examination, or
- (ii) impersonating; or
- (iii) procuring impersonation by any person; or
- (iv) submitting fabricated documents or documents which have been tampered with; or
- (v) making statements which are incorrect or false, or suppressing material information; or
- (vi) resorting to the following means in connection with his/her candidature for the examination namely :—
 - (a) obtaining copy of question paper through improper means;
 - (b) finding out the particulars of the persons connected with secret work relating to the examination;
 - (c) influencing the examiners; or
- (vii) using unfair means during the examination; or
- (viii) writing obscene matters or drawing obscene sketches in the scripts; or
- (ix) misbehaving in the examination hall including tearing of the scripts, provoking fellow examinees to boycott examination, creating a disorderly scene and the like; or
- (x) harassing or doing bodily harm to the staff employed by the Commission for the conduct of their examination; or
- (xi) being in possession of or using any mobile phone, pager or any electronic equipment or device or any other equipment capable of being used as a communication device during the examination; or

(xii) violating any of the instructions issued to candidates alongwith their admission certificates permitting them to take the examination; or

(xiii) attempting to commit or as the case may be, abetting the Commission of all or any of the acts specified in the foregoing clauses;

may in addition to rendering himself/herself liable to criminal prosecution, be liable :—

- (a) to be disqualified by the Commission from the examination for which he/she is a candidate; and/or
- (b) to be debarred either permanently or for a specified period :—
 - (i) by the Commission from any examination or selection held by them;
 - (ii) by the Central Government from any employment under them; and
- (c) if he /she is already in service under Government to disciplinary action under the appropriate rules.

Provided that no penalty under this rule shall be imposed except after :—

- (i) giving the candidate, an opportunity of making such representation in writing as he/she may wish to make in that behalf; and
- (ii) taking the representation, if any, submitted by the candidate, within the period allowed to him/her into consideration.

12. Candidates who obtain such minimum qualifying marks in the written examination as may be fixed by the Commission in their discretion shall be summoned by them for an interview for a personality test.

Provided that candidates belonging to the Scheduled Castes, the Scheduled Tribes or Other Backward Classes may be summoned for an interview for a personality test by the Commission by applying relaxed standard if the Commission is of the opinion that sufficient number of candidates from these communities are not likely to be summoned for interview for a personality test on the basis of the general standard in order to fill up the vacancies reserved for them.

13. (i) After the examination, the candidates will be arranged by the Commission in the order of merit as disclosed by the aggregate marks finally awarded to each candidate and in that order so many candidates as are found by the Commission to be qualified at the examination shall be recommended for appointment upto the number of unreserved vacancies decided to be filled on the results of the examination.

(ii) The candidates belonging to any of the Scheduled Castes, the Scheduled Tribes or Other Backward Classes may to the extent of the number of vacancies reserved for the Scheduled Castes, the Scheduled Tribes and the Other Backward Classes be recommended by the Commission by a relaxed standard, subject to the fitness of these candidates for selection to the Service.

Provided that the candidates belonging to the Scheduled Castes, the Scheduled Tribes and the Other Backward Classes who have been recommended by the Commission without resorting to any relaxations/concessions in the eligibility or selection criteria, at any stage of the examination, shall not be adjusted against the vacancies reserved for the Scheduled Castes, the Scheduled Tribes and the Other Backward Classes.

14. The form and manner of communication of the result of the examination to individual candidates shall be decided by the Commission in their discretion and the Commission will not enter into correspondence with them regarding the result.

15. Success in the examination confers no right to appointment unless Government are satisfied after such enquiry as may be considered necessary that the candidate having regard to his/her character and antecedents, is suitable in all respects for appointment to the Service.

16. (i) A candidate who qualifies on the results of the written part of the Examination shall be required to indicate in the Detailed Application Form his/her choice in the order of preference from amongst the various State Cadres including his/her 'Home State' in case he/she is appointed to the Indian Forest Service.

(ii) The cadre allotment to candidates appointed to Indian Forest Service will be governed by the policy of cadre allotment in force at the time of allotment of cadre. Due consideration will be given at the time of making allocation on the results of the examination to the preferences expressed by a candidate for various cadres at the time of his/her application.

17. A candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the discharge of his/her duties as an officer of the service. A candidate who after such medical examination as Government or the appointing authority, as the case may be, may prescribe, is found not to satisfy these requirements will not be appointed. Any candidate called for the Personality Test by the Commission may be required to undergo Part I of the medical examination and the candidates, who are declared successful on the basis of this examination, may be required to undergo Part II of the medical examination. The details of Part I and II are given in the Appendix III to these rules. No fee shall be payable to the Medical Board by the candidate for the medical examination except in the case of appeal.

Provided further that Government may constitute a special Medical Board with experts in the area for conducting the medical examination of physical disabled candidates.

NOTE—In order to prevent disappointment, candidates are advised to have themselves examined by a Civil Surgeon before applying for admission to the examination. Particulars of the nature of the medical test to which candidates will be subjected before

appointment and of the standard required is given in Appendix III to these rules. For the disabled Ex-Defence Service Personnel, the standards will be relaxed consistent with requirements of the Service.

Attention is particularly invited to the condition of medical fitness in involving a walking test of 25 kilometers in 4 hours in the case of male candidates and 14 kilometers in 4 hours for female candidates.

18. The eligibility for availing reservation against the vacancies reserved for the physically disabled persons shall be the same as prescribed in "The Persons with Disability (Equal Opportunities, Protection of Rights and Full Participation) Act, 1995":

Provided further that the physically disabled candidates shall also be required to meet special eligibility criteria in terms of physical requirements/functional classification (abilities/disabilities) consistent with requirements of the identified service/post as may be prescribed by its cadre controlling authority.

The physical requirement and functional classification can, for example, be one or more of the following :

CODE	PHYSICAL REQUIREMENTS
MF	1. Work performed by manipulation by fingers.
PP	2. Work performed by pulling and pushing.
L	3. Work performed by lifting.
KC	4. Work performed by kneeling and crouching.
BN	5. Work performed by bending.
S	6. Work performed by sitting (on bench or chair).
ST	7. Work performed by standing.
W	8. Work performed by walking.
SE	9. Work performed by seeing.
H	10. Work performed by hearing/speaking.
RW	11. Work performed by reading and writing.
C	12. Communication.

CODE FUNCTIONAL CLASSIFICATION

BL	1. both legs affected but not arms.
SA	2. both arms affected— <ul style="list-style-type: none"> a. impaired reach. b. weakness of grip. c. ataxic
BLA	3. both legs and both arms affected.
OL	4. one leg affected (R or L) <ul style="list-style-type: none"> a. impaired reach. b. weakness of grip. c. ataxic.

OA 5. one arm affected (R or L)

- a. impaired reach.
- b. weakness of grip.
- c. ataxic.

OAL 6. One arm and one leg affected.

MW 7. muscular weakness.

B 8. Blind.

LV 9. Law Vision.

H 10. Hearing.

Note : The above lists is subject to revision.

19. A candidate will be eligible to get the benefit of community reservation only in case the particular caste to which the candidates belongs is included in the list of reserved communities issued by the Central Government. If a candidate indicates in his/her Application Form for Indian Forest Service Examination that he/she belongs to General Category but subsequently writes to the Commission to change his/her category, to a reserve one, such request shall not be entertained by the Commission.

While the above principle will be followed in general, there may be a few cases where there was a little gap (say 2-3 months) between the issuance of a Government Notification enlisting a particular community in the list of any of the reserved communities and the date of submission of the application by the candidate. In such cases the request of change of community from general to reserved may be considered by the Commission on merit.

20. The closing date fixed for the receipt of the application will be treated as the date for determining the OBC status (including that of creamy layer) of the candidates.

21. No Person—

- (a) who has entered into or contracted a marriage with a person having a spouse living, or
- (b) who having a spouse living has entered into or contracted a marriage with any person shall be eligible for appointment to Service.

Provided that the Central Government may, if satisfied that such marriage is permissible under the personal law applicable to such person and the other party to the marriage and there are other grounds for so doing, exempt any person from the operation of this rule.

22. Candidates are informed that some knowledge of Hindi prior to entry into Service would be of advantage in passing departmental examinations which candidates have to take after entry into Service.

23. Brief particulars relating to the Service to which recruitment is being made through this examination are given in Appendix-II.

JOSEPH LUIKHAM
Under Secretary

APPENDIX I

SECTION I

Plan of Examination

The competitive examination for the Indian Forest Service comprises :—

(A) The written examination consisting of the following papers:—

Paper I—General English	300 Marks
Paper II—General Knowledge	300 Marks

Papers III, IV, V and VI.—Any two subjects to be selected from the list of the optional subjects set out in para 2 below. Each subject will have two papers.—200 marks for each paper.

Note : Answer scripts of only those candidates who have obtained the minimum marks as decided by the Commission for Paper II (General Knowledge) will be evaluated.

(B) Interview for Personality Test (See Section II of this Appendix) of such candidates as may be called by the Commission—Maximum Marks : 300

2. List of optional subjects :

- (i) Agriculture
- (ii) Agricultural Engineering
- (iii) Animal Husbandry & Veterinary Science
- (iv) Botany
- (v) Chemistry
- (vi) Chemical Engineering
- (vii) Civil Engineering
- (viii) Forestry
- (ix) Geology
- (x) Mathematics
- (xi) Mechanical Engineering
- (xii) Physics
- (xiii) Statistics
- (xiv) Zoology

Provided that the candidates will not be allowed to offer the following combination of subjects :

- (a) Agriculture and Agricultural Engg.
- (b) Agriculture and Animal Husbandry & Veterinary Science.
- (c) Agriculture and Forestry.
- (d) Chemistry and Chemical Engg.
- (e) Mathematics and Statistics.
- (f) Of the Engineering subjects viz. Agricultural Engineering, Chemical Engineering, Civil Engineering and Mechanical Engineering—not more than one subject;

NOTE—The standard and syllabi of the subjects mentioned above are given in Schedule to this Appendix.

General :

1. All the question papers for the examination will be of conventional (essay) type.
2. ALL QUESTION PAPERS MUST BE ANSWERED IN ENGLISH. QUESTION PAPERS WILL BE SET IN ENGLISH ONLY.
3. The duration of each of the papers referred to above will be three hours.
4. Candidates must write the papers in their own hand. In no circumstances will they be allowed the help of a scribe to write the answers for them. However, blind candidates will be allowed to write the examination with the help of a scribe. An extra time of 30 minutes for each paper will also be allowed to a blind candidate.

Note (1) : The eligibility conditions of a scribe, his/her conduct inside the examination hall and the manner in which and extent to which he/she can help the blind candidate in writing the Indian Forest Service Examination shall be governed by the instructions issued by the UPSC in this regard. Violation of all or any of the said instructions shall entail the cancellation of the candidature of the blind candidate in addition to any other action that the UPSC may take against the scribe.

Note (2) : For purpose of these rules the candidate shall be deemed to be a blind candidate if the percentage of visual impairment is forty per cent (40%) or more. However, the extent of visual impairment should have to be corroborated by a certificate in the prescribed proforma from a Medical Board constituted by the Central/State Government alongwith their Detailed Application Form.

Note (3) : The concession admissible to blind candidates shall not be admissible to those suffering from Myopia.

5. The Commission have discretion to fix qualifying marks in any or all the papers of the examination.
6. If a candidate's handwriting is not easily legible, deduction will be made on this account from the total marks otherwise accruing to him/her.
7. Marks will not be allotted for mere superficial knowledge.
8. Credit will be given for orderly, effective and exact expression combined with due economy of words in all subjects of the examination.
9. In the question papers, wherever required, SI units will be used.

10. Candidates should use only international form of Indian numerals (e.g. 1, 2, 3, 4, 5, 6, etc.) while answering question papers.
11. Candidates will be allowed the use of Scientific (Non-programmable type) calculators at the conventional type examinations of UPSC. Programmable type calculators will however not be allowed and the use of such calculators shall tantamount to resorting to unfair means by the candidates. Loaning and interchanging of calculators in the Examination Hall is not permitted.

SECTION II

PERSONALITY TEST

The candidate will be interviewed by a Board of competent and unbiased observers who will have before them a record of his/her career. The object of the Interview is to assess the personal suitability of the candidate for the Service. The candidate will be expected to have taken an intelligent interest not only in his/her subjects of academic study but also in events which are happening around him/her both within and outside his/her own state or country, as well as in modern currents of thoughts and in new discoveries which should rouse the curiosity of well educated youth.

2. The technique of the interview is not that of a strict cross examination, but of a natural, though directed and purposive conversation, intended to reveal mental qualities of the candidate. The Board will pay special attention to assessing the intellectual curiosity, critical powers of observation and assimilation, balance of judgement and alertness of mind, initiative, tact, capacity for leadership; the ability for social cohesion, mental and physical energy and powers of practical application; integrity of character; and other qualities such as topographical sense, love for outdoor life and the desire to explore unknown and out of way places.

SCHEDULE

The standard of papers in General English and General knowledge will be such as may be expected of a Science or Engineering graduate of an Indian university.

The scope of the syllabus for optional subject papers for the Examination is broadly of the Honours Degree level i.e. a level higher than the Bachelors Degree and lower than the Masters Degree. In the case of Engineering subjects the level corresponds to the Bachelors Degree.

There will be no practical examination in any of the subjects.

GENERAL ENGLISH

Candidates will be required to write an essay in English. Other questions will be designed to test their understanding of English and workmanlike use of words. Passages will usually be set for summary or precis.

GENERAL KNOWLEDGE

General Knowledge including knowledge of current events and of such matters of every day observation and experience, in their scientific aspects as may be expected of an educated person who has not made a special study of any scientific Subject. The paper will also include questions on Indian Policy including the political system and the Constitution of India, History of India and Geography of a nature which the candidate should be able to answer without special study.

OPTIONAL SUBJECTS

Total number of questions in the question papers of optional subjects will be eight. All questions will carry equal marks. Each paper will be divided into two parts. viz. Part A and Part B each part containing four questions. Out of eight questions, five questions are to be attempted. One question in each part will be compulsory. Candidates will be required to answer three more questions out of the remaining six questions, taking at least one question from each Part. In this way, at least two questions will be attempted from each Part i.e. one compulsory question plus one more.

AGRICULTURE

PAPER-I

Ecology and its relevance to man, natural resources, their sustainable management and conservation. Physical and social environment as factors of crop distribution and production, climatic elements as factors of crop growth, impact of changing environment on cropping pattern as Indicators of environments. Environmental pollution and associated hazards to crops, animals and humans.

Cropping patterns in different agro-climatic zones of the country. Impact of high-yielding and short-duration varieties on shifts in cropping patterns. Concepts of multiple cropping, multistorey, relay and inter-cropping and their importance in relation to food production. Package of practices for production of important cereals, pulses, oil seeds, fibres, sugar, commercial and fodder crops grown during Kharif and Rabi seasons in different regions of the country.

Important features, scope and propagation of various types of forestry plantations such as extension, social forestry, agro-forestry and natural forests.

Weeds, their characteristics, dissemination and association with various crops, their multiplicities, cultural, biological, and chemical control of weeds.

Soil—physical, chemical and biological properties. Processes and factors of soil formation. Modern classification of Indian soils. Mineral and organic constituents of soils and their role in maintaining soil productivity. Essential plant nutrients and other beneficial elements in soils and plants. Principles of soil fertility and

its evaluation for judicious fertiliser use, integrated nutrient management. Losses of nitrogen in soil, nitrogen-use efficiency in submerged rice soils, nitrogen fixation in soils. Fixation of phosphorus and potassium in soils and the scope for their efficient use. Problem soils and their reclamation methods.

Soil conservation planning on watershed basis. Erosion and run-off management in hilly, foot hills and valley lands; processes and factors affecting them. Dryland agriculture and its problems. Technology for stabilising agriculture production in rainfed agriculture area.

Water-use efficiency in relation to crop production, criteria for scheduling irrigations, ways and means of reducing run-off losses of irrigation water, Drip and sprinkler irrigation. Drainage of water-logged soils, quality of irrigation water, effect of industrial effluents on soil and water pollution.

Farm management, scope, importance and characteristics, farm planning. Optimum resource use and budgeting. Economics of different types of farming systems.

Marketing and pricing of agricultural inputs and outputs, price fluctuations and their cost role of co-operatives in agricultural economy, types and systems of farming and factors affecting them.

Agricultural extension, its importance and role, methods of evaluation of extension programmes, socio-economic survey and status of big, small and marginal farmers and landless agricultural labourers, farm mechanization and its role in agricultural production and rural employment. Training programmes for extension workers, lab-to-land programmes.

PAPER-II

Cell Theory, cell structure, cell organelles and their function, cell division, nucleic acids—structure and function, gene structure and function. Laws of heredity, their significance in plant breedings. Chromosome structure, chromosomal aberrations, linkage and cross-over and their significance in recombination breeding. Polyploidy, euploids and aneuploids. Mutation—micro and macro—and their role in crop improvement. Variation, components of variation. Heritability, sterility and incompatibility, classification and their application in crop improvement. Cytoplasmic inheritance, sex-linked, sex-influenced and sex-limited characters.

History of plant breeding. Modes of reproduction, selfing and crossing techniques. Origin and evolution of crop plants, centre of origin, law of homologous series, crop genetic resources—conservation and utilization, application of principles of plant breeding to the improvement of major field crops. Pure-line selection, pedigree, mass and recurrent selections, combining ability, its significance in plant breeding. Hybrid vigour and its exploitation, backcross method of breeding, breeding for disease and pest resistance, role of

interspecific and intergeneric hybridization, role of biotechnology in plant breeding. Improved varieties, hybrids, composites of various crop plants.

Seed technology, its importance. Different kinds of seeds and their seed production and processing techniques. Role of public and private sectors in seed production, processing and marketing in India.

Physiology and its significance in agriculture Imbition, surface tension, diffusion and osmosis. Absorption and translocation of water, transpiration and water economy.

Enzymes and plant pigments; photosynthesis modern—concepts and factors affecting the process, aerobic and non-aerobic respiration; C, C and CAM mechanisms. Carbohydrate, protein and fat metabolism.

Growth and development; photoperiodism and vernalization. Auxins, hormones and other plant regulators and their mechanism of action and importance in agriculture Physiology of seed development and germination; dormancy.

Climatic requirements and cultivation of major fruits, plants, vegetable crops and flower plants; the package of practices and their scientific basis. Handling and marketing problems of fruits and vegetables. Principal methods of preservation of important fruits and vegetable products, processing techniques and equipment. Role of fruits and vegetables in human nutrition. Raising of ornamental plants, and design and layout of lawns and gardens.

Diseases and pests of field vegetables, orchard and plantation crops of India. Causes and classification of plant pests and diseases. Principles of control of plant pests and diseases. Biological control of pests and diseases. Integrated pest and disease management. Epidemiology and forecasting.

Pesticides, their formulations and modes of action. Compatibility with rhizobial inoculants Microbial toxins.

Storage pests and diseases of cereals and pulses and their control.

Food production and consumption trends in India. National and International food policies. Production, procurement, distribution and processing constraints. Relation of food production to national dietary pattern, major deficiencies of calorie and protein.

AGRICULTURAL ENGINEERING

PAPER-I

Section A

1. Soil and Water Conservation : Scope of soil and water conservation, mechanics and types of erosion, their causes. Rainfall, runoff and sedimentation relationships and their measurement. Soil erosion control measures—biological and engineering including stream bank protection-vegetative barriers, contour bunds, contour trenches, contour stone

walls, contour ditches, terraces, outlets and grassed waterways. Gully control structures—temporary and permanent—design of permanent soil conservation structures such as chute, drop and drop inlet soilways. Design of farm ponds and percolation ponds. Principles of flood control—flood routing. Watershed Management—investigation, planning and implementation—selection of priority areas and water shed work plan, water harvesting and moisture conservation. Land development—levelling, estimation of earth volumes and costing. Wind Erosion process—design of shelter belts and wind brakes and their management. Forest (Conservation) Act.

2. Aerial Photography and Remote sensing : Basic characteristics of Photographic images, interpretation keys, equipment for interpretation, imagery interpretation for land use, geology, soil and forestry.

Remote sensing—merits and demerits of conventional and remote sensing approaches. Types of satellite images, fundamentals of satellite image interpretation, techniques of visual and digital interpretations for soil, water and land use management. Use of GIS in planning and development of water-sheds, forests including forest cover, water resources etc.

Section B

3. Irrigation and Drainage : Sources of water for irrigation. Planning and design of minor irrigation projects. Techniques of measuring soil moisture—laboratory and in-situ. soil-water-plant relationships. Water requirement of crops. Planning conjunctive use of surface and ground water, Measurement of irrigation water, measuring devices—orifices, weirs and flumes. Methods of irrigation—surface, sprinkler and drip, fertigation. Irrigation efficiencies and their estimation. Design and construction of canals, field channels, underground pipelines, headgate, diversion boxes and structures for road crossing.

Occurrence of ground water, hydraulics of wells, types of wells (tube wells and open wells) and their construction. Well development and testing. Pumps-types, selection and installation. Rehabilitation of sick and failed wells.

Drainage—Causes of waterlogging and salt problems. Methods of drainage—drainage of irrigated and unirrigated lands, design of surface, sub-surface and vertical drainage systems. Improvement and utilization of poor quality water. Reclamation of saline and alkali soils. Economics of irrigation and drainage systems. Use of waste water for irrigation—standards of waste water for sustained irrigation, feasibility and economics.

4. Agricultural Structures : Site selection, design and construction of farmstead—farm house, cattle shed, dairy barn, poultry shed, hog housing, machinery and implement shed, storage structures for foodgrains feed and forage. Design and construction of fences and farm roads. Structures for plant environment—green houses, poly houses and

shade houses. Common building materials used in construction—timber, brick, stone, tiles, concrete etc. and their properties. Water supply, drainage and sanitation systems.

PAPER-II

Section A

1. Farm Power and Machinery : Agricultural mechanization and its scope. Sources of farm power—animate and electro-mechanical. Thermodynamics, construction and working of internal combustion engines, fuel ignition, lubrication cooling and governing systems of IC engines. Different types of tractors and power tillers. Power transmission, ground drive, power take off (p.t.o.) and control systems. Operation and maintenance of farm machinery for primary and secondary tillage. Traction theory. Sowing, transplanting and interculture implements and tools. Plant protection equipment—spraying and dusting. Harvesting threshing and combining equipment. Machinery for earth moving and land development—methods and cost estimation. Ergonomics of man-machine system. Machinery for horticulture and agro-forestry, feeds and forage. Haulage of agricultural and forest produce.

2. Agro-energy : Energy requirements of agricultural operations and agro-processing. Selection, installation, safety and maintenance of electric motors for agricultural applications. Solar (thermal and photovoltaic), wind and bio-gas energy and their utilisation in agriculture. Gasification of biomass for running IC engines and for electric power generation. Energy efficient cooking stoves and alternate cooking fuels. Distribution of electricity for agricultural and agro-industrial applications.

Section-B

3. Agricultural Process Engineering : Post harvest technology of crops and its scope. Engineering properties of agricultural produces and by-products. Unit operations—cleaning, grading, size reduction, densification, concentration, drying/dehydration evaporation filtration, freezing and packaging of agricultural produces and by-products. Material handling equipment—belt and screw conveyors, bucket elevators, their capacity and power requirements.

Processing of milk and dairy products—homogenization, cream separation, pasteurization, sterilization, spray and roller drying, butter making, ice cream, cheese and shrikhand manufacture. Waste and by-product utilization—rice husk, rice bran, sugarcane bagasse, plant residues and coir pith.

4. Instrumentation and computer applications in Agricultural Engineering : Electronic devices and their characteristics—rectifiers, amplifiers, oscillators, multivibrators. Digital circuits—sequential and combinational systems. Application of microprocessors in data acquisition and control of agricultural engineering

processes—measurement systems for level, flow, strain, force, torque, power, pressure, vacuum and temperature. Computers—introduction input/output devices, central processing unit, memory devices, operating systems, processors, keyboards and printers. Algorithms, flowchart specification, programme translation and problem analysis in Agricultural Engineering. Multimedia and Audio-Visual aids.

ANIMAL HUSBANDRY AND VETERINARY SCIENCE

PAPER- I

1. Animal Nutrition—Energy sources, energy, metabolism and requirements for maintenance and production of milk, meat, eggs and wool, Evaluation of feeds as sources of energy.

1.1 Trends in protein nutrition : Source of protein metabolism and synthesis, protein quantity and quality in relation of requirements. Energy protein ratios in ration.

1.2 Minerals in animal diet : Sources, functions, requirements and their relationship of the basic minerals nutrients including trace elements.

1.3 Vitamins, Hormones and Growth Stimulating, substances : Sources, functions, requirements and inter-relationship with minerals.

1.4 Advances in Ruminant Nutrition—Dairy Cattle : Nutrients and their metabolism with reference to milk production and its composition. Nutrient requirements for calves, heifers, dry and milking cows and buffaloes. Various feeding system.

1.5 Advances in Non-Ruminant Nutrition—Poultry—Nutrients and their metabolism with reference to poultry, meat and egg production. Nutrients requirements and feed formulation and boilers at different ages.

1.6 Advances in Non-Ruminant Nutrition—Swine—Nutrients and their metabolism with special reference to growth and quality of meat production, Nutrient requirement and feed formulation for baby-growing and finishing pigs.

1.7 Advances in Applied Animal Nutrition—A critical review and evaluation of feeding experiments, digestibility and balance studies. Feeding standards and measures for food energy. Nutrition requirements for growth, maintenance and production. Balanced rations.

2. Animal Physiology

2.1 Growth and Animal Production—Prenatal and postnatal growth, maturation, growth curves, measures of growth, factors affecting growth, conformation, body composition meat quality.

2.2 Milk Production and Reproduction and Digestion :—Current status of hormonal control of mammary development milk secretion and milk ejection. Male and Female reproduction organ, their components and function. Digestive organs and their functions.

2.3 Environmental Physiology :—Physiological relations and their regulation; mechanisms of adaption, environmental factors and regulatory mechanism involved in animal behaviour, methods of controlling climatic stress.

2.4 Semen quality :—Preservation and Artificial Insemination—Components of semen, composition of spermatozoa, chemical and physical properties of ejaculated semen, factors affecting semen in vivo and in vitro. Factors affecting semen production and quality preservation, composition of diluents, sperm concentration, transport of diluted semen. Deep Freezing techniques in cows, sheep and goats, swine and poultry. Detection of oestrus and time of insemination for better conception.

3. Livestock Production and Management :

3.1 Commercial Dairy Farming—Comparison of dairy farming in India with advanced countries. Dairying under mixed farming and as a specialised farming, economic dairy farming. Starting of a dairy farm. Capital and land requirement, organisation of the dairy farm. Procurement of goods, opportunities in dairy farming, factors determining the efficiency of dairy animal, Herd recording, budgeting, cost of milk production; pricing policy; Personnel Management, Developing Practical and Economic ration for dairy cattle; supply of greens throughout the year, field and fodder requirements of Dairy farm, Feeding regimes for day and young stock and bulls, heifers and breeding animals; new trends in feeding young and adult stock; Feeding records.

3.2 Commercial meat, egg and wool production—Development of practical and economic rations for sheep, goats, pigs, rabbits and poultry. Supply of greens, fodder regimens for young and mature stock. New trends in enhancing production and management. Capital and land requirements and socio-economic concept.

3.3 Feeding and management of animals under drought, flood and other natural calamities.

4. Genetics and Animal Breeding :

Mitosis and Meiosis; Mendelian inheritance; deviations to Mendelian genetics; Expression of genes; Linkage and crossing over; Sex determination, sex influenced and sex limited characters; Blood groups and polymorphism; Chromosome aberrations; Gene and its structure; DNA as a genetic material; Genetic code and protein synthesis; Recombinant DNA technology, Mutations, types of mutations, methods for detecting mutations and mutation rate.

4.1 Population Genetics Applied to Animal Breeding :

Quantitative Vs. qualitative traits; Hardy Weinberg Law; Population Vs. individual; Gene and genotypic frequency; Forces changing gene frequency; Random drift and small populations; Theory of path coefficient inbreeding, methods of estimating in breeding coefficient, systems of in-breeding; Effective population size; Breeding value, estimation of breeding value, dominance and espistemic deviation;

Partitioning of variation; Genotype x environment correlation and genotype x environment interaction; role of multiple measurements; Resemblance between relatives.

4.2 Breeding Systems :

Heritability, repeatability and genetic and phenotypic correlations, their methods of estimation and precision of estimates, Aids to selection and their relative merits; Individual, pedigree, family and within family selection; Progeny testing, Methods of selection; Construction of selection indices and their uses; Comparative evaluation of genetic gains through various selection methods; Indirect selection and Co-related response; Inbreeding, upgrading, cross-breeding and synthesis of breeds; Crossing of inbred lines for commercial production; Selection for general and specific combining ability; Breeding for threshold characters.

PAPER II

1. Health and Hygiene :

1.1. Histology and Histological Techniques :

Stains—Chemicals classification of stains used in biological work—Principles of staining tissues—mordants—progressive & regressive stains—differential staining of cytoplasmic and connective tissue elements—Methods of preparation and processing of tissues—celloidin embedding—Freezing microtomy—Microscopy—Bright field microscope and electron microscope. Cytology—structure of cell, organells & inclusions; cell division—cell types—tissues and their classification—embryonic and adult tissues—Comparative histology of organs :—vascular, Nervous, digestive, respiratory, musculo—skeletal and urogenital systems—Endocrine glands—Integuments—sense organs.

1.2 Embryology :

Embryology of vertebrates with special reference to aves and domestic mammals—gametogenesis—fertilization—germ layers—foetal membranes & placentation—types of placenta in domestic mammals—Teratology—twins & twinning—organogenesis—germ layer derivatives—endodermal, mesodermal and ectodermal derivatives.

1.3 Bovine Anatomy—Regional Anatomy :

Paranasal sinuses of OX—surface anatomy of salivary glands. Regional anatomy of infraorbital, maxillary, mandibuloalveolar, mental & cornual nerve block—Regional anatomy of paravertebral nerves, pudendal nerve, median, ulnar & radial nerves—tibial, fibular and digital nerve—Cranial nerves—structures involved in epidural anaesthesia—superficial lymph nodes—surface anatomy of visceral organs of thoracic abdominal and pelvic cavities—comparative features of locomotor apparatus & their application in the biomechanics of mammalian body.

1.4 Anatomy of Fowl :

Musculo—skeletal system—functional anatomy in relation to respiration and flying digestion and egg production.

1.5 Physiology of blood and its circulation, respiration; excretion, Endocrine glands in health and disease.

1.5.1 Blood constituents :

Properties and functions—blood cell formation—Haemoglobin synthesis and chemistry—plasma proteins production, classification and properties; coagulation of blood; Haemorrhagic disorders—anticoagulants—blood groups—Blood volume—Plasma expanders—Buffer systems in blood. Biochemical tests and their significance in disease diagnosis.

1.5.2 Circulation :

Physiology of heart, cardiac cycle—heart sounds, heart beat, electrocardiograms, Work and efficiency of heart—effect of ions on heart function—metabolism of cardiac muscle, nervous and chemical regulation of heart, effect of temperature and stress on heart, blood pressure and hypertension, Osmotic regulation, arterial pulse, vasomotor regulation of circulation, shock. Coronary & pulmonary circulation—Blood—Brain barrier—Cerebrospinal fluid—circulation in birds.

1.5.3 Respiration :

Mechanism of respiration, Transport and exchange of gases—neural control of respiration—chemoreceptors—hypoxia—respiration in birds.

1.5.4 Excretion :

Structure and function of kidney—formation of urine—methods of studying renal function—renal regulation of acid—base balance; physiological constituents of urine—renal failure—passive venous congestion—Urinary recreation in chicken—Sweat glands and their function. Biochemical tests for urinary dysfunction.

1.5.5 Endocrine glands :

Functional disorders their symptoms and diagnosis. Synthesis of hormones, mechanism and control of secretion—hormonal receptors—classification and function.

1.6 General knowledge of pharmacology and therapeutics of drugs :

Cellular level of pharmacodynamics and pharmacokinetics—Drugs acting on fluids and electrolyte balance—drugs acting on autonomic nervous systems—Modern concepts of anaesthesia and dissociative anaesthetics—autocoids—Antimicrobials and principles of chemotherapy in microbial infections—use of hormones in therapeutics—chemotherapy of parasitic infections—Drug and economic persons in the Edible tissues of animals—chemotherapy of Neoplastic diseases.

1.7 Veterinary Hygiene with reference to water, air and habitation :

Assesment of pollution of water, air and soil—Importance of climate in animal health—effect of environment on animal function and performance—relationship between industrialisation and animal agriculture—animal housing requirements for specific categories of domestic animals viz. pregnant cows & sows, milking cows, boiler birds—stress, strain & productivity in relation to animal habitation.

2. Animal Diseases :

2.1 Pathogenesis, symptoms, postmortum lesions, diagnosis, and control of infection diseases of cattle, pigs and poultry, horses, sheep and goats.

2.2 Etiology, symptoms, diagnosis, treatment of production diseases of cattle, pig and poultry.

2.3 Deficiency diseases of domestic animals and birds.

2.4 Diagnosis and treatment of non-specific condition like impaction, Bloat, Diarrhoea. Indigestion, dehydration, stroke, poisoning.

2.5 Diagnosis and treatment of neurological disorders.

2.6 Principles and methods of immunisation of animals against specific diseases—hard immunity—disease free zones—'zero' disease concept—chemoprophylaxis.

2.7 Anaesthesia—local, regional and general—preanaesthetic medication, Symptoms and surgical interference in fractures and dislocation, Hernia, choking abomasal displacement—Caesarian operations, rumenotomy—Castrations.

2.8 Disease investigation techniques—Materials for laboratory investigation—Establishment Animal Health Centres—Disease free zone.

3. Veterinary Public Health :

3.1 Zoonoses :

Classification, definition; role of animals and birds in prevalence and transmission of zoonotic diseases—occupational zoonotic diseases.

3.2 Epidemiology :

Principles, definition of epidemiological terms, application of epidemiological measures in the study of diseases and disease control, epidemiological features of air, water and food borne infections.

3.3 Veterinary Jurisprudence :

Rules and Regulations for improvement of animal quality and prevention of animal diseases—state and control Rules for prevention of animal and animal product borne diseases—S.P. C.A.—veterolegal cases—certificates—Materials and Methods of collection of samples for veterolegal investigation.

4. Milk and Milk Product Technology :

4.1 Milk Technology :

Organization of rural milk procurement, collection and transport of raw milk.

Quality, testing and grading raw milk, Quality Storage grades of whole milk, Skimmed milk and cream. Processing, packaging, storing, distributing, marketing defects and their control and nutritive properties of the following milks : Pasteurized, standardized, toned, double toned, sterilized, homogenized, reconstituted, recombined and flavoured milks. Preparation of cultured milks, cultures and their management, yoghurt, Dahi, Lassi and Srikhand.

Preparation of flavoured and sterilized milks. Legal standards, sanitation requirement for clean and safe milk and for the milk plant equipment.

4.2 Milk Products Technology :

Selection of raw materials, assembling, production, processing, storing, distributing and marketing milk products such as Butter, Ghee, Khoa, Channa, Cheese: Condensed, evaporated, dried milk and baby food; Ice cream and Kulfi; by products; whey products, butter milk, lactose and casein. Testing, Grading, judging milk products—BIS and Agmark specifications, legal standards, quality control nutritive properties. Packaging, processing and operational control Costs.

5. Meat Hygiene and Technology :

5.1 Meat Hygiene :

5.1.1 Ante mortem care and management of food animals, stunning, slaughter and dressing operations; abattoir requirements and designs; Meat inspection procedures and judgement of carcass meat cuts—grading of carcass meat cuts—duties and functions of Veterinarians in wholesome meat production.

5.1.2 Hygienic methods of handling production of meat—spoilage of meat and control measures—Post slaughter physicochemical changes in meat and factors that influence them—Quality improvement methods—Adulteration of meat and defecation—Regulatory provisions in Meat trade and Industry.

5.2 Meat Technology :

5.2.1 Physical and chemical characteristics of meat—meat emulsions—methods of preservation of meat—curing, canning, irradiation, packaging of meat and meat products; meat products and formulations.

5.3 By products :

Slaughter house by products and their utilisation—Edible and inedible by products—social and economic implications of proper utilisation of slaughter house by products—Organ products for food and pharmaceuticals.

5.4 Poultry Products Technology :

Chemical composition and nutritive value of poultry meat, pre slaughter care and management. Slaughtering techniques, inspection, preservation of poultry meat, and products. Legal and BIS standards.

Structure, composition and nutritive value of eggs. Microbial spoilage. Preservation and maintenance. Marketing of poultry meat, eggs and products.

5.5 Rabbit/Fur Animal farming.—Care and management of rabbit meat production. Disposal and utilisation of fur and wool and recycling of waste by products. Grading of wool.

6. Extension.—Basic philosophy, objectives, concept and principles of extension. Different Methods adopted to

educate farmers and rural conditions. Generation of technology, its transfer and feedback. Problems of constraints in transfer of technology. Animal husbandry programmes for rural development.

BOTANY

PAPER—I

1. Microbiology and Plant Pathology.—Viruses, bacteria, and plasmids—structure and reproduction. General accounts of infection. Phytoimmunology. Application of microbiology in agriculture, industry, medicine and pollution control in air, soil and water.

Important plant diseases caused by viruses, bacteria, mycoplasma, fungi and nematodes. Modes of infection and dissemination. Molecular basis of infection and disease resistance/defence. Physiology of parasitism and control measures. Fungal toxins.

2. Cryptogams.—Algae, Fungi, Bryophytes, Pteridophytes—structure and reproduction from evolutionary viewpoint. Distribution of Cryptogams in India and their economic potential.

3. Phanerogams—Gymnosperms : Concept of Progymnosperms. Classification and distribution of Gymnosperms. Salient features of Cycadales, Coniferales and Gnetales, their structures and reproduction. General account of Cycadofilicales, Bennettitales and Cordiales.

Angiosperms.—Systematics, anatomy, embryology, palynology and phylogeny.

Comparative account of various systems of Angiosperm. Classification. Study of angiospermic families—Magnoliaceae, Ranunculaceae, Brassicaceae (Cruciferae), Rosaceae, Leguminosae, Euphorbiaceae, Malvaceae, Dipterocarpaceae, Apiaceae (Umbelliferae), Asclepiadaceae, Verbenaceae, Solanaceae, Rubiaceae, Cucurbitaceae, Asteraceae (Compositae), Poaceae (Gramineae), Arecaceae (Palmae), Liliaceae, Musaceae, Orchidaceae.

Stomata and their types. Anomalous secondary growth. Anatomy of C₃ and C₄ plants.

Development of male and female gametophytes, pollination, fertilization. Endosperm—its development and function. Patterns of embryo development. Polyembryony, apomixis. Applications of palynology.

4. Plant Utility and Exploitation—Origin of cultivated plants, Vavilov's centres of origin. Plants as sources for food, fodder, fibres, spices, beverages, drugs, narcotics, insecticides, timber, gums, resins and dyes.

Latex, cellulose Starch and their products. Perfumery, Importance of Ethnobotany in Indian context. Energy plantation. Botanical Gardens and Herbaria.

5. Morphogenesis.—Totipotency, polarity, symmetry and differentiation. Cell, tissue, organ and protoplast culture. Somatic hybrids and Cybrids.

PAPER—II

1. Cell Biology.—Techniques of Cell Biology. Prokaryotic and eukaryotic cells—structural and ultrastructural details. Structure and function of extracellular matrix or ECM (cell wall) and membranes—cell adhesion, membrane transport and vesicular transport. Structure and function of cell organelles (chloroplasts, mitochondria, ER, ribosomes, endosomes, lysosomes, peroxisomes, hydrogenosome). Nucleus, nucleolus, nuclear pore complex, Chromatin and nucleosome. Cell signalling and cell receptors. Signal transduction (G-1 proteins, etc.). Mitosis and meiosis, molecular basis of cell cycle. Numerical and structural variations in chromosomes and their significance. Study of polytene, lampbrush and B-chromosomes—structure, behaviour and significance.

2. Genetics, Molecular Biology and Evolution.—Development of genetics, and gene versus allele concepts (Pseudoalleles). Quantitative genetics and multiple factors. Linkage and crossing over—methods of gene mapping including molecular maps (idea of mapping function). Sex chromosomes and sexlinked inheritance, sex determination and molecular basis of sex differentiation. Mutations (biochemical and molecular basis), Cytoplasmic inheritance and cytoplasmic genes (including genetics of male sterility). Prions and prion hypothesis.

- Structure and synthesis of nucleic acids and proteins.
- Genetic code and regulation of gene expression.
- Multigene families.
- Organic evolution—evidences, mechanism and theories.
- Role of RNA in origin and evolution.

3. Plant Breeding, Biotechnology and Biostatistics.—Methods of plant breeding—introduction, selection and hybridization (pedigree, backcross, mass selection, bulk method). Male sterility and heterosis breeding. Use of apomixis in plant breeding. Micropropagation and genetic engineering—methods of transfer of genes and transgenic crops; development and use of molecular markers in plant breeding.

Standard deviation and coefficient of variation (CV). Tests of significance (Z-test, t-test and chi-square tests). Probability and distributions (normal, binomial and Poisson distributions). Correlation and regression.

4. Physiology and Biochemistry.—Water relations, Mineral nutrition and ion transport, mineral deficiencies. Photo-synthesis—photochemical reactions photo-phosphorylation and carbon pathways including C pathway (photorespiration), C, C and CAM pathways. Respiration (anaerobic and aerobic, including fermentation)—electron transport chain and oxidative phosphorylation. Chemiosmotic theory and ATP synthesis. Nitrogen fixation and nitrogen metabolism. Enzymes, coenzymes, energy transfer and energy conservation. Importance of secondary metabolites. Pigments as photoreceptors (plastidial pigments

and phytochrome). Photoperiodism and flowering, vernalization, senescence. Growth substances—their chemical nature, role and application in agri-horticulture, growth indices, growth movements. Stress physiology (heat, water, salinity, metal). Fruit and seed physiology. Dormancy, storage and germination of seed. Fruit ripening—its molecular basis and manipulation.

5. Ecology and Plant Geography.—Ecological factors. Concepts and dynamics of community. Plant succession. Concepts of biosphere. Ecosystems and their conservation. Pollution and its control (including phytoremediation).

Forest types of India—afforestation, deforestation and social forestry. Endangered plants, endemism and Red Data Books. Biodiversity. Convention of Biological Diversity, Sovereign Rights and Intellectual Property Rights. Biogeochemical cycles. Global warming.

CHEMISTRY**PAPER—I****1. Atomic structure :**

Quantum theory, Heisenberg's uncertainty principle, Schrodinger wave equation (time independent). Interpretation of wave function, particle in one-dimensional box, quantum numbers, hydrogen atom wave functions. Shapes of s, p and d orbitals.

2. Chemical bonding :

Ionic bond, characteristics of ionic compounds, factors affecting stability of ionic compounds, lattice energy, Born-Haber cycle; covalent bond and its general characteristics, polarities of bonds in molecules and their dipole moments. Valence bond theory, concept of resonance and resonance energy. Molecular orbital theory (LCAO method); bonding in homonuclear molecules : H_2^+ , H_2 to Ne_2 , NO , CO , HF , CN , CN , BeH_2 and CO_2 . Comparison of valence bond and molecular orbital theories, bond order, bond strength and bond length.

3. Solid state :

Forms of solids, law of constancy of interfacial angles, crystal systems and crystal classes (crystallographic groups). Designation of crystal faces, lattice structures and unit cell. Laws of rational indices. Bragg's law. X-ray diffraction by crystals. Close packing, radius ratio rules, calculation of some limiting radius ratio values. Structures of $NaCl$, ZnS , $CsCl$, CaF_2 , CH_4 and rutile. Imperfections in crystals, stoichiometric and nonstoichiometric defects, impurity defects, semiconductors. Elementary study of liquid crystals.

4. The gaseous state :

Equation of state for real gases, intermolecular interactions, liquification of gases and critical phenomena, Max-well's distribution of speeds, intermolecular collisions, collisions on the wall and effusion.

5. Thermodynamics and statistical thermodynamics :

Thermodynamic systems, states and processes, work, heat and internal energy; first law of thermodynamics, work done on the systems and heat absorbed in different types

of processes; calorimetry, energy and enthalpy changes in various processes and their temperature dependence.

Second law of thermodynamics; entropy as a state function, entropy changes in various processes, entropy—reversibility and irreversibility. Free energy functions; criteria for equilibrium, relation between equilibrium constant and thermodynamic quantities; Nernst heat theorem and third law of thermodynamics.

Micro and macro states; canonical ensemble and canonical partition function; electronic, rotational and vibrational partition functions and thermodynamic quantities; chemical equilibrium in ideal gas reactions.

6. Phase equilibria and solutions :

Phase equilibria in pure substances; Clausius-Clapeyron equation; phase diagram for a pure substance; phase equilibria in binary systems, partially miscible liquids—upper and lower critical solution temperatures; partial molar quantities, their significance and determination; excess thermodynamic functions and their determination.

7. Electrochemistry :

Debye-Hückel theory of strong electrolytes and Debye-Hückle limiting Law for various equilibrium and transport properties.

Galvanic cells, concentration cells; electrochemical series, measurement of e.m.f. of cells and its applications; fuel cells and batteries.

Processes at electrodes; double layer at the interface; rate of charge transfer, current density; overpotential; electroanalytical techniques—voltammetry, polarography, amperometry, cyclic-voltammetry, ion selective electrodes and their use.

8. Chemical kinetics :

Concentration dependence of rate of reaction; differential and integral rate equations for zeroth, first, second and fractional order reactions. Rate equations involving reverse, parallel, consecutive and chain reactions; effect of temperature and pressure on rate constant. Study of fast reactions by stop-flow and relaxation methods. Collisions and transition state theories.

9. Photochemistry :

Adsorption of light; decay of excited state by different routes; photochemical reactions between hydrogen and halogens and their quantum yields.

10. Surface phenomena and catalysis :

Adsorption from gases and solutions on solid adsorbents, adsorption isotherms—Langmuir and B.E.T. isotherms; determination of surface area, characteristics and mechanism of reaction on heterogeneous catalysts.

11. Bio-inorganic chemistry :

Metal ions in biological systems and their role in ion-transport across the membranes (molecular mechanism),

ionophores, photosynthesis—PSI, PSH; nitrogen fixation, oxygen-uptake proteins, cytochromes and ferredoxins.

12. Coordination chemistry :

(a) Electronic configurations; introduction to theories of bonding in transition metal complexes. Valence bond theory, crystal field theory and its modifications; applications of theories in the explanation of magnetism and electronic spectra of metal complexes.

(b) Isomerism in coordination compounds. IUPAC nomenclature of coordination compounds; stereochemistry of complexes with 4 and 6 coordination numbers; chelate effect and polynuclear complexes; trans effect and its theories; kinetics of substitution reactions in square-planar complexes; thermodynamic and kinetic stability of complexes.

(c) Synthesis and structures of metal carbonyls; carboxylate anions, carbonyl hydrides and metal nitrosyl compounds.

(d) Complexes with aromatic systems, synthesis, structure and bonding in metal olefin complexes, alkyne complexes and cyclopentadienyl complexes coordinative unsaturation, oxidative addition reactions, insertion reactions, fluxional molecules and their characterization. Compounds with metal-metal bonds and metal atom clusters.

13. General chemistry of 'f' block elements :

Lanthanides and actinides; separation, oxidation stated magnetic and spectral properties; lanthanide contraction.

14. Non-Aqueous Solvents :

Reactions in liquid NH₃, HF, SO₂ and H₂SO₄. Failure of solvent system concept, coordination model of non-aqueous solvents. Some highly acidic media, fluorosulphuric acid and super acids.

PAPER-II

1. Delocalised covalent bonding :—Aromaticity, anti-aromaticity; annulenes, azulenes, tropolones, kekulene, fulvenes, sydrones.

2 (a). Reaction mechanisms :—General methods (both kinetic and non-kinetic of study of mechanisms or organic reactions illustrated by examples—use of isotopes, crossover experiment, intermediate trapping, stereochemistry; energy diagrams of simple organic reaction—transition states and intermediates; energy of activation; thermodynamic control and kinetic control of reactions.

(b) Reactive intermediates :—Generation, geometry, stability and reactions of carbonium and carbenium ions, carban-ions, free radicals, carbenes, benzyne and nitrenes.

(c) Substitution reactions :—SN1, SN2, Sni, SN1', SN2', SNI' and SRN1 mechanisms; neighbouring group participation; electrophilic and nucleophilic reactions of aromatic compounds including simple heterocyclic compounds—pyrrole furan, thiophene, indole.

(d) Elimination reactions :—E1, E2 and E1cb mechanisms orientation in E2 reactions—Saytzeff and Hoffmann; pyrolytic *syn* elimination—acetate pyrolysis, Chugaev and Cope elimination.

(e) Addison reactions :—Electrophilic addition to C = C and C = C nucleophilic addition to C = O, C = N, conjugated olefins and carbonyls.

(f) Rearrangements :—Pinacol—pinacolone, Hoffmann, Beckmann, Baeyer—Villiger, Favorskii, Fries, Claisen, Cope, Stevens and Wagner—Meerwein rearrangements.

3. Pericyclic reactions :—Classification and examples Woodward—Hoffmann rules—electrocyclic reactions, cyclo-addition reactions [2+2 and 4+2 and] and sigmatropic shifts [1, 3; 3,3 and 1,5], FMO approach.

4. Chemistry and mechanism of reactions :—Aldol condensation (including directed aldol condensation), Claisen condensation, Dieckmann, Perkin, Knoevenagel, Wittig, Clemmensen, Wolff—Kishner, Cannizzaro and von Richter reactions; Stobbe, benzoin and acyloin condensations; Fischer indole synthesis, Skraup synthesis, Bischler—Napieralski, Sandmeyer, Reimer—Tiemann and Reformatsky reactions.

5. Polymeric Systems :

(a) Physical chemistry of polymers :—Polymer solutions and their thermodynamic properties; number and weight average molecular weights of Polymers. Determination of molecular weights by sedimentation, light scattering, osmotic pressure, viscosity, end group analysis methods.

(b) Preparation and properties of polymers :—Organic polymers—polyethylene, polystyrene, polyvinyl chloride, Teflon, nylon, terylene, synthetic and natural rubber. Inorganic polymers—phosphonitrilic halides, borazines, silicones and silicates.

(c) Biopolymers :—Basic bonding in proteins, DNA and RNA.

6. Synthetic uses of reagents :—OsO₄, HIO₄, CrO₃, Pb(OAc)₄, SeO₂, NBS, B₂H₆, Na-Liquid NH₃, LiAlH₄, NaBH₄, *n*BuLi, MCPBA.

7. Photochemistry :—Photochemical reactions of simple organic compounds, excited and ground states, singlet and triplet states, Norrish—Type I and Type II reactions.

8. Principles of spectroscopy and applications in structure elucidation.

(a) Rotational spectra :—Diatomeric molecules; isotopic substitution and rotational constants.

(b) Vibrational spectra :—Diatomeric molecules; linear triatomic molecules, specific frequencies of functional groups in polyatomic molecules.

(c) Electronic spectra :—Singlet and triplet states, P(^RP*) and P(^RP*) transitions; application to conjugated double bonds and conjugated carbonyls—Woodward-Fieser rules.

(d) Nuclear magnetic resonance :—Isochronous and aniso-chronous protons; chemical shift and coupling constants;

Application of H¹ NMR to simple organic molecules.

(e) Mass spectra :—Parent peak, base peak, daughter peak, metastable peak, fragmentation of simple organic molecules;

f—cleavage, McLafferty rearrangement

(f) Electron spin resonance :—Inorganic complexes and free radicals.

CHEMICAL ENGINEERING

PAPER-I

Section A

(a) Fluid and particle Dynamics

Viscosity of fluids. Laminar and turbulent flows. Equation of continuity and Navier—Stokes equation—Bernoulli's theorem. Flow meters. Fluid drag and pressure drop due to friction, Reynolds Number and friction factor—effect of pipe roughness. Economic pipe diameter, Pumps, water, air/steam jet ejectors, compressors, blowers and fans. Agitation and mixing of liquids. Mixing of solids and pastes. Crushing and Grinding—principles and equipment Rittinger's and Bond's laws. Filtration and filtration equipment. Fluid-particle mechanics—free and hindered settling. Fluidisation and minimum fluidization velocity, concepts of compressible and incompressible flow. Transport of Solids.

(b) Mass Transfer

Molecular diffusion coefficients, first and second law of diffusion, mass transfer coefficients, film and penetration theories of mass transfer. Distillation, simple distillation relative volatility, fractional distillation, plate and packed columns for distillation. Calculation of theoretical number of plates; Liquid equilibria. Extraction—theory and practice; Design of gas absorption columns. Drying. Humidification, dehumidification. Crystallisation. Design of equipment.

(c) Heat Transfer

Conduction, thermal conductivity, extended surface heat transfer.

Convection—free and forced. Heat transfer coefficients—Nusselt Number. LMTD and effectiveness. NTU methods for the design of Double Pipe and Shell & Tube Heat Exchangers. Analogy between heat and momentum transfer. Boiling and condensation heat transfer. Single and multiple—effect evaporators. Radiation—Stefan—Boltzmann Law, emissivity and absorptivity. Calculation of heat load of a furnace. Solar heaters.

Section B

(d) Novel Separation Processes

Equilibrium separation processes—ion-exchange, osmosis, electro—dialysis, reverse osmosis, ultra—filtration and other membrane processes. Molecular distillation. Super critical fluid extraction.

(e) Process Equipment Design

Factors affecting vessel design criteria—Cost considerations. Design of storage vessels—vertical, horizontal spherical, underground tanks for atmospheric and higher pressure. Design of closures flat and elliptical head, Design of supports. Materials of construction—characteristics and selection.

(f) Process Dynamics and Control

Measuring instruments for process variables like level, pressure, flow, temperature pH and concentration with indication in visual/phneumatic/analog/digital signal forms. Control variable manipulative variable and load variables. Linear control—Laplace transforms. PID controllers. Block diagram representation. Transient and frequency response, stability of closed loop systems. Advanced control strategies. Computer based process control.

PAPER II

Section A

(a) Material and energy Balances

Material and energy balance calculations in processes with recycle/bypass/purge. Combustion of solid/liquid/gaseous fuels, stoichiometric relationships and excess air requirements. Adiabatic flame temperature.

(b) Chemical Engineering Thermodynamics

Laws of thermodynamics. PVT relationship for pure components and mixtures. Energy functions and inter-relationships—Maxwell's relations. Fugacity activity and chemical potential. Vapour liquid equilibria for ideal/non-ideal, single and multicomponent systems. Criteria for chemical reaction equilibrium, equilibrium constant and equilibrium conversions. Thermodynamic cycles—refrigeration and power.

(c) Chemical Reaction Engineering

Batch reactors—kinetics of homogeneous reactions and interpretation of kinetic data. Ideal flow reactors—CSTR, plug flow reactors and their performance equations. Temperature effects and run-away reactions. Heterogeneous reactions—catalytic and non-catalytic and gas-solid and gas-liquid reactions. Intrinsic kinetics and global rate concept. Importance of interphase and intraparticle mass transfer on performance. Effectiveness factor. Isothermal and non-isothermal reactors and reactor stability.

Section B

(d) Chemical Technology

Natural organic products—Wood and wood-based chemicals, pulp and paper, Agro industries—Sugar, Edible oils extraction (including tree-based seeds), Soaps and detergents. Essential oils. Biomass gasification (including biogas). Coal and coal chemical. Petroleum and Natural gas—Petroleum refining (Atmospheric distillation/cracking/reforming)—Petro-chemical industries—Polyethylenes

(LDPE/HDPE/LLDPE). Polyvinyl chloride, Polystyrene, Ammonia manufacture Cement and lime industries. Paints and varnishes. Glass ceramics. Fermentation—alcohol and antibiotics.

(e) Environmental Engineering and Safety

Ecology and Environment. Sources of pollutants in air water. Green house effect, ozone layer depletion, acid rain. Micrometeorology and dispersion of pollutants in environment. Measurement techniques of pollutant levels and their control strategies. Solid wastes, their hazards and their disposal techniques. Design and performance analysis of pollution control equipment. Fire and explosion hazard rating—HAZOP and HAZAM. Emergency planning disaster management Environmental legislations—water, air and environment protection Acts. Forest (Conservation) Act.

(f) Process Engineering Economic

Fixed and working capital requirement for a process industry and estimation methods. Cost estimation and comparison of alternatives. Net present value by discounted cash flow. Pay back analysis. IRR Depreciation, taxes and insurance. Break-even point analysis. Project scheduling—PERT and CPM. Profit and loss account, balance sheet and financial statement. Plant location and plant layout including piping.

CIVIL ENGINEERING**PAPER-I****Part-A : ENGINEERING MECHANICS, STRENGTH OF MATERIALS AND STRUCTURAL ANALYSIS.****ENGINEERING MECHANICS :**

Units and Dimensions, SI Units, Vectors, Concept of Force, concept of particle and rigid body. Concurrent, Non Concurrent and parallel forces in a plane, moment of force and Varignon's theorem, free body diagram, conditions of equilibrium, Principle of virtual work, equivalent force system.

First and Second Moment of area, Mass moment of Inertia.

Static Friction, Inclined Plane and bearings.

Kinematics and Kinetics :

Kinematics in cartesian and Polar Co-ordinates, motion under uniform and non-uniform acceleration, motion under gravity. Kinetics of particle : Momentum and Energy principles, 'D'Alembert's Principle, Collision of elastic bodies, rotation of rigid bodies, simple harmonic motion, Flywheel.

STRENGTH OF MATERIALS :

Simple Stress and Strain, Elastic constants, axially loaded compression members, Shear force and bending moment, theory of simple bending, shear Stress distribution across cross sections. Beams of uniform strength, Leaf spring. Strain Energy indirect stress, bending & shear.

Deflection of beams : Mecaulay's Method, Mohr's Moment area method, Conjugate beam method, unit load

method. Torsion of Shafts, Transmission of power, close coiled helical springs, Elastic stability of columns. Fuler's, Rankine's and Secant formulae. Principal Stresses and Strains in two dimensions, Mohr's Circle, Theories and Elastic Failure, Thin and Thick cylinders : Stresses due to internal and external pressure—Lame's equations.

STRUCTURAL ANALYSIS :

Castiglionario's theorems I and II, Unit load method, method of consistent deformation applied to beams and pin jointed trusses. Slope-deflection, moment distribution, Kani's method of analysis and column analogy method applied to indeterminate beams and rigid frames.

Rolling loads and Influences lines : Influences lines for Shear Force and Bending moment at a section of a beam. Criteria for maximum shear force and bending Moment in beams traversed by a system of moving loads. Influences lines for simply supported plane pin jointed trusses.

Arches : Three hinged, two hinged and fixed arches, rib shortening and temperature effects, influence lines in arches.

Matrix methods of analysis : Force method and displacement method of analysis of indeterminate beams and rigid frames.

Plastic Analysis of beams and frames : Theory of plastic bending, plastic analysis, statical method. Mechanism method.

Unsymmetrical bending : Moment of inertia, product of inertia, position of Neutral Axis and Principal axis, calculation of bending stresses.

Part-B : DESIGN OF STRUCTURES : STEEL, CONCRETE AND MASONRY STRUCTURES.

STRUCTURAL STEEL DESIGN :

Structural Steel : Factors of safety and load factors. Riveted, bolted and welded joints and connections. Design of tension and compression members, beams of built up section, riveted and welded plate girders, gantry girders, stanchions with batten and lacings, slab and gussetted column bases.

Design of highway and railway bridges : Through and deck type plate girder, Warren girder, Pratt truss.

DESIGN OF CONCRETE AND MASONRY STRUCTURES :

Concept of mix design. Reinforced Concrete : Working Stress and Limit State method of design—Recommendations of I.S. codes, design of one way and two way slabs, staircase slabs, simple and continuous beams of rectangular, T and L sections, compression members under direct load with or without eccentricity, Isolated and combined footings.

Cantilever and Counterfort type retaining walls.

Water tanks : Design requirements for Rectangular and circular tanks resting on ground.

Prestressed concrete : Methods and systems of prestressing, anchorages, Analysis and design of sections for flexure based on working stress, loss of prestress.

Design of brick masonry as per I.S. codes.

Design of masonry retaining walls.

Part-C : FLUID MECHANICS, OPEN CHANNEL FLOW AND HYDRAULIC MACHINES

FLUID MECHANICS :

Fluid properties and their role in fluid motion, fluid statics including forces acting on plane and curve surfaces.

Kinematics and Dynamics of Fluid flow : Velocity and accelerations, stream lines, equation of continuity, irrotational and rotational flow, velocity potential and stream functions, flownet, methods of drawing flownet, sources and sinks, flow separation, free and forced vortices.

Control volume equation, continuity, momentum, energy and moment of momentum equations from control volume equation, Navier-Stokes equation, Euler's equation of motion, application to fluid flow problems, pipe flow, plane, curved, stationary and moving vanes, sluice gates, weirs, orifice meters and Venturi meters.

Dimensional Analysis and Similitude : Buckingham's Pi-theorem, dimensionless parameters, similitude theory, model laws, undistorted and distorted models.

Laminar Flow : Laminar flow between parallel, stationary and moving plates, flow through tube.

Boundary layer : Laminar and turbulent boundary layer on a flat plate, laminar sublayer, smooth and rough boundaries, drag and lift.

Turbulent flow through pipes : Characteristics of turbulent flow, velocity distribution and variation of pipe friction factor, hydraulic grade line and total energy line, siphons, expansions and contractions in pipes, pipe networks, water hammer in pipes and surge tanks.

Open channel flow : Uniform and non-uniform flows, momentum and energy correction factor, specific energy and specific force, critical depth, resistance equations and variation of roughness coefficient, rapidly varied flow, flow in contractions, flow at sudden drop, hydraulic jump and its applications, surges and waves, gradually varied flow, classification of surface profiles, control section, step method of integration of varied flow equation, moving surges and hydraulics bore.

HYDRAULIC MACHINES AND HYDROPOWER :

Centrifugal pumps—Types, characteristics, Net Positive Suction Height (NPSH), specific speed. Pumps in parallel.

Reciprocating pumps, Airvessels, hydraulic ram, efficiency parameters, Rotary and positive displacement pumps, diaphragm and jet pumps.

Hydraulic turbines, types, classification, choice of turbines, performance parameters, control, characteristics, specific speed.

Principles of hydropower development, Types, layouts and Component works. Surger tanks, types and choice. Flow duration curves and dependable flow. Storage and pondage. Pumped storage plants. Special features of mini, micro-hydel plants.

Part-D : GEO-TECHNICAL ENGINEERING

Types of soil, phase relationships, consistency limits, particle size distribution, classification of soil, structure and clay mineralogy.

Capillary water and structural water, effective stress and pore water pressure, Darcy's, Law, factors affecting permeability, determination of permeability, permeability of stratified soil deposits.

Seepage pressure, quicksand condition, compressibility and consolidation, Terzaghi's theory of one dimensional consolidation, consolidation test.

Compaction of soil, field control of compaction. Total stress and effective stress parameters, pore pressure coefficients.

Shear strength of soils, Mohr Coulomb failure theory, Shear tests.

Earth pressure at rest, active and passive pressures, Rankine's theory Coulomb's wedge theory, earth pressure on retaining wall, sheetpile walls, Braced excavation.

Bearing capacity, Terzaghi and other important theories net and gross bearing pressure.

Immediate and consolidation settlement.

Stability of slope, Total Stress and Effective Stress methods, Conventional methods of slice, stability number.

Subsurface exploration, methods of boring, sampling, penetration tests, pressure meter tests.

Essential features of foundation, types of foundation, design criteria, choice of type of foundation, stress distribution in soils, Boussinessq's theory, Newmark's chart, pressure bulb, contact pressure, applicability of different bearing capacity theories, evaluation of bearing capacity from field tests, allowable bearing capacity, Settlement analysis, allowable settlement.

Proportioning of footing, isolated and combined footings, rafts, buoyancy rafts, Pile foundation, types of piles, pile capacity, static and dynamic analysis, design of pile groups, pile load test, settlement of piles, lateral capacity. Foundation for Bridges. Ground improvement techniques—preloading sand drains, stone column, grouting, soil stabilisation.

PAPER-II

Part-A : CONSTRUCTION TECHNOLOGY, EQUIPMENT, PLANNING AND MANAGEMENT

1. CONSTRUCTION TECHNOLOGY :

ENGINEERING MATERIALS :

Physical properties of construction materials : Stones, Bricks and Tiles; Lime, Cement and Surkhi Mortars; Lime Concrete and Cement concrete. Properties of freshly mixed and hardened concrete, flooring Tiles, use of ferro-cement, fibre-reinforced and polymer concrete, high strength concrete and light weight concrete. Timber : Properties and uses; defects in timber, seasoning and preservation of timber, Plastics, rubber and damp-proofing material, termite proofing, Material for Low cost housing.

CONSTRUCTION :

Building components and their functions; Brick masonry : Bonds, jointing. Stone masonry. Design of Brick masonry walls as per I.S. codes, factors of safety, serviceability and strength requirements; plastering, pointing. Types of Floors & Roofs. Ventilators, Repairs in buildings.

Functional planning of building : Building orientation, circulation, grouping of areas, privacy concept and design of energy efficient building; provisions of National Building Code.

Building estimates and specifications; cost of works; valuation.

2. CONSTRUCTION EQUIPMENT :

Standard and special types of equipment, Preventive maintenance and repair, factors affecting the selection of equipment, economical life, time and motion study, capital and maintenance cost.

Concreting equipments : Weigh batcher, mixer, vibrator, batching plant, Concrete pump.

Earth-work equipments : Power shovel, hoe, bulldozer, dumper, trailors and tractors, rollers, sheep foot roller.

3. CONSTRUCTION, PLANNING AND MANAGEMENT :

Construction activity, schedules, job layout, bar charts, organization of contracting firms, project control and supervision. Cost reduction measures.

Newwork analysis : CPM and PERT analysis, Float Times, crashing of activities, contraction of network for cost optimization, updating, Cost analysis and resource allocation.

Element of Engineering Economics, methods of appraisal, present worth, annual cost, benefit-cost, incremental analysis. Economy of scale and size. Choosing between alternatives including level of investment. Project profitability.

Part-B : SURVEY AND TRANSPORTATION ENGINEERING

Survey : Common methods of distance and angle measurement, plane table survey, levelling, traverse survey, triangulation survey, corrections and adjustments, contouring, topographical map. Surveying instruments for above purposes. Tacheometry. Circular and transition curves. Principles of photogrammetry.

Railways : Permanent way, sleepers, rail fastenings, ballast, points and crossings, design of turn outs, stations and yard, turntables, signals and inter-locking, level-crossing, construction and maintenance of permanent ways : Superelevation, creep of rail, ruling gradient, track resistance, tractive efforts, relaying of track.

Highway Engineering : Principles of highway planning, Highway alignments. Geometrical design : Cross section, camber, superelevation, horizontal and vertical curves, Classification of roads : low cost roads, flexible pavements, rigid pavements. Design of pavements and their construction, evaluation of pavement failure and strengthening.

Drainage of roads : Surface and sub-surface drainage.

Traffic Engineering : Forecasting techniques, origin and destination survey, highway capacity, channelised and unchannelised intersections, rotary design elements, markings, signs, signals, street lighting; Traffic surveys. Principle of highway financing.

Part-C: HYDROLOGY, WATER RESOURCES AND ENGINEERING

Hydrology : Hydrological cycle, precipitation, evaporation, transpiration, depression storage, infiltration, overland flow, hydrograph, flood frequency analysis, flood estimation, flood routing through a reservoir, channel flow routing-Muskingam method.

Ground water flow : Specific yield, storage coefficient, coefficient of permeability, confined and unconfined aquifers, aquitards, radial flow into a well under confined and unconfined conditions, tube wells, pumping and recuperation tests, ground water potential.

Water Resources Engineering : Ground and surface water resources, single and multipurpose projects, storage capacity of reservoirs, reservoir losses, reservoir sedimentation, economics of water resources projects.

Irrigation Engineering : Water requirements of crops : consumptive use, quality of water for irrigation, duty and delta, irrigation methods and their efficiencies.

Canals : Distribution systems for canal irrigation, canal capacity, canal losses, alignment of main and distributary canals, most efficient section, lined canals, their design, regime theory, critical shear stress, bed load, local and suspended load transport, cost analysis of lined, unlined canals, drainage behind lining.

Water logging : Causes and control, drainage system design, salinity.

Canal structures : Design of cross regulators, head regulators, canal falls, aqueducts, metering flumes and canal outlets.

Diversion head works : Principles and design of weirs on permeable and impermeable foundations, Khosla's theory, energy dissipation, stilling basin, sediment excluders.

Storage works : Types of dams, design, principles of rigid gravity and earth dams, stability analysis, foundation treatment, joints and galleries, control of seepage.

Spillways : Spillway types, crest gates, energy dissipation.

River training : Objectives of river training, methods of river training.

Part-D : ENVIRONMENTAL ENGINEERING

Water Supply : Estimation of surface and subsurface water resources, predicting demand for water, impurities of water and their significance, physical, chemical and bacteriological analysis, waterborne diseases, standards or potable water.

Intake of water : Pumping and gravity schemes. Water treatment : principles of coagulation, flocculation and sedimentation; slow-, rapid-, pressure-, filters; chlorination, softening, removal of taste, odour and salinity.

Water storage and distribution : Storage and balancing reservoirs : types, location and capacity. Distribution systems : layout, hydraulics of pipe lines, pipe fittings, valves including check and pressure reducing valves, meters, analysis of distribution systems, leak detection, maintenance of distribution systems, pumping stations and their operations.

Sewerage systems : Domestic and industrial wastes, storm sewage—separate and combined systems, flow through sewers, design of sewers, sewer appurtenances, manholes, inlets, junctions, siphon. Plumbing in public buildings.

Sewage characterisation : BOD, COD, solids, dissolved oxygen, nitrogen and TOC. Standards of disposal in normal water course and on land.

Sewage treatment : Working principles, units, chambers, sedimentation tank, trickling filters, oxidation ponds, activated sludge process, septic tank, disposal of sludge, recycling of waste water.

Solid waste : Collection and disposal in rural and urban contexts, management of long-term ill-effects.

Environmental Pollution : Sustainable development. Radioactive wastes and disposals. Environmental impact assessment for thermal power plants, mines, river valley projects. Air pollution. Pollution control acts.

FORESTRY
PAPER-I

Section A

1. Silviculture—General :

General Silvicultural Principles—ecological and physiological factors influencing vegetation; natural and artificial regeneration of forests; methods of propagation, grafting techniques, site factors; nursery and planting techniques—nursery beds, polybags and maintenance, water budgeting, grading and hardening of seedlings; special approaches, establishment and tending.

2. Silviculture-Systems :

Clear felling, uniform shelter wood selection, coppice and conversion systems. Management of silviculture systems of temperate, subtropical, humid tropical, dry tropical and coastal tropical forests with special reference to plantation : silviculture, choice of species, establishment and management of stands, enrichment methods, technical constraints, intensive mechanized methods, aerial seeding, thinning.

3. Silviculture-Mangrove and Cold desert :

Mangrove—habitat and characteristics, mangrove plantation-establishment and rehabilitation of degraded mangrove formations; silvicultural systems for mangrove; protection of habitats against natural disasters. Cold desert—characteristics, identification and management of species.

4. Silviculture of trees :

Traditional and recent advances in tropical silvicultural research and practices. Silviculture of some of the economically important species in India such as *Acacia catechu*, *Acacia nilotica*, *Acacia auriculiformis*, *Albizia lebbeck*, *Albizia procera*, *Anthocephalus Cadamba*, *Anogeissus latifolia*, *Azadirachta indica*, *Bamboo spp.*, *Butea monosperma*, *Cassia siamea*, *Casuarina equisetifolia*, *Cedrus deodara*, *chukrasia tabularis*, *Dalbergia sissoo*, *Dipterocarpus spp.*, *Emblica officinalis*, *Eucalyptus spp.*, *Gmelina arborea*, *Hardwickia binata*, *Lagerstroemia lanceolata*, *Pinus roxburghi*, *Populus spp.*, *Pterocarpus marsupium*, *Prosopis juliflora*, *Santalum album*, *Semecarpus anacardium*, *Shorea robusta*, *Salmania malabaricum*, *Tectona grandis*, *Terminalia tomentosa*, *tamarindus indica*.

Section B

1. Agroforestry, Social Forestry, Joint Forest Management and Tribology :

Agroforestry—scope and necessity; role in the life of people and domestic animals and in integrated land use, planning especially related to (i) soil and water conservation; (ii) water recharge; (iii) nutrient availability to crops; (iv) nature and eco-system preservation including ecological balances through pest-predator relationships and (v) providing opportunities for enhancing bio-diversity, medicinal and other flora and fauna. Agroforestry systems

under different agro-ecological zones; selection of species and role of multipurpose trees and NTFPs, techniques; food, fodder and fuel security. Research and Extension needs.

Social/urban Forestry—objectives, scope and necessity; peoples' participation.

JFM—principles, objectives, methodology, scope, benefits and role of NGOs.

Tribology—tribal scene in India; tribes, concept of races, principles of social grouping, stages of tribal economy, education, cultural tradition, customs, ethos and participation in forestry programmes.

2. Forest Soils, Soil Conservation and Watershed Management :

Forests soils—classification, factors affecting soil formation; physical, chemical and biological properties.

Soil Conservation—definition, causes for erosion; types—wind and water erosion; conservation and management of eroded soils/areas, wind breaks, shelter belts; sand dunes; reclamation of saline and alkaline soils, water logged and other waste lands. Role of forests in conserving soils, maintenance and build up of soil organic matter, provision of loppings for green leaf manuring; forest leaf litter and composting; role of microorganisms in ameliorating soils; N and C cycles, VAM.

Watershed Management—concepts of watersheds; role of mini-forests and forest trees in overall resource management, forest hydrology, watershed development in respect of torrent control, river channel stabilization, avalanche and landslide controls, rehabilitation of degraded areas, hilly and mountain areas; watershed management and environmental functions of forests; water-harvesting and conservation; ground water recharge and watershed management; role of integrating forest trees, horticultural crops, field crops, grass and fodders.

3. Environmental Conservation and Biodiversity :

Environment—components and importance, principles of conservation, impact of deforestation; forest fires and various human activities like mining, construction and developmental projects, population growth on environment.

Pollution—types, global warming, green house effects, ozone layer depletion, acid rain, impact and control measures, environmental monitoring; concept of sustainable development. Role of trees and forests in environmental conservation; control and prevention of air, water and noise pollution. Environmental policy and legislation in India. Environmental Impact Assessment. Economic assessment of watershed development *vis-a-vis* ecological and environmental protection.

4. Tree Improvement and Seed Technology :

General concept of tree improvement, methods and techniques, variation and its use, provenance, seed source,

exotics; quantitative aspects of forest tree improvement, seed production and seed orchards, progeny tests, use of tree improvement in natural forest and stand improvement, genetic testing programming, selection and breeding for resistance to diseases, insects, and adverse environment; the genetic base, forest genetic resources and gene conservation 'in-situ' and 'ex-situ', Cost-benefit ratio; economic evaluation.

PAPER-II

Section A

1. Forest Management and Management Systems :

Objective and principles; techniques; stand structure and dynamics, sustained yield relation; rotation, normal forest, growing stock; regulation of yield; management of forest plantations, commercial forests; forest cover monitoring. Approaches viz., (i) site-specific planning, (ii) strategic planning, (iii) approval, sanction and expenditure, (iv) Monitoring, (v) Reporting and governance. Details of steps involved such as formation of Village Forest Committees, Joint Forest Participatory Management.

2. Forest Working Plan :

Forest planning, evaluation and monitoring tools and approaches for integrated planning; multipurpose development of forest resources and forest industries development; working plans and working schemes, their role in nature conservation, bio-diversity and other dimensions; preparation and control. Divisional Working Plans, Annual Plan of Operations.

3. Forest Mensuration and Remote Sensing :

Methods of measuring—diameter, girth, height and volume of trees; form-factor; volume estimation of stand, current annual increment; mean annual increment. Sampling methods and sample plots. Yield calculation; yield and stand tables, forest cover monitoring through remote sensing; Geographic Information Systems for management and modelling.

4. Surveying and Forest Engineering :

Forest surveying—different methods of surveying, maps and map reading. Basic principles of forest engineering. Building materials and construction. Roads and Bridges; General principles, objects, types, simple design and construction of timber bridges.

Section B

1. Forest Ecology and Ethnobotany :

Forest ecology—Biotic and abiotic components, forest eco-systems; forest community concepts; vegetation concepts, ecological succession and climax; primary productivity, nutrient cycling and water relations; physiology in stress environments (drought, water logging, salinity and alkalinity). Forest types in India, identification of species, composition and associations; dendrology,

taxonomic classification, principles and establishment of herbaria and arboreta. Conservation of forest ecosystems. Clonal parks.

Role of Ethnobotany in Indian Systems of Medicine; Ayurveda and Unani—Introduction, nomenclature, habitat, distribution and botanical features of medicinal and aromatic plants. Factors affecting action and toxicity of drug plants and their chemical constituents.

2. Forest Resources and Utilisation :

Environmentally sound forest harvesting practices; logging and extraction techniques and principles; transportation systems, storage and sale; Non-Timber Forest Products (NTFPs)—definition and scope; gums, resins, oleoresins, fibres, oil seeds, nuts, rubber, canes, bamboos, medicinal plants, charcoal, lac and shellac, Katha and Bidi leaves, collection, processing and disposal.

Need and importance of wood seasoning and preservation; general principles of seasoning; air and kiln seasoning, solar dehumidification, steam heated and electrical kilns. Composite wood; adhesives—manufacture, properties, uses, plywood manufacture—properties, uses, fibre boards—manufacture properties, uses; particle boards—manufacture, properties, uses. Present status of composite wood industry in India and future expansion plans. Pulp-paper and rayon, present position of supply of raw material to industry, wood substitution, utilization of plantation wood; problems and possibilities.

Anatomical structure of wood, defects and abnormalities of wood, timber identification—general principles.

3. Forest Protection & Wildlife Biology :

Injuries to forest—abiotic and biotic, destructive agencies, insect—pests and disease, effects of air pollution on forests and forest die back. Susceptibility of forests to damage, nature of damage, cause, prevention, protective measures and benefits due to chemical and biological control. General forest protection against fire, equipment and methods, controlled use of fire, economic and environmental costs; timber salvage operations after natural disasters. Role of afforestation and forest regeneration in absorption of CO₂. Rotational and controlled grazing, different methods of control against grazing and browsing animal; effect of wild animals on forest regeneration, human impacts; encroachment, poaching, grazing, live fencing, theft, shifting cultivation and control.

4. Forest Economic and Legislation :

Forest economics—fundamental principles, cost-benefit analysis; estimation of demand and supply; analysis of trends in the national and international market and changes in production and consumption patterns; assessment and projection of market structures; role of private sector and cooperatives; role of corporate financing. Socio-economic analyses of forest productivity and attitudes; valuation of forest goods and service.

Legislation—History of forest development; Indian Forest Policy of 1894, 1952 and 1990. National Forest Policy, 1988 of People's involvement, Joint Forest Management, Involvement of women; Forestry Policies and issues related to land use, timber and non-timber products, sustainable forest management; industrialisation policies; institutional and structural changes. Decentralization and Forestry Public Administration. Forest laws, necessity; general principles, Indian Forest Act, 1927; Forest Conservation Act, 1980; Wildlife Protection Act, 1972 and their amendments; application of Indian penal Code to Forestry. Scope and objectives of Forest Inventory.

GEOLOGY

PAPER-I

Section A

(i) General Geology :

The Solar System, meteorites, origin and interior of the earth. Radioactivity and age of earth; Volcanoes—causes and products, volcanic belts. Earthquakes—causes, effects, earthquake belts, seismicity of India, intensity and magnitude, seismographs. Island arcs, deep sea trenches and mid-ocean ridges. Continental drift—evidence and mechanics; seafloor spreading, plate tectonics. Isostasy, orogeny and epeirogeny. Continents and oceans.

(ii) Geomorphology and Remote Sensing :

Basic concepts of geomorphology. Weathering and mass wasting. Landforms, slopes and drainage. Geomorphic cycles and their interpretation. Morphology and its relation to structures and lithology. Applications of geomorphology in mineral prospecting, civil engineering, hydrology and environmental studies. Geomorphology of Indian subcontinent.

Areal photographs and their interpretation—merits and limitations. The Electromagnetic Spectrum. Orbiting satellites and sensor systems. Indian Remote Sensing Satellites. Satellite data products. Applications of remote sensing in geology. The Geographic Information System and its applications. Global Positioning System.

(iii) Structural Geology :

Principles of geologic mapping and map reading, projection diagrams, stress and strain ellipsoid and stress-strain relationships of elastic, plastic and viscous materials. Strain markers in deformed rocks. Behaviour of minerals and rocks under deformation conditions. Folds and faults—classification and mechanics. Structural analysis of folds, foliations, lineations, joints and faults, unconformities. Superposed deformation. Time—relationship between crystallization and deformation. Introduction to petrofabrics.

Section B

(iv) Paleontology :

Spices—definition and nomenclature. megafossils and Microfossils. Modes of preservation of fossils. Different

kinds of microfossils. Application of microfossils in correlation, petroleum exploration, paleoclimatic and paleoceanographic studies. Morphology, geological history and evolutionary trend in Cephalopoda, Trilobita, Brachiopoda, echinoidea and anthozoa, Stratigraphic utility of Ammonoidea, trilobita and graptoloidea. Evolutionary trend in Hominidae, Equidae and Proboscidae, Siwalik fauna. Gondwana flora and its importance.

(v) Stratigraphy and Geology of India :

Classification of stratigraphic sequences : Lithostratigraphic, biostratigraphic, chronostratigraphic and magneto-stratigraphic and their interrelationships. Distribution and classification of Precambrian rocks of India. Study of stratigraphic distribution and lithology of Phanerozoic rocks of India with reference to fauna, flora and economic importance. Major boundary problems—Cambrian/Precambrian, Permian/Triassic, Cretaceous/tertiary and Pliocene/Pleistocene. Study of climatic conditions, paleogeography and igneous activity in the Indian subcontinent in the geological past. Tectonic framework of India. Evolution of the Himalayas.

(vi) Hydrogeology and Engineering Geology :

Hydrogeology cycle and genetic classification of water. Movement of subsurface water, Springs, Porosity, permeability, hydraulic conductivity, transmissivity and storage coefficient classification of aquifers. Water-bearing characteristics of rocks. Groundwater chemistry. Salt water intrusion. Types of wells. Drainage basin morphometry. Exploration for groundwater. Groundwater recharge. Problems and management of groundwater. Rainwater harvesting. Engineering properties of rocks. Geological investigations for dams, tunnels and bridges. Rock as construction material. Alkali-aggregate reaction. Landslides—causes, prevention and rehabilitation. Earthquake-resistant structures.

PAPER-II

Section A

(i) Mineralogy :

Classification of crystals into systems and classes of symmetry. International system of crystallographic notation. Use of projection diagrams to represent crystal symmetry. Crystal defects. Elements of X-ray crystallography.

Petrological microscope and accessories. Optical properties of common rock forming minerals. Pleochroism, extinction angle, double refraction, birefringence, twinning and dispersion in minerals.

Physical and chemical characters of rock forming silicate mineral groups. Structural classification of silicates. Common minerals of igneous and metamorphic rocks. Minerals of the carbonate, phosphate, sulphide and halide groups.

(ii) Igneous and Metamorphic Petrology :

Generation and crystallisation of magma. Crystallisation of albite—anorthite, diopside—anorthite and diopside—

wollastonite—silica systems. Reaction principle. Magmatic differentiation and assimilation. Petrogenetic significance of the textures and structures of igneous rocks. Petrography and petrogenesis of granite, syenite, diorite, basic and ultrabasic groups, charnockite, anorthosite and alkaline rocks. Carbonatites, Deccan volcanic province.

Types and agents of metamorphism. Metamorphic grades and zones. Phase rule. Facies of regional and contact metamorphism. ACF and AKF diagrams. Textures and structures of metamorphic rocks. Metamorphism of arenaceous, argillaceous and basic rocks. Mineral assemblages. Retrograde metamorphism. Metasomatism and granitisation, migmatites. Granulite terrains of India.

(iii) Sedimentology :

Sedimentary rocks : processes of formation, diagenesis and lithification. Properties of sediments. Clastic and non-clastic rocks—their classification, petrography and depositional environment. Sedimentary facies and provenance. Sedimentary structures and their significance. Heavy minerals and their significance. Sedimentary basins of India.

Section B

(iv) Economic Geology :

Ore, ore mineral and gangue, tenor of ore. Classification of ore deposits. Processes of formation of mineral deposits. Controls of ore localisation. Ore textures and structures. Metallogenic epochs and provinces. Geology of the important Indian deposits of aluminium, chromium, copper, gold, iron, lead, zinc, manganese, titanium, uranium and thorium and industrial minerals. Deposits of coal and petroleum in India. National Mineral Policy. Conservation and utilization of mineral resources. Marine mineral resources and Law of Sea.

(v) Mining Geology :

Methods of prospecting—geological, geophysical, geochemical and geobotanical. Techniques of sampling. Estimation of reserves of ore. Methods of exploration and mining—metallic ores, industrial minerals and marine mineral resources. Mineral beneficiation and ore dressing.

(vi) Geochemistry and Environmental Geology :

Cosmic abundance of elements. Composition of the planets and meteorites. Structure and composition of earth and distribution of elements. Trace elements. Elements of crystal chemistry—types of chemical bonds, coordination number. Isomorphism and polymorphism. Elementary thermodynamics.

Natural hazards—floods, landslides, coastal erosion, earthquakes and volcanic activity and mitigation. Environmental impact of urbanization, open cast mining, industrial and radioactive waste disposal, use of fertilizers, dumping of mine waste and fly-ash. Pollution of ground and surface water, marine pollution. Environment protection—legislative measures in India.

MATHEMATICS

PAPER-I

Section A

Linear Algebra :

Vector space, linear dependence and independence subspaces, bases, dimensions. Finite dimensional vector spaces.

Matrices, Cayley-Hamilton theorem, eigenvalues and eigenvectors, matrix of linear transformation, row and column reduction, Echelon form, equivalence, congruence and similarity, reduction to canonical form, rank, orthogonal, symmetrical, skew symmetrical, unitary, hermitian, skewhermitian forms—their eigenvalues. Orthogonal and unitary reduction of quadratic and hermitian forms, positive definite quadratic forms.

Calculus :

Real numbers, limits, continuity, differentiability, mean-value theorems, Taylor's theorem with remainders, indeterminate forms, maxima and minima, asymptotes. Functions of several variables : continuity, differentiability, partial derivatives, maxima and minima, Lagrange's method of multipliers, Jacobian. Riemann's definition of definite integrals, indefinite integrals, infinite and improper integrals, beta and gamma functions. Double and triple integrals (evaluation techniques only). Areas, surface and volumes, centre of gravity.

Analytic Geometry :

Cartesian and polar coordinates in two and three dimensions, second degree equations in two and three dimensions, reduction to canonical forms, straight lines, shortest distance between two skew lines, plane, sphere, cone, cylinder, paraboloid, ellipsoid, hyperboloid of one and two sheets and their properties.

Section B

Ordinary Differential Equations :

Formulation of differential equations, order and degree, equations of first order and first degree, integrating factor, equations of first order but not of first degree, Clairaut's equation, singular solution. Higher order linear equations with constant coefficients, complementary function and particular integral, general solution, Euler-Cauchy equation.

Second order linear equations with variable coefficients, determination of complete solution when one solution is known, method of variation of parameters.

Dynamics, Statics and Hydrostatics :

Degree of freedom and constraints, rectilinear motion, simple harmonic motion, motion in a plane, projectiles, constrained motion, work and energy, conservation of energy, motion under impulsive forces, Kepler's laws, orbits

under central forces, motion of varying mass, motion under resistance.

Equilibrium of a system of particles, work and potential energy, friction, common catenary, principle of virtual work, stability of equilibrium, equilibrium of forces in three dimensions.

Pressure of heavy fluids, equilibrium of fluids under given system of forces, Bernoulli's equation, centre of pressure, thrust on curved surfaces, equilibrium of floating bodies, stability of equilibrium, metacentre, pressure of gases.

Vector Analysis :

Scalar and vector fields, triple products, differentiation of vector function of a scalar variable, Gradient, divergence and curl in cartesian, cylindrical and spherical coordinates and their physical interpretations. Higher order derivatives, vector identities and vector equations.

Application to Geometry : Curves in space, curvature and torsion, Serret-Frenet's formulae, Gauss and Stokes' theorems, Green's identities.

PAPER—II

Section A

Algebra :

Groups, subgroups, normal subgroups, homomorphism of groups, quotient groups, basic isomorphism theorems, Sylow's group, permutation groups, Cayley theorem. Rings and ideals, principal ideal domains, unique factorization domains and Euclidean domains. Field extensions, finite fields.

Real Analysis :

Real number system, ordered sets, bounds, ordered field, real number system as an ordered field with least upper bound property, Cauchy sequence, completeness. Continuity and uniform continuity of functions, properties of continuous functions on compact sets. Riemann integral, improper integrals, absolute and conditional convergence of series of real and complex terms, rearrangement of series. Uniform convergence, continuity, differentiability and integrability for sequences and series of functions. Differentiation of functions of several variables, change in the order of partial derivatives, implicit function theorem, maxima and minima. Multiple integrals.

Complex Analysis :

Analytic function, Cauchy-Riemann equations, Cauchy's theorem, Cauchy's integral formula, power series, Taylor's series, Laurent's Series, singularities, Cauchy's residue theorem, contour integration. Conformal mapping, bilinear transformations.

Linear Programming :

Linear programming problems, basic solution, basic feasible solution and optimal solution, graphical method

and Simplex method of solutions. Duality. Transportation and assignment problems. Travelling salesman problems.

Section B

Partial Differential Equations :

Curves and surfaces in three dimensions, formulation of partial differential equations, solutions of equations of type $dx/p = dy/q = dz/r$, orthogonal trajectories, Pfaffian differential equations; partial differential equations of the first order, solution by Cauchy's method of characteristics; Chaplet's method of solutions, linear partial differential equations of the second order with constant coefficients, equations of vibrating string, heat equation, Laplace equation.

Numerical Analysis and Computer Programming :

Numerical methods : solution of algebraic and transcendental equations of one variable by bisection, Regula-Falsi and Newton-Raphson methods, solution of system of linear equations by Gaussian elimination and Gauss-Jordan (direct) methods, Gauss-Seidel (iterative) method. Newton's (forward and backward) and Lagrange's method of interpolation.

Numerical integration : Simpson's one-third rule, trapezoidal rule, Gaussian quadrature formula.

Numerical solution of ordinary differential equations : Euler and Runge Kutta-methods.

Computer Programming : Storage of numbers in Computers, bits, bytes and words, binary system, arithmetic and logical operations on numbers. Bitwise operations. AND, OR, XOR, NOT, and shift/rotate operators. Octal and hexadecimal Systems. Conversion to and from decimal Systems.

Representation of unsigned integers, signed integers and reals, double precision reals and long integers.

Algorithms and flow charts for solving numerical analysis problems.

Developing simple programs in BASIC for problems involving techniques covered in the numerical analysis.

Mechanics and Fluid Dynamics :

Generalised coordinates, constraints, holonomic and non-holonomic systems. D'Alembert's principle and Lagrange's equations, hamilton equations, moment of inertia, motion of rigid bodies in two dimensions.

Equation of continuity, Euler's equation of motion for inviscid flow, stream-lines, path of a particle, potential flow, two-dimensional and axisymmetric motion, seasons and sinks, vortex motion, flow past a cylinder and a sphere, method of images. Navier-Stokes equation for a viscous fluid.

MECHANICAL ENGINEERING
PAPER—I

1. Theory of Machines :

Kinematic and dynamic analysis of planar mechanisms. Cams, Gears and gear trains, Flywheels, Governors, Balancing of rigid rotors, Balancing of single and multicylinder engines, Linear vibration analysis of mechanical systems (single degree and two degrees of freedom), Critical speeds and whirling of shafts, Automatic Controls. Belt and chain drives. Hydrodynamic bearings.

2. Mechanics of Solids :

Stress and strain in two dimensions, Principal stresses and strains, mohr's construction, linear elastic materials, isotropy and anisotropy, Stress-strain relations, uniaxial loading, thermal stresses. Beams : Bending moment and shear force diagrams, bending stresses and deflection of beams, Shear stress distribution, torsion of shafts, elical springs, Combined stresses, Thick and thin-walled pressure vessels, Struts and columns, Strain energy concepts and theories of failure. Rotating discs. Shrink fits.

3. Engineering Materials :

Basic concepts on structure of solids, Crystalline materials, Defects in crystalline materials, Alloys and binary phase diagrams, structure and properties of common engineering materials. Heat treatment of steels, Plastics, Ceramics and composite materials, common applications of various materials.

4. Manufacturing Science :

Merchant's force analysis, Taylor's tool life equation, machinability and machining economics. Rigid, small and flexible automation, NC, CNC, recent machining methods—EDM, ECM and ultrasonics. Application of lasers and plasmas, Analysis of forming processes. High energy rate forming. Jigs, fixtures, tools and gauges. Inspection of length, position, profile and surface finish.

5. Manufacturing Management :

Production, Planning and Control, Forecasting—Moving average, exponential smoothing, Operations scheduling; assembly line balancing, Product development, Break-even analysis, Capacity planning, PERT and CPM. Control Operations : Inventory control—ABC analysis, EOQ model, Materials requirement planning. Job design, Job standards, Work measurement, Quality Management—Quality analysis and control, statistical quality control. Operations Research : Linear Programming—Graphical and Simplex methods, Transportation and assignment models. Single server queuing model.

Value Engineering : Value analysis, for cost/value. Total quality management and forecasting techniques. Project management.

6. Elements of Computation :

Computer Organisation, Flow charting, Features of Common Computer Languages—FORTRAN, d Base III, lotus 1-2-3, C and elementary programming.

PAPER-II**1. Thermodynamics :**

Basic concept, Open and closed systems, Applications of Thermodynamic laws. Gas equations, clapeyron equation, availability, Irreversibility and Tds relations.

2. I. C. Engines, Fuels and Combustion :

Spark Ignition and compression, Ignition engines, Four stroke engine and Two stroke engines, Mechanical, thermal and volumetric efficiency, Heat balance.

Combustion process in S.I. and C.I. engines, pre-ignition detonation in S.I. engine, Diesel knock in C.I. engine. Choice of engine fuels, Octane and Cetane ratings, Alternate fuels, Carburation and Fuel injection, Engine emissions and control. Solid, liquid and gaseous fuels, stoichometric air requirements and excess air factor, flue gas analysis, higher and lower calorific values and their measurements.

3. Heat Transfer, Refrigeration and Air Conditioning :

One and two dimensional heat conduction, Heat transfer from extended surfaces, heat transfer by forced and free convection heat exchangers, fundamentals of diffusive and convective mass transfer, Radiation laws, heat exchange between black and non-black surfaces, Network analysis. Heat pump refrigeration cycles and systems, Condensers, evaporators and expansion devices and controls. Properties and choice of refrigerant, Refrigeration Systems and components, Psychrometrics, Comfort indices, cooling load calculations, solar refrigeration.

4. Turbo-Machines and Power Plants :

Continuity, momentum and Energy Equations, Adiabatic and Isentropic flow, Fanno lines, rayleigh lines. Theory and design of axial flow turbines and compressors, Flow through turbo-machine blade, cascades, centrifugal compressors. Dimensional Analysis and modelling. Selection of site for steam, hydro, nuclear and stand-by power plants, selection base and peak load power plants, Modern High pressure, High duty boilers, Draft and dust removal equipment, fuel and cooling water systems, Heat balance, station and plant heat rates, operation and maintenance of various power plants, preventive maintenance, economics of power generation.

PHYSICS

PAPER—I

SECTION A

1. Classical Mechanics

(a) Particle Dynamics.

Centre of mass and laboratory coordinates, conservation of linear and angular momentum. The rocket equation. Rutherford scattering, Galilean transformation, inertial and non-inertial frames, rotating frames, centrifugal and Coriolis forces, Foucault pendulum.

(b) System of Particles

Constraints, degrees of freedom, generalised coordinates and momenta. Lagrange's equation and applications to linear harmonic oscillator, simple pendulum and central force problems. Cyclic coordinates, Hamiltonian, Lagrange's equation from hamilton's principle.

(c) Rigid Body Dynamics

Eulerian angles, inertia tensor, principal moments of inertia. Euler's equation of motion of a rigid body, force-free motion of a rigid body, Gyroscope.

2. Special Relativity, waves & Geometrical Optics

(a) Special Relativity

Michelson-Morley experiment and its implications, Lorentz transformations—length contraction, time dilation, addition of velocities, aberration and Doppler effect, mass-energy relation, simple applications to a decay process. Minkowski diagram, four dimensional momentum vector. Covariance of equations of physics.

(b) Waves

Simple harmonic motion, damped oscillation, forced oscillation and resonance. Beats, Stationary waves in a string. Pulses and wave packets. Phase and group velocities. Reflection and refraction from Huygens' principle.

(c) Geometrical Optics

Laws of reflection and refraction from Fermat's principle. Matrix method in paraxial optic—thin lens formula, nodal planes, system of two thin lenses, chromatic and spherical aberrations.

3. Physical Optics

(a) Interference

Interference of light—Young's experiment, Newton's rings, interference by thin films, Michelson interferometer. Multiple beam interference and Fabry-Perot interferometer. Holography and simple applications.

(b) Diffraction

Fraunhofer diffraction—single slit, double slit, diffraction grating, resolving power. Fresnel diffraction : half-period

zones and zone plates. Fresnel integrals. Application of Cornu's spiral to the analysis of diffraction at a straight edge and by a long narrow slit. Diffraction by a circular aperture and the Airy pattern.

(c) Polarisation and Modern Optics

Production and detection of linearly and circularly polarised light. Double refraction, quarter wave plate. Optical activity. Principles of fibre optics—attenuation; pulse dispersion in step index and parabolic index fibres; material dispersion, single mode fibres. Lasers—Einstein A and B coefficients. Ruby and He-Ne lasers. Characteristics of laser light—spatial and temporal coherence. Focussing of laser beams. Three-level scheme for laser operation.

SECTION B

4. Electricity and Magnetism

(a) Electrostatics and Magnetostatics

Laplace and Poisson equations in electrostatics and their applications. Energy of a system of charges, multipole expansion of scalar potential. Method of images and its applications. Potential and field due to a dipole, force and torque on a dipole in an external field. Dielectrics, polarisation. Solutions to boundary-value problems—conducting and dielectric spheres in a uniform electric field. Magnetic shell, uniformly magnetised sphere. Ferromagnetic materials, hysteresis, energy loss.

(b) Current Electricity

Kirchhoff's laws and their applications. Biot-Savart law, Ampere's law, Faraday's law, Lenz' law. Self-and mutual-inductances. Mean and r.m.s. values in AC circuits. LR, CR and LCR circuits-series and parallel resonance. Quality factor. Principle of transformer.

5. Electromagnetic Theory & Blackbody radiation

(a) Electromagnetic Theory

Displacement current and Maxwell's equations. Wave equations in vacuum, Poynting theorem. Vector and scalar potentials. Gauge invariance, Lorentz and Coulomb gauges. Electromagnetic field tensor, covariance of Maxwell's equations. Wave equations in isotropic dielectrics, reflection and refraction at the boundary of two dielectrics. Fresnel's relations. Normal and anomalous dispersion. Rayleigh scattering.

(b) Blackbody Radiation

Blackbody radiation and Planck radiation law-Stefan-Boltzmann law, Wien displacement law and Rayleigh-Jeans law. Planck mass, Planck length, Planck time, Planck temperature and Planck energy.

6. Thermal and Statistical Physics

(a) Thermodynamics

Laws of thermodynamics, reversible and irreversible processes, entropy. Isothermal, adiabatic, isobaric, isochoric

processes and entropy change. Otto and Diesel engines, Gibb's phase rule and chemical potential, van der Waals equation of state of a real gas, critical constants. Maxwell-Boltzmann distribution of molecular velocities, transport phenomena, equipartition and virial theorems. Dulong-Petit, Einstein, and Debys's theories of specific heat of solids. Maxwell relations and applications. Clausius-Clapeyron equation. Adiabatic demagnetisation, Joule-Kelvin effect and liquefaction of gases.

(b) Statistical Physics

Saha ionization formula. Bose-Einstein condensation. Thermodynamic behaviour of an ideal Fermi gas, Chandrasekhar limit, elementary ideas about neutron stars and pulsars. Brownian motion as a random walk, diffusion process. Concept of negative temperatures.

PAPER-II

SECTION A

1. Quantum Mechanics I

Wave-particle duality. Schrödinger equation and expectation values. Uncertainty principle. Solutions of the one-dimensional Schrödinger equation-free particle (Gaussian wave-packet), particle in a box, particle in a finite well, linear harmonic oscillator. Reflection and transmission by a potential step and by a rectangular barrier. Use of WKB formula for the life-time calculation in the alpha decay problem.

2. Quantum Mechanics II & Atomic Physics

(a) Quantum Mechanics II

Particular in a three dimensional box, density of states free electron theory of metals. The angular momentum problem. The hydrogen atom. The spin half problem and properties of Pauli spin matrices.

(b) Atomic Physics

Stern-Gerlach experiment, electron spin, fine structure of hydrogen atom. L-S coupling, J-J coupling. Spectroscopic notation of atomic states. Zeeman effect. Franck-Condon principle and applications.

3. Molecular Physics

Elementary theory of rotational, vibrational and electronic spectra of diatomic molecules. Raman effect and molecular structure. Laser Raman spectroscopy. Importance of neutral hydrogen atom, molecular hydrogen and molecular hydrogen ion in astronomy. Fluorescence and Phosphorescence. Elementary theory and applications of NMR. Elementary ideas about Lamb shift and its significance.

SECTION B

4. Nuclear Physics

Basic nuclear properties-size, binding energy, angular momentum, parity, magnetic moment. Semi-empirical mass formula and applications. Mass parabolas. Ground state of a deuteron, magnetic moment and non-central forces. Meson

theory of nuclear forces. Salient features of nuclear forces. Shell model of the nuclear -success and limitations. Violation of parity in beta decay, Gamma decay and internal conversion. Elementary ideas about Mossbauer spectroscopy. Q-value of nuclear reactions. Nuclear fission and fusion, energy production in stars. Nuclear reactors.

5. Particle Physics & Solid State Physics

(a) Particle Physics

Classification of elementary particles and their interactions. Conservation laws. Quark structure of hadrons. Field quanta of electroweak and strong interactions. Elementary ideas about unification of Forces. Physics and neutrinos.

(b) Solid State Physics

Cubic crystal structure. Band theory of solids—conductors, insulators and semiconductors. Elements of superconductivity. Meissner effect. Josephson junctions and applications. Elementary ideas about high temperature superconductivity.

6. Electronics

Intrinsic and extrinsic semiconductors—p-n-p and n-p-n transistors. Amplifiers and oscillators. Op-amps. FET, JFET and MOSFET. Digital electronics—Boolean identities, De Morgan's laws, Logic gates and truth tables, simple logic circuits. Thermistors, solar cells. Fundamentals of microprocessors and digital computers.

STATISTICS

PAPER—I

Probability

Sample space and events, probability measure and probability space, random variable as a measurable function, distribution function of a random variable, discrete and continuous-type random variables, probability mass function, probability density function, vector-valued random variables, marginal and conditional distributions, stochastic independence of events and of random variables, expectation, and moments of a random variable, conditional expectation, convergence of a sequence of random variables in distribution, in probability, in path mean and almost everywhere, their criteria and inter-relations, Borel-Cantelli lemma, Chebyshev's and Khinchine's weak laws of large numbers, strong law of large numbers and Kolmogorov's theorems, Glivenko-Cantelli theorem, probability generating function, characteristic function, inversion theorem, Laplace transform, related uniqueness and continuity theorems, determination of distribution by its moments. Lindeberg and Levy forms of central limit theorem, standard discrete and continuous probability distributions, their inter-relations and limiting cases, simple properties of finite Markov chains.

Statistical Inference

Consistency, unbiasedness, efficiency, sufficiency, minimal sufficiency, completeness, ancillary statistic, factorization theorem, exponential family of distribution and its properties, uniformly minimum variance unbiased (UMVU) estimation, Rao-Blackwell and Lehmann-Scheffe theorems, Cramer-Rao inequality for single and several-parameter family of distributions, minimum variance bound estimator and its properties, modifications and extensions of Cramer-Rao inequality, Chapman-Robbins inequality, Bhattacharyya's bounds, estimation by methods of moments, maximum likelihood, least squares, minimum chi-square and modified minimum chi-square, properties of maximum likelihood and other estimators, idea of asymptotic efficiency idea of prior and posterior distributions, Bayes' estimators.

Non-randomised and randomised tests, critical function, MP tests, Neyman-Pearson lemma, UMP tests, monotone likelihood ratio, generalised Neyman-Pearson lemma, similar and unbiased tests, UMPU tests for single and several-parameter families of distributions, likelihood ratio test and its large sample properties, chi-square goodness of fit test and its asymptotic distribution.

Confidence bounds and its relation with tests, uniformly most accurate (UMA) and UMA unbiased confidence bounds.

Kolmogorov's test for goodness of fit and its consistency, sign test and its optimality, Wilcoxon signed-ranks test and its consistency, Kolmogorov-Smirnov two-sample test, run test, Wilcoxon-Mann-Whitney test and median test, their consistency and asymptotic normality.

Wald's SPRT and its properties, OC and ASN functions, Wald's fundamental identity, sequential estimation.

Linear Inference and Multivariate Analysis

Linear statistical models, theory of least squares and analysis of variance, Gauss-Markoff theory, normal equations, least squares estimates and their precision, test of significance and interval estimates based on least squares theory in one-way, two-way and three-way classified data, regression analysis, linear regression, curvilinear regression and orthogonal polynomials, multiple regression, multiple and partial correlations, regression diagnostics and sensitivity analysis, calibration problems, estimation of variance and covariance components, MINQUE theory, multivariate normal distribution, Mahalanobis D^2 and Hotelling's T^2 statistics and their applications, and properties, discriminant analysis, canonical correlations, one-way MANOVA, principal component analysis, elements of factor analysis.

Sampling Theory and Design of Experiments

An outline of fixed-population and super-population approaches, distinctive features of finite population sampling, probability sampling designs, simple random sampling with and without replacement, stratified random sampling, systematic sampling and its efficacy for structured

populations, cluster sampling, two-stage and multi-stage sampling, ratio and regression methods of estimation involving one or more auxiliary variables, two-phase sampling, probability proportional to size sampling with and without replacement, the Hansen-Hurwitz and the Horvitz-Thompson estimators, non-negative variance estimation with reference to the Horvitz-Thompson estimator, non-sampling errors, Warner's randomised response technique for sensitive characteristics.

Fixed effects model (two-way classification), random and mixed effects models (two-way classification with equal number of observations per cell), CRD, RBD, LSD and their analyses, incomplete block designs, concepts of orthogonality and balance, BIBD, missing plot technique, factorial designs : 2^k , 3^2 and 3^3 , confounding in factorial experiments, split-plot and simple lattice designs.

PAPER-II

I. Industrial Statistics

Process and product control, general theory of control charts, different types of control charts for variables and attributes, X, R, s, p, np and c charts cumulative sum chart, V-mask, single, double, multiple and sequential sampling plans for attributes, OC, ASN, AOQ AND ATI curves, concepts of producer's and consumer's risks, AQL, LTPD and AOQL, sampling plans for variables, use of Dodge-Romig and Military Standard tables.

Concepts of reliability, maintainability and availability, reliability of series and parallel systems and other simple configurations, renewal density and renewal function, survival models (exponential, Weibull, lognormal, Rayleigh, and both-tub), different types of redundancy and use of redundancy in reliability improvement, problems in life-testing, censored and truncated experiments for exponential models.

II. Optimization Techniques

Different types of models in Operational Research, their construction and general methods of solution, simulation and Monte-Carlo methods, the structure and formulation of linear programming (LP) problem simple LP model and its graphical solution, the simplex procedure, the two-phase method and the M-technique with artificial variables, the duality theory of LP and its economic interpretation, sensitivity analysis, transposition and assignment problems, rectangular games, two-person zero-sum games, methods of solution (graphical and algebraic).

Replacement of failing or deteriorating items, group and individual replacement policies, concept of scientific inventory management and analytical structure of inventory problems, simple models with deterministic and stochastic demand with and without lead time, storage models with particular reference to dam type.

Homogeneous discrete-time Markov chains, transition probability matrix, classification of states and ergodic theorems, homogeneous continuous-time Markov chains, Poisson process, elements of queueing theory, M/M/1, M/M/K, G/M/1 and M/G/1, queues.

Solution of statistical problems on computers using well known statistical software packages like SPSS.

III. Quantitative Economics and Official Statistics

Determination of trend, seasonal and cyclical components, Box-Jencons method, tests for stationarity of series, ARIMA models and determination of orders of autoregressive and moving average components, forecasting.

Commonly used index numbers—Laspeyre's, Paasche's and Fisher's ideal index numbers, chain-base index number, uses and limitations of index numbers, index number of wholesale prices, consumer price index number, index number of agricultural and industrial production, tests for index numbers like proportionality test, time-reversal test, factor-reversal test, circular test and dimensional invariance test.

General linear model, ordinary least squares and generalised least squares methods of estimation, problem of multicollinearity, consequences and solutions of multicollinearity, autocorrelation and its consequences, heteroscedasticity of disturbances and its testing, tests for independence of disturbances, Zellner's seemingly unrelated regression equation model and its estimation, concept of structure and model for simultaneous equations, problem of identification-rank and order conditions of identifiability, two-stage least squares method of estimation.

Present official statistical system in India relating to population, agriculture, industrial production, trade and prices, methods of collection of official statistics, their reliability and limitation and the principal publications containing such statistics, various official agencies responsible for data collection and their main functions.

IV. Demography and Psychometry

Demographic data from census, registration, NSS and other surveys, and their limitation and uses, definition, construction and uses of vital rates and ratios, measures of fertility, reproduction rates, morbidity rate, standardized death rate, complete and abridged life tables, construction of life tables from vital statistics and census returns, uses of life tables, logistic and other population growth curves, fitting a logistic curve, population projection, stable population theory, uses of stable and quasi-stable population techniques in estimation of demographic parameters, morbidity and its measurement, standard classification by cause of death, health surveys and use of hospital statistics.

Methods of standardisation of scales and tests, Z-scores, standard scores, T-scores, percentile scores, intelligence quotient and its measurement and uses, validity of test

scores and its determination, use of factor analysis and path analysis in psychometry.

ZOOLOGY

PAPER-I

Section A

1. Non-chordata and chordata :

- (a) Classification and relationship of various phyla upto sub-classes; Acoelomata and Coelomata; Protostomes and Deuterostomes, Bilateria and Radiata; Status of Protista, Parazoa, Onychophora and Hemichordata; Symmetry.
- (b) *Protozoa* : Locomotion, nutrition, reproduction; evolution of sex; general features and life history of *Paramaecium*, *Monocystis*, *Plasmodium* and *Leishmania*.
- (c) *Porifera* : Skeleton, canal system and reproduction.
- (d) *Coelenterata* : Polymorphism, defensive structures and their mechanism; coral reefs and their formation; metagenesis; general features and life history of *Obelia* and *Aurelia*.
- (e) *Platyhelminthes* : Parasitic adaptation; general features and life history of *Fasciola* and *Taenia* and their relation to man.
- (f) *Nemat helminthes* : General features, life history and parasitic adaptation of *Ascaris*; nemathelminthes in relation to man.
- (g) *Annelida* : Coelom and metamerism; modes of life in polychaetes; general features and life history of *nereis* (*Neamthes*), earthworm (*Pheretima*) and leach (*Hirundaria*).
- (h) *Arthropoda* : Larval forms and parasitism in Crustacea; vision and respiration in arthropods (prawn, cockroach and scorpion); modification of mouth parts in insects (cockroach, mosquito, housefly, honey bee and butterfly); metamorphosis in insects and its hormonal regulation; social organization in insects (termites and honey bees).
- (i) *Mollusca* : Feeding, respiration locomotion, shell diversity; general features and life history of *Lamellidens*, *Pila* and *Sepia*; torsion and detorsion in gastropods,
- (j) *Echinodermata* : Feeding, respiration, locomotion, larval forms; general features and life history of *Asterias*.
- (k) *Protochordata* : origin of chordates; general features and life history of *Branchiostoma* and *Hermania*.
- (l) *Pisces* : Scales, respiration, locomotion, migration.

- (m) *Amphibia* : Origin of tetrapods; parental care, paedomorphosis.
- (n) *Reptilia* : Origin of reptiles; skull types; status of *Sphenodon* and *crocodiles*.
- (o) *Aves* : Origin of birds; flight adaptation, migration.
- (p) *Mammalia* : Origin of mammals, dentition; general features of egg-laying mammals, pouched-mammals, aquatic mammals and primates; endocrine glands and other hormone producing structures (pituitary, thyroid, parathyroid, adrenal, pancreas, gonads) and their inter-relationships.
- (q) Comparative functional anatomy of various systems of vertebrates (integument and its derivatives, endoskeleton, locomotory organs, digestive system, respiratory system, circulatory system including heart and aortic arches; urinogenital system brain and senseorgans (eye and ear).

Section B

I. Ecology :

- (a) Biospher : Biogeochemical cycles, green-house effect, ozone layer and its impact; ecological succession, biomes and ecotones.
- (b) Population, characteristics, population dynamics, population stabilization.
- (c) Conservation of natural resources-mineral mining, fisheries, aquaculture; forestry; grassland; wildlife (Project Tiger); sustainable production in agriculture-integrated pest management.
- (d) Environmental biodegradation; pollution and its impact on biosphere and its prevention.

II. Ethology :

- (a) Behaviour : Sensory filtering, responsiveness, sign stimuli, learning, instinct, habituation, conditioning, imprinting.
- (b) role of hormones in drive; role of pheromones in alarm spreading; crypsis, predator detection, predator tactics, social behaviour in insects and primates; courtship (*Drosophila*, 3-spine stickleback and birds).
- (c) Orientation, navigation, homing, biological rhythms : biological clock, tidal, seasonal and circadian rythms.
- (d) Methods of studying animal behaviour.

III. Economic Zoology :

- (a) Apiculture, sericulture, lac culture, carp culture, pearl culture, prawn culture.

- (b) Major infectious and communicable diseases (small pox, plague, malaria, tuberculosis, cholera and AIDS) their vectors, pathogens and prevention.
- (c) Cattle and livestock diseases, their pathogens (helminths) and vectors (ticks, mites, *Tabanus*, *Stomoxys*).
- (d) Pests of sugar-cane (*Pyrilla perpusilla*), oil seed (*Achaea Janata*) and rice (*Sitophilus oryzae*).

IV. Biostatistics :

Designing of experiments; null hypothesis, correlation, regression, distribution and measure of central tendency, chi square, student t-test, F-test (one-way & two-way F-test).

V. Instrumental methods :

- (a) Spectrophotometry, flame photometry, Geiger-Muller counter, scintillation counting.
- (b) Electron microscopy (TEM, SEM)

PAPER II

Section A

I. Cell Biology :

- (a) Structure and function of cell and its organelles (nucleus, plasma membrane, mitochondria, Golgi bodies, endoplasmic reticulum, ribosomes and lysosomes), cell division (mitosis and meiosis), mitotic spindle and mitotic apparatus, chromosome movement.
- (b) Watson-Crick model of DNA, replication of DNA, protein synthesis, transcription and transcription factors.

II. Genetics :

- (a) Gene structure and functions; genetic code.
- (b) Sex chromosomes and sex determination in *Drosophila*, nematodes and man.
- (c) Mendel's laws of inheritance, recombination, linkage, linkage-maps, multiple alleles, cistron concept; genetics of blood groups.
- (d) Mutations and mutagenesis : radiation and chemical.
- (e) Cloning technology, plasmids and cosmids as vectors, transgenics, transposons, DNA, sequence cloning and whole animal cloning (principles and methodology).
- (f) Regulation and gene expression in pro-and eukaryotes.
- (g) Signal transduction; pedigree-analysis; congenital diseases in man.

(h) Human genome mapping; DNA finger-printing.

III. Evolution :

- (a) Origin of life.
- (b) Natural selection, role of mutation in evolution, mimicry, variation, isolation, speciation.
- (c) Fossils and fossilization; evolution of horse, elephant and man.
- (d) Hardy-Weinberg Law, causes of change in gene frequency.
- (e) Continental drift and distribution of animals.

IV. Systematics :

- (a) Zoological nomenclature; international code; cladistics.

Section B

I. Biochemistry :

- (a) Structure and role of carbohydrates, fats, lipids, proteins, aminoacids, nucleic acids; saturated and unsaturated fatty acids, cholesterol.
- (b) Glycolysis and Krebs cycle, oxidation and reduction, oxidative phosphorylation; energy conservation and released, ATP, cyclic AMP—its structure and role.
- (c) Hormone classification (steroid and peptide hormones), biosynthesis and function.
- (d) Enzymes : Types and mechanisms of actions; immunoglobulin and immunity; vitamins and co-enzymes.
- (e) Bioenergetics.

II. Physiology (with special reference to mammals)

- (a) Composition and constituents of blood; blood groups and Rh factor in man; coagulation, factors and mechanism of coagulation, acid-base balance, thermo regulation.
- (b) Oxygen and carbon dioxide transport; haemoglobin : constituents and role in regulation.
- (c) Nutritive requirements; role of salivary glands, liver pancreas and intestinal glands in digestion and absorption.
- (d) Excretory products; nephron and regulation of urine formation; osmoregulation.
- (e) Type of muscles, mechanism of contraction of skeletal muscles.
- (f) Neuron, nerve impulse—its conduction and synaptic transmission; neurotransmitters.
- (g) Vision, hearing and olfaction in man.
- (h) Mechanism of hormone action.
- (i) Physiology of reproduction, role of hormones and pheromones.

III. Developmental Biology

- (a) Differentiation from gamete to neurula stage; dedifferentiation; metaplasia; induction, morphogenesis and morphogen; fate maps of gastrulae in frog and chick; organogenesis of eye and hearts, placentation in mammals.
- (b) Role of cytoplasm in and genetic control of development; cell lineage; causation of metamorphosis in frog and insects; paedogenesis and neoteny; growth, degrowth and cell death; ageing; blastogenesis; regeneration; teratogenesis, neoplasia.
- (c) Invasiveness of Placenta; *in vitro* fertilization; embryo transfer, cloning.
- (d) Baer's law; evo-devo concept.

APPENDIX II

Brief particulars relating to the Indian Forest Service (vide Rule 20).

(a) Appointment will be made on probation for a period of three years which may be extended. Successful candidates will be required to undergo probation in such place and in such manner and pass such examinations during the period of probation as the Government of India may determine.

(b) If in the opinion of Government, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he/she is unlikely to become efficient, Government may discharge him/her forthwith, or, as the case may be, revert him/her to the permanent post on which he/she holds a lien, or would hold a lien had he/she not been suspended, under the rules applicable to him/her prior to his/her appointment to the service.

(c) On the conclusion of his/her period of probation, Government may confirm the officer in his/her appointment or, if his/her work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory. Government may either discharge him/her from the service or may extend his/her period of probation for such further period as Government may think fit.

(d) If the power to make appointment in the Service is delegated by government to any officer that officer may exercise any of the power of Government under clause (b) and (c) above.

(e) An officer belonging to the Indian Forest Service will be liable to serve anywhere in India or abroad either under Central Government or under State Government.

(f) Scale of pay.

1. Junior Scale : Rs. 8,000-275-13,500/-.

2. Senior Scale :

(i) Time-scale :

Rs. 10,000-325-15,200/-.

(ii) Junior Administrative Grade :

Rs. 12,000-375-16,500/-.

(iii) Selection Grade :

Rs. 14,300-400-18,300/-.

3. Super Time scale :

(i) Conservator of Forests :

Rs. 16,400-450-20,000/-.

(ii) Chief Conservator of Forest :

Rs. 18,400-500-22,400/-.

4. Above Supertime Scale :

(i) Addl. Principal Chief Conservator of Forests :

Rs. 22,400-525-24,500/-.

(ii) Principal Chief Conservator of Forests :

Rs. 24,050-650-26,000/-.

Dearness allowance will be admissible in accordance with the orders issued from time to time.

A probationer will start on the junior time scale and be permitted to count the period spent on probation towards leave, pension or increment in the time scale.

- (g) Provident Fund—Officers of the Indian Forest Service are governed by the All India Service (Provident Fund) Rules, 1955, as amended from time to time.
- (h) Leave—Officers of the Indian Forest Service are governed by the All India Service (Leave) Rules, 1955, as amended from time to time.
- (i) Medical Attendance—Officers of Indian Forest Service are entitled to medical attendance benefits admissible under the All India Service (Medical Attendance) Rules, 1954, as amended from time to time.
- (j) Retirement Benefits—Officers of the Indian Forest Service Appointed on the basis of Competitive Examination are governed by the All India Service (Death-cum-Retirement Benefits) Rules, 1958, as amended from time to time.

APPENDIX III

REGULATIONS RELATING TO THE PHYSICAL EXAMINATION OF CANDIDATES

(Vide Rule 17)

[These regulations are published for the convenience of candidates and to enable them to ascertain the probability of their being of the required physical standard. The regulations are also intended to provide guidelines to the medical examiners. The medical examination shall be conducted in two parts, i.e. Part I which shall consist of the entire medical examination which the Medical Board may prescribe for a candidate, except the Radiographic Examination of the chest (X-ray test) and Part II which shall consist of Radiographic Examination (X-ray test of the chest). The Part II shall be conducted only in respect of the candidates who have been declared finally successful on the basis of the examination. The Government of India reserve to themselves, absolute discretion to reject or accept any candidate after considering the report of the Medical Board.]

1. To be passed as fit for appointment, a candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the efficient performance of the duties of his/her appointment.

2. Walking test: The male candidate will be required to qualify in walking test of 25 kilometres to be completed in 4 hours and female candidates 14 kilometres to be completed in 4 hours. The arrangement for conducting this test will be made by the Director General of Forests, Government of India so as to synchronise with the sitting of the Medical Board.

Provided in case a candidate who has been called for appearing in the walking test after declaration of the result of the written part of the Examination, either fails to complete the walking test within the prescribed time limit or fails to appear in the test, will be given another opportunity to appear in the walking test after he/she is selected for the Indian Forest Service on the basis of final results of the Examination. In case he/she again fails to appear/pass the test, no further opportunity will be given to him/her to appear in the walking test.

3. (a) In the matter of the correlation of age, height and chest girth of candidates of Indian (including Anglo Indian) race, it is left to the medical Board to use whatever correlation figures are considered most suitable as a guide in the examination of the candidates. If there be any disproportion with regard to height, weight and chest girth the candidate should be hospitalised for investigation and X-ray of the chest taken before the candidate is declared fit or not fit by the Board. However, the X-ray of the chest will be done in respect of only such candidates who are directed to appear before the Medical Board for Part II of the medical examination.

(b) The Minimum standard for height and chest girth without which candidates cannot be accepted are as follows :—

Height	Chest (fully expanded)	Expansion
163 cms.	84 cms.	5 cms. (for men)
150 cms.	79 cms.	5 cms. (for women)

The following minimum height standards may be allowed in the case of candidates belonging to Scheduled Tribes and in races such as Gorkhas, Nepalis, Assamese, Meghalaya, Tribal, Ladakhese, Sikkimese, Bhutanese, Garhwalees, Kumaonis, Nagas and Arunachal Pradesh candidates whose average height is distinctly lower :—

Men	152.5 cms.
Women	145.0 cms.

4. The candidate's height will be measured as follows :—

He/She will remove his/her shoes and be placed against the standard with his/her feet together and the weight thrown on the heels and not on the toes or other sides of the feet. He/She will stand erect without rigidity and with the heels calves, buttocks and shoulders touching the standard. The chin will be depressed to bring the vertex of the head level under the horizontal bar and the height will be recorded in centimetres and parts of it in centimetre to halves.

5. The candidate's chest will be measured as follows :—

He/She will be made to stand erect with his feet together and to raise his/her arms over his/her head. The tape will be so adjusted around the chest its upper edge touches the interior angles of the shoulder blades behind and lies in the same horizontal plane when the tape is taken round the chest. The arms will then be lowered to hang loosely by the side and care will be taken that the shoulders are not thrown upwards or backwards so as to displace the tape. The candidate will then be directed to take a deep inspiration several times and the maximum expansion of the chest will be carefully noted and the minimum and maximum will then be recorded in centimetres 84—89, 86—93.5 etc. In recording the measurements fraction of less than half centimetre should not be noted.

N.B.—The height and chest of the candidates should be measured twice before coming to a final decision.

6. The candidate will also be weighed and his/her weight recorded in kilograms, fractions of half a kilogram should not be noted.

7. The candidate's eye-sight will be tested in accordance with the following rules. The results of each test will be recorded :—

- (i) General—The candidate's eyes will be submitted to a general examination directed to the detection of any disease or abnormality. The candidate will be rejected if he/she suffers from any squint or morbid conditions of eyes, eyelids, or continuous structures of such a sort as render, or are likely to render him unfit or service at a future date.
- (ii) Visual Acuity—The examination for determining the acuteness of vision includes two tests, one for distant vision other for near vision. Each eye will be examined separately.

There shall be no limit for minimum naked eye vision but naked eye vision of the candidates shall however, be recorded by the Medical Board or other medical authority in every case, as it will furnish the basic information with regard to the condition of the eye.

The Indian Forest Service is a technical service.

The standards for distant and near vision with or without glasses shall be as follows :—

Distant vision		Near vision	
better eye (corrected vision)	worse eye	better eye (corrected vision)	worse eye
6/6	6/6	N. 5	N. 5

Type of correction permitted Best correction (unspecified)
Radial Keratotomy.

NOTE :—

(1) Fundus Examination—In every case of Myopia Fundus Examination should be carried out and the result recorded. In the event of pathological condition being present which is likely to be progressive and effect efficiency of the candidate, he/she should be declared unfit.

The total amount of Myopia (including the cylinder) shall not exceed—8.00D. Total amount of Hypermetropia (including the cylinder) shall not exceed—4.00D.

Provided that in case a candidate is found unfit on ground of high myopia, the matter shall be referred to a special board of three ophthalmologists to declare whether this myopia is pathological or not. In case it is not pathological the candidate shall be declared fit, provided he fulfills the visual requirements otherwise.

(2) Colour Vision—(i) The testing of colour vision shall be essential.

(ii) Colour perception should be graded into a higher and lower grade depending upon the size of the aperture in the lantern as described in the table below :—

Grade	Higher grade colour perception	lower grade colour perception
1. Distance between the lamp and candidate	16 ft.	16 ft.
2. Size of aperture	1.3 mm.	1.3 mm.
3. Time of reposure	5 seconds	5 seconds

(iii) Satisfactory colour vision constitutes recognition with ease and without hesitation of single red, single green and white colours. The use of Ishihara's plates shown in good light and suitable lantern like Edridge Green's shall be considered quite dependable for testing colour vision. While either of the two tests may ordinarily be considered sufficient, it is essential to carry out the lantern test. In doubtful cases where a candidate fails to qualify when tested by only one of the two tests, both the tests should be employed.

NOTE : For appointment to the Indian Forest Service, Lower Grade of colour vision will be considered sufficient.

(3) Field of Vision.—The field of vision shall be tested in respect of all services by the confrontation method where such test gives unsatisfactory or doubtful results' the field of vision should be determined on the perimeter.

(4) Night Blindness.—Night Blindness need not be tested as a routine, but only in special cases. No standard test for the testing of night blindness of dark adaption is prescribed. The Medical Board should be given the discretion to improvise such rough test, e.g. recording of visual acuity with reduced illumination or by making the candidate recognise various objects in a darkened room after he/she has been therefor 20 to 30 minutes. Candidates own statements should not always be relied upon but they should be given due consideration.

(5) Ocular condition other than visual acuity.—(a) Any organic disease or a progressive refractive error which is likely to result in lowering the visual acuity should be considered as a disqualification.

(b) Trachoma.—Trachoma unless complicated shall not ordinarily be a cause for disqualification.

(c) Squint.—As the presence of binocular vision is essential squint even if the visual acuity is of the prescribed standard, should be considered as a disqualification.

(d) One eyed persons.—The employment of one eyed individuals is not recommended.

8. Blood Pressure

The Board will use its discretion regarding Blood Pressure.

A rough method of calculating normal maximum systolic pressure is as follows:—

(i) With young subjects 15-25 years of age. Of average is about 100 plus the age.

(ii) With subjects over 25 years of age the general rule of 110 plus half the age seems quite satisfactory.

N.B.—As a general rule any systolic pressure over 140 mm and diastolic over 90 mm should be regarded as suspicious and the candidate should be hospitalised by the Board before giving their final opinion regarding the candidate's fitness or otherwise. The hospitalisation report should indicate whether the rise in blood pressure is of a transient nature due to excitement etc. or whether it is due to any organic disease. In all such cases X-ray and electrocardiographic examination of heart and blood urea clearance test should also be done as a routine. The final decision as to the fitness or otherwise of a candidate will, however, rest with the Medical Board only.

Method of taking Blood Pressure

The mercury manometer type of instrument should be used as a rule. The measurement should not be taken with in fifteen minutes of any exercise of excitement. Provided the patient and particularly his arm is relaxed, he may be either lying or sitting. The arm is supported comfortably at the patient's side in a more less horizontal position. The arm should be freed from the clothes to the shoulder. The cuff completely deflated should be applied with the middle of the rubber over the inner side of the arm and its lower edge an inch or two above the one of the elbow. The following turns of cloth bandage should spread evenly over the bag to avoid burging during inflation.

The brachial artery is located by palpitation at the bend of the elbow and the stethoscope is then applied lightly and centrally over it below, but not in contact with the cuff. The cuff is inflated to about 200m Hg and then slowly deflated. The level at which the column stand when soft successive sounds are heard represents the Systolic pressure. When more air is allowed to escape the sound will be heard to increase in intensity. The level at which the well-heard clear sound change to soft muffled fading sounds represents the diastolic pressure. The measurement should be taken in a fairly brief period of times; prolonged pressure of the cuff is irritating to the patient and will vitiate the readings. Re-checking if necessary, should be done only a few minutes after complete deflation of the cuff. (Sometimes, as the cuff is deflated sound are heard at a certain level they may disappear as pressure falls and reappear at a still lower level). This: "Silent gap" may cause error in reading.

9. The urine (passed in the presence of the examiner) should be examined and the results recorded. Where a Medical Board finds sugar present in a candidate's urine by the usual chemical test the Board will process with the examination with all its other aspects and will also specially note any signs or symptoms suggestive of diabetes. If except for the glycosuria the Board finds the candidate conforms to the standards of medical fitness required they may pass the candidate "fit" subject to the glycosuria being non diabetic and the Board will refer the case to a specified specialist in medicine who has hospital and laboratory facilities at his disposal. The Medical Specialist will carry out whatever examination clinical and laboratory test he considers necessary including a standard blood sugar tolerance test, and will submit his opinion to the Medical Board upon which the Medical Board will base its final opinion "fit" or "unfit". The candidate will not be required to appear in person before the board on the second occasion. To exclude the effects of medication it may be necessary to retain a candidate for several days in hospital under strict supervision.

10. A woman candidate who as a result of tests of is found to be pregnant of 12 weeks standing or over, should be declared temporarily unfit until the confinement is over. She should be re-examined for fitness certificate six weeks after the date of confinement subject to the production of a medical certificate of fitness from registered medical practitioner.

11. The following additional points should be observed :

(a) That the candidate's hearing in each ear is good and that there is no sign of disease of the ear. In case it is defective the candidate should be got examined by the ear specialist, provided that if the defect in a hearing is remediable by operation or by use of hearing aid. A candidate cannot be declared unfit on that account provided he/she has not progressive disease in the ear. The following are the guidelines for the medical examination authority in this regard:

- (1) Marked or total deafness in one ear other for being normal. Fit for non-technical jobs if the deafness is upto 30 decibels in higher frequency.
- (2) Perceptive deafness in both ears in which some improvement is possible by a hearing aid. Fit in respect of both technical and non-technical jobs if the deafness is upto 30 decibels in speech frequencies of 1000 to 4000 HZ.
- (3) Perforation of tympanic membrane of central or Marginal type. (i) One ear normal other ear perforation of tympanic membrane present temporarily unfit

Under improved condition of ears surgery a candidate with marginal or other perforation in both ears should be given a chance by declaring him temporarily unfit and then he may be considered under 4 (ii) below.

(ii) Marginal drastic perforation in both ears—unfit.

(iii) Central perforation in both ears—temporarily unfit.

(4) Ears with Mastoid cavity sub normal hearing on one side/on both sides (i) Either ear normal hearing other ear Mastoid cavity Fit for both technical/non-technical jobs.

(ii) Mastoid cavity of both sides. Unfit for technical jobs Fit for non-technical jobs if hearing improves to 30 Decibels in either ear with or without hearing aid.

(5) Persistently discharging ear operated/unoperated. Temporarily unfit for both technical and non-technical jobs.

(6) Chronic inflammatory allergic condition of nose with or without bony deformities of nasal septum. (i) a decision will be taken as per circumstances of individual cases. (ii) If deviated nasal septum is present with symptoms—Temporarily unfit.

(7) Chronic Inflammatory conditions of tonsils and/or Larynx. (i) Chronic Inflammatory conditions of tonsils and/or Larynx—Fit. (ii) Hoarseness of voice severe degree if present then—Temporarily unfit.

(8) Benign or locally malignant Tumours of ENT. (i) Benign Tumours—Temporarily unfit. (ii) Malignant Tumours—unfit.

(9) Otosclerosis If the hearing is within 30 decibels after operation with the help of hearing aid—Fit.

(10) Congenital defects of nose or throat. (i) If not interfering with ear, function—Fit. (ii) Stuttering of severe degree—Unfit.

(11) Nasal Poly Temporarily unfit.

- (b) that his/her speech is without impediment;
- (c) that his/her teeth are in good order and that he/she is provided with dentures where necessary for effective mastication (well filled teeth will be considered as sound);
- (d) that the chest is well-formed and his/her chest expansion sufficient; and that his/her heart and lungs are sound;
- (e) that there is no evidence of any abdominal disease;
- (f) that he/she is not ruptured;
- (g) that he/she does not suffer from hydrocele, a severe degree of varicose veins or piles;
- (h) that his/her limbs, hand and feet are well formed and developed and that there is free and perfect motion of all his joint;
- (i) that he/she is not ruptured, disease;
- (j) that there is no congenital malformation or defect;
- (k) that he/she does not bear traces of active or chronic disease pointing to an impaired constitution;
- (l) that he/she bears marks of efficient vaccination; and
- (m) that he/she is free from communicable disease.

12. Radiographic examination of the chest for detecting any abnormality of the heart and lungs, which may not be apparent by ordinary physical examination will be restricted to only such candidates who are declared finally successful at the concerned Indian Forest Service Examination.

The decision of the Chairman of the Central Standing Medical Board (conducting the medical examination of the concerned candidate) about the fitness of the candidate shall be final.

When any defect is found it must be noted in the certificate and the medical examiner should state his opinion whether or not it is likely to interfere in the efficient performance of the duties which will be required of the candidate.

In case of doubt regarding health of a candidate, the Chairman of the Medical Board may consult a suitable Hospital Specialist to decide the issue of fitness or unfitness of the candidate for Government Service e.g. if a candidate is suspected to be suffering from any mental defect or aberration, the Chairman of the Board may consult a Hospital Psychiatrist/Psychologist, etc.

NOTE: Candidates are warned that there is no right of appeal from Medical Board special or standing appointed to determine their fitness for the above service. If, however,

Government are satisfied on the evidence produced before them of the possibility of an error of judgement in the decision of the first Board, it is open to Government to allow an appeal to second Board. Such evidence should be submitted within one month of the date of the communication in which the decision of the first Medical Board is communicated to the candidate, otherwise no request for an appeal to a second Medical Board will be considered.

If any medical certificate, produced by a candidate as a piece of evidence about the possibility of an error of judgement, in the decision of the first Board, the certificate will not be taken into consideration unless it contains a note by the medical practitioner concerned to the effect that it has been given in full knowledge of the fact that the candidate has already been rejected as unfit for service by the Medical Board.

Medical Board's Report

The following intimation is made for the guidance of the Medical Examiner:—

1. The standard of physical fitness to be adopted should make due allowance for the age and length of service, if any of the candidate concerned.

No person will be deemed qualified for admission to the Public Service who shall not satisfy Government or the appointing authority, as the case may be that he/she has no disease constitutional affliction, or bodily infirmity unfitting him/her, or likely to unfit him/her for that service.

It should be understood that the question of fitness involves the future as well as the present and that one of the main objects of medical examination is to secure continuous effective service, and in the case of candidates for permanent appointment to prevent early pension or payments in case of premature death. It is at the same time to be noted that the question is one of the likelihood of continuous effective service and that rejection of a candidate need not be advised on account of the presence of defect which is only a small proportion of cases is found to interfere, with continuous effective service.

A lady doctor will be co-opted as a member of the Medical Board whenever a woman candidate is to be examined.

The report of the Medical Board should be treated as confidential.

In case where a candidate is declared unfit for appointment in the Government Service the grounds for rejection may be communicated to the candidate in broad terms without giving minute details regarding the defects pointed out by the Medical Board.

In case where a Medical Board considers that a minor disability disqualifying a candidate for Government service can be cured by a treatment (medical or surgical) a statement to that effect should be recorded by the Medical Board. There is no objection to a candidate being informed of the Board's opinion to this effect by the appointing authority and when a cure has been effected it will be open to the authority concerned to ask for another Medical Board.

In the case of candidates who are to be declared Temporarily unfit the period specified for re-examination should not ordinarily exceed six months of the Maximum. On re-examination after the specified period these candidates should not be declared temporarily unfit for a further period but a final decision in regard to their fitness for appointment or otherwise should be given.

(a) Candidate's Statement and declaration :

The candidate must make the statement required below— prior to his/her Medical examination and must sign the Declaration appended thereto. Their attention is specially directed to the warning contained in the Note below:—

1. State your Name in full.....
(in block letters)
2. State your age and birth place.....
3. (a) Do you belong to Scheduled Tribes or to races such as Gorkhas, Nepalese, Assamese, Meghalaya, Tribals, Ladakhese, Sikkimese, Bhutanese, Gharwalis, Kumaonis, Nagas and Arunachal Pradesh, whose average Height is distinctly lower. Answer 'Yes' or 'No' and if the answer is 'Yes' state the name of tribe/race . . .
3. (b) Have you ever had small pox, intermittent or any other fever, enlargement or suppuration of glands, spitting of blood, asthma, heart disease, lung disease, fainting attacks rhuematism, appendicitis?

OR

Any other disease or accident requiring confinement to bed and medical or surgical treatment.

4. Have you suffered from any form of nervousness due to over work or any other cause ?.....
5. Furnish the following particular concerning your family:—

1	2	3	4
Father's age if living and state of health	Father's age at death and cause of death	No. of brothers living, their age and state of health	No. of brothers dead, their age and cause of death

5	6	7	8
Mother's age if living and state of health	Mother's age at death and cause of death	No. of sisters living, their age and state of health	No. of sisters dead, their age and cause of death

6. Have you been examined by Medical Board before?.....
7. If answer to the above is 'Yes' please state what Services You were examined for ?.....
8. Who was the examining authority ?.....
9. When and where was the Medical Board held.....
10. Result of the Medical Board examination, if communicated to you or if known.....
11. All the above answers are to the best of my knowledge & belief, true and correct and I shall be liable for action under law for any material infirmity in the information furnished by me or suppression of relevant material information. The furnishing of false information or suppression of any factual information would be a disqualification and is likely to render me unfit for employment under the Government. If the fact that false information has been furnished or that there has been suppression of any factual information comes to notice at any time during my service, my services would be liable to be terminated.

Candidate's Signature

Signed in my presence

Signature of the Chairman of the Board

PROFORMA—I

Report of Medical Board on
.....(name of candidate) physical examination.

1. General Development : Good..... Fair..... Poor
Nutrition..... Thin..... Average.....
Obese..... Height..... Best Weight
..... When ?..... Any recent change in
Weight..... Temperature.....

2. Girth of chest :—

(1) After full inspiration

(2) After full expiration

Skin : Any obvious disease

3. Eyes :—

(1) Any disease
.....

(2) Night blindness
.....

(3) Defect in colour vision
.....

(4) Field of vision		
(5) Visual acuity		
(6) Fundus Examination		
Acuity of Vision	Naked eye	With glasses	Strength of glasses
		Sph.	Axix
Distant Vision		Cy.	
R. E.			
L. E.			
Near Vision			
R. E.			
L. E.			
Hypermetropia (manifest)			
R. E.			
L. E.			
4. Ears : Inspection.....	Hearing : Right Ear.....	Left Ear.....	
5. Glands.....	Thyroid.....		
6. Condition of teeth.....			
7. Respiratory System; reveal. Does Physical examination anything abnormal in the respiratory organs?			
If yes, explain fully.			
8. Circulatory System:—			
(a) Heart, Any organic lesions?.....	Rate Standing.....		
	After hopping 25 times.....		
	2 minutes after hopping.....		
(b) Blood Pressure : Systolic.....	Diastolic.....		
9. Abdomen : Girth.....	Tenderness.....		
Hernia.....			
(a) Palpable.....	Liver.....	Spleen.....	
	Kidneys.....	Tumours.....	
(b) Haemorrhoids.....	Fistula.....		
10. Nervous System : Indication of nervous or mental disability.....			
11. Loco-Motor System : Any abnormality.....			
12. Genito Urinary System : Any evidence of Hydrocele, Varicocele etc.			
Urine Analysis :			
(a) A physical appearance.....			
(b) Sp. Gr.....			
(c) Albumen.....			
(d) Sugar.....			

(e) Casts.....

(f) Cells.....

13. Is there anything the health of the candidate likely to render him unfit for the efficient discharge of his duties in the Indian Forest Service?

NOTE : In case of a female candidate, if it is found that she is pregnant of 12 weeks standing or over she should be declared temporarily unfit, vide Regulation 10.

14. Has he been found qualified in all respects for the efficient and continuous discharge of duties in the Indian Forest Service?

Note (I) : The Board should record their findings under one of the following three categories:

(i) Fit.....

(ii) Unfit on account of.....

(iii) Temporarily unfit on account of.....

NOTE (II) The candidate has not undergone chest X-RAY test. In view of this, the above findings are not final and are subject to the report on chest X-ray test.

Place :

Date :

Chairman

Signature Member

Member

Seal of the Medical Board

PROFORMA-II

Candidate's Statement/Declaration

1. State your Name :

(in block letters)

2. Roll No. :

Candidate's Signature

Signed in my presence

Signature of the Chairman of the Board

To be filled-in by the Medical Board

Note : The Board should record their findings under one of the following three categories in respect of chest X-ray test of the candidate.

Name of the candidate.....

(i) Fit

(ii) Unfit on account of

(iii) Temporarily unfit on account of

Place:

Date :

Chairman

Signature Member

Member

Seal of the Medical Board